युद्ध और शान्ति

भाग . १

गुरुदत्त

राजधानी ग्रन्थागार, नई दिल्ली

YUDDHA-AUR-SHANTI—Novel by GURU DUTT
Part I Price Rs 6.00

विजयादशमी २०२१ विक्रमी
अक्तूबर १९६३
प्रथम संस्करण

• • •

प्रकाशक :
राजधानी ग्रन्थागार
59-H-IV लाजपत नगर, नई दिल्ली-14

मूल्य . ६.००

मुद्रक
रामस्वरूप शर्मा, राष्ट्र भारती प्रेस, दिल्ली

नोट—उपन्यास दो भागों में है। द्वितीय भाग सहयोगी संस्था मकरंद प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ है। दोनों भाग हमारे प्रमुख वितरक भारती साहित्य सदन, ३०/९० कनाट सरकस, नई दिल्ली से उपलब्ध हैं। —प्रकाशक

भूमिका

भारतीय समाज शास्त्र मे समाज चार वर्णो मे विभक्त है। यह विभाजन ईश्वरीय है।

चातुर्वर्ण्या मया सृष्ट गुण कर्म विभागश ।

परमात्मा ने जब मानव की सृष्टि की तो उसमे उनको गुण कर्म तथा स्वभाव से चार प्रकार का बनाया। ये वर्ण भारतीय शब्द कोष मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र नाम से जाने जाते है।

शासन करना और देश की रक्षा करना क्षत्रियो का कार्य है। ब्राह्मण स्वभाव से ही क्षत्रिय का कार्य करने के अयोग्य होते है। ब्राह्मणों का कार्य विद्या का विस्तार करना है। मानव समाज मे दोनो सर्वश्रेष्ठ वर्ग है।

वर्तमान युग मे ब्राह्मण और क्षत्रिय, मानव समाज के सेवक मात्र रह गये है। समाज का प्रतिनिधि राज्य है और राज्य स्वामी है क्षत्रिय वर्ग का भी और ब्राह्मण वर्ग का भी। शूद्र उस वर्ग का नाम है जो अपने स्वामी की आज्ञा पर कार्य करे और उस कार्य के भले-बुरे परिणाम का उत्तरदायी न हो। आज उत्तरदायी राज्य है। ब्राह्मण (अध्यापक वर्ग) और क्षत्रिय (सैनिक) वर्ग राज्य की आज्ञा पालन करते हुए भले-बुरे परिणाम के उत्तरदायी नही है। इसी कारण वे शूद्र वृत्ति के लोग बन गये हैं।

यह बात भारत-चीन के सीमावर्ती झगडे से और भी स्पष्ट हो गई है। मन्त्रिमण्डल जिसमे से एक भी व्यक्ति, कभी किसी सेना कार्य मे नही रहा, १९६२ की पराजय तथा १९५२-१९६२ तक के पूर्ण पीछे हटने के कार्य का उत्तरदायी है और राज्य सचालन मे क्षत्रियो (सेना) का तथा ब्राह्मणो (अध्यापक-वर्ग) का अधिकार नही है।

भारत का विधान ऐसा है कि इसमे 'अधेर नगरी गबरगण्ड राजा,

टके सेर भाजी टके सेर खाजा' वाली बात है। एक विश्व-विद्यालय के वाइस-चासलर अथवा उच्चकोटि के विद्वान को भी मतदान का अधिकार है। उसी प्रकार उसके घर मे चौका-बासन करने वाली कहारन को भी मतदान का अधिकार है। देश मे अनपढो, मूर्खो और अनुभव विहीनो की सख्या बहुत अधिक है। वयस्क मतदान से तो राज्य इन्ही लोगो का है। दूसरे शब्दो मे ब्राह्मण वर्ग (पढे-लिखे विद्वान) और क्षत्रिय वर्ग के लोग इनके दास है।

यह कहा जाता है कि यही व्यवस्था अमेरिका, इग्लैड इत्यादि देशो मे भी है। यदि वहाँ कार्य चल रहा है तो यहा क्यो नही चल सकता? परन्तु हम भूल जाते है कि प्रथम और द्वितीय विश्वव्यापी युद्ध और उन युद्धो के परिणामस्वरूप सधियाँ एव युद्धोपरान्त की निस्तेजता इसी कारण हुई थी कि इन देशो का राज्य जनमत से निर्मित मगदो के हाथ मे था।

प्रथम युद्ध मे सेनाओ ने जर्मनी को परास्त किया, परन्तु सधि के समय अमेरिका तो भाग कर तटस्थ हो बैठ गया। वुड्रो विलसन चाहता था कि अमेरिका 'लीग ऑफ नेशज' मे बैठकर विश्व की राजनीति मे सक्रिय भाग ले, परन्तु अमरीका की जनता ने उसको प्रधान नही चुना। इसी प्रकार वे वकील जो योरुपियन राज्यो के प्रतिनिधि बन वारसैल्ज की सधि करने बैठे तो उनमे न तो ब्राह्मणो की-सी उदारता थी, न ही क्षत्रियो का-सा तेज। वे बनियो (दुकानदारो) और शूद्रो (मजदूर वर्ग) के प्रतिनिधि वारसैल्ज जैसी अन्यायपूर्ण, अयुक्तिसगत और अदूरदर्शिता-मय सधि पर हस्ताक्षर कर बैठे।

दूसरे युद्ध मे वारसैल्ज की सधि एक कारण था और इग्लैड की पार्लियामेंट तथा फ्रास की कौसिल की मानसिक और व्यवहारिक दुर्बलता दूसरा कारण था।

द्वितीय विश्व युद्ध मे अमेरिकन मिथ्या नीति के कारण ही स्टालिन मध्य और पूर्वी योरुप तथा चीन पर अपने पख फैला सका था।

इस समय भी प्राय ससदीय प्रजातन्त्रात्मक देशो मे शूद्र और बनिये राज्य करते है। हमारा कहने का अभिप्राय है, वे लोग राज्य करते है जो शूद्र और बनियो को प्रसन्न करने की बाते कर सकते है। ब्राह्मण और क्षत्रिय तो इन शूद्र नेताओ के सेवक मात्र (वेतनधारी दास) हो गये अनुभव करते है। यही कारण है कि दिन-प्रतिदिन विश्व की दशा बिगडती जाती है।

ससार मे दुष्ट लोगो का अभाव नही हो सकता। आदि सृष्टि से लेकर कोई ऐसा काल नही आया, जब आसुरी प्रवृत्ति के लोग निर्मूल हो गये हो। इसका स्वाभाविक परिणाम यह निकलता है कि ससार मे युद्ध नि शेष नही किये जा सकते। युद्ध इन आसुरी प्रवृत्ति के मनुष्यो की करणी का फल ही होते है। अत दैवी सम्पत्ति के मानवो को उन असुरो को नियन्त्रण मे रखने के लिए सदा युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिए।

युद्ध मे विजय क्षत्रिय स्वभाव के लोगो मे शौर्य, शारीरिक तथा मानसिक बल और ईश्वर-परायणता के कारण प्राप्त होती है।

इसी प्रकार जाति की शिक्षा तथा नीति का सचालन देश के ब्राह्मणो (विद्वानो) के हाथ मे होना चाहिए। उनके कार्य मे बनियो और शूद्रो का हस्तक्षेप यहाँ तक कि क्षत्रियो का नियन्त्रण भी, विनाशकारी सिद्ध होता है।

देश का सविधान ऐसा होना चाहिए कि गुण, कर्म स्वभाव से ये मानव वर्ग अपने-अपने क्षेत्र मे स्वतन्त्र कार्य करते हुए भी, देश के न्याय-शास्त्रियो द्वारा समन्वय से कार्य करें। न्याय-परायण लोग सदा यह देखे कि कोई वर्ग किसी दूसरे वर्ग के कार्य-क्षेत्र मे अनुचित हस्तक्षेप न कर सके।

सविधान मे यह किस प्रकार हो, यह इस पुस्तक का विषय नही है। इस पुस्तक का विषय है कि युद्ध और शाति किस प्रकार परस्पर आश्रित है। युद्ध लडे जाते है शान्ति स्थापना के लिए, परन्तु शान्ति काल मे वैश्य तथा शूद्र प्रवृत्ति के लोग ब्राह्मण और क्षत्रिय वर्ग पर प्रभुत्व जमा

कर पुनः युद्ध के लिए क्षेत्र की तैयारी मे लग जाते है। ये दोनो वर्ग युद्ध से भयभीत, आसुरी प्रवृत्ति के मनुष्यो को नियत्रण मे रखने मे अशक्त होते है। ऐसे शान्ति काल मे असुर फलते-फूलते हैं और श्रेष्ठ लोगो को कष्ट देना अपना अधिकार मानने लगते हैं।

सर्वत्र और सदा शान्ति तो मानव समाज मे श्रेष्ठ प्रवृत्ति के लोगो के शाश्वत आधिपत्य से प्राप्त हो सकती है। श्रेष्ठता ब्राह्मणत्व, क्षत्रियत्व, वैश्य वृत्ति और शूद्रो मे सतुलन से प्रस्फुटित होती है। इस सतुलन के लिए शान्तिप्रिय लोगो को यत्नशील रहना चाहिए। इस सतुलन को रखने मे न्याय शास्त्री ब्राह्मण ही योग्य हैं, परन्तु ये वयस्क मतदान से न तो निर्माण होते है न ही निर्वाचित होते हैं।

यह है इस पुस्तक का विवेच्य विषय। यह उपन्यास है। इसमे पात्र काल्पनिक है। इस उपन्यास मे कुछ ऐतिहासिक पुरुषो का भी उल्लेख है। उनके विषय मे सतत यत्न किया गया है कि उनके कार्य और वाक्यो को उनकी जीवनियो तथा प्रसिद्ध प्रकाशित कार्यों मे से लेकर ही लिखा जाये।

जो कुछ भी लिखा गया है, प्रस्तुत विषय की पुष्टि मे ही लिखा गया है। अत. किसी के मान-अपमान से पुस्तक का सम्बन्ध नही।

—गुरुदत्त

प्रथम परिच्छेद

पजाब के जिला होशियारपुर मे बीस-तीस घरो के एक गाँव जमादार-पुर के मालिक जमादार सूरतसिह का लडका लाहौर सरकारी कॉलेज मे पढता था। नाम था मथुरासिह। इस वर्ष वह बी० ए० की परीक्षा देकर घर आया तो उसके काम-धन्धे के विषय मे विचार होने लगा। बाप सेना मे नौकरी कर चुका था। इस कारण उसको सेना का काम ही पसन्द था। उसने अपने लडके से कहा, "मथुरे! बाप दादाओ का काम छोडना धर्म नही। तुम्हारा परदादा महाराजा रणजीतसिह की सेना मे सूबेदार था। तुम्हारा बाबा, अँग्रेजो का राज्य आ जाने पर अँग्रेजी सेना मे था। मैं भी तो अँग्रेजी सेना मे जमादार रहा हूँ। जमादारी से मुझको उन्नति नही मिल सकी। कारण यह है कि मैं अपने कप्तान को एक बार 'वदे मातरम्' कह बैठा था। उन दिनो वदे मातरम् बगाल के क्रान्तिकारियो का अभिवादन शब्द था। इससे हमारी रेजिमेट के कप्तान सडरसन के सामने मेरी पेशी हो गई। वह मुझको कोर्ट मार्शल करने वाला था। उस भले व्यक्ति ने मुझसे पूछा, 'तुमने हमको क्या सलाम किया था?'

"मैने कहा, 'सर! यह 'सिविलियन' सलाम है।'

"उसका प्रश्न था, 'इसका मतलब क्या होता है?'

"मैंने बताया, 'मैं अपने 'मदर लैण्ड'[1] को नमस्कार करता हूँ।'

"उसने पूछा, 'यह सलाम है क्या?'

"मैंने कहा, 'यह हिन्दुस्तानी ढग है, सलाम करने का, साहब! जब हम परस्पर मिलते है तो राम-राम करते हैं। राम परमात्मा का नाम है।

---

१ जन्म-भूमि।

जब सेना मे एक-दूसरे से मिले तो वदे मातरम् कहना चाहिये । यह इस-लिए कि हम अपने देश के लिए, लडने तथा अपनी जान तक देने को तैयार रहते है । इसलिये अपने देश को नमस्कार करते हैं ।'

"कप्तान मेरा मुख देखने लगा । फिर बोला, 'मगर ये बगाली बाबू भी तो वदे मातरम् करता है ।'

"मैंने कह दिया कि मैं उनको मना नही कर सकता । न ही उनके कामो का मैं ज़िम्मेवार हूँ । मैं तो सरकार का वफादार नौकर हूँ और अपने पेशे की वफादारी के लिये यह कहता हूँ ।'

"मेरे कथन पर कप्तान मुस्कराकर कहने लगा, 'यह कैसे हो सकता है ? तुम सरकार का वफादार हो और अपने मुल्क का भी ?'

"मैने पूछ लिया, 'तो क्या सरकार हिन्दुस्तान की रक्षा नही करेगी, हुज़ूर ! अगर चीन, जो तिब्बत मे आ गया है, भारत पर आक्रमण करे तो क्या सरकार इसकी रक्षा मे सेना नही भेजेगी ? मुझको तो विश्वास है, भेजेगी ।'

"कैप्टन सडरसन मेरी बात का उत्तर नही दे सका । कितनी ही देर तक वह मुख देखता रहा । फिर कहने लगा, 'जमादार सूरतसिह ! सर-कार उन शब्दो मे अभिवादन पसन्द नही करती, जिनमे इन्कलाब-पसन्द बगाली अभिवादन करता है । इसलिए मैं हुक्म देता हूँ कि आगे से यह शब्द सेना मे नही कहा जायेगा । अब तुम जा सकते हो ।'

"मैं आ गया, परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि मेरी फाइल मे मेरे नाम के सामने काला निशान लगा दिया गया । मेरी तरक्की नही हुई ।

"इसके पश्चात् जर्मनी के युद्ध मे मैंने बहुत बहादुरी का काम दिखाया । मुझको बताया गया कि मेरा नाम 'विक्टोरिया क्रॉस' के लिए भेजा गया था, परन्तु मेरी 'सर्विस फाइल' देखकर वह मुझको नही दिया गया । हाँ, मुझको यह भूमि मिल गई, जिस पर यह गाँव मैंने बसाया है ।"

"भापा !" मथुरासिह का प्रश्न था, "इस पर भी तुम कहते हो कि मैं सेना मे भरती हो जाऊँ ।"

"हाँ ! वह इसलिये कि यह हमारा 'जद्दी' काम है। हम राजपूत है। लडना हमारा काम है। इस अपने कुल के काम को छोडकर तो हम कोई दूसरा काम कर सकते ही नही।

"एक बात और सोच लो। मेरे पिता ने मुझको यह बताया था और मैं तुमको बताता हूँ। पन्द्रह वर्ष तक सेना का काम करने के बाद ही शादी करनी चाहिये। पहले शादी करने से युद्ध-भूमि मे लडते समय बाल-बच्चो का विचार आ जाता है तो हाथ चलता नही। न ही कदम आगे बढता है। मेरे पिता ने चालीस वर्ष की आयु मे विवाह किया था। हम दो भाई थे। दोनो भाई भरती हुए। मेरा भाई अफ्रीका मे लाम पर गया था। वह वहाँ मारा गया। मैं उसके बाद सेना मे भर्ती हुआ था। सन् १६१८ मे पेन्शन और यह जागीर लेकर घर आया और सैंतीस वर्ष की आयु मे मैंने विवाह किया। तुम मेरे अकेले लडके हो। इससे तुम हमारे कुल की परम्परा चलाओ।"

"पर भापा ! यदि परीक्षा मे अच्छे अक लेकर उत्तीर्ण हुआ तो मैं अभी और पढूंगा।"

"यह बात दूसरी है।"

"साथ ही यदि एम० ए० पास हुआ तो कमीशन मिलने की अधिक सम्भावना है।"

"यह तुम सर्विस रूल पढ लो। तुमको पता चल जायेगा।"

मथुरासिंह की सेना मे भरती होने की इच्छा नही थी। सेना मे जमादार तथा सूबेदार बनकर जान गँवानी उसको कुछ शोभा की बात प्रतीत नही हो रही थी। इस पर भी एक राजपूत का बेटा होकर सेना मे भरती होने से न करने का साहस वह नही कर सका।

मथुरासिंह कॉलेज फुटबॉल की फर्स्ट टीम का कैप्टन था। पूर्ण कॉलेज मे उसकी एक सिद्ध खिलाड़ी के रूप मे ख्याति थी और छ फुट दो इच लम्बा जवान, चुस्त सुदृढ शरीर और तीव्र, परन्तु मोटी-मो ी आँखे उसके गुण-विशेष थे।

यह सन् १६३६ का जुलाई मास था। मथुरा ने अपना निश्चय बताया कि परीक्षाफल घोषित होने तक वह कुछ नही करेगा और यदि माँ आपत्ति न करे तो दो मास पहाड की सैर कर आये।

"हाँ, माँ से पूछ लो।" बाप ने कह दिया।

उसी सायकाल लडके ने माँ से पूछ लिया, "माँ! मै एक-दो दिन मे धर्मशाला, कुल्लू और फिर चम्बा तथा शिमला तक घूमने चला जाऊँ?"

"बेटा! छ महीने के पश्चात् तुम घर आये हो। अब फिर चल दोगे?"

"और माँ, फिर लौट आऊँगा।"

"अच्छा एक बात करो। दस दिन घर मे रहो। पीछे चले जाना।"

"घर रहने पर क्या होगा?"

"पुत्र का मुख देख मेरा दिल ठडा होगा।"

"सच माँ?"

"हाँ, और मैं तुम्हारी सगाई करूँगी।"

"पर भापा तो कहते है कि मुझको सेना मे भरती होना चाहिये। साथ ही वे कहते है कि सेना की नौकरी छोडने के बाद ही विवाह होगा।"

"तो इतने दिन विवाह नही होगा?"

"यह भापा से पूछ लो।"

पति-पत्नी मे वार्तालाप हुआ और सूरतसिह ने कुछ डाँट के भाव मे कह दिया, "भगवती! तुम्हारे पुत्र-मोह के कारण मैं अपने परिवार की परम्परा को लोप नही कर सकता। अपने पितरो के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिये मुझको इस अग्नि-परीक्षा मे से लाँघना ही पडेगा। मथुरा सेना मे भरती होगा। फिर पन्द्रह वर्ष की सेवा के पश्चात् आकर विवाह करेगा। जैसे मैने किया है, वैसे ही वह करेगा।"

भगवती अपने पति की बात को काट नही सकी। परिवार की परम्परा के सम्मुख नत मस्तक हो गई। आस-पास के दस-बीस गाँव मे उसके पति की ख्याति थी। जमादार सूरतसिह जिस भी समारोह मे चला जाये,

सब मान-प्रतिष्ठा से उसका स्वागत एव अभिनन्दन करते थे। जिले का डिप्टी कमिश्नर अथवा कमिश्नर उधर से निकलते समय उससे मिलने आता था। सब जानते थे कि जमादार ने जर्मनी के युद्ध मे बहुत वीरता दिखाई थी और उस अकेले ने पूरी-की-पूरी गोरा रेजीमेंट का एक समय त्राण किया था।

इस पर भी काल परिवर्तनशील था और सूरतसिंह के युद्ध से लौटने तथा सेना की नौकरी त्यागने के पश्चात् गाधीजी के दो भारी आन्दोलन चल चुके थे। उन आन्दोलनो की गूँज जमादार सूरतसिंह के गाँव तक भी पहुँच चुकी थी।

सूरतसिंह गाधीजी के आन्दोलनो की बात सुन-सुनकर हँसा करता था। उसने कभी भी गाधीजी के प्रति अश्रद्धा अथवा अपमानयुक्त बात नही कही थी। परन्तु वह मन-ही-मन विचार करता रहता था कि इस प्रकार की बातो से राज्य बदलेगा नही।

गाँव मे एक देवीदयाल महेश्वरी नाम का लाला रहता था। उसने एक दुकान कर रखी थी तथा गाँव-भर के प्राणियो की प्रत्येक आवश्यकता उपलब्ध करता रहता था। जमादार से उसने दस एकड भूमि ले रखी थी और उस पर खाने-पीने के लिये अन्न-अनाज तथा शाक-भाजी उत्पन्न करता था। मास मे एक दिन दुकान का सामान लेने होशियारपुर जाता था और फिर महीना-भर उसको उचित मूल्य पर बेचता था।

होशियारपुर से वह देश मे चल रहे आन्दोलनो का समाचार लाया करता था और फिर जमादार की चौपाल पर बैठ, गाँव के समझदार लोगो को सुनाया करता था।

मथुरासिंह अभी छोटा ही था कि वह देवीदयाल से सत्याग्रह के समाचार सुना करता था। वह अपने पिता को सत्याग्रह के समाचारो पर मुस्कराते भी देखा करता था। उस समय वह न तो लाला के इस कथन का अर्थ समझ सकता था कि पाठशालाओ, विद्यालयो एव न्यायालयो के बहिष्कार से अँग्रेज़ी सरकार भाग जायेगी और न ही वह अपने पिता के

मुस्कराने का अर्थ समझ पाता था।

लाला की जोशीली बाते 'ये फिरगी गये' सुन, मथुरासिह विस्मय किया करता था। इस सब का तात्पर्य उसको नमक सत्याग्रह के समय समझ आया।

उस समय मथुरासिह पाँचवी श्रेणी मे पढता था। गाँव से तीन मील के अन्तर पर बरौडा गाँव मे हाई स्कूल था और मथुरा वहाँ पढने जाया करता था।

एक दिन वह पाठशाला से लौटा तो उसने अपनी माँ और बाप को बताया, "भापा ! आज बहुत मजा रहा।"

"क्या हुआ है ?" जमादार सूरतसिह ने पूछा।

मथुरा ने बताया, "बरौडा के एक लाला सरदारीलाल ने खारी कुएँ के जल से नमक बनाया और पुलिस उसे पकड कर ले गई।"

"कैसे नमक बनाया है ?" भगवती ने पूछ लिया।

"आज स्कूल पहुँचा तो सब लडके और मास्टर स्कूल बन्द कर स्कूल के बाहर खडे थे। पूछने पर पता चला कि लाला कुएँ के पानी से नमक बनायेंगे और सब लडके तथा मास्टर देखने जा रहे है।"

"फिर क्या देखा ?"

"माँ ! गाँव के बाहर बडे कुएँ का पानी खारी है। कोई उसका पानी पीता नही। हम सब वहाँ इकट्ठे हो गये। गाँव के भी बहुत लोग वहाँ थे। लाला आया, उसके गले मे फूलो की मालाएँ थी और माथे पर तिलक लगा था। उसके पीछे पाँच लडके थे। एक हमारे स्कूल की दसवी क्लास मे पढने वाला भी था। ये सब कुएं के समीप खड़े हो महात्मा गाधी की जय के नारे लगाते रहे। फिर एक अँगीठी लाई गई। उसमें कोयले जलाये गए। उस पर कडाही रखी गई। कुएँ से दो लोटा जल निकालकर कडाही मे डाला गया और तपाया गया।

"जल सूखने पर, चाकू से खुरच कर नमक एक कागज़ पर रखा गया और फिर महात्मा गाधी के नारे लगाये गए।

"लाला सरदारीलाल नमक चखने लगा तो भीड को हटाती हुई पुलिस और थानेदार वहाँ आ गये और लाला को हथकडी लगाकर ले जाने लगे तो लोगो ने नारे लगाने आरम्भ कर दिये। इस पर पुलिस के सिपाही लाठियाँ लेकर लोगो को मारने दौडे। हम सब भाग खडे हुए। दो मोटे-मोटे लाला भाग नही सके और एक का पुलिस की लाठी से सिर फूटा और दूसरे के कन्धे पर बहुत सख्त चोट आई।

"लोग भाग गये और हमने स्कूल से छुट्टी कर दी। आज कबड्डी खेल कर घर लौट रहा हूँ।"

आज भी सूरतसिंह मुस्कराकर चुप कर रहा।

जब मथुरासिंह ने पिता को मुस्कराते हुए देखा तो पूछ लिया, "क्यो भापा! क्या बात है?"

"ये लोग नमक क्यो बनाते है?"

"कहते थे हम स्वराज्य लेगे।"

"इससे स्वराज्य नही मिलेगा।"

मथुरासिंह इस अल्पायु मे न तो स्वराज्य के अर्थ समझता था और न ही नमक बनाने से स्वराज्य मिलने की बात को समझ सका था।

भगवती ने पूछ लिया, "इससे स्वराज्य कैसे मिलेगा?"

सूरतसिंह लाला देवीदयाल से पूरी बात सुन आया था। इससे उसने अपनी पत्नी के समक्ष व्याख्या कर दी। उसने कहा, "देवीदयाल भी आज यह तमाशा देखने बरौडा गया हुआ था। उसने बताया है कि गाधीजी कहते हैं—अँग्रेज हिन्दुस्तान को लूट रहे है। नमक-कर भी लूटने का एक तरीका है। अत नमक-कर हम नही देगे। इससे सरकार का काम नही चलेगा और अग्रेज भारत छोडकर चले जायेगे। फिर गाधीजी यहाँ हिन्दुस्तानियो का राज्य कायम कर देगे। यह स्वराज्य होगा।"

"तो हो जायगा यह?"

"नही होगा। राज्य इस प्रकार नही बदला करते। मैंने देवीदयाल से पूछा था, 'कितना नमक बना था? वह बोला, 'दो तोले-भर।'

"मेरा कहना था, 'दो तोले नमक पर एक कौडी से भी कम टैक्स लगता है। इससे क्या सरकार का दिवाला पिट जायेगा ?'

"इस पर वह पूछने लगा, 'दिवाला नही पिटना था तो सरकार ने उनको पकडा क्यो है ?'

"मैंने कहा, 'यह बद-अमनी फैलाने से रोकने के लिए पकडा है। नमक-कर के न मिलने से सरकार नही डरती। सरकार डरती है टैक्स देने से इनकार की प्रथा चलाने से। जना खना उठे और टैक्स देने से ना करने लगे तो एक प्रकार की बद-अमनी फैल जायगी। इससे सरकार को हानि तो होगी, परन्तु सरकार से अधिक जनता की हानि होगी। बद-अमनी फैलने से भले लोगो को कष्ट होगा और दुष्टो की बन आयेगी।'

"सरकार इस अवस्था के फैल जाने से देश को बचाना चाहती है।"

मथुरासिह को बात समझ आ गई। तब से उसका विचार करने का दृष्टिकोण भिन्न हो गया।

: २ :

अब सन् १६३६ आ गया था और मथुरासिह बी० ए० की परीक्षा दे आया था। उसकी आयु इस समय उन्नीस वर्ष की थी। वह समझ रहा था कि देश मे क्या हो रहा है ? काग्रेस और गाधी यह कहते-फिरते थे कि उनके आन्दोलन से ही सन् १६३५ का विधान मिला है, जिससे तीन-चौथाई स्वराज्य मिल चुका है। यह गाधीजी की नीति का ही फल है। एक सैनिक परिवार की परम्पराओ को समझते हुए वह समझता था कि यदि स्वराज्य मिला है तो यह गाधीजी के चर्खे और खद्दर से नही हो सकता। इसमे कुछ अन्य कारण होगा। वह कारण अवश्य हिंसा एव भय से सम्बन्ध रखता है।

अँग्रेजी पढे होने से वह एक शब्द सीख चुका था। वह शब्द था 'पब्लिक ओपिनियन'[1]। इसी का पर्यायवाचक एक शब्द था—प्रजातन्त्र।

१ जनता की आवाज़।

इन शब्दो का खेल ही महात्मा गाधी खेल रहे थे और इस खेल मे ही अँग्रेज़ पराजित हो रहे थे। अँग्रेज अपनी पालियामेन्ट को बन्द नही कर सके। वहाँ विरोधी पक्ष का मुख बन्द नही हो सकता था और इधर भारत मे पैतीस करोड जनता थी, जो इग्लैण्ड की पूरी जनसख्या से आठ-नौ गुणा अधिक थी।

वह मन मे विचार करता था कि यह तो ठीक है, परन्तु ससार मे ऐसे भी देश है जहाँ प्रजातन्त्र नही है और जिनकी जनसख्या अपने अधीनस्थ देशो से अधिक है। रह-रहकर उसको जापान का चीन पर आक्रमण स्मरण आ रहा था। पालियामेट तो चीन मे भी थी, परन्तु जापान का शासक-दल सैनिक प्रवृत्ति का था। साथ ही चीन के लोग अपने मे सन्तुष्ट रहने के कारण सैनिक-उन्नति नही कर सके थे।

इस बार अध्ययन के उपरान्त उसके कारोबार पर विचार-विनिमय होने लगा। जमादार सूरतसिह, जो लाला देवीदयाल से नगरो के समाचार सुनता रहता था, देश की परिस्थिति से परिचित था। वह अपने लडके की सेना मे जाने की अरुचि पर विस्मय करता था। इसी कारण उसने एक दिन अपने लडके से कहा था, "तुम सेना मे भरती होने से डरते हो ?"

"मैं मरने से नही डरता भापा ! मैं अँग्रेजो की सेना मे भरती होने से सकोच करता हूँ। ये हम पर शासन करते है और हमको अपने से छोटा समझ, हम से घृणा करते है। इससे मेरा स्वाभिमान मुझको अँग्रेज़ की सेना मे भरती होने की आज्ञा नही देता।"

"यह ठीक है, परन्तु सेना मे भरती होने से ही तो देश की स्वतन्त्रता प्राप्त की जा सकेगी और फिर स्वतन्त्रता की रक्षा की जा सकेगी।"

"भापा ! यह विचार प्राचीन हो गया है। इग्लैण्ड मे राज्य पालियामेन्ट का है। पालियामेन्ट मे वकील एव व्यापारी बैठकर निश्चय करते हैं कि हिन्दुस्तान पर राज्य किनका और कैसा हो। यही कारण है कि गाधीजी का सार्वजनिक आन्दोलन पालियामेन्ट को प्रेरणा दे रहा है

कि भारत को स्वराज्य मिलना चाहिये। कहते है कि तीन-चौथाई स्वराज्य तो मिल भी चुका है और गाधीजी शेष एक-चोथाई के लिये रूठे हुए है।"

"तो तुम भी समझते हो कि गाधीजी के रूठने से अंग्रेज यहाँ से जा रहे है।"

"भापा! देश के सब समाचार-पत्र और नेतागण यही कह रहे है।"

"पर मै तुमको कहता हूँ कि यह इस प्रकार नही है जैसा ये समाचार-पत्र और नेतागण कहते हैं, इनका दिमाग एक गलती कर रहा है। अंग्रेज इसलिये नही जा रहे कि वे देवीदयाल-जैसे बनियो के नारो से भयभीत है। अँग्रेज सेना के सिपाहियो से डरते है। वे जानते हैं कि सैनिको मे यदि देश-प्रेम की भावना जागी और स्वतन्त्रता की इच्छा पैदा हो गई तो फिर वे सैनिक चर्खा चलाने तक सन्तोष नही करेगे। वे बन्दूक और तोप चलायेगे।"

"और सेना मे देश-प्रेम कैसे जागेगा ?"

"यह सत्याग्रह, अहिंसा, शान्ति की भावना से नही, अपितु देश की भावना को साथ लिये हुए सेना मे भरती होने से होगा। यह पढे-लिखे समझदार युवको के सेना मे भरती होने से होगा।"

"परन्तु गाधीजी के आन्दोलन से कुछ तो मिला है ?"

"कुछ नही मिला। बल्कि मिलते-मिलते रुका है। जो कुछ मिलना था, वह विकृत होकर ही मिल रहा है।"

जमादार की यह बात मथुरासिह को समझ नही आई। वह पिता का मुख देखता हुआ बैठा रहा। पिता बहुत पढा-लिखा व्यक्ति नही था। केवल उर्दू भाषा और उसमे निकलने वाले समाचार-पत्र ही पढता था। उसके पास मासिक-पत्रिका, 'सैनिक' आया करती थी। यह पत्रिका सरकार की ओर से, सेना तथा सेना से पेंशन-प्राप्त, सैनिको को भेजी जाती थी। इसके द्वारा ही उसके विचार बनते थे। साथ ही परमात्मा

पर अगाध विश्वास और पूजा-पाठ मे चित्त लगाने के कारण वह अपनी बुद्धि का प्रयोग करता रहता था। लाला देवीदयाल की बातें जो वह एक तोते की भाँति होशियारपुर से रटकर आता था, जब वह सुनता था और उनको अपने सेना के अनुभव से परखता था, तो उनको मूर्खतापूर्ण समझने लगता था।

सूरतसिंह ने पुत्र के मुख पर असन्तोष देखा तो पूछने लगा, "विश्वास नही आया न ?

"देखो ! मै बताता हूँ। काग्रेस मे प्राय वकील लोग है। उनका सम्पर्क सेना से नही। वे बाते भी ऐसी करते है, जो सैनिक लोग समझ नही सकते। जब बगाली बम चलाते थे तो हम सेना के लोग समझने थे कि कोई शूरवीर जान हथेली पर रखकर बात करता है, परन्तु लाहौर मे काग्रेस अधिवेशन हुआ। एक गोखले आये और अँग्रेजी मे डेढ घटा व्याख्यान झाड गये। लाहौर और बाहर के वकील सुनते रहे और तालियाँ बजाते रहे। बस उन्होने समझा हम आजाद हो गए।

"मैं लाहौर मे ही था। हमारा एक सूबेदार सिख था। वह सिविल मिलिटरी गज़ट पढा करता था। एक दिन वह अपनी बैरक के बाहर बैठा समाचार-पत्र पढ रहा था तो मैं वहाँ जा पहुँचा। उसने कहा, 'सूरतसिंह ! सुना है शहर मे एक बहुत बडा लीडर आया है ?'

"मेरे पूछने पर उसने बताया, 'एक गोखले, गोखले है। कहता है, हम सबको मिलकर सरकार से अर्जी करनी चाहिये और सरकार हमारी अर्जी मान जायेगी।'

'क्या अर्जी हो हमारी ?' मने पूछा।

"वह बोला, 'यही कि बडे-बडे ओहदो पर हिन्दुस्तानियो की तरक्की होनी चाहिये।'

'और किससे मिलकर अर्जी करे ?'

'मुसलमानो से।'

'तो सरकार मान जायेगी क्या ?'

'सरकार ने मान तो लिया है। मगर एक बात वे कह रहे हैं, मुसलमानो को मुसलमान होने से हिन्दुओ के बराबर नौकरियाँ मिलेगी।'

"मैने पूछा, 'चाहे मुसलमान कुछ भी पढा-लिखा न हो ?'

"उसने हँसते हुए कहा, 'मुसलमान तो हिन्दुओ के बराबर पढ सकता ही नही। परन्तु नौकरी बराबर पायेगा।'

'तो हमारी सेना मे भी यही होगा ?'

'यहाँ एक सीमा तक तो यह पहले ही हे। मुसलमानो की रेजिमेन्ट पृथक् है। जाटो की पृथक्। राजपूतो और डोगरो की भी पृथक्-पृथक् हैं। बनियो और सूदो को तो सेना मे लिया ही नही जाता, अब ऐसा सिविल नौकरियो मे भी होगा।'

'यहाँ एक गनीमत है कि रेजिमेन्ट पृथक्-पृथक् होने से एक कौम का आदमी दूसरी पर अफसर नही बन सकता। परन्तु सिविल मे तो दफ्तर हिन्दू-मुसलमान, जाट, बनियो के लिये पृथक्-पृथक् नही हो सकते। परिणाम यह होगा कि एक का थर्ड रेट का आदमी दूसरे कौम के बढिया और योग्य आदमियो पर शासन करेगा। इससे द्वेष, कलह और परस्पर शत्रुता बढेगी।'

"बेटा! उस समय तो सूबेदार की बात मुझको समझ नही आई। परन्तु उसकी सच्चाई का अनुभव मैं अब कर रहा हूँ। पजाब मे हिन्दू-मुसलमान का झगडा मुख्य रूप से इस कारण ही है। मुसलमान अफसर जो योग्यता के कारण नही, प्रत्युत मुसलमान होने के कारण अफसर बने हैं, मुसलमानो की हिमायत करते है। हिन्दू इससे दुखी होते है। झगडे हो रहे हैं और इसका परिणाम अच्छा नही हो सकता।

"मथुरा! मैं तो यह कहता हूँ कि इन वकीलो के कारण ही झगडे बढ़ रहे है। यदि गाधी वकील की जगह पर कोई सैनिक नेता होता तो वह कभी भी यह मेल-जोल की बात न करता। वह योग्यता की बात करता।"

"तो हिन्दू-मुसलमानो मे मैत्री नहीं होनी चाहिए ?"

"हिन्दू-मुसलमान के विचार से तो बात होनी ही नही चाहिए। जो कोई भी नौकरी अथवा कोई पदवी प्राप्त करे, अपनी योग्यता से करे, हिन्दू अथवा मुसलमान होने के नाते नही।"

"परन्तु मुसलमानो मे तो योग्यता बहुत कम है ?"

"उनको अपने मे योग्यता पैदा करनी चाहिए।"

"वे गरीब अपने बच्चो को पढा नही सकते।"

"तो गाधीजी को चन्दा इकट्ठा कर, उनके लिए स्कूल-कॉलेज खोलने चाहिये। उनको वजीफे दिलवाने चाहिये। परन्तु एक अयोग्य को योग्यो के सिर पर बैठाने से तो शत्रुता बढ़ेगी।"

"तो फिर स्वराज्य कैसे होगा ?"

"पढे-लिखे योग्य युवको को सेना मे भर्ती कराने से।"

"परन्तु उनको सेना मे सूबेदार और जमादार से अधिक तो पदवी मिल नही सकती।"

"जब पढे-लिखे युवक सेना मे जाने लगेगे तो सरकार को उन्हे कमीशन देनी पडेगी।"

"यह कैसे ?"

"मथुरा ! तुम भर्ती हो जाओ और तुमको तरक्की करने से कोई रोक नही सकेगा।"

'परन्तु स्वराज्य तो इन वकीलो की करनी से ही होगा ?"

"प्रथम तो इनके करने से न कुछ हुआ है न होगा। जो हुआ दिखाई भी देता है, वह राज्य का बिगडा हुआ रूप ही है। हिन्दू है, मुसलमान है, सिख और जाट है। हिन्दी बोलने वाले तथा पजाबी बोलने वाले है। मराठी, गुजराती तेलगू और बगाली बोलने वाले है। ये सब झगडे इन वकीलो के पैदा किये है।"

"परन्तु सैनिक लोग इनको क्या सुझाव देते है ?"

"प्रथम तो सैनिको के सामने अयोग्य होने पर भी अपने साथ रियायत के लिए कोई कहेगा नहीं। यदि कोई कहेगा भी तो वह अनधिकार

बात कहने से गोली से उडा दिया जायेगा। कोई भी, सही दिमाग व्यक्ति किसी अयोग्य को जात-पात अथवा मजहब के नाते पदवी दिलाने की बात करता नही।"

"यह बात अँग्रेज वकीलो की चलाई हुई है और हिन्दुस्तानी वकीलो की मानी हुई है।"

"परन्तु मुसलमान तो यहाँ पहले ही मजहबी झगडे करते है।"

"हाँ, यह तो है, परन्तु हिन्दुओ की उनसे शत्रुता भी तो इसी कारण थी। वह शत्रुता अब भी है।"

इन सब बातो को मानते हुए भी मथुरासिह को सेना मे अपनी भरती हो सकना न तो सम्भव प्रतीत होता था और न ही उचित। वह मन मे विचार करता था कि जब उसका भापा सेना मे भरती हुआ था, उस समय से तो अब बहुत काल व्यतीत हो गया है। उस समय भापा का अपमान कैप्टन सडरसन ने किया था और भापा ने यह अनुभव भी नही किया था, परन्तु अब वह जानता है कि 'वदे मातरम्' पर आपत्ति सहन नही हो सकेगी। कम-से-कम वह तो इसको सहन नही कर सकेगा।

उसने सोचा वह अवश्य फर्स्ट डिवीजन मे पास होगा। अत वह अभी दो वर्ष तक एम० ए० मे पढेगा। तब उसको इतनी अच्छी नौकरी मिल सकेगी कि उसका पिता भी उसको सेना मे भरती होने की बात नहीं कहेगा। वह अपने मन मे एक धुंधला-सा चित्र अपने नेता बन, देश को ठीक दिशा देने का बना रहा था।

वह जब भी गाँव मे आता, गाँव के प्राय सब लोगों से मिला करता था। उसको विशेष लगाव लाला देवीदयाल से था। देवीदयाल भी उसको घर मे ले जा, उसको खिलाया-पिलाया करता था। इस बार भी वह जब आया तो लाला की दुकान पर जा पहुँचा। दुकान बन्द थी। दुकान के पीछे उसका मकान था। उसका अनुमान था कि लाला घर पर ही होगा।

वह दुकान के पीछे जा आवाज देने लगा, "लालाजी ! लालाजी !!"

भीतर से एक लडकी निकली। यह लालजी की दूसरी पुत्री राधा थी। राधा की बडी बहिन का विवाह हो चुका था। राधा का एक छोटा भाई था, रमणीक। रमणीक स्कूल गया था। स्कूल गाँव से तीन मील दूर बरौडा मे था।

राधा को देख, मथुरासिंह के हृदय मे एक विचित्र प्रकार की गुदगुदी उठ पडा करती थी। यह गुदगुदी आज सदा से अधिक ही थी। आज एक बात और हुई थी। राधा ने एक दृष्टि-भर उसकी ओर देखा और इसके बाद आँखें नीचे कर ली थी। उसके कपोलो पर सुर्खी दौड गई और वह चुप खडी रह गई। सदा से विपरीत इस बार मथुरासिंह ने ही उससे पूछा, "राधा ! लालाजी घर पर है ?"

"नही।" बहुत धीमी आवाज मे उसने उत्तर दिया। और लौटने लगी तो राधा की माँ द्वार पर आ गई और बोली, "आओ मथुरे ! आ जाओ। कब आये हो ?"

"चाची !" मथुरासिंह ने द्वार के बाहर खडे-खडे ही कह दिया, "आज ही आया हूँ। चाचा से मिलने आया था।"

"तो आओ न। चाय-पानी पियो।"

"चाची, फिर आऊँगा।" आज मथुरासिंह के हृदय मे भी सकोच हो आया था। पहले तो राधा और रमणीक भी उससे चिपट जाया करते थे। पिछले वर्ष से राधा ने पकडकर ले जाना छोड दिया था। वह मौखिक ही निमन्त्रण दिया करती थी और आज तो उसने यह भी नही किया था। कदाचित् राधा के इस व्यवहार ने ही मथुरासिंह के हृदय मे सकोच उत्पन्न कर दिया था। उसने कहा, "चाची ! चाचा कब तक आने वाले हैं ?"

"आज शाम तक लौटने का विचार था। कल प्रात काल के गये हुए है।"

"तो सवेरे आऊँगा।" इतना कह मथुरासिंह लौट गया। वह मन मे

सोच रहा था—राधा अब सज्ञान हो गई है। इस सज्ञान शब्द का उसके मन मे आते-आते ही राधा के सकोच का कारण उसके मन मे स्पष्ट हो गया। युवा लडकी है। एक युवक का घर मे, जब उसका पिता अथवा भाई घर मे नही, बुलाने मे सकोच होना स्वाभाविक ही है। वह अपने मन के मकोच का अर्थ भी समझ रहा था। उसने सोचा ठीक ही किया है उसने, जो इस प्रकार उनके घर मे नही गया। कोई ऐसा व्यक्ति देख लेता, जिसको विदित है कि लाला और उनका लडका घर मे नही है तो कुछ गलत अर्थ भी लगा सकता था। परन्तु क्या चाची मक्खनी इस बात को नही समझती ? मथुरा ने सोचा।

बेचारी सरलचित्त है और आज ससार मे हो रही बातो को जानती नही। उसको चाची मक्खनी के व्यवहार का अर्थ समझ आ गया।

वह घर लौटा तो उसका, पाठशाला के दिनो का, एक मित्र केहर-सिह उसके गाँव आने का समाचार पा, उससे मिलने आया हुआ था। भापा और केहरसिह मे बाते चल रही थी। मथुरा ने उसे देख कहा, "ओह, केहर! सुनाओ भाई, राजी हो ?"

"हाँ, मथुरा! बताओ पढाई खत्म कर आये हो या नही ?"

"अभी नही।"

"और पढकर क्या करोगे ? भापा तो कह रहे थे कि तुमको सेना मे भरती होना चाहिए।"

"केहर! तुम स्वय क्यो नही भरती होते ?"

"मैं भरती होने होशियारपुर गया था, परन्तु मुझे अस्वीकार कर दिया है।"

"अस्वीकार, पर क्यो ?"

"मेरा कद आधा इच कम है।"

"ओह!" मथुरा मन मे विचार करने लगा, यह कोई कारण नही अस्वीकार किये जाने का। वह केहरसिह से तीन इच ऊँचा था, पर वह उससे शारीरिक योग्यता के विचार से, सब प्रकार से श्रेष्ठ था।

जमादार ने कह दिया, "मथुरा! तुमको इनकार नही किया जा सकता।"

"हाँ, परन्तु मै अभी और अधिक पढना चाहता हूँ।"

"अच्छी बात है।"

कुछ देर बैठकर केहरसिह ने सुझाव दिया, "आओ मथुरा! तनिक घूम आये। आज तो बादल है, और खेत बहुत सुहावने लग रहे है।"

मथुरासिह उठकर उसके साथ चल पडा। छोटा-सा गॉव था, और उसमे से निकल बाहर खेतो मे जाना एक-डेढ मिनट का काम था। गाँव के बाहर एक शिव-मदिर था। मन्दिर के साथ ही एक कुआँ था। पशुओ के पीने के लिए जल का कुण्ड बना था और कुएँ से जल निकालने के लिये रहट लगा था। मन्दिर के पुजारी के बैल उस रहट को चलाते थे और मन्दिर के साथ लगी भूमि की सिंचाई करते थे।

जब रहट चल रहा होता था, तो उसकी ची-ची की आवाज सुन गाँव की स्त्रियाँ जल भरने आती थी और जब बैल इसे चला नही रहे होते थे तो भी स्त्रियाँ आती थी और स्वय रहट को चला, गगरे भरकर ले जाती थी।

केहर और मथुरासिह बचपन से ही उस कुएँ की जगत पर आ, जल भरने का दृश्य देखा करते थे। कुएँ की जगत पर बैठ, दूर-दूर तक दृष्टि जाने से खुले मैदान का दृश्य भी दिखाई देता था। वर्षा के दिनो मे घास-फूस उग आता था और मैदान का दृश्य और भी अधिक लुभायमान हो जाता था।

आज वे कुएँ की जगत पर बैठे तो पुजारी की लडकी सरस्वती जल भरने आई हुई थी। उसने अपना गगरा जल निकलने वाले स्थान पर रख दिया और इन दोनो युवको की ओर देखने लगी। वह सोच रही थी कि वे थोडा सा रहट को चला दे तो गगरा भर जायेगा।

मथुरासिह ने उसको खडे देखा तो रहट चलाने के लिये उठ खडा हुआ, परन्तु केहर ने उसकी बाँह पकड ली।

—३

मथुरासिंह ने प्रश्न-भरी दृष्टि मे उसकी ओर देखा तो केहर ने उँगली के सकेत से गाँव की ओर देखने को कह दिया।

मथुरासिंह ने देखा कि गगरा लिये राधा आ रही है। इससे उसने पूछ लिया, "तो ?"

"वे दोनो मिलकर चला लेगी।"

"तो मैं नही चला सकता क्या ?"

"पर तुम क्यो चलाओगे ?"

"मैं क्यो ? इसलिये कि वह चाहती है कि मैं चलाऊँ।"

इतना कह मथुरा ने हाथ छुडाया और रहट के जूए को धकेलना आरम्भ कर दिया। रहट ची-ची कर चलने लगा। इस समय राधा भी आ गई और सरस्वती ने गगरा उठाया तो राधा ने रख दिया। मथुरासिंह ने दो चक्कर और लगाये और राधा का गगरा भी भर दिया।

राधा ने देखा था कि मथुरा रहट चला रहा है। वह उसके हृष्ट-पुष्ट तथा लम्बे-चौडे शरीर को देख मुग्ध हो रही थी।

जब दोनो गगरे भर गये तो मथुरासिंह रहट छोड खडा हो, दोनो लडकियो की ओर देखने लगा। वह देख रहा था कि राधा सरस्वती से कही अधिक सुन्दर और उससे दो इच ऊँची है।

दोनो गगरे भर चुके थे। दोनो लडकियाँ गगरों को उठाकर घर तक जाने का विचार कर रही थी। केहरसिंह ने कह दिया, "सरस्वती ! मैं छोड आऊँ ?"

"तुझ चमार का हाथ लगने से जल पूजा लायक नही रह जायेगा।"

"धत् तेरे बामनी की ! मैं चमार हूँ ?"

राधा दोनो का वाक्-युद्ध देख, मुस्करा रही थी। मथुरा केहर के पास आ बैठा था। वह राधा का मुस्कराता हुआ मुख देख, अपने हृदय मे गुदगुदी अनुभव कर रहा था।

सरस्वती ने कहा, "सूद और कौन होते हैं ?"

"ओह ! तो तेरी माँ ने बताया है कि मैं चमार हूँ ?"

"सब गाँव वाले जानते है।"

"देखो! मैं चमार का बेटा कैसे प्यार कर सकता हूँ?"

केहरसिह लपककर उसको पकडने दौडा। सरस्वती गगरा वहाँ ही छोड, मन्दिर की ओर भागी। मथुरा ने केहर की बाँह पकड ली।

केहर को चमार कहा जाने पर क्रोध चढ आया था। राधा ने सरस्वती का गगरा उठाया और मन्दिर मे ले गई। मथुरासिह ने केहर को कहा, "दोस्त! यह क्या करने लगे थे?"

"कुछ नही। केवल उसका मुख चूम लेता। ऐसा तो मैं बचपन मे कई बार कर चुका हूँ।"

"परन्तु अब तो वह बच्ची नही है।"

"हाँ। और मैं इसका अपहरण करूँगा।"

मथुरासिह इस बात को सुन, रोमाचित हो उठा। वह कुछ कहने ही वाला था कि राधा गगरा छोड मन्दिर से बाहर आ गई। वह अपना गगरा उठाकर चल दी। जब तक वह सुनने से दूर नही चली गई, वे बैठे रहे। मथुरासिह ने अभी भी केहर की बाँह पकडी हुई थी।

केहर ने अपनी सफाई देते हुए कह दिया, "मथुरे! मैं इस लडकी से प्रेम करने लगा हूँ। मेरा विवाह तो इससे हो नही सकता। इसलिए मैं इसे एक दिन उठाकर ले जाऊँगा।"

"तुम गाँव मे रह नही सकोगे?"

"मैं कल ही दूसरे गाँव मे चला जाऊँगा और फिर एक दिन आऊँगा और इस बामन की बेटी को उठाकर ले जाऊँगा और अपनी बीवी बना लूँगा।"

"तुम जेल जाने की बात कर रहे हो।"

"इससे दो-तीन साल से अधिक की जेल नही होगी। पीछे यह भी मेरी ही बनकर रहेगी। न बाप रखेगा, न ही इससे कोई विवाह करेगा।"

"परन्तु यह कुकर्म मैं इस गाँव मे होता देख नही सकूँगा।"

"मैं तुम्हारे साथ उसको बाँटकर भोग कर सकता हूँ।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि मै इसको ले जाऊँगा तो तुम भी वहाँ आकर इससे प्यार कर सकोगे ?"

मथुरासिंह नौ मास के उपरान्त गाँव मे आया था और उसको इस छोटे से काल मे ही दो परिवर्तन हुए दृष्टिगोचर हो गए थे। एक तो राधा का सकोची एव लज्जाकुल हो जाना और दूसरा केहरसिंह का उच्छृङ्खल हो जाना।

मथुरासिंह ने वहाँ कुएँ पर बैठना उचित नही समझा। वह विचार कर रहा था कि सरस्वती का पिता घर पर नही है, इसी कारण सरस्वती स्वय जल भरने आई थी। जब वह आयेगा और सरस्वती की बात सुनेगा तो हो-हल्ला करेगा। यह ठीक है कि पडित जगदम्बाप्रसाद केहर से झगडा नही करता। वह शारीरिक शक्ति मे उसके बराबर नही। परन्तु गाँव मे उसकी मान-प्रतिष्ठा केहर से अधिक है।

केहर का पिता करतारचन्द जाति का सूद और हर समय शराब पीकर बदमस्त पडा रहता था। किसी समय मे वह होशियारपुर जिला कचहरी मे डिप्टी-कमिश्नर का पेशकार था। इससे वह पन्द्रह वर्ष नौकरी कर, पर्याप्त धन उपार्जित कर, गाँव मे आकर रहने लगा था। उस समय उसका लडका केहरचन्द पाँच वर्ष का था और वह तथा मथुरा इकट्ठे बरौडा के स्कूल मे पढने जाया करते थे। एक ही गाँव के, एक ही श्रेणी मे पढने वाले नित्य इकट्ठे तीन मील जाने और आने से गहरे मित्र हो गए थे। यह मित्रता रही पाँचवी श्रेणी तक। केहर पाँचवी श्रेणी मे अनुत्तीर्ण हुआ तो पढाई छोड, घर बैठ गया था। मथुरासिंह अध्ययन करता रहा। स्कूल के उपरान्त तो मथुरा लाहौर विद्यालय में प्रवेश पा गया। इन्ही दिनो केहर ने 'पौल' ले ली और केहरचन्द से केहरसिंह हो गया। मथुरा तो राजपूत था और इनके नामो के उपरान्त 'सिंह' का प्रयोग शताब्दियो से हो रहा था। अब केहर केशधारी हो गया और केहरसिंह होकर, अपने को मथुरासिंह के बराबर जाति का समझने लगा था।

एक दिन वह होशियारपुर सेना मे भर्ती होने भी गया था। परन्तु उसको स्वीकार नही किया गया। केहरसिंह का कथन था कि उसके छोटे कद के होने के कारण अस्वीकार किया गया है। वास्तविक बात यह थी कि उसने लिखाया था कि सिख होने से पूर्व वह हिन्दू और सूद था। तब उसे कारण बताये बिना ही अस्वीकार कर दिया गया था।

केहरसिंह ने यह ही विख्यात कर दिया कि आधा इच उँचाई कम होने के कारण उसको भर्ती नही किया गया।

केहरसिंह ने बरौडा गाँव के एक सिख युवक से मिलकर एक मोटर-ट्रक ले लिया था और उसमे होशियारपुर से बरौडा तक माल ढोता था। रुपया करतारचन्द का लगा था और काम केहर तथा सुरेन्द्रसिंह करते थे। सप्ताह मे तीन दिन केहर ट्रक चलाता था और तीन दिन सुरेन्द्र। एक दिन छुट्टी रहती थी। पूर्ण व्यवसाय मे तीन पत्तीदार थे। करतारसिंह पूँजी के कारण, केहरसिंह तथा सुरेन्द्रसिंह काम करने के नाते।

केहरसिंह की जेब मे रुपये छनछनाने लगे तो गाँव के पुरोहित की लडकी सरस्वती पर डोरे डालने लगा।

सरस्वती से यह पहली झडप नही थी। उससे नोक-झोक पहले भी होती रहती थी। इस पर भी उसको लपककर पकडने का यत्न तो पहली बार ही हुआ था। यदि मथुरासिंह न होता तो सम्भवत. केहरसिंह क्रोध एव कामाभिभूत क्या कर देता, कहना कठिन था।

मथुरासिंह ने उठते हुए कहा, "केहर! तुम ठीक नही कर रहे। चलो घर लौट चले।"

"तुम जाओ। मैं इस छोकरी को मुझे चमार कहने का मजा चखाना चाहता हूँ।"

"तो इसके घर मे घुस जाओगे?"

"कौन रोक सकता है मुझको?"

"उसका बाप घर पर होगा।"

"मै जानता हूँ, नही है। वह प्रात काल का बरौडा गया हुआ है।"

"तो मैं रोकूँगा तुमको ?"

"तुम क्यो रोकोगे ?

"गाँव की लडकी से बलात्कार नही होने दूँगा।"

केहर ने विस्मय मे मथुरासिह की ओर देखा। मथुरासिह खडा उसकी आँखो मे देख रहा था।

केहर ने देखा कि वह सत्य ही उसका विरोध करने को तैयार खडा है। वह नरम पड गया।

"मथुरा भापा! बस इस छोकरी के पीछे दोस्ती बह गई।"

"नही केहर! मैं तुमसे दोस्ती ही निभा रहा हूँ। तुम जेल की ओर जा रहे हो। मैं तुमको बचा रहा हूँ।"

केहर ने इसका उत्तर नही दिया और उठकर गाँव की ओर चल पडा। मथुरासिह उसके साथ था। इस पर भी दोनो चुप थे।

४

केहर अपने घर की ओर चला गया। मथुरासिह को सन्देह हो गया कि वह पुन लौटकर पुरोहित के घर की ओर जा सकता है। यदि पुरोहित घर पर नही तो सरस्वती और उसकी माँ घर पर अकेली ही होगी और वह उनको तग कर सकता है। इस कारण वह गाँव के उस किनारे पर बैठ गया, जो मन्दिर की ओर पडता था। वह मन्दिर से दूर बैठा, दो औरतो की रक्षा करने का आयोजन कर रहा था।

साय हो गई थी। पण्डित जगदम्बाप्रसाद सिर पर एक गठरी को उठाये, बरौडा की ओर से आता दिखाई दिया। वह मन्दिर मे चला गया तो मथुरा निश्चिन्त हो अपने घर को लौट गया।

उसका पिता उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। लाला देवीदयाल वहाँ बैठा मथुरा के विषय मे बातचीत कर रहा था। मथुरा आया तो सूरतसिह ने पूछ लिया, "किधर गये थे बेटा ?"

"भापा! गाँव में बहुत परिवर्तन हो रहे हैं।"

"क्या ?"

"यह केहरसिंह बहुत बदमाश हो गया है। अब वह गाँव की लड़कियों को तंग करने लगा है।"

"हाँ।" लाला देवीदयाल ने उसकी बात का समर्थन कर दिया, "जैसा बाप है, वैसा ही बेटा है।"

"नहीं चाचा! बाप तो किसी की बहू-बेटी पर बुरी दृष्टि नहीं रखता, परन्तु बेटा तो यह भी करने लगा है।"

"हाँ।" देवीदयाल ने पुनः उसकी बात का समर्थन कर दिया, "राधा कुछ बता रही थी। परन्तु मैंने ध्यान नहीं दिया। मैं तुमसे मिलने की शीघ्रता में था।"

सूरतसिंह ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया, "तो उसका साहस हो गया है कि राधा की ओर आँख उठाये।"

उत्तर मथुरा ने दिया, "राधा नहीं भापा! वह पुजारी की लड़की सरस्वती से बलात्कार करने वाला था। मैंने उसको रोक दिया। उस समय वह घर तो लौट गया, परन्तु मुझको भय था कि मेरे टल जाने पर वह पुनः वहाँ जा, उसको तंग करेगा। इस कारण भगाई के घर वाली पुलिया पर बैठा पुरोहित के घर की रक्षा कर रहा था।"

"तो यह बात है?"

"हाँ। अब पुरोहितजी घर पहुँच गये हैं और मैं आ गया हूँ।"

सूरतसिंह गम्भीर हो गया। देवीदयाल ने कहा, "मैं अभी पुरोहितजी के घर जाऊँगा और देखूँगा कि क्या किया जा सकता है। मैं इस गाँव में यह बात नहीं चलने दूँगा।"

सूरतसिंह कह रहा था, "यह लड़का मोटर-ड्राइवरों की संगत में रहकर खराब हो गया है। इसको गाँव से निकालना पड़ेगा।"

देवीदयाल होशियारपुर से कांग्रेस के कार्यालय से देश के समाचार लेकर आया था और वह सूरतसिंह को सुना रहा था। उसने बताया, "भापा! यह सुना जा रहा है कि जर्मनी से पुनः युद्ध होने वाला है।"

"सच? परन्तु तुमने छः महीने पहले भी तो बताया था कि युद्ध

होने वाला है। और हुआ नही।"

"बात मेरी ठीक थी, परन्तु अंग्रेज-प्रधान मंत्री ने और फ्रांस ने अपने मित्र चेकोस्लोवाकिया को धोखा दिया, समय पर उसकी सहायता नही की। परिणाम मे उस समय जर्मनी ने इस छोटी-सी कौम को आत्मसात कर लिया और लडाई नही हुई।

"परन्तु अब जर्मनी पोलैण्ड से कुछ भूमि चाहता है और पोलैण्ड देना नही चाहता।"

"क्यो चाहता है?" सूरतसिंह ने पूछ लिया।

"इसलिए कि जर्मनी बलवान है।"

"यह तो कोई कारण नही।"

"पर भापा! अंग्रेज अब बहुत दुर्बल है। वे किसी की भी सहायता नही कर सकते। महात्मा गांधी ने अंग्रेजो की कमर तोड दी है।"

"कैसे?"

"तीन सत्याग्रह-आन्दोलन चलाकर।"

सूरतसिंह हंस पडा, "भला यह नमक सत्याग्रह से कैसे इंगलैण्ड दुर्बल हो गया है?"

"भापा! अंग्रेज़ जानता है कि पहले युद्ध की भांति इस बार हिन्दुस्तानी सिपाही न तो भरती होंगे, न लडेंगे। सुभाष बोस ने तो घोषणा कर दी है कि युद्ध आरम्भ होते ही भारत मे सत्याग्रह आरम्भ कर दिया जायेगा।"

"तो क्या होगा?"

"होगा यह कि सरकार नेताओ पर अत्याचार करेगी और जनता भडक उठेगी। सेना भी विद्रोह कर देगी। यह अंग्रेज जानते है और वे हिटलर से लडने का साहस नही कर सकते।"

सूरतसिंह राजनीति नही समझता था। इस पर भी सेना मे रहने से वह सैनिक-मन की भावनाएं समझता था। उसने कह दिया, "सेना तो उसका साथ देगी, जो देश के लिए लडने का साहस रखता है। गांधी

सेना का कमाण्डर इन-चीफ बन सकेगा क्या ?"

"भापा ! गाधी ने तो एक पत्र हिटलर को भी लिखा है कि शान्ति ही अनुकरणीय है। इसी से लोक का कल्याण हो सकेगा।"

"तो हिटलर मान गया है ?"

"यह तो पता चला नही। हाँ, गाधीजी ने अपना कर्तव्य-पालन कर दिया है।"

"तो क्या यदि अब हिटलर ने लडाई की तो गाधी उसके विरुद्ध लडेगा।'

"वह क्यो लडेगा ?"

"देखो देवीदयाल ! अगर समझने पर भी केहर पुरोहित की लडकी को तग करे तो समझाने वाले का यह कर्तव्य नही हो जाता क्या, कि वह सरस्वती की रक्षा करे ?"

लाला देवीदयाल भौचक्का हो, मुख देखता रह गया। इस पर सूरत-सिह ने कह दिया, "अग्रेज ने चेकोस्लोवाकिया को हिटलर की तानाशाही के सम्मुख बलि चढा दिया है और यदि इस पर भी वह सन्तुष्ट नही हुआ तो उसको सबक सिखाना चाहिए न ?"

"बिना शक्ति के सबक कैसे सिखाया जा सकता है ?"

"तो शक्ति पैदा करनी चाहिए।"

"गाधी बाबा कहते है कि असली शक्ति मन की और सत्य की है।"

"हाँ, यह तो गाधी ठीक कहता है। मगर मन और सत्य की शक्ति का प्रकटीकरण तो तलवार और बन्दूक से होता है, इसका दर्शन चरखे मे नही। चरखा तो हिजडे भी घर मे बैठ, कात सकते है।"

"तो हम लोग हिजडे है ?"

"अरे यह नही कि चर्खा कातने वाले नपुसक है। मेरा तो कहना है कि नपुसक भी चर्खा कात सकते है। इस कारण चर्खा शक्ति का चिह्न नही।"

"देखो, जमादार ! ये चर्खा कातने वाले राजा बनेगे।"

"और सुनो, लाला ! कही ऐसा हुआ तो देश मे ऐसी दुर्व्यवस्था फैलेगी कि तबाही मच जायगी। हजारो मारे जायेगे तथा लाखो भूख से तडप-तडप कर मरें जायेगे। चोर-ठग, जुआरी पनपेगे और भले लोग दु खी हो रोया करेगे।"

लाला देवीदयाल हँस पडा। हँसते हुए कहने लगा, "नेकी से नेकी पैदा होती है। जैसे आम के पेड पर आम ही लगते है। गाधी के राज मे सब गाधी होगे।"

सूरतसिह सैनिक-प्रवृत्ति रखने से गाधीवाद को एक थोथा सिद्धान्त मानता था। वह कुछ अभी बता ही रहा था कि पुरोहित वहाँ आ गया। उसके साथ उसकी पत्नी तारा और लडकी सरस्वती भी थी। माँ-बेटी भीतर भगवती के पास चली गयी और पुजारी जमादार के पास बैठक मे आ गया। पुजारी ने कहा, "ठाकुर ! मै कल यह गाँव छोड रहा हूँ। यहाँ मेरी लडकी का मान सुरक्षित नही।"

"पण्डित ! केहर की बात मथुरा ने बताई है। मैं समझता हूँ कि सुबह तक सब ठीक हो जायगा।"

"मैं तो अपना घर छोड, रात यहाँ तुम्हारे द्वारे सोने आ गया हूँ।"

"ठीक है। रात तुम यही रहो और सुबह पचायत बुलाऊँगा। इस पापी को दण्ड दूंगा। नाक से लकीरे निकलवाऊंगा इससे।"

लाला देवीदयाल ने कह दिया, "पण्डित ही तो हो न ? डर कर भाग आये। हिम्मत करो। जिसका मन निर्भय है, उसको ससार मे कोई भी कष्ट नही दे सकता।"

"लाला !" पण्डित ने कहा, "दुष्ट को परास्त करने के लिए दुष्ट-जितना बल पैदा करना पडता है। जब अकेले मे बल न हो तो दूसरो से सहायता माँगी जा सकती है।"

"हाँ।" देवीदयाल ने गम्भीर हो कहा, "सहायता माँगी जा सकती है और सहायता मिलनी भी चाहिये। परन्तु नैतिक बल की सहायता ही काम आ सकती है। लडाई-झगडों से कुछ नही हो सकता।

"जमादार तो कहते हैं कि उसको गाँव से निकलवा देंगे ? परन्तु मेरा कहना है कि गाँव से निकाल देने से क्या केहर सरस्वती अथवा किसी अन्य लडकी से ज़बरदस्ती नही करेगा ?"

पुरोहित इन दो देहातियो से कुछ अधिक बुद्धि रखता था। उसने कहा, "लाला ! मैं जानता हूँ कि आप गाधीजी के चेले है और विचार-परिवर्तन मे विश्वास रखते है, परन्तु गाधीजी नीति-शास्त्र नही पढे हुए। इससे वे मन की पूर्ण कहानी को नही जानते। नीति मे सफलता के पाँच ढग बताये है—शम, दम, दान, दड, भेद। इनमे शम, दम, दान एव भेद शान्ति के उपाय है और दड अशान्ति का उपाय है। गाधीजी तो शान्ति मे भी सब उपायो को नही जानते। वे केवल शम के प्रयोग के विषय मे ही कहते रहते है। इसीलिए वे सफल नही हो रहे।"

"वाह, पडित ! सफल तो हो रहे है। पूर्ण देश उनके पीछे लग रहा है।'

"पूर्ण देश हिन्दू था। मुसलमान कुछ सहस्र इस देश मे आ गए और सात सौ वर्ष तक यहाँ राज्य करते रहे। हिन्दू बहादुर थे, नेक थे, बुद्धिमान थे, परन्तु केवल शम ही जानते थे। नीति के अन्य उपायो से अनभिज्ञ थे। अत कुछ नही कर सके। शेर शिवा ने दम, दान, दड, भेद की नीति चलाई तो मुसलमानो को परास्त कर दिया।

"परन्तु लाला ? मैं एक बात पूछता हूँ। क्या तुम्हारी पचायत बातो से केहर को समझा सकेगी ?"

"केहर भी इन्सान है। वह समझ जायेगा।"

' अच्छी बात है, समझाओ। समझ जाये तो ठीक है। इस पर भी जब तक उसका मन शुद्ध पवित्र नही होता, मुझको अपनी रक्षा का प्रबन्ध करना ही चाहिये। आज रात की रक्षा तो जमादार ही के घर मे रहकर करूँगा। इसके उपरान्त अपनी रक्षा इस गाँव से भाग कर और कही अन्यत्र छिपकर करूँगा।"

"तो यहाँ के शिवालय का क्या होगा ?"

"गाँव वाले किसी अन्य पुरोहित को यहाँ बैठा लेंगे।"

"अन्य से क्या मतलब?"

"संसार में एक मैं ही पुरोहित तो नहीं रह गया।"

"तो तुमको हम पर विश्वास नहीं है?"

"आप पर तो विश्वास है। परन्तु आपके उपायों को सफल होने में समय लगेगा और उससे पूर्व भी तो कोई खराबी हो सकती है।"

इतनी देर तक सूरतसिंह देवीदयाल की बातें सुनता रहा। जब उसने देखा कि पंडितजी की रक्षा आवश्यक है तो वह बोल उठा, "पंडितजी! इस घर में रहते हुए तो तुम्हारे ऊपर कोई उँगली भी नहीं उठा सकता। तुम कुछ दिन यहाँ रहो और इस काल में लालाजी को अपने ढंग से यत्न करने दो।"

इस पर पंडित गम्भीर भाव से विचार करने लगा। अब मथुरासिंह ने आश्वासन दे दिया। उसने कहा, "पंडितजी आप सरस्वती और सरस्वती की माँ को यहाँ रहने दो। आप स्वयं भी मन्दिर में पूजा पाठ कर यहाँ आकर रहना आरम्भ कर दें। जब आप समझें कि अब ठीक है और किसी प्रकार का भय नहीं रहा, तो आप मन्दिर वाले मकान में जा सकते हैं। हमारे मकान में अपना कुआँ है। इससे सरस्वती बहिन को जल भरने बाहर नहीं जाना होगा।"

पंडित को जमादार और उसके लड़के की बातों से अधिक आश्वासन मिला।

लाला देवीदयाल गाँव की पंचायत का मुखिया था। वह पैसे वाला व्यक्ति था। इससे उसकी बात चलती थी। उसका विश्वास था कि वह अपने धन-बल के आश्रय केहर को समझा सकेगा।

अतः उसने घर जा, अपने लड़के रमणीक को करतारचन्द के घर भेज, बाप बेटा दोनों को बुला भेजा।

रमणीक उत्तर लाया कि करतारचन्द तो सो रहा है और केहर बरौडा चला गया है। कल उसकी काम पर जाने की बारी है।

विवश अगले दिन देवीदयाल ने पचायत बुलाई और उसमे करतारचन्द को उपस्थित होने की आज्ञा भेज दी। करतारचन्द आया और पूछने लगा, "किसलिए बुलाया है, लाला !"

"तुम्हारे लडके के विरुद्ध मुकद्दमा है।"

"और तुम कौन हो मुकद्दमा सुनने वाले ?"

"मैं यहाँ का मुखिया हूँ। यह पचायत बैठी है।"

"मै न तुमको मुखिया मानता हूँ, न इसको पचायत।"

"तब तो पुलिस मे रिपोर्ट लिखानी पडेगी।"

"जरूर लिखानी चाहिए। और हाँ, याद रखना, झूठी रिपोर्ट करने वाले को दो वर्ष तक कैद का दड भी मिलता है।"

"यह देख लेगे।"

"तो ठीक है। मैं चलता हूँ। सुन लो लाला ! मुझको लडके ने पुरोहित की छोकरी की सब करतूत सुनाई है। वह केहर को पसन्द करती थी और उसके साथ भाग जाने की बात किया करती थी। कल जमादार के बेटे मथुरा को देख, उसका विचार बदल गया है। बस यही बात है, और कुछ भी नही।"

इतना कह करतारचद पचायत-घर से निकल गया।

पचायत के बाहर मथुरासिह बैठा था। करतारचद को भय लग गया कि मथुरा ने उसका लाछन सुन लिया है। मथुरा उसकी ओर घूरकर देख रहा था। इससे करतार थर-थर काँपने लगा। फिर एकाएक भयभीत वह वहाँ से भाग खडा हुआ।

मथुरासिह इस भागने का अर्थ नही समझ सका। वह अभी उसके भागने के विषय मे सोच रहा था कि पचायत उठकर बाहर आ गयी। देवीदयाल ने बताया, "करतार कह गया है कि हमारी सूचना गलत है। उसके लडके ने कुछ खराबी नही की। लडकी स्वय बदमाश है। वह केहर के साथ भाग जाने की योजना बना रही थी, परन्तु तुमको देख उसने अपना विचार बदल लिया है।

"पचायत का विचार है कि करतार की बात मे भी तथ्य प्रतीत होता है।" जब तक लडकी से बातचीत न की जाये, तब तक पचायत इस विषय मे कुछ भी तो कर नही सकती।"

"मथुरा देवीदयाल का यह वक्तव्य सुन, आश्चर्यचकित रह गया फिर उसने आवेश मे कहा, "चाचा! करतार झूठा है। पूर्ण बात मैंने अपनी आँखो से देखी और कानो से सुनी है। राधा भी तो सब सुन रही थी।"

"परन्तु मथुरा! तुम तो अभी कल ही आये हो। करतार तो कल से पहले की बात बता रहा है। राधा चौबीस घटे सरस्वती के पास बैठी नही रहती। वह तो वही बात बता सकती है, जो कल हुई है। उससे तो मुझको करतार की बात मे सच्चाई प्रतीत होती है।"

मथुरा इस प्रकार बात बदलती देख, चुपचाप घर लौट आया। घर पर पहुँच, वह पुरोहित को पचायत की बात बताने के हेतु बैठक मे जा पहुँचा। वहाँ उसका पिता हुक्का पी रहा था। मथुरासिंह ने पूछ लिया, "पुरोहितजी कहाँ है?"

"वे मन्दिर मे पूजा-पाठ के लिये गए है। क्यो, इतनी जल्दी कैसे आ गये हो?"

"पचायत समाप्त हो गई है।" मथुरासिंह ने देवीदयाल की बात बता दी। सूरतसिंह हँस पडा। हँसकर उसने कहा, "यह गाधी का चेला कुछ कर नही सकेगा। सबसे बडी बात तो यही है कि इनमे विचारशक्ति नही रहती। पहले ये भले और बुरे को एक ही स्तर पर खडा कर देते है। फिर इनके लिए यह निर्णय करना कठिन हो जाता है कि सच्चा कौन है, और झूठा कौन।

"देखो एक घटना मैं तुम्हे सुनाता हूँ। सन् १९२२ की बात है। महात्मा गाधी सत्याग्रह अर्थात् टैक्स न देने का आन्दोलन आरम्भ करने वाले थे। यह आन्दोलन तजोर के एक ताल्लुका मे आरम्भ होने वाला था। इस समय यू० पी० के एक गाँव मे बलवा हो गया। कुछ पुलिस वाले मारे गये और गाधीजी ने पूर्ण भारतवर्ष मे अपना आन्दोलन बन्द

कर दिया। तञ्जोर मे सत्याग्रह बन्द हो गया।

"इसके विपरीत मालाबार मे मुसलमानो ने एक बहुत बडे इलाके मे हिन्दुओ को मारा-पीटा, उनकी बहू-बेटियो को बेइज्जत किया तो उन मुसलमानो पर गाधीजी को दया आ गयी और उनको सरकार से छुडाने के लिए यत्न करने लगे। यही महात्मा गाधी की अहिंसा है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि जबरदस्त से रिआयत और भले पर दोषारोपण। गोरखपुर के चौराचौरी गाँव मे एक भीड ने पचास के लगभग पुलिस वालो की हत्या कर दी तो महात्माजी ने पूर्ण देश को दण्डित कर दिया। यह कह दिया कि देश अहिंसात्मक आन्दोलन चलाने के योग्य नही। और जब हजारो हिन्दू मारे गये, हजारो स्त्रियो का अपहरण हुआ तो कह दिया ये मुसलमान बेचारे भूले-भटके है। उन पर दया होनी चाहिये।

"देवीदयाल करतारचन्द से भयभीत हो गया और इस भय को छिपाने का यत्न करने लगा है।" इसका मथुरासिंह पर बहुत गहरा प्रभाव पडा। वह विचार करता था कि उसके पिता के कथन मे भी तो कुछ तत्व प्रतीत होता है।

५

मथुरासिंह रविवार के दिन देवीदयाल के घर गया। छुट्टी होने के कारण रमणीक पाठशाला नही गया था। आज राधा मे भी वह सकोच नही था, जो प्रथम दिन उसने प्रकट किया था।

राधा ने खाना बनाया। पराँठे थे, दही-भल्ले थे। अरबी और मटर का साग था। खीरे का रायता था। सब-कुछ बहुत यत्न से बनाया गया था। मथुरासिंह को बहुत स्वादिष्ट लगा। देवीदयाल, रमणीक और मथुरासिंह खा रहे थे, राधा खिला रही थी। मथुरासिंह ने पेट भरकर खाया और कह दिया, "चाचा! सब-कुछ बहुत स्वादिष्ट बना है। पेट भर गया है, पर तृष्णा नही मिटी।"

देवीदयाल ने मुस्कराकर कहा, "हमने दो थाल तुम्हारे माता-पिता के लिए तुम्हारे घर पर भी भेज दिये है।"

"यह तो चाचा, बहुत कृपा की है । मैं कभी यही विचार करता हूँ कि चाची मुझसे इतना स्नेह रखत - । मै इसका क्या प्रतिकार दे सकूँगा ।"

"हाँ ! चाची तुमको अपना ही बेटा समझती है और पुत्रो के साथ जो कुछ किया जाता है, वह किसी प्रकार के प्रतिकार के लिए नही किया जाता । परन्तु मथुरासिंह ! आज का सब-कुछ तो राधा ने बनाया है । आज प्रात ही उसने कह दिया था, 'माँ ! तुमको बनाना तो आता नही, सब खराब कर देती हो । आज मैं खाना बनाऊँगी ।' तुम्हारी चाची ने कहा, 'अच्छा देखे, मथुरे को पसन्द भी आता हे अथवा नही ?'

"बस, वह बनाने लगी और मक्खनी देखने लगी । तुमने पसन्द किया है तो ठीक है ।"

राधा गिलासो मे जल भर रही थी । मथुरा ने कह दिया, "राधा बहिन तो अब बहुत सुघड हो गयी है । चाचा ! इसका कही ठिकाना करो न ?"

राधा वहाँ से भाग खडी हुई । भागने मे रमणीक के गिलास को ठोकर लग गयी और सब जल उसकी थाली मे गिर गया ।

रमणीक ने कह दिया, "अरे, सब गोबर कर दिया है ।"

परन्तु राधा वहाँ नही थी । वह तो रसोई-घर मे जा छिपी थी ।

देवीदयाल हँस रहा था । चाची के माथे पर त्योरी चढ गई थी और रमणीक अपनी थाली बदलने के लिए शोर मचाने लगा था । माँ ने कहा, "तो तुम्हारा पेट अभी नही भरा ?"

"माँ ! पेट तो भर गया है । अब तो मैं चटनी चाट-चाटकर खाया-पिया हजम कर रहा था ।"

"तो हल्ला क्यो मचाया है । चटनी आ जाती है ।"

"पर राधा अब नही आयेगी ।"

मक्खनी के मुख पर मुस्कराहट आ गयी । उसने कहा, "तो स्वय जाकर ले आओ ।"

रमणीक चटनी की प्लेट लेकर रसोई-घर मे जा पहुँचा । राधा

किवाड के पीछे खडी खाने वालो की अ   ख रही थी। रमणीक ने कह दिया, "दीदी ! थोडी चटनी दे दो।

"ले लो। हल्ला किसलिए कर रहे हो ?"

"मै सब बात बता दूंगा।"

"क्या बता दोगे ?"

"तुमको बताऊँगा तो कान मरोड दोगी। तुमको नही बताऊँगा।"

"अच्छा जाओ बता दो। पीटे जाओगे।"

"मथुरा भापा से से ?"

'नही, बाबा से।"

"मैं तो केवल मथुरा भापा को ही बताऊँगा।"

"तो मैं तुमको पीटूँगी।"

"और मै हल्ला कर दूंगा।"

"अच्छा बाबा, चटनी देती हूँ। बताओ, अब तो किसी को कुछ नही कहोगे।"

राधा और सरस्वती की बाते रमणीक ने सुन ली थी। उस वार्त्ता-लाप मे राधा ने कुछ बताया था और रमणीक उसको सुनकर राधा को चिढाया करता था।

यो तो प्रत्येक युवक एव युवति अपने मन मे कल्पना के घोडे दौडाया करते है और वे उनको कभी अपने सखा-सखियो से बताते भी हैं। इसी से हँसी-ठट्ठा का कारण बन जाता है।

रमणीक चटनी लेकर आया तो माँ ने पूछ लिया, "बहिन से क्या कह रहे थे ?"

"माँ ! कह रहा था कि इतनी बडी हो गयी है और चलने का शऊर नही।"

"ओह ! और उसने क्या कहा है ?" देवीदयाल ने पूछ लिया।

"कहती थी जब उसकी भाभी आयेगी तो मुझको शऊर का पता लगेगा।"

—४

'तो उसकी भाभी आयेगी ?" देवीदयाल ने पूछ लिया।

"हाँ, बाबा ! जरूर आयेगी।"

"और रमणीक भैया !" मथुरासिंह ने पूछ लिया, "कहाँ लाओगे ?"

"भैया ! तुमको बता सकता हूँ, यदि माता-पिता से न कहने वचन दो।"

"अच्छा, नही कहूँगा।"

"तो फिर तुमको एकान्त मे बताऊँगा।"

इस समय राधा सबके हाथ धुलाने के हेतु लोटे मे जल एव तौलिया लेकर आ गयी।

सब उठकर हाथ धोने लगे। देवीदयाल मथुरासिंह को बैठक-घर मे ले गया और वहाँ बैठ, पूछने लगा, "भैया ! तुम्हारा विवाह कब होगा ?"

मथुरा ने बताया, "भापा कहते है कि मुझको सेना मे भरती होना चाहिये और पन्द्रह वर्ष वहाँ नौकरी कर, रिटायर होने के उपरान्त विवाह करना चाहिये।"

"तब तक तो तुम बूढे हो जाओगे।"

"नही चाचा ! वही तो पूरी जवानी का काल होता है। अभी तो मुझको अक्ल ही नही कि विवाह किसलिए किया जाता है।"

देवीदयाल हँस पडा। रमणीक और मक्खनी समीप बैठे थे। राधा बाहर बर्तन एकत्रित कर रही थी। मक्खनी ने कह दिया, "विवाह की बात तो बहू सिखा देगी। परन्तु तुम सेना मे भरती होगे, मथुरा ?"

"चाची ! भापा कहते है, यह हमारा जद्दी काम है। अपने पितरो का ऋण उतारने के लिए घर के सब मर्दों को सेना मे जाना चाहिये।"

"और कही वहाँ गोली लगने से मौत आ गयी तो ?"

"जीना-मरना तो अपने भाग्य से है। गोली, बन्दूक इत्यादि तो बहाना-मात्र है। मरने वाले तो चलते-चलते धूप खाकर मर जाते है।"

"तुम राजपूत, मानव-रक्त बहाकर क्या मजा लेते हो ?"

"कुछ तो मजा आता है। देखो मैं बताऊँ, उस दिन जब पचायत बैठी थी और करतार जब सबको अँगूठा दिखा गया तो तीसरे पहर मै बरौडा चला गया। वहाँ जाकर मैने केहर का पता किया, वह सुरेन्द्रसिंह के घर पर मिल गया। मैंने तो उससे पूछा कि उसने मेरे विषय मे अपने पिता से क्या कहा है ? वह कहने लगा कि उसको मेरा व्यवहार देखकर, यही समझ आया कि मैं सरस्वती को अपने लिए सुरक्षित रखना चाहता हूँ। इससे वह उसका विचार छोड गयी है।"

"मैंने केहर को, सुरेन्द्रसिंह के देखते-देखते इतना पीटा कि वह आज भी मरहम-पट्टी करा रहा होगा।"

"यह तो बहुत बुरा किया है तुमने ?" देवीदयाल ने कह दिया।

"क्या बुरा किया है ?"

"उसके सुधारने मे बाधा खडी कर दी है।"

"नही चाचा ! उसको इतना भयभीत कर दिया है कि मेरे रहते, वह गाँव मे कदम नही रखेगा।"

"और तुम्हारे सेना मे भरती हो जाने के उपरान्त ?"

"तब तक सरस्वती का विवाह हो जायेगा, और इसके ससुराल मे इसकी पहुंच नही हो सकेगी।"

"कहाँ विवाह हो रहा है उसका ?"

"पुरोहितजी गये है। आशा है सब प्रबन्ध करके ही लौटेगे।"

"तो तुम जरूर भरती होगे ? हमारे नेता तो यह कहते है कि अंग्रेज की सेना मे भरती नही होना चाहिये।"

"तो वे अपनी सेना बनायेगे क्या ?"

"नही। वे तो अहिसा का व्रत लिये हुए है।"

"वह क्या होता है ?"

"किसी के प्रति वैर न रखना, किसी को हानि न पहुंचाना। किसी को मारना तो महापाप है।"

"केहर-जैसे कामी, क्रोधी और झूठ बोलने वालो को भी ?"

"भैया ! कौन कह सकता है कि वह झूठा है ?"

"मेरे विषय मे तो उसने झूठ बोला है। मेरे मन मे तो सरस्वती के प्रति बुरा विचार कभी नही आया।"

"पर जब वह कहता है तो कैसे कहा जाये कि वह झूठ कह रहा है। उसका विचार गलत हो सकता है, परन्तु जो उसके मन मे था, वही तो उसने कहा है। उसने झूठ नही बोला।"

"चाचा ! हो सकता है मेरे विषय मे गलत विचार हो, परन्तु उसको बिना उस विचार की जाँच-पडताल किए, किसी को कहना नही चाहिए था। यह उसकी दुष्टता है कि बिना प्रमाण के वह मुझको अपराधी बताने लगा है। सरस्वती के विषय मे भी जो-कुछ उसने कहा है कि वह उसके साथ भाग जाने को तैयार थी, झूठ है।"

"हाँ, राधा भी यही कहती है।"

"तो ऐसे आदमियो से वैर भी होगा। लडाई भी होगी और फिर उनका रक्त बहाकर मजा भी आयेगा।"

"महात्माजी कहते है कि यही तो मनुष्य की गलती है।"

"महात्मा गाधी बडे है या भगवान् कृष्ण ?"

"भगवान् कृष्ण पुराने जमाने के जीव थे। महात्मा आज के है। आज क्या करना चाहिए, वह ही बता सकते है जो आज जीवित है।"

लाला की बात वजनदार प्रतीत होती थी। इस पर भी मथुरासिंह का विचार था कि इस युक्ति मे भी दोष है। उसने गम्भीर हो विचार किया और फिर पूछ लिया, "क्या मानव-मन मे इस युग मे परिवर्तन आ गया है ? क्या अब लोग पूर्व काल से अधिक युक्तियुक्त व्यवहार एवं विचार रखते हैं ?"

उसको केहरसिह की बातो से ऐसी कोई बात प्रतीत नही हुई थी। परन्तु लाला देवीदयाल ने यह कह दिया, "हाँ, आज मानव ने रेल, तार बना ली है और इससे देश-देश, सीमाएँ पार कर एक होते जा रहे है।"

मध्याह्नोत्तर तीन बजे वह लाला के घर से निकला तो उसको अपने से कुछ आगे राधा गगरा लिए, कुएँ की ओर जाती हुई दृष्टिगोचर हुई। इस विचार से कि वह रहट को चला दे तो राधा को पानी भरने मे सुभीता रहेगा, वह भी कुएँ पर जा पहुँचा। उसके जाने से पूव ही राधा ने रहट के जूए को धकेलना आरम्भ कर दिया था। उसको पर्याप्त बल लगाना पड रहा था, और उसका मुख बल लगाने से लाल हो रहा था। मथुरा ने राधा को कहा, "छोडो, जाओ गगरे को पकडो।"

राधा ने कृतज्ञता-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा और मुस्कराकर गगरे को, जिसमे पडता हुआ जल बहुत-सा बिखड रहा था, पकडकर सीधा कर दिया।

एक ही चक्कर मे गगरा भर गया। मथुरा ने जूए को छोडा और राधा के समीप आ खडा हुआ। राधा तनिक साँस ले रही थी और जल-प्रवाही के पास बैठी थी।

"तुम रमण को साथ लेकर क्यो नही आती ?"

"वह नही आता।"

"तो फिर कैसे किया करोगी ?"

"पहले सरस्वती होती थी तो दोनो मिलकर चला लेती थी। अब वह आपके घर मे है।"

"तो उसको साथ ले आती।"

"वह डरती है कि पुन कही केहर न आ जाये।"

"और तुमको भय नही लगता।"

"नही।"

"क्यो ? तुम केहर से अधिक बलवान हो क्या ?"

"मैं ससार के सब युवको से बलवान हूँ।"

"मुझसे भी ?"

"परन्तु आप तो बहुत ही भले जीव ९ '
जानती हो ?"

"आपकी आँखे देखकर।"

"ओह ! राधा बहिन ! किसी दूसरी औरत के साथ आया करो। यह काम तुम्हारे अकेले के मान का नही।"

"मैं समझती हूँ कि कुछ दिनो मे मुझको इसके चलाने का अभ्यास हो जायेगा।"

"फिर भी अकेले मे ठीक नही।"

"तो आप साथ आ जाया करिये।"

"पर मैं तो कल जा रहा हूँ।"

"कहाँ ?"

"यहाँ से धर्मशाला, वहाँ से कुल्लू। कुल्लू से शिमला जाऊँगा।"

"कैसे ?"

"पाँव से चलकर।"

"कितने दिन लगेगे ?"

"एक महीना।"

राधा टुकर-टुकर मुख देखती रह गयी।

"क्यो ?"

"आपसे मिलकर जी नही भरा।"

"यदि मैं पास हो गया तो फिर तुरन्त लाहौर जाना पडेगा और यदि फेल हो गया या कम अक लेकर पास हुआ तो फिर गाँव मे ही रह जाऊँगा।"

राधा ने एक ठडी साँस ली और गगरा उठा चलने लगी। मथुरा-सिह ने पूछ लिया, "क्यो, क्या बात है ?"

"मैं मन मे विचार करती हूँ कि मैं रमणीक होती तो आपके साथ घूमने चलती और बहुत मजा रहता।"

मथुरा समझ गया कि लडकी एव लडके मे सामा-रेखा वह अनुभव करने लगी है। इससे उसने कह दिया, "राधा ! तुम्हारा विवाह होगा। जीजाजी आयेगे और फिर उनके साथ घूमने जा सकोगी।"

"राधा की आँखे तरल हो गयी। उसने अपने होठो मे ही कह दिया, "यह नही होगा।"

मथुरा ने इस वाक्य को कानो से नही सुना। वह तो उसके होठो के चलने को देख ही समझ सका था। इस कारण उसने पूछ लिया, "क्यो ?"

राधा ने उत्तर नही दिया। वह गगरा कमर पर रख चल पडी। मथुरासिंह वही कुएँ के जल-कुण्ड के समीप खडा, उसे जाते देखता रह गया।

वहाँ से घर लौटा तो पुरोहित लाहौर से वापस आ गया था। वह सूरतसिंह से कह रहा था, "मै सरस्वती के विवाह का प्रबन्ध कर आया हूँ।"

"कहाँ तय किया है, रिश्ता ?"

'पडित गिरधर शर्मा 'सनातन धर्म महामण्डल' मे क्लर्क है। उनका एक लडका है। वह एक स्कूल मे अध्यापक है। पडितजी की पत्नी तारा की मौसी है। वह लडकी को देख चुकी है। कुछ बातचीत पहले भी हुई है। अब बात पक्की कर आया हूँ। विवाह आगामी मास की बीस को लाहौर मे ही होगा।"

"पडितजी यह तो बहुत अच्छा किया है।" सूरतसिंह ने कह दिया।

"तो जमादारजी ! आप विवाह के लिये चलेंगे ?"

"जरूर चलूँगा।"

"क्यो भैया, मथुरा ?"

"पडितजी ! मैं शिमला जा रहा हूँ। वहाँ से सीधा लाहौर पहुँच जाऊँगा। आप पता बता दीजियेगा।"

"अस्पताल रोड, हिन्दी भवन के सामने है उनका मकान। वे ही मेरे लिए मकान की व्यवस्था करेंगे।"

"ठीक है। पहुँच जाऊँगा। बीस अगस्त को न ?"

"हाँ।"

६

केहरसिंह को सत्य ही बहुत बुरी तरह पीटा गया था। जब मथुरासिंह उसको रक्त मे लथपथ वहाँ छोड, चला गया तो सुरेन्द्रसिंह, जो यह सब-कुछ देखता हुआ सामने खडा था, केहर से पूछने लगा, 'पुलिस मे रिपोर्ट लिखाओगे ?''

केहरसिंह ने विचार किया और कह दिया, "नही।"

क्यो ?''

"तुम-जैसे साथी के रहते रिपोर्ट से क्या लाभ होगा ?"

"मै क्या करता ?"

"तुम मेरे साथ सम्मिलित हो जाते तो उसको नानी याद आ जाती।"

"दो जने एक पर पिल जाते ?"

"मैं दुर्बल जो था।"

"दुर्बल होते हुए तुमने उससे झगडा क्यो किया ?"

"मेरा विचार था कि वह मेरा मित्र है और बात हँसी-मजाक मे उड जायेगी।"

"यही तो मै कह रहा हूँ कि वह तुम्हारा मित्र है। मित्र-मित्र लडे तो बीच मे मै क्यो दखल दू।"

"ठीक है। इसी कारण मैं रिपोर्ट नही लिखा रहा। मै उससे सुलह कर लूँगा।"

तीन दिन तक मरहम-पट्टी करने के पश्चात् केहरसिंह ठीक हुआ। एक दिन और प्रतीक्षा कर, वह अपने गाँव जमादारपुर मे जा पहुँचा। गाँव मे पहुँच, वह सीधा जमादार के घर पहुँचा। वहाँ जाकर उसने जमादार से मथुरासिंह के विषय मे पूछा।

वह तो घर पर नही है।" सूरतसिंह ने कह दिया।

"कहाँ गया है ?"

'धर्मशाला, कुल्लू शिमला को।"

"क्या करने ?"

"सैर करने ।"

'मैं उससे मिलने आया था ।"

"तुमने यहाँ आकर ठीक नही किया ।"

"क्यो ?"

"गाँव वाले तुम्हारे सरस्वती के व्यवहार को पसन्द नही करते ।"

"मै गाँव वालो की परवाह नही करता । भाषा ! मैं तुम्हारा मान करता हूँ । मथुरा से मेरा प्यार है । परन्तु लाला देवीदयाल और उसकी पचायत को मै अँगूठा दिखाता हूँ ।"

"परन्तु हम भी तो तुम्हारे व्यवहार को पसन्द नही करते ।"

"मैं सरस्वती से प्रेम करता हूँ ।"

"तुम मूर्ख हो ? एक सूद का लडका ब्राह्मण की लडकी से विवाह नही कर सकता ।"

"भापा ! आज बीसवी सदी भी आधी खत्म होने जा रही है । यह बामन-खत्री की बात आज चल नही सकती ।"

"परन्तु क्या इस जमाने मे बलपूर्वक अपहरण भी क्षम्य हो गया है ?"

"नही । मैं मिन्नत-समाजत कर, उसके पिता को मना लूंगा ।"

"तो जाओ मन्दिर मे उससे मिल लो । मगर यहाँ इस घर मे न आना ।"

"क्यो ?'

"सरस्वती यहाँ रहती है ।"

"अकेली ?"

"नही । माँ के साथ । पुजारी भी रात यही सोता है ।"

"तो मैं पडितजी से मिलकर बात कर लूंगा ।"

"हाँ ।"

"आप भी मेरी सिफारिश कर दे ।"

"मैं जो-कुछ कहना चाहता हूँ, वह पुरोहित को कह दूंगा। तुमको नही बता सकता।"

"तो मेरे विपरीत कहोगे?"

"यह तुम्हारे व्यवहार पर निर्भर है।"

"किस व्यवहार से भापा! मेरे सहायक हो सकेंगे?"

"जैसे तुमको स्वतन्त्रता है किसी से प्यार करने की, वैसे ही सरस्वती को भी स्वतन्त्रता है कि वह जिससे चाहे, प्यार न करे।"

"परन्तु मुझको तो उससे बात भी करने नही देते। फिर उसके मन की बात कैसे जानूं?"

'तुमको जानने की आवश्यकता नही। मैं स्वय जान लूंगा। वह अभी अल्पवयस्क है। इससे उसके बाप के विचार उसके विचार है।"

"तो क्या उसका पिता उसका विवाह उसके वयस्क होने तक नही करेगा?"

"हाँ, यदि वह कहेगी कि वह अभी विवाह करना नही चाहती तो नही करेगा।"

केहरसिह सूरतसिह की बात को गलत नही कर सका। वह उठकर जाने लगा तो सूरतसिह ने उसको कह दिया, "और सुन लो, यदि तुमने कुछ भी बात बलपूर्वक करने का यत्न किया तो मेरे पास भरी बन्दूक पडी रहती है और मै बहुत ही ठीक निशानेबाज़ हूँ।"

"केहरसिह ने इस धमकी का उत्तर नही दिया और मन्दिर मे पहुंच गया। पुरोहित जगदम्बाप्रसाद शिव-पूजन कर मन्दिर से निकला ही था कि केहर उसके सामने जा खडा हुआ। पडित पहले तो डरा। पीछे साहस बाँध उसकी आँखो मे देख, पूछने लगा, "किधर जा रहे हो केहर!"

"आपसे मिलने आया हूँ।"

"किसलिए?"

"आप गाँव के मुखिया के पास चलो।"

'किसने बनाया है उसको मुखिया।"

'गाँव वालो ने।"

'मै उसको अपना मुखिया नही मानता।"

"पडितजी! चले चलिये। भले ही बात न मानिये।"

"तो उसको यहाँ ले आओ। मै उसके द्वार पर नही जाऊँगा।"

"क्यो ?"

"मैं बताना नही चाहता। बस इतना ही समझ लो कि मेरा चित्त नही करता।"

"तो आप यहाँ ही मिलेगे ?"

"हाँ। यदि उसने आना है तो मै आधा घण्टा तक यहाँ प्रतीक्षा कर सकता हूँ।"

केहर गया तो उसके साथ देवीदयाल और उसका एक साथी—पच कर्मू जुलाहा आ गया। पडित जगदम्बाप्रसाद मन्दिर के बाहर पीपल के वृक्ष के नीचे बैठा था। उसने स्वय कोई कपडा आसन इत्यादि नहीं बिछाया था और इन आने वालो के लिए भी कुछ बिछाया नही गया। तीनो बैठे तो पुरोहित ने पूछ लिया, "हाँ, लाला! बताओ, क्या कहना चाहते हो ?"

"यह केहर मेरे पास आया था और कहता था कि यह सरस्वती से विवाह करना चाहता है।"

"मैने इसको कहा है कि तुम यह विवाह नही करोगे। लडकी नाबालिग है। इस कारण भी विवाह हो नही सकेगा।

"यह कहता है कि यह आपके हृदय परिवर्तन के लिए यत्न करना चाहता है। मैं समझता हूँ यह ऐसा करने का अधिकार रखता है।"

"तो फिर ?"

"यह अपने मन की बात आपको मेरे सम्मुख बताना चाहता है।"

"बता सकता है।"

अब केहरसिंह ने कहा, "पडित! मैं सरस्वती से विवाह करना

चाहता हूँ। इस समय मै मोटर-ट्रक की आय के आधे का मालिक हूँ। इस प्रकार सब खर्चे देकर मुझको पन्द्रह-बीस रुपये नित्य बचते है, अर्थात् मुझको पाँच सौ रुपये महीने की आय होती है।

"मैं केहरसिंह हूँ। गुरु का प्यारा हूँ। नियम से रविवार के दिन गुरुद्वारे जाता हूँ। पाठ सुनता हूँ और प्रसाद लेकर आता हूँ।

"मैं अपनी पिछली बातो के लिए क्षमा चाहता हूं और चाहता हूं कि मेरी अर्जी मजूर की जाये। इस समय गाँव मे सबसे ज्यादा कमाता हूँ। इस समय भी मेरे पास पाँच-छ हज़ार जमा है।"

इतना कह केहर प्रश्न-भरी दृष्टि से पुरोहित की ओर देखने लगा। पडित ने पूछा, "बस या और कुछ ?"

"बस।"

"तो मैं तुम्हारी बात मान नही सकता।"

"क्यो ?"

"सीधी बात है। तुम जाति के सूद हो। एक ब्राह्मण की कन्या जो सस्कृत पढती है, सन्ध्योपासना करती है, पुरोहित का कार्य कर सकती है, तुमसे विवाही नही जा सकती। यह अधर्म होगा।"

"परन्तु आज तो महात्मा गाधी इस जात-पाँत के झगडो को देश के लिये हानिकारक समझते है।"

"मैं महात्मा गाधी का चेला नही।"

"पर आप खद्दर तो पहनते हैं ?"

"यह गाधीजी के कहने पर नही। बल्कि इसके अपने गुणो के लिये है।"

"तो फिर मैं गाधीजी द्वारा बताया गया उपाय प्रयोग करूँगा।"

"क्या ?"

"मै इस मन्दिर के द्वार पर आज से भूख-हडताल कर दूंगा।"

"तो क्या होगा ?"

"परमात्मा आपको प्रेरणा देगा कि आप मेरे हृदय की सच्चाई मान,

मेरी बात मान जाये ।"

"जो मन मे आये करो । मैं यह विवाह नही मानूंगा ।"

"तो ठीक है, लाला देवीदयालजी ! केहरसिंह ने कहा, "मैं यहाँ इसी पीपल के पेड के नीचे बैठ, भगवद्भजन करूँगा ।"

देवीदयाल के साथ आये कर्मू जुलाहे ने अपनी कमर से चादर खोल बिछा दी और केहरसिंह उस पर लेट गया ।"

पडित ने उठते हुए कहा, "भगवान् जानता है कि मैं धर्मानुकूल बात कर रहा हूँ । मैं तुमको अपनी लडकी के उपयुक्त वर नही समझता ।"

पडित गया तो देवीदयाल ने कह दिया, "शाबाश, केहर ! डटे रहोगे तो अपने उद्देश्य मे सफल हो जाओगे ।"

पुरोहित ने सूरतसिंह की सम्मति से सस्वती की लाहौर मे सगाई का समाचार किसी को भी बताया नही था । इस कारण देवीदयाल तथा गाँव के दूसरे लोग नही जानते थे कि लडकी की सगाई हो चुकी है । पुरोहित इस नई परिस्थिति से चिन्ता अनुभव करने लगा था । उसका अनुमान था कि यदि कुछ दिन भी केहर की भूख-हडताल चल गई तो गाँव मे और कदाचित् दूसरे गाँव के लोग इसको देखने आने लगेगे और उसकी लडकी के चरित्र के विषय मे, भगवान् जाने क्या-क्या चर्चा होने लगेगी ।"

वह जमादार के घर केहर की बात बताने के लिए जा पहुँचा । सूरत-सिंह उसके भूख-हडताल की बात सुन, हँस पडा । हँसकर उसने कहा, "मैं समझता हूँ, यह सब झगडा, देवीदयाल की राय से हो रहा है । वह ससार मे सबको गाधी का अनुयायी मानता है ।"

फिर कुछ विचारकर, उसने कहा, "पडित ! मेरी राय मानो तो लडकी को लेकर आज ही लाहौर चले जाओ । वहाँ विवाह कर ही लौटना । विवाह पर चलने का निमत्रण किसी को मत दो । मैं और मथुरा सीधे वहाँ पहुँच जायेगे ।"

"ठीक है । मैं कल बहुत प्रातःकाल यहाँ से निकल जाऊंगा, और

बरौडा से होशियारपुर जाने वाली पहली बस मे ही चला जाऊंगा।

"सामान की बात है। वह यजमान, तुम पीछे होशियारपुर से लाहौर के लिए बुक कर देनी।"

"हो जायेगा। तुम सब बाँधकर रख जाओ, और देखो, जाने की बात किसी से मत कहना।"

अगले दिन देवीदयाल केहरसिंह के भूख-हडताल की दूर-दूर गाँव मे डुग्गी पीटने लगा। पहले तो लोग इसको हँसी समझते रहे फिर धीरे-धीरे तमाशे के विचार से आने लगे, और एक सप्ताह मे लोग केहरसिंह को, लडकी के प्रेम मे बलि चढने की बात से, देवता मान, उसकी पूजा करने लगे।

बात पुलिस तक पहुंची, और बरौडा से पुलिस-मोटर वैन लेकर आ गयी, और केहरसिंह को उठाकर ले गयी, उन्होने उसको सरकारी अस्पताल मे रखा, और बलपूर्वक भोजन देने लगे। कुछ दिन मे ही वह स्वेच्छा से भोजन लेने लगा। अब उसके विपरीत आत्महत्या करने का यत्न करने के अपराध मे मुकद्दमा चलाया गया।

मुकद्दमे की पैरवी केहरसिंह का बाप करता रहा था। इस समय सरस्वती के विवाह के लिए जमादार सूरतसिंह अपनी पत्नी-सहित लाहौर चला गया। निश्चित तिथि के दिन मथुरासिंह भी वहाँ पहुँच गया।

: ७ :

मथुरासिंह लाहौर एक अन्य साथी के साथ पहुँचा। यह लाहौर का एक प्रख्यात वकील था। नाम था त्रिलोकचन्द्र।

त्रिलोकचन्द्र १९२१ से राजनीति मे सक्रिय भाग ले रहा था। १९२२ मे वह छ मास का कारावास का दण्ड भी पा चुका था। सन् १९२७ मे वह लाहौर की एक सस्था 'नौजवान भारत सभा' के आन्दोलन मे पकडा गया और उसे दो वर्ष का कारावास का दण्ड मिला, परन्तु अपील करने पर दण्ड छ मास का रह गया था। इसके उपरान्त वह राजनीति, विशेष रूप मे अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का अध्ययनकर्ता एव प्रवक्ता हो गया।

त्रिलोकचन्द्र ने नमक-सत्याग्रह और उसके उपरान्त के १९३२ के सत्याग्रह मे भाग नहीं लिया था। वह अब लाहौर मे वकालत करता था और विदेशो की राजनीतिक स्थिति पर लेख लिखा करता था। इस वर्ष वह मिनाली घूमने गया हुआ था। वहाँ से उसकी इच्छा हुई कि पैदल मार्ग से शिमला जाये। जाते हुए, मार्ग मे मथुरासिह मिल गया। परिचय हुआ और उपरान्त मित्रता हो गयी।

दस दिन मार्ग मे और फिर पन्द्रह दिन शिमला मे दोनो इकट्ठे रहे। त्रिलोकचन्द्र के पास शिमले मे एक मकान था और वहाँ उसका परिवार गया हुआ था। त्रिलोकचन्द्र ने मथुरासिंह को निमन्त्रण दिया और वह उसी के साथ उसके मकान मे ठहर गया।

मथुरासिह को यह जान, विस्मय और प्रसन्नता हुई कि एक पजाब हाई कोर्ट मे वकालत करने वाला वकील भी वैसा ही विचार करता है, जैसा उसका पिता रखता है। मथुरासिंह ने बताया, "मेरे पिताजी आठवीं श्रेणी तक पढे है। वे अग्रेजी की वर्णमाला और कुछ दस बीस शब्दो से अधिक नहीं जानते, परन्तु गाधीजी के आन्दोलनो के विषय मे वे कुछ वैसा ही विचार करते है, जैसा आप कहते है।

दोनो शिमला मे 'माल' पर घूम रहे थे। त्रिलोकचन्द्र ने कहा था, "योरुप मे युद्ध होने वाला है।"

"यह तो समाचार-पत्रो के पढने से कोई भी अनुमान लगा सकता है।" मथुरासिंह ने कह दिया।

"मैने १९३३ मे लाहौर के 'ट्रिब्यून' मे एक लेख लिखा था। लेख था, 'कमिग वार एण्ड गाधीजी'[1]

"उस लेख मे मैंने जहाँ यह बताया था कि योरुप मे युद्ध अवश्य होगा, वहाँ मैंने यह भी लिखा था कि क्यो होगा। युद्ध तब होते हैं, जब ससार मे 'इविल फोरसिज'[2] प्रबल हो जाती है। ये दो प्रकार से प्रबल होती

१ भावी युद्ध और गाधीजी।

२ दुष्ट शक्तियाँ।

हैं। एक, जब दुष्ट शक्तियो के पास साधन बढ जाते है। दूसरे, जब श्रेष्ठ शक्तियाँ आलस्य, प्रमाद अथवा विषय-वासना मे लिप्त होकर अपने को दुर्बल कर लेती है। कभी कभी भले लोग अपनी मिथ्या मानवता से भी अपने-आपको दुर्बल बना लेते हैं।

"सन् १९१४ से '१८ के युद्ध के उपरान्त ये दोनो ही बाते हुई थी। ससार की डैमोक्रेटिक शक्तियाँ युद्ध मे विजयी हुई। वे चाहती थी कि जर्मनी पुन शक्तिशाली न हो। इन्होने इसके लिये यत्न भी किए। जर्मनी पर प्रतिबन्ध लगाए। दूसरी ओर उन्होने 'लीग ऑफ नेशन्ज' बनाई, जिससे सयुक्त सुरक्षा की व्यवस्था हो सके।

"परन्तु दोनो बातो मे सैद्धान्तिक भूल हुई थी। वे भले और बुरे लोगो का बँटवारा देशो की सीमाओ से करते थे। वे मानने लगे थे कि जर्मनी देश की सीमाओ मे रहने वाले सब दुष्ट और मूर्ख है और फ्रास तथा इग्लैड की सीमाओ मे रहने वाले सब भले एव बुद्धिमान है।

" 'लीग ऑफ नेशनज' मे 'भला' होने के कुछ लक्षण निश्चय होने चाहिये थे और यह उन भले लोगो अथवा राज्यो की अन्तर्राष्ट्रीय सस्था होनी चाहिये थी। अन्तर्राष्ट्रीय विषयो मे इन्ही रेखाओ पर कार्य होता तो भावी युद्ध की सम्भावना कम हो जाती।

"दूसरे, प्रजातत्र क्या है ? क्या प्रजातत्र का अर्थ प्रजा द्वारा प्रजा के लिये और प्रजा का राज्य है ? मै समझता हूँ कि यह परिभाषा गलत है। मेरा प्रजातत्र का अर्थ है, प्रजा मे से योग्य व्यक्तियो द्वारा, प्रजा से साझे हित के लिये राज्य को, प्रजा का राज्य कहते है।

"प्रजा के योग्य व्यक्ति का निर्वाचन का ढग प्रौढ मताधिकार के नही हो सकता है। इससे तो प्राय बक-झक करने मे योग्य ही निर्वाचित होते है। जाति के योग्य एव कार्यकुशल नेताओ के चयन करने का यह ढग गलत है। साथ ही जाति के साझे हित बहुत कम हैं और पार्लियामेट के मूढ़ सदस्य अपनी शक्ति को विस्तार देने के लिए उन कार्यों को भी अपने हाथ मे लेते चले जा रहे हैं, जो साझे हित के नही। तीसरे, जातीय

विषयो मे भी भले और बुरे का विचार वैसे ही रखना चाहिये, जैसे अन्त-र्राष्ट्रीय विषयो मे।''

''जन-जन मे, देश के भीतर और बाहर, भले लोगो का सगठन बनना चाहिए। यह सगठन दुष्टो के सगठन से सदा अधिक शक्तिशाली रहना चाहिये।

''योरुप के नेताओ ने सब जर्मनो को दुष्ट समझा और सब फ्रासी-सियो तथा अग्रेजो को भला आदमी। परिणाम यह हुआ कि जर्मन जातीय अभिमान, मिथ्या अभिमान मे बदल गया।

''साथ हो इगलैड तथा अन्य राष्ट्रो ने अपने को जर्मनी से दुर्बल हो जाने दिया।

''इस कारण युद्ध होना ही था और अब होने जा रहा है।

''उस लेख मे मैने गाधीजी के विषय मे लिखा था कि ये महात्मा भारतीयो को दुर्बल कर रहे है। अत भारत को युद्ध की ओर धकेल रहे है।''

''परन्तु हम तो दास है न ?'' मथुरासिह ने कह दिया।

''नही। हम दास नही है। मानसिक रूप मे तो हम कुछ वर्ष पूर्व से कम स्वतन्त्र है। दिन-प्रतिदिन हम अधिक और अधिक परतत्र हो रहे है। हाँ, राजनीतिक रूप मे हम पहले से अधिक स्वतत्र है। जितनी कुछ भी परतत्रता इस विषय मे हैं, वह अपने मे योग्यता प्राप्त करने से स्वयमेव लुप्त हो जायेगी। इस पर भी हम विचार करते है, परतन्त्र व्यक्ति की भाँति। हमको स्वतन्त्र व्यक्ति की भाँति विचार करना चाहिये।''

''क्या विचार हो सकता है वह ? और फिर कैसे वह किया जा सकता है ?'' मथुरासिह का प्रश्न था।

''हमको जितनी राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है, उतनी का प्रयोग करना चाहिए। उसका प्रयोग करते हुए हमको शेष स्वतन्त्रता आत्मसात करनी चाहिये।

—५

"हमको अपने शिक्षित युवक समुदाय को सेना मे भरती होने को कहना चाहिये। इससे शक्ति अपने हाथ मे आयेगी। हम सबल होगे और विजयी होगे। गाधीजी सेना से घृणा करते है, उन्होने युवको को असैनिक बनने की प्रेरणा दी है। अत हम दुर्बल हो रहे है और भावी युद्ध मे पराजित होगे।"

मथुरासिंह चकित हो, मुख देखता रह गया।

"क्यो क्या बात है ?" वकील साहब ने पूछ लिया।

"मैं जाति से राजपूत हूँ। हमारी पारिवारिक परम्परा है सेना मे कार्य करना। मेरे परबाबा महाराज रणजीतसिंह की सेना मे थे। बाबा अँग्रेज की सेना मे सूबेदार रहे। मेरे पिता सन् १९१४-१८ के युद्ध मे लडते रहे है। वे मुझको कह रहे है कि मैं भी सेना मे भरती हो जाऊँ।"

"आप क्या राय देते है ?"

'जरूर होना चाहिये। मैं बताता हूँ। मेरा छोटा भाई हवाई सेना मे है। मैने अपने लडके को देहरादून मिलिटरी अकादमी मे भरती करा दिया है। मैं समझता हूँ कि अब देश को सबल बनाना चाहिये। जिस समय हिन्दुस्तान इतना प्रबल हो जायेगा कि अपने पडोसियो को पीछे छोड जायेगा, उस समय हम स्वतन्त्र होगे। युद्ध-जैसी भयकर अवस्था से बच सकेंगे और फिर विजयी होगे।"

'हमारे गाँव मे एक लाला देवीदयाल है। वे कहते है कि आत्मिक बल ही शक्ति है। सेना और हिंसा करने की सामर्थ्य तो दुर्बलता के लक्षण हैं।"

'वह जाति का बनिया और गाधीजी का चेला होगा ?"

"हाँ।"

"तब ठीक है। वह तो यह कहेगा ही। उसने नर-रक्त तो दूर रहा, किसी चूहे-बिल्ली के रक्त के भी दर्शन नही किये होगे। वह नही जानता कि ससार मे खूँखार जानवरो की सख्या बहुत अधिक है।

"देखो मथुरासिंह! कहते है कि आज से दो-तीन सौ वर्ष पूर्व

पृथ्वी पर वन बहुत थे और उन वनो मे असख्य पशु-पक्षी, कीट-पतग, साँप-बिच्छू रहते थे। मनुष्य ने उन वनो को काटकर जन्तुओ को मर जाने दिया। उन जन्तुओ की आत्माएं मानव शरीर मे आ गयी है। परन्तु वे आत्माएँ अपने कर्म-फल से पशु-प्रवृत्ति रखती है। अत मनुष्य ही पशु-प्रवृत्ति वाले हो गए है। वे हिंसक पशु ही हिटलर, मुसोलिनी, तथा स्टालिन के कलेवर मे अब बर्लिन, रोम और ससार के नगरो मे रहते हैं। ये नर वास्तव मे सिंह अथवा बाघ है और अपनी प्रवृत्ति से अपार हत्याएँ करा रहे हैं।

"पृथ्वी पर बसी मानव-आत्माओ का यह कर्तव्य है कि वे सगठित होकर इन पशुओ का वैसे ही शिकार करे, जैसे शिकारी लोग वनो मे किया करते थे।"

मथुरासिंह ने मुस्कराते हुए पूछा, "परन्तु भापा ! कैसे पता लगे कि कौन-कौन मानव-आत्माएँ हैं और कौन-कौन पशु-आत्माएं।"

"हमारे शास्त्रो ने इस बात का उत्तर दिया है। देखो, एक उपनिषद् मे यह लिखा है—

'असुर्यनाम ते लोका अन्धेन तमसा वृता।'

"अन्धे की भाँति अन्धकार मे विचरने वाली असुर योनियाँ है। अन्धा अन्धकार मे कैसे विचरता है ? पूर्व-सस्कारो से। यही हिटलर, स्टालिन, मुसोलिनी कर रहे है। अन्धकार मे टटोल-टटोल चलते हुए वे जिस किसी को भी छू जाते है, उसको चीर-फाडकर खा जाते है। उनमे इतनी भी देखने की शक्ति नहीं कि कोई उनकी रक्षा और सहायता करने आ रहे है अथवा उनका विरोध करने। यह सर्वथा पशुपन है।

भगवद्‌गीता मे तो व्याख्या से लिखा है—

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोध पारुष्यमेव च।
अज्ञान चाभिजातस्य पार्थ सम्पदमासुरीम्॥

"पाखण्ड, घमण्ड, अभिमान, क्रोध, कठोर वाणी तथा अज्ञान, आसुरी स्वभाव के लक्षण है।

"तुम ध्यान से देखोगे तो आज के तानाशाहो मे ये सब लक्षण दृष्टि-गोचर होगे। उन्होने अपने साथी भी अपने स्वभाव-जैसे बना लिये हैं और उनके साथ इस ससार मे विनाश सम्पन्न कर रहे है।

'इनके विरोध के लिए हमको दैवी अर्थात् मानवी आत्माओ का सगठन तैयार करना चाहिए। दैवी स्वभाव को इस प्रकार लिखा है—

अभय सत्त्वसशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थिति
दान दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्याग शान्तिरपैशुनम् ।
दया भूतेष्वलोलुप्त्व मार्दव ह्रीरचापलम् ॥
तेज क्षमा धृति शौचमद्रोहो नातिमानिता ।
भवन्ति सपद दैवीमभिजातस्य भारत ॥

निर्भयता, शुद्ध सात्त्विक बुद्धि, ज्ञानयोग मे दृढ स्थिति, दान, मन और इन्द्रियो को नियत्रण मे रखना, कल्याणकारी कार्य करना, वेद-शास्त्र निरन्तर अध्ययन, सरलता, अहिंसा, सत्य-भाषण अक्रोध, त्याग, शान्ति, निन्दा न करना, सब प्राणियो पर दया, अनासक्ति, चित्त की स्थिरता, क्षमा, धैर्य, शौर्य, शत्रुता का अभाव, अपने को बडा न मानना—ये दैवी स्वभाव है।

"हमको इस स्वभाव वाले मानवो का एक सुदृढ सगठन बनाना चाहिये।"

जब तक मथुरासिह त्रिलोकचन्द्र के साथ शिमला मे रहा, वह नित्य नये-नये विषयो पर वार्त्तालाप करता रहा।

मथुरासिह ने बताया, "मुझको बीस तारीख को लाहौर पहुँचना है।"

"कुछ काम है वहाँ ?"

"हाँ, हमारे एक पुरोहितजी है। उनकी लडकी का विवाह है। पिता-जी तथा माताजी भी वहाँ आयेंगे। साथ ही मेरा बी० ए० का परीक्षा-फल घोषित होने वाला है।"

"वैसे तो कचहरी पहली सितम्बर को खुलेगी। जब तुम जा रहे हो

तो हम भी चलेगे ।

"माताजी को तो बहुत निराशा होगी ।"

"नही । वे तो पहले ही कह रही है कि छुट्टियाँ समाप्त होने से कुछ दिन पूर्व ही चलना चाहिये । घर की व्यवस्था करने मे कुछ दिन लग ही जाते है । इतने दिन से मकान बन्द पडा है ।"

वकील साहब की पत्नी मथुरासिंह के छोटे मोटे घर के काम कर देने से बहुत प्रसन्न थी । वकील साहब का एक लडका पाँच वर्ष का था और लडकी दस वर्ष की । लडका था रघुनाथ और लडकी थी गार्गी । यह मथुरासिंह का काम हो गया था कि वह उनको साथ लेकर प्रात काल पाँच बजे 'जाकू राउड' के लिए निकल जाता था । पन्द्रह दिन मे वह बच्चो से बहुत हिल-मिल गया था । अत जब उनको ज्ञात हुआ कि मथुरासिंह लाहौर जा रहा है तो वे भी चलने के लिए तैयार हो गये ।

बीस को प्रात काल की गाडी से वे लाहौर पहुँच गये । मथुरासिंह थर्ड क्लास मे यात्रा कर रहा था और वकील साहब एव उसका परिवार फर्स्ट क्लास मे थे ।

लाहौर स्टेशन पर पहुँच वह अपना सक्षिप्त-सा सामान अपने कधे पर उठाये हुए वकील साहब से विदा माँगने उनके डिब्बे के बाहर जा पहुँचा ।

त्रिलोकचन्द्र तो उसको अपनी कोठी का पता बताकर कहने वाला था कि वह कभी-कभी मिलता रहे, परन्तु वकील साहब की पत्नी स्नेहलता ने पूछ लिया, 'तो अब कहाँ जाओगे ?"

"पहले किसी होटल मे ठहरने की व्यवस्था करूँगा, उसके बाद पुरोहितजी को ढूँढूँगा । जब तक परीक्षा-फल नही निकलता और आगे की पढाई का निश्चय नही होता, तब तक तो होटल मे ही रहूँगा ।"

"तो हमारी कोठी मे ही चलकर रहो न ?"

"आपको कष्ट होगा ।"

"नही होगा ।"

मथुरासिंह प्रश्न-भरी दृष्टि मे वकील साहब की ओर देखने लगा ।

वकील साहब ने कह दिया, "हम लोअर माल नम्बर पैंसठ मे रहते है। अभी हमारे साथ ही चलो। हमारी गाडी स्टेशन के बाहर आयी हुई है। यह ड्राइवर है।"

बात निश्चय हो गयी। मथुरासिह ने वकील साहब का टाइप राइटर और पोर्ट मैन्ट्यू उठा लिया और स्टेशन के बाहर ड्राइवर के साथ चल पडा।

मोटर मे सवार हो वे लोअर माल पर जा पहुँचे। वहाँ उसने स्नानादि कर वस्त्र बदले और पुरोहितजी के बताये पते पर पहुँच गया। उसके माता-पिता एव पुरोहितजी वही थे। उसी सायकाल विवाह सम्पन्न हुआ और अगले दिन सरस्वती की विदाई हो गयी।

जमादार सूरतसिह और भगवती तो गाँव को लौट जाना चाहते थे और मथुरासिह परीक्षा-फल के घोषित होने की प्रतीक्षा मे था। मथुरासिह ने पिताजी को शिमला मे वकील त्रिलोकचन्द्र के साथ रहने की बात बताई और कहा कि वकील साहब की सम्मति है कि मुझे सेना मे भरती होना चाहिये। मैं यहाँ रह, इस विषय मे मालूम करना चाहता हूँ।"

"तब तो वकील साहब बहुत अच्छे आदमी हैं।"

"उनका भाई हवाई सेना मे है और लडका देहरादून मिलिटरी अकादमी मे पढता है।"

"बेटा! मैं वकील साहब से मिलना चाहूँगा।"

"आज चलकर मिल लीजिए।"

उस दिन सरस्वती ससुराल को विदा हुई और मथुरासिह अपने माता पिता को लेकर त्रिलोकचन्द्र की कोठी मे जा पहुँचा। वकील साहब की कोठी मे सफेदी हो रही थी। सब सामान बाहर निकाल, बरामदे और लॉन मे रखा हुआ था।

त्रिलोकचन्द्र बरामदे मे बैठा था। बच्चे लॉन मे खेल रहे थे। वकील साहब की पत्नी मजदूरो से उन कमरो मे सामान लगवा रही थी, जिनमे सफेदी हो चुकी थी। बच्चो ने मथुरासिह को देखा, तो अपना खेलना

छोड, मथुरासिंह की बाँह पकड, अपने पिता की ओर ले जाने के लिए घसीटने लगे। गार्गी ने पूछ लिया, "भापा ! ये कौन है ?"

"मेरे माता-पिता।"

गार्गी और रघुनाथ ने माता-पिता का नाम सुना तो हाथ जोड, जमादार और भगवती को नमस्कार करने लगे। भगवती ने गार्गी की पीठ पर हाथ फेर प्यार दिया।

८

सूरतसिंह अपनी सरल और सीधी भाषा मे वकील साहब को बताने लगा, "जब दुष्ट प्रकृति के लोग नेता बन जाते है तो युद्ध हो जाते हैं। युद्ध मे जीत होती है साधनो से। जब दुष्टता पराजित होती है तो उसका खुर खोज मिट जाता है, परन्तु कभी श्रेष्ठ लोग, अपनी मूर्खता के कारण, उपयुक्त साधन नही जुटा पाते और पराजित होते है। इस पर भी श्रेष्ठता कभी नि शेष नही होती। जहाँ-जहाँ श्रेष्ठ लोगो का रक्त गिरता है, वहाँ-वहाँ श्रेष्ठ जन उत्पन्न होते है।"

वकील इस अनपढ देहाती की सूझ-बूझ पर विस्मित रह गया। उसने कह दिया, "हाँ, जमादार ! युद्ध मे जीत साधनो की होती है। इस कारण भले लोगो को भी अपनी रक्षा के लिए साधन जुटाने चाहिए। मानवता और बुद्धिमत्ता दो पृथक्-पृथक् बाते है। मानवता सस्कारो की देन है और बुद्धिमत्ता शिक्षा एव अनुभव की। साधन जुटाये जाते है बुद्धिमत्ता से। इस कारण स्वभाव से भले लोग बुद्धि से साधन-सम्पन्न होने मे यत्नशील रहे। यही सफलता-प्राप्ति का उपाय है। परन्तु विचारणीय बात है कि साधनो मे क्या-क्या होना चाहिए।'

"मैं तो साधनो मे सेना और अस्त्र-शस्त्र मुख्य मानता हूं।"

"हाँ, सेना और सैन्य-सामग्री—ये जीत के लिए परम साध्य है। इनके बिना तो ससार मे वन्य पशु, जो मनुष्य के रूप मे उत्पन्न हो गए है, भले लोगो को कच्चा ही चबा जायेगे।"

"देखा, मथुरे ! वकील साहब क्या कह रहे है ?" जमादार ने अपने

लडके को सम्बोधन कर कहा ।

"हाँ, आपा ! सुन रहा हूँ और मै सेना मे भरती होने के विरुद्ध नही हूँ।"

"तो होओगे न ?"

"हाँ आपा !"

"भगवान् तुम्हारा कल्याण करे ।"

सूरतसिंह और भगवती तो मादारपुर लौट गये। मथुरासिह लाहौर मे ही रह गया । एक दिन उसका परीक्षा-फल घोषित हुआ और वह सेना मे भरती होने के कार्यालय का पता मालूम कर, वहाँ पहुँच गया । उसने फार्म भरकर दे दिया तो उसकी पहली पेशी हुई ।

"एक सिख अधिकारी बैठा था। जब मथुरासिह ने खडे होकर सैल्यूट किया तो अफसर ने पूछा, "तुम सिख तो नही हो ?"

"नही, मै राजपूत हूँ ।"

"ओह ! परन्तु तुमने लिखा है कि तुम बी० ए० फर्स्ट क्लास हो।"

"जी ।"

"तो फिर सेना मे भरती किसलिए हो रहे हो ?"

"यह हमारा पारिवारिक कार्य है । मैने लिखा है कि कई पीढियो से हम सेना का काम करते रहे है ।"

अफसर ने उसके फार्म को पुन ध्यान से देखा और सम्मुख रखी घटी बजा दी। दो सैनिक अन्दर आये तो उनको मथुरासिंह की परीक्षा के लिए कह दिया । उन्होने मथुरासिंह की ऊँचाई, छाती की चौडाई और दूसरी बातें नोट कर ली । परीक्षा के उपरान्त अफसर ने कहा, "तुम्हारे लिखे पते पर सूचना भेज दी जायेगी ।"

मथुरासिह लौट आया । कोठी मे पहुँचकर उसने अपनी पेशी की बात कही तो वकील साहब ने कह दिया, "तुम भरती नही हो सकोगे ।"

"क्यो ?"

"दुर्भाग्य से आज जिस अफसर की वहाँ ड्यूटी है, वह महामूर्ख है ।

वह तुमको सिख और राजपूत के विचार से देखता रहा है ।"

'तो राजपूत हाने के कारण मैं सेना मे नही लिया जाऊँगा ?"

"कुछ ऐमा ही प्रतीत होता है ।"

वकील साहब की भविष्यवाणी का प्रमाण मथुरा को कॉलेज खुलने से दो दिन पूर्व मिला । उसको यह उत्तर आया "तुम्हारा नाम वेटिंग लिस्ट मे है । जब तुम्हारी बारी आयेगी, बुला लिया जायेगा ।"

"इसका क्या तात्पर्य है ?" मथुरासिंह ने वकील साहव से पूछ लिया ।

इस उत्तर से त्रिलोकचन्द्र को भी विस्मय हुआ । इस समय योरुप मे युद्ध आरम्भ हो गया था । पहली सितम्बर १९३९ को हिटलर की सेना पोलैंड मे घुस गई थी । मथुरासिंह ने समाचार-पत्रो मे पढा था कि हिटलर और स्टालिन मे सन्धि हो गई है ।

इससे पूर्व यह समाचार छपा था कि इग्लेंड और फ्रास के प्रतिनिधि मास्को मे रूस से सधि करने के लिये गये हुए है । उनसे सन्धि होते-होते रूस की जर्मनी से सन्धि हो गयी । यह सन्धि २३ अगस्त १९३९ को हुई थी ।

इस समय ही त्रिलोकचन्द्र ने मथुरासिंह को बताया था, युद्ध होगा और यदि उसको कुछ सीखना है तो यह समय है भरती होने का । उसी दिन मथुरासिंह का परीक्षा-फल घोषित हुआ था और वह फर्स्ट डिवीजन मे पास हुआ था ।

इस पर भी वह २४ अगस्त को भरती के कार्यालय मे, लाहौर छावनी गया था । अफसर से हुए वार्तालाप से तो त्रिलोकचन्द्र को यही समझ आया था कि मथुरासिंह सेना मे नही लिया जायेगा । परन्तु जब हिटलर ने १ सितम्बर को पोलैंड पर आक्रमण कर दिया और पोलैंड ने बहुत वीरतापूर्वक उसका सामना किया तो त्रिलोकचन्द्र का विचार था कि इग्लैंड पोलेंड की सहायता करेगा ।

परन्तु पहली तथा दूसरी सितम्बर तक कुछ नही हुआ । मथुरासिंह

को इस युद्धारम्भ से आशा हो गयी थी कि उसको सेना मे ले लिया जायेगा, परन्तु इग्लैण्ड की ओर से युद्ध की घोषणा मे दो दिन की देरी से यह अनुमान लगाया जाने लगा था कि अग्रेज इस अन्तिम समय मे भी किसी प्रकार से लडाई से बचना चाहते है ।

इग्लैण्ड की पार्लियामेन्ट मे युद्ध पर बहस की रिपोर्ट छपी और उसमे इग्लैण्ड के प्रधान मत्री मिस्टर नेवल चैम्बरलेन के व्याख्यान के कुछ अश छपे ।

प्रात के समय लॉन मे खडा मथुरासिह समाचार-पत्र पढ रहा था । त्रिलोकचन्द्र अपना चुरुट पीता हुआ वहाँ आ गया । उसने दूर से ही पूछ लिया, "क्या समाचार है, मथुरासिह !"

मथुरासिह ने बताया, "अभी युद्ध की घोषणा नही हुई । कल साय-काल पार्लियामेट की बैठक हुई थी और प्रधान मत्री चैम्बरलेन ने कहा है कि हम सबकी यह इच्छा है कि इस समय भी जर्मन सरकार को अपनी भूल स्वीकार हो जाय और वह अपनी सेनाएँ वापस बुला ले ।"

त्रिलोकचन्द्र हँस पडा । उसने कहा, "चैम्बरलेन शान्तिप्रिय व्यक्ति है। ससार के लाखो मानवो की हत्या का भार इसके सिर चढेगा क्योकि यह युद्ध मे ढिलाई करता आ रहा है। युद्ध की धमकी तो १९३३ मे दी जानी चाहिए थी और यदि हिटलर न मानता तो १९३४ मे युद्ध आरम्भ होना चाहिए था । १९३९ से तो बहुत पूर्व हिटलर सेंट हेलिन के द्वीप मे बन्दी होना चाहिए था और एक अग्रेज वाइसराय बर्लिन मे बैठा होना चाहिये था ।

"मिस्टर बाल्डविन और मिस्टर चैम्बरलेन ने अपनी नम्र नीति से जर्मनी को सन्धियाँ तोडने का अवसर प्रदान किया । रूस को अग्रेजो और पोलैड के विरुद्ध जर्मनी से सन्धि करने का साहस हुआ और अब रूस हिन्दुस्तान की ओर बढेगा ।"

"परन्तु भापा ! इगलैड अब भी लडेगा अथवा नही ?"

"लडेगा । नही लडेगा तो इगलैड मे बगावत हो जायेगी ।"

"तो मै आशा कर सकता हूँ कि मै भरती हो सकूँगा।"

"हाँ, निश्चय ही।"

तीन तारीख को युद्ध की घोषणा हो गई। चार तारीख को भारत के वाइसराय ने भी भारत की ओर से युद्ध की घोषणा कर दी। इन दो दिनो मे पोलैड की सुरक्षा की पक्ति टूट चुकी थी और पोलैड की सेना पीछे हट रही थी।

इस दिन से मथुरासिंह अपने सेना मे भर्ती किये जाने के स्वप्न ले रहा था। वह अपने मन मे विशेष प्रकार की उत्सुकता एव उल्लास का अनुभव करने लगा। उसने अब सेना मे ट्रेनिग को जाने के लिए अपना किट तैयार करना आरम्भ कर दिया था। वह एक चमडे का सूटकेस खरीदकर ले आया और उसमे पाँच पहनने की पोशाके रख, एक छोटा-सा बिस्तर, जो कन्धे पर उठाया जा सके, बनाकर तैयार हो गया। स्नेहलता ने इसको देखा तो पूछ लिया, "यह क्या हो रहा है, मथुरासिंह ?"

"सेना मे जाने की तैयारी कर रहा हूँ।"

"तुमको डर नही लगता ?"

"डर किस बात का ?"

"मर जाने का अथवा लँगडा-लूला हो जाने का ?"

"माँजी ! नही। वह इसलिए कि बिना युद्ध के भी तो लोग मरते हैं और अपाहिज भी हो जाते है। यह मरना-जीना अथवा अपाहिज होना तो भाग्य की बात है। मेरे पिताजी सुनाते हैं कि वे एक बार बढ रही सेना के मार्ग मे बिछी बारूद की सुरगो को निकालने मे लगाये गए थे। इनके साथ बीस सैनिक और थे। आज्ञा थी कि बारह बजे तक मार्ग साफ कर दिया जाये। पिताजी अपने साथियो के साथ चल पडे। शत्रु की सेना उन सुरगो को बिछाकर पीछे हट गई थी। मित्र-सेना के तोपखाने ने उनकी धज्जियाँ उडा दी थी। इस पर भी सेना से बढ़ने के लिए इन सुरगों को निकालना अत्यावश्यक था।

पिताजी ने प्रात पाँच बचे से काम आरम्भ किया। छ बजे तक

बीस मे से दस आदमी उन सुरगो के फट जाने से मृत्यु के ग्रास हो चुके थे। उनमे प्राय की हड्डियो का भी पता नही चला था। दस बजे तक केवल दो आदमी रह गये थे—पिताजी और उनका एक साथी। वह साथी भी साढे दस बजे उड गया। पिताजी अकेले ही रहे। बारह बजे तक इन्होने बीस गज चौडा और पाँच मील लम्बा मार्ग खोल दिया था। ठीक बारह बजे पिताजी ने हरी झडी दिखा दी। सेना लगे निशानो के बीच बढ-कर निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गयी। जब सेना वहाँ पहुँची तो पिताजी से रेजीमेन्ट के कमाडिग अफसर ने हाथ मिलाया। ठीक इस समय एक सुरग जो पिताजी की दृष्टि से बच गयी थी, दिखाई दे गयी। पिताजी उसकी ओर लपके परन्तु उनके वहाँ पहुँचने से पूर्व ही वह फट गयी। पिताजी धमाके के धक्के से भूमि से बीस फुट ऊँचे उडे और पचास गज दूर जा गिरे। वे अचेत हो गये। उनको इसी अवस्था मे अस्पताल पहुंचाया गया। उनके मस्तिषक को भारी-धक्का लगा था। दो दिन तक तो उनके बचने की आशा ही नही थी। उनके लिए विक्टोरिया क्रास की सिफारिश की गयी थी, परन्तु उनकी फाइल मे यह बात लिखी थी कि वे बगाल के क्रान्तिकारियो से सम्बन्ध रखते रहे है। उनको वह पदक नही मिला।

"वे बच गये और युद्ध से लौट, सेना से छुट्टी पा, उन्होने विवाह किया और हम भाई-बहिन उनकी दो सन्ताने है।"

"माँजी! मरना-जीना अपने कर्म-फल से होता है। इस पर भी युद्ध मे जाना तो अपनी प्रवृत्ति के अनुसार है। मै अब समझता हूँ कि सैनिक-जीवन हमारे परिवार के रक्त मे है। जिस दिन से युद्ध आरम्भ हुआ है और मेरे सेना मे भरती होने की सम्भावना बढी है, मेरा चित्त बहुत प्रसन्न रहता है और मेरा भार बढ रहा है।"

"अच्छा! देखो भाग्य क्या दिखाता है।" स्नेहलता ने कह दिया।

तेरह सितम्बर को मथुरासिंह को रिक्रूटिंग अधिकारी का पत्र प्राप्त हुआ। लिखा था—"तुम्हारा नाम प्रतीक्षा-सूची मे है। जब तुम्हारा नम्बर आयेगा, तुमको बुला लेगे।"

त्रिलोकचन्द ने भी यह पत्र पढा और पढकर हँस पडा। हँसते हुए उसने कहा, 'आज इगलैड मे बौनो का राज्य है।"

"बौनो का ?"

"हाँ। यह बाल्डविन, चैम्बरलेन आदि बुद्धि के विचार से बौने हैं। यही कारण है कि जो बात सामान्य बुद्धि वालो को आज से छ वर्ष पूर्व दिखाई देती थी, वह उनको आज भी दिखाई नही देती।"

"क्या दिखाई नही देती ?"

"जब दुर्बल मन वाले लोग अपनी दुर्बलता को वाग्जाल मे छिपाते है, तब युद्ध होते है। कभी-कभी विपक्षी उनके वाग्जाल मे धोखा खा जाते है। परन्तु यह धोखा सदैव नही चल सकता। जब मालूम हो जाता है तो भयकर युद्ध होते है।

"देखो! मैं समझता हूँ, अंग्रेजी ढग के प्रजातत्र मे एक दोष यह है कि इसमे उत्तरदायी व्यक्ति प्रधान मत्री है। उसको यह विदित है कि उसका पद एक फिसलनी भूमि है। उसको उस भूमि पर खडा रहने के लिए अपना सतुलन बनाये रखना अत्यावश्यक होता है। एक ओर उसके दल के सदस्य है। दूसरी ओर उसके दल को सहायता देने वाले धनी-मानी लोग हे। साथ ही विरोधी दल है, जो उचित-अनुचित आलोचना तो करता है, परन्तु किसी भी काम का उत्तरदायित्व नही रखता। सबसे अधिक समाचार-पत्र है और जनता है। जनता के विचार एव मनोद्‌गार समाचार-पत्र बनाते हे और समाचार-पत्रो की भाषा, उनको पैसे वाले मालिक अथवा उनको चलाने वाले दल बनाते है।

"इस प्रकार विभिन्न शक्तियो के दबाव मे प्रधान मत्री को अपना सन्तुलन रखना पडता है। ऐसे स्थान पर कोई दुर्बल व्यक्ति अपनी बुद्धि से काम कर ही नही सकता। वह जिधर, बल पडा, उधर ही झुक जाता है।

"पिछले युद्ध के समय जन और धन की बहुत हानि हुई थी। इससे धनी लोग एव जन-साधारण युद्ध से उपराम हो गये थे। धन वालो की दृष्टि अपने धन पर केन्द्रित होती है। वे अपने सामयिक लाभ-हानि से

अधिक देख सकते ही नही । इन्होने समाचार-पत्रो द्वारा जन-साधारण मे युद्ध का भय उत्पन्न कर दिया । परिणाम यह हुआ कि प्रधान मन्त्री और उसका दल अपने मतदाताओ, एतदर्थ धनियो की अदूरदर्शिता से प्रभावित शान्ति का दिखावा करने पर विवश हो गया ।

"इस दिखावे के लिए उसे अपने देश को अस्त्र-शस्त्र और सैनिक साधनो से विहीन करना पडा । परिणाम यह हुआ कि शत्रु इनको दुर्बल समझ, युद्ध जीत लेने के लोभ मे तैयारी करने लगा ।

"शत्रु को इगलैंड के दुर्बल होने का प्रमाण तो तब मिला, जब उसने सन्धि को निस्तेज कर, राइनलैंड पर अधिकार कर लिया । इगलैंड के नेताओ का बुद्धूपन भी हिटलर को मालूम हो गया, जब उसने सात मार्च १९३६ को प्रात दस बजे तो अग्रेजी, फ्रासीसी, बैलजियम और इटैलियन दूतो को बुला यूरोप मे पचीस वर्ष तक शान्ति की सन्धि करने का प्रस्ताव कर दिया और उसी दिन बारह बजे उसने अपनी रीख[1] के सम्मुख घोषणा कर दी कि राइनलैंड पर जर्मनी का अधिकार किया जा रहा है । राइनलैंड वारसेल्ज की सन्धि के अनुसार सेना-रहित क्षेत्र था ।

'इस प्रकार एक ओर उसने नई सन्धि का प्रस्ताव किया और दूसरी ओर उसने पुरानी सन्धि के विरुद्ध आचरण कर दिया । इस पर भी इगलैंड के प्रमुख-प्रमुख समाचार-पत्र सर लॉयड जार्ज, लार्ड स्नो डाउन हिटलर की ओर से सफाई उपस्थित करते रहे और इगलैंड को सर्वथा शस्त्र-विहीन न कर देने का दोषारोपण अपने ऊपर करते रहे ।

"यह नही कि इगलैंड मे कोई व्यक्ति था ही नही, जो हिटलर की बदमाशी को समझता न हो । कम-से-कम दो नेता थे—एक सर विन्सेन्ट चर्चिल और दूसरे ऐन्थनी ईडन । परन्तु इग्लैड के अदूरदर्शी धनी लोग विपक्षी दलो के अनुत्तरदायी नेता और इनके प्रभाव मे समाचार-पत्र, इन दोनो को गालियाँ देते रहे ।

"इस प्रकार यदि १९३३ मे हिटलर की उच्छृङ्खलता को रोकने का

---

१ पार्लियामण्ट ।

यत्न किया जाता तो युद्ध कभी होता ही नही ।"

"आपके विचार मे क्या करना चाहिए था ?"

"जब हिटलर शक्ति-सम्पन्न हुआ था तो राइनलैंड मे फ्रास और इगलैड को अपनी सेनाएँ भेज देनी चाहिए थी और हिटलर को चुपचाप इस पर अधिकार करने का विरोध करना चाहिए था। इसकी तैयारी सन् १९३३ मे ही आरम्भ हो जानी चाहिए थी।"

"पर भापा! चर्चिल तो 'बुल डौग' है जो हिन्दुस्तानियो को और गाधी को गालियाँ देता रहता है। वह गाधीजी को नगा फकीर कहकर पुकारता है।"

"आज जब वह गाधीजी को गलत कहता है, कल को हिन्दुस्तान के लोग भी उसको मिथ्या मार्ग का राही कहेगे।"

"गाधीजी का मार्ग निवृत्ति का है। यह राजनीति क्षेत्रो मे चल नही सकता।"

"परन्तु चल रहा तो दिखाई देता है।"

"कैसे ?"

"स्वराज्य तो मिल रहा है।"

"देखो मथुरासिह! शान्ति-शान्ति करने वाले सदा घाटे मे रहते हैं। यही बात गाधीजी के साथ हो रही है। हिन्दुस्तान गाधीजी को नेता मानता है और इन्होने हिन्दुस्तान के साथ क्या किया है? गाधीजी उनको रिआयतें दे रहे है, जो उनको अपना नेता नही मानते और उनके हाथ बाँधते जा रहे है, जिन्होने इनको अपना नेता माना हुआ है, अर्थात् हिन्दुओ के अधिकार मुसलमानो के हाथो मे दिये जा रहे है।

"दूसरे, मुसलमानो मे पाकिस्तान भारतवर्ष की सीमाओ के अन्दर ही बनाने का विचार बल पकड रहा है और गाँधीजी इसको अभी से प्रोत्साहन दे रहे है।

"तीसरे, काग्रेस मे, गाधीजी सामान्य रूप मे हिन्दुओ मे उनको नेता बनने मे सहायता दे रहे है, जो विचार मे अग्रेज हैं सस्कृति से मुसल-

मान है और घटनावश हिन्दू के घर मे जन्म पा गये है। मेरा मतलब पडित जवाहरलाल नेहरू से है। पडितजी न तो धर्म, सस्कृति और न ही राजनीति मे गाधीजी से सहमत है। वे नास्तिक है, गाधीजी ईश्वर-भक्त है। वे हिन्दू-विरोधी है और गाधीजी अपने को हिन्दू मानते है। वे अन्तर्राष्ट्रीयता के उपासक है और गाधीजी देश-भक्त है। पडितजी मार्क्सवादी है और गाधीजी प्रजातन्त्र के भक्त। इस पर भी गाधीजी सदा पडितजी को हिन्दुओ, भारतीयो प्रजातन्त्रवादियो और देश-भक्तो पर अधिमान देते रहते है। १६२६ मे पडितजी को प्रधान बनाने मे वे सहायक हो गये। १६३६ मे पुन. सरदार पटेल के विरुद्ध, पडितजी को सहायता देने वाले बन गये। १६३१ मे कराची मे पडितजी के कहने पर वे समाज-वाद की नीव रखने पर सहायक हो गये।

"मैं समझता हूँ कि यह उनकी अहिंसात्मक नीति का परिणाम है कि वे डटकर किसी का भी सामना नही कर सकते।

"यदि इनके नेतृत्व मे स्वराज्य मिला तो वह न केवल लँगडा स्व-राज्य होगा अपितु बिगडा हुआ भी होगा। उसमे पडित जवाहरलाल की चलेगी और गाधीजी अपने बनाये नेता से अपने ही सिद्धान्तो की हत्या होते देखेगे।

"हिन्दुस्तान की आत्मा लापता होगी और उसके मुख पर भीरुता, मूर्खता और निर्लज्जता अकित होगी। यह गाधीजी की करनी का फल होगा।"

"बहुत भयकर चित्र चित्रित कर रहे है आप?"

"हाँ, इसके घटने को रोक सकते है—पढे-लिखे देश-भक्त, एक बहुत बडी सख्या मे सेना मे भर्ती होकर।

"स्वराज्य मिलेगा। इसलिए नही कि गाधीजी और काग्रेसी चरखा कात रहे है, प्रत्युत इसलिए कि सेना का भारतीयकरण हो रहा है। ये अग्रेज भारतीय सेना में हिन्दुस्तानी पढे-लिखे युवको को लेने पर विवश हो रहे हैं। अत मैं समझता हूँ, यह युद्ध भारतीयो के भाग्योदय का

लक्षण है।"

६

मथुरासिंह गवर्नमेंट कॉलेज मे भरती हो गया। वह चाहता था कि कॉलेज के बोर्डिंग हाउस मे जाकर रहने लगे। इसके लिए उसको स्थान भी मिल गया, परन्तु स्नेहलता ने मना कर दिया। मथुरासिंह का कहना था, "माँजी! यहाँ रहता हुआ मै अनधिकार-युक्त कार्य करता अनुभव करता हूँ, आपके यहाँ भोजन करता हूँ। एक पृथक् कमरा अधिकार मे ले रखा है और फिर नौकर-चाकर और अनेको अन्य सुविधाएँ प्राप्त कर रहा हूँ। क्यो? मुझको इस क्यो का उत्तर समझ नही आ रहा।"

"मुझको कारण समझ आ रहा है।"

"सत्य? तो मुझको बता दीजिये।"

त्रिलोकचन्द्र अपनी पत्नी की ओर देखकर मुस्करा रहा था। मानो वह उसको अपने मन की बात कह देने के लिए उत्साहित कर रहा हो। स्नेह ने कह दिया, "मेरा तुमसे स्नेह हो गया है।"

"परन्तु यह तो आपका स्वभाविक गुण है। आपका यह नाम ही इस बात का सूचक है कि आप सबसे स्नेह रखती है। इसमे मैं कहाँ से आ गया हूँ?"

"यह नही मथुरासिंह! मैं सबसे स्नेह नही करती। मुझको भले, नेक, सत्य-हृदय और भय-रहित मनुष्यो से ही स्नेह होता है। ऐसे लोग ससार मे बहुत कम है, और तुम उनमे एक हो।"

"यह तो मै जानता नही। मैं आपके स्नेह का पात्र बनने का यत्न करता रहता हूँ। परन्तु इसका मेरे बोर्डिंग हाउस मे जाने के स्थान, यहाँ रहने से कोई सम्बन्ध प्रतीत नही होता। वहाँ जाने पर भी आपके स्नेह का भाजन बनने का यत्न करता रहूँगा।"

"मथुरासिंह! तुम यह बताओ, इस तरह रहने मे कुछ कष्ट है?" वकील साहब ने वार्त्तालाप मे हस्तक्षेप करते हुए पूछ लिया।

"मैं अपने कष्ट की नही कह रहा। भापा! मुझको यहाँ बोर्डिंग

हाउस और फिर अपने घर से भी अधिक सुख और शान्ति प्राप्त है। परन्तु मैं अपने को इसका अधिकारी नही समझता।"

"तो फिर इसके लिए अधिकारी बनने का यत्न करो। यह तो बुद्धिमत्ता नही कि जब कुछ भाग्य से अनायास मिले तो उसको पाने का अधिकारी बनने के स्थान, उसको फेक दो।"

"इस सब सौभाग्य को प्राप्त करने का अधिकारी कैसे बनूँ। यही तो मै अभी तक समझ नही रहा।"

"इतना पढ-लिख गये हो, मस्तिष्क से काम लो। और देखो, अनायास ही यह सब-कुछ मिलने को फेककर चले जाने से तुम मेरे मन मे अपना मूल्य कम कर ही जाओगे। कुछ ऐसा करो कि स्नेह का पात्र बनना, न तुमको, न किसी अन्य को अखरे। स्नेह फेककर चले जाना मुझको पसन्द नही।"

स्नेह की इस वकालत ने मथुरासिह का मुकद्दमा उसके विरुद्ध तय करा दिया। वह बोल नही सका। इस पर भी इसका प्रतिकार सोचता रहा था।

सन् १९४० आ गया। ग्यारह मई को चैम्बरलेन ने प्रधान मन्त्री पद से त्याग-पत्र दे दिया और चर्चिल ने इगलैड का मन्त्री-पद स्वीकार किया। सब दलो की सयुक्त सरकार बनी।

बारह मई को हिन्दुस्तान के समाचार-पत्रो मे इस घटना का विवरण छपा। वकील साहब कचहरी जाने से पूर्व मथुरासिह से कहने लगे, "मै विचार करता हूँ कि तुम्हारा नम्बर भरती किये जाने के लिए आने वाला है।"

"कैसे पता चला है?"

"चर्चिल के प्रधान मन्त्री बन जाने से।"

"चर्चिल का क्या सम्बन्ध है, मेरे भरती होने के साथ?"

"चर्चिल की नीति और चैम्बरलेन की नीति का सम्बन्ध है। चैम्बरलेन अपनी शान्तिप्रियता मे ब्रिटिश साम्राज्य को सुदृढ करने की चिन्ता

प्रारम्भ हो गयी। प्रथम जून को ये सेनाएं डेनकिर्क के तट से अपने टैंक, तोपे, बारूद इत्यादि सब सामान जर्मनो के हाथ मे छोड, इगलैंड लौट गयी।

हिटलर ने एक मास मे फ्रास को विजय कर वहाँ एक कठपुतली सरकार बना दी। फ्रास के साधन जर्मनी के हितो मे प्रयुक्त होने लगे। अब जर्मनी के विचार से केवल इगलैंड ही रह गया था, जिसको जर्मनी का विरोधी कहा जा सकता था।

जून की बीस तिथि आ गयी थी। लाहौर मे कॉलेज बन्द हो रहे थे और मथुरासिंह घर जाने की तैयारी मे था। उसको अभी तक सेना की ओर से बुलाया नही गया था।

रात्रि के भोजन के समय उसने स्नेहलता से कह दिया, "माँजी! मैं कल गाँव जाने का विचार रखता हूँ।"

"और इस वर्ष किसी पहाड पर घूमने नही जाओगे?"

"विचार तो है।"

"मैं समझता हूँ कि कल छावनी मे भरती के दफ्तर मे चले जाओ और पता कर आओ कि तुम्हारी अर्जी का क्या हुआ?" त्रिलोकचन्द ने कह दिया।

"मैं समझता हूँ कि मैं एक नई अर्जी दे दूँ।"

"मैंने पिछले मास एक पत्र चीफ रिक्रूटिंग ऑफिसर को लिखा था कि मै अपनी सेवाएं सेना विभाग को युद्ध-काल के लिए अर्पित करता हूँ। मैंने अपनी आयु और योग्यता लिख दी थी। मुझको आज एक रस्मी पत्र आ गया है। उसमे मेरा धन्यवाद किया गया है और यह कहा है कि जब आवश्यकता होगी, मुझको बुला लेंगे।"

"मै समझता हूँ कि हिन्दुस्तानी अग्रेज सैनिक अधिकारी कल्पना-विहीन हैं। वे मुसलमानो को हिन्दुओ से अधिक निष्ठावान समझते है। मेरे एक साथी बैरिस्टर इश्तियाकहुसैन ने भी अपनी सेवाएँ दी थी। उसको तो तुरन्त उत्तर आया और उसे रावलपिंडी डिवीजन रिक्रूटिंग

अफसर नियुक्त कर, काम पर लगा दिया गया है।"

"मैं समझता हूँ," मथुरासिंह ने कहा, "यदि प्रार्थना को अभी तक स्वीकार न करने का यही कारण है तो ठीक ही है। सामान्य रूप मे एक हिन्दू अपने देश के हित को सदैव प्रथम स्थान देगा। मुसलमान तो भाडे का टट्टू है। अग्रेज यह जानकर तो बुद्धिमत्ता का परिचय दे रहे है।"

"हाँ, एक विचार से तो तुम ठीक ही कहते हो। हम भी तो अपने देश का हित विचारकर ही सेना का काम करने का निश्चय कर रहे हैं। परन्तु जो बात अग्रेज के जानने की है, वह यह कि हिन्दू उनको कभी भी धोखा नही देगा। हम मित्र बनेगे तो सत्य-हृदय से बनेगे। मुसलमान तो किसी समय भी धोखा दे सकता है। हिन्दू मित्र एक मुसलमान वफादार नौकर से कही अधिक सहायक सिद्ध होगा।"

इस पर भी मथुरासिंह अगले दिन रिक्रूटिंग आफिस मे गया। वहाँ वह अधिकारी से मिला और अपने प्रार्थना-पत्र के विषय मे पूछने लगा। आज उस दिन वाले सिख अधिकारी के स्थान पर एक मराठा अधिकारी था। नाम था, भोसले। उसने पूछा "कब प्रार्थना-पत्र दिया था?"

मथुरासिंह ने तिथि बताई और वह उत्तर जो उसको मिला था, दिखा दिया। मिस्टर भोसले ने क्लर्क को बुला, पत्र ढूँढने के लिए कहा। इसी बीच मे भोसले ने पूछा, "अब क्या करते हो?"

"गवनमेंट कॉलेज मे एम० ए० मे पढता हूँ।"

"क्या विषय लिया हुआ है?"

"इतिहास।"

"तो पढाई छोडकर सेना मे जाना चाहते हो?"

"मैंने पढा है कि इगलैंड मे स्कूल, कॉलेज यूनिवर्सिटियाँ बन्द हो रही हैं। मैं समझता हूँ कि इस समय नेकी और बदी मे युद्ध हो रहा है। इस कारण सब नेक लोग एकत्रित हो जाने चाहिये। इसी विचार से मैं कॉलेज छोडने के लिए भी तैयार हूँ।"

भोसले विस्मय मे मथुरासिंह का मुख देखता रह गया। फिर कुछ विचारकर पूछने लगा, "श्री सुभाषचन्द्र बोस का वक्तव्य पढा है ?"

"जी हाँ, पढा है। मै उनके मन की भावना को तो पसन्द करता हूं, परन्तु उनके उपाय को कुसामयिक समझता हूँ।"

"क्यो ? अपने शत्रु को भीड के समय तग करना ही तो कुशल नीति है।"

"परन्तु श्रीमान् ! मै अग्रेज को शत्रु नही समझता। मै इसे एक मूर्ख मालिक समझता हूँ। हम इस मालिक से मुक्ति चाहते है और यह अपनी मूर्खता मे हमको अपना शत्रु समझ बैठा है। इसके साथ ही हिटलर को मानवता का शत्रु मानता हूँ और इस पराधीनता के काल मे भी अपने को उसके अधीन नही करना चाहता।"

"परन्तु हिटलर तो भारत को अग्रेजी साम्राज्यवाद के बन्धन से मुक्त करना चाहता है।"

"उसने पोलैड, फिनलैड नार्वे, बैलजियम और डेनमार्क से विश्वास-घात किया है। उसने सधियाँ तोडी है और विचार मे विरोधी से सन्धि कर, एक मित्र देश का राज्य आधा-आधा बाँट लिया है। उस तानाशाह की दृष्टि मे मानवता एक पाप है। वह साधु-स्वभाव चैम्बरलेन को मूर्ख समझता था और धूर्त स्टालिन को मित्र बना बैठा है। वह भारत का भला कैसे कर सकेगा ?"

"तुम एक सैनिक अधिकारी से बहुत अधिक जानते हो।"

"मै इतिहास का विद्यार्थी हूँ। राजनीतिक विषयो मे इतिहास पथ-प्रदर्शन करता है। मैं समझता हूँ कि मेरे ज्ञान का लाभ उनको हो सकता है, जिनकी सेवा के लिए मैं प्रार्थना कर रहा हूँ।"

इस समय वह क्लर्क एक फाइल उठा लाया। परन्तु फाइल मे मथुरा-सिंह का, प्रार्थना-पत्र नही था। भोसले इससे बहुत घबराया। उसने कहा, "देखो ! कही ऊपर-नीचे लग गया होगा।"

"सर ! मैंने पूरी फाइल देख डाली है।"

"तो मिस्टर सिंह ! तुम एक नवीन प्रार्थना-पत्र दे सकते हो ।"

इतना कह भोसले ने एक फार्म वहीं मँगवा लिया और मथुरासिंह भरने के लिए कह दिया । मथुरासिंह ने वहीं बैठे-बैठे भर दिया । उसी समय अधिकारी ने मथुरासिंह को शारीरिक परीक्षा के हेतु कार्यालय के दूसरे कक्ष मे भेज दिया ।

आधे घंटे मे परीक्षा की रिपोर्ट लेकर मथुरासिंह पुन मिस्टर भोसले के पास लौट आया । वह इस समय कुछ अन्य लोगों से वार्तालाप कर रहा था । इस पर भी उसने उठकर मथुरासिंह से हाथ मिलाया और कहा, "तुमको लाहौर के पते पर रहना चाहिए । शीघ्र ही तुमको ट्रेनिंग पर भेजने की आज्ञा आ जायेगी ।"

"यदि कुछ अधिक दिन लगने हों तो मैं अपने माता-पिता से मिलने गाँव मे जाना चाहता हूँ ।"

"पन्द्रह दिन से कम क्या लगेंगे ? पुलिस की रिपोर्ट मँगवाई जायेगी ।"

"तो मुझको मेरे गाँव के पते पर सूचित किया जाये ।"

"मैं तुमसे मिलने का भी यत्न करूँगा ।"

मथुरासिंह ने त्रिलोकचन्द को बात बताई तो उसने नवीन स्थिति पर सन्तोष प्रकट किया । उसने बताया, "मै समझता हूँ कि छ मास लगे है इनको रिक्रूटिंग कार्यालय से कूडा-कर्कट साफ करने मे । जब उच्च अधिकारी ठीक आते है तो सब अधीनस्थ कर्मचारी भी सतर्क हो जाते है । जो सतर्क नही हो सकते, वे दीवार की ओर धकेल दिये जाते है ।

"देखो मथुरा ! मेरे सेना-कार्य मे न लिये जाने का शोक अब हमको, मेरा तात्पर्य है मुझको और स्नेह को नही रहा । तुम्हारे लिए जाने से हमे सन्तोष हुआ है कि तुम्हारे द्वारा हम भी इस महान् यज्ञ मे कुछ तो सहयोग दे ही रहे है । तो मेरे भाई किशोरचन्द का पत्र आया है कि उसे फ्लाइंग ऑफिसर का सर्टीफिकेट मिल गया है और उसकी नियुक्ति शीघ्र ही होने वाली है । मेरा लडका रमेश तो अभी भरती होने के योग्य नही ।

द्वितीय परिच्छेद

केहरसिंह को आत्म हत्या करने के प्रयत्न मे पकडा गया था। सरस्वती के विवाह की बात देवीदयाल से भी चोरी रखी गयी थी। एक दिन वह होशियारपुर से केहर के मुकद्दमे की पेशी देखकर लौटा तो उसको पता चला कि रिसालदार सूरतसिंह अपनी पत्नी के साथ लाहौर गया हुआ है।

देवीदयाल ने समझा कि मथुरासिंह सेना मे भरती हो गया है और उसके माता-पिता उसे विदा करने लाहौर गये है। वह गाँव-गाँव मे सूरतसिंह को टोडी सरकार का पिट्ठू तथा देश-द्रोही विख्यात करने लगा था।

पाँच दिन अनुपस्थित रह, सूरतसिंह लौटा तो वह उससे मिलने जा पहुँचा। सूरतसिंह ने देवीदयाल का स्वागत करते हुए पूछा, "सुनाओ लाला देवीदयाल! क्या हुआ है केहरसिंह का?"

"उस पर पुलिस ने मुकद्दमा चलाया है, आत्म-हत्या के प्रयास के अपराध मे। वह जमानत पर है।"

"किसने दी है उसकी जमानत?"

"जमानत तो मैने ही दी है।"

"और वह है कहाँ?"

"बरौडा मे है। अपना ट्रक चला रहा है।"

"उसको अपनी भूल का ज्ञान हुआ है या नही?"

"भूल तो उसने की नही। फिर उसके ज्ञान का प्रश्न ही उपस्थित नही होना।"

"देखो देवीदयाल! एक नाबालिग लडकी से उसके माता-पिता की रुचि के विरुद्ध विवाह के लिए दबाव डालना तो भूल भी थी और अपराध भी।"

"दबाव तो कुछ नही था। वह तो स्वय कष्ट सहन कर सरस्वती के माता-पिता को अपने अनुकूल करने की प्रेरणा दे रहा था।"

"नही। वह लडकी और लडकी के माता-पिता को बदनाम करने और स्वय को देवता प्रख्यात करने का प्रयास था। दूर-दूर गाँव से लोग आकर उसकी पुष्पादि से अर्चना करने लगे थे। औरते अपने बच्चो को उससे आशीर्वाद दिलवाने लगी थी और पुरोहित की लडकी के चरित्र की चर्चा होने लगी थी।"

"यह तो जनसाधारण की भूल है, केहर की नही।"

"इस भ्रम का फैलाने वाला वही था।"

देवीदयाल ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "मथुरा कहाँ है?"

"उसका कॉलेज खुलने वाला है। इससे वह लाहौर ही रह गया है।'

"मैंने समझा था कि वह सेना मे भरती हो गया है।"

"उसके लिए तो उसने अभी प्रार्थना-पत्र भेजा है।"

"जमादार साहब! यह देश-द्रोही का कार्य मत करना। हमको कानो-कान यह सकेत मिला है कि हमने सरकारी भरती मे बाधाएँ खडी करनी हे।"

"किसने यह सकेत भेजा है?"

"मेरा सम्पर्क फारवर्ड ब्लॉक वालो से भी है। यह उन्ही की ओर से है। बाबू सुभाषचन्द्र बोस ने तो स्पष्ट शब्दो मे कलकत्ता मे कहा है कि यदि युद्ध हुआ तो हम युद्ध-प्रयास का विरोध करेगे।"

"देखो देवीदयाल! देश की सेवा और देश की स्वतन्त्रता के लिए मैं सुभाष बाबू तथा गाधीजी से सहमत हूँ, परन्तु मैं सेवा और स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए उनके उपायो से सहमत नही हूँ।"

"तो आपका क्या उपाय है ?"

"मैं यह जानता हूँ कि हमारे देश को अग्रेजो की परतन्त्रता इस कारण स्वीकार करनी पडी थी कि रण-भूमि मे हमारी सेनाएँ वह दृढता, नियन्त्रण और सामर्थ्य नही दिखा सकी थी, जो अग्रेज सेनाओ मे थी। उनकी सेना के सिपाही अग्रेज और हिन्दुस्तानी, दोनो ही, नियन्त्रण और रण-कौशल मे मराठो और सिखो की सेना से श्रेष्ठ थे। यह ठीक है कि हमारी सेनाओ के अधिकारी देश-प्रेम के स्थान, स्वार्थ के लिए लड रहे थे, और अग्रेज अधिकारी इगलैड की मान-प्रतिष्ठा के लिए लडते थे। इस पर भी यह स्पष्ट ही है, कि हमारी सेनाओ और राजाओ मे कुछ तो ऐसे थे ही, जो स्वार्थ से ऊपर देश और जाति से प्रेम रखते थे। परन्तु मुख्य बात सेना की थी।

"मैं अब भी यही समझता हूँ कि सेना मे भाडे के टट्टू भरती होने के स्थान, देश के पढे-लिखे, और देश-प्रेम रखने वाले युवक भरती होगे तो वे अधिक शीघ्र स्वराज्य ला सकेंगे। अग्रेज इस बात को जानते है। यही कारण है कि वे सेना मे भगी, चमार तो भरती कर लेते है, परन्तु पढे-लिखे और उच्च जाति के युवको को नही लेते। वे यह समझते थे कि यदि सेना मे देश के स्वाभाविक नेता पहुँच गए तो अग्रेज अधिकारियो को, या तो उनके बराबर होकर कार्य करना पडेगा, अन्यथा इगलैड का वापसी टिकट कटवाना पडेगा।

"सुभाष और गाधीजी मे कोई अन्तर नही। दोनो सत्याग्रह और अहिंसा के लिए कटिबद्ध है। किसी अच्छे उद्देश्य के लिए हिंसा भी क्षम्य होनी चाहिए। देश को स्वतन्त्र कराने के लिए सहस्रो और लाखो के भी रक्त से मातृ-भूमि को सींचा जा सकता है। यह पाप नही पुण्य है।"

"भापा ! तुम बहुत पुराने जमाने की बाते करते हो। आज गाधीजी ने एक नया युग आरम्भ किया है। गाधीजी ने तो हिटलर को भी पत्र लिखा है कि युद्ध न करे।"

"और हिटलर मान गया है ?"

"वह हिन्दुस्तान का हाकिम होता और उसको सत्याग्रह का सामना करना पडता, तो मान जाता।"

सूरतसिंह हँस पडा। देवीदयाल सूरतसिंह को अंग्रेजी सरकार का पिट्ठू समझने लगा था, और उसको देश-भक्ति का पाठ पढाने का यत्न करने का विचार करता था।

सूरतसिंह का चरित्र और गाँव वालो से व्यवहार सदा श्रेष्ठ रहा था। किसी को जमादार के विरुद्ध कहने को कोई बात नही होती थी, परन्तु जब से वह पुरोहित की लडकी का विवाह कर आया था, लोग भिन्न-भिन्न प्रकार की बाते लेकर जमादार के पास आने लगे थे।

एक दिन गाँव का एक किसान सूरतसिंह के पास आया और कहने लगा, "भापा! मथुरासिंह नही आया ?"

"उसका कॉलेज खुल गया है और वह अपनी पढाई कर रहा है ?"

"कितनी पढाई करेगा वह ?"

"अभी दो वर्ष और पढेगा।"

"तो सरस्वती उसके पास ही है।"

"कौन सरस्वती ?"

"पुरोहितजी की लडकी।"

"उसका विवाह लाहौर के एक स्कूल मास्टर से हो गया है।"

"स्कूल मास्टर अथवा मथुरासिंह से ?"

"तुमको यह किसने कहा है ?"

"कुछ लोग कह रहे है कि जब सरस्वती आपके घर मे रहती थी, तब ही वह मथुरासिंह से सम्बन्ध रखती थी। बात छिपाने के लिए वे लाहौर चले गए है और मजे मे रहते है।"

"पता नही ये कौन है, जो ऐसी बाते करते है। कल साधू बढई आया था और कहता था कि बरौडा से उसका समधी आया है। वह कहता है, सरस्वती का मुझसे सम्बन्ध था, और मैने उसको अपने लडकेके पास

रखा हुआ है।"

"तो यह सब बात गलत है?"

"तुम सब लोग कुछ मूर्ख होते जा रहे हो। वह मेरी लडकी समान है। मेरी गोद मे खेली है, भला मुझमे तुम लोग इस प्रकार की नालायकी की आशा क्यो करते हो?"

सूरतसिह के अपनी सफाई देने पर भी बात बढती गयी। गाँव के प्राय लोग सूरतसिह की शक्ल देख गम्भीर हो जाते थे। पुरोहित को लोगो ने पूजा-पाठ के लिए बुलाना बन्द कर दिया था। कभी कोई भूला-भटका आ जाता और कुछ फल इत्यादि दे जाता। पुरोहित इस तगी का अनुभव करने लगा था। वह गाँव वालो के इस परिवर्तित मनोभावो को समझ नही सका।

जमादार और पुरोहित की निन्दा घूम-घुमाकर देवीदयाल के घर पर भी पहुँची। राधा का भाई रमणीक स्कूल से आया तो माँ से पूछने लगा, "अम्माँ! सरस्वती कहाँ गयी है?"

"अपनी ससुराल गयी है।"

"वह कहाँ है?"

"लाहौर मे।"

"अम्माँ नही। तुम नही जानती। सरस्वती का विवाह पहले जमादार से हुआ था, अब मथुरा भैया से हो गया है।"

राधा भी बैठी सुन रही थी। माँ-बेटी दोनो अवाक् रह गयी। राधा ने पहले मुख खोला। उसने पूछा, "कौन कहता है यह?"

"स्कूल के लडके कह रहे थे कि जमादारपुर गाँव का जमादार पुरोहित की लडकी को घर मे रखकर अपनी पत्नी बना बैठा था। उसके गर्भ ठहर गया तो उसका विवाह जमादार ने अपने लडके से करा दिया है।"

"रमणीक!" राधा ने क्रोध मे कहा, "यह गलत है। जमादार, भापा और उसका लडका ऐसे नही हैं।"

"पर राधा! सब लोग यही कह रहे है।"

"सब कौन ?"

"कर्मू का लडका मेरे साथ स्कूल जाता है और साथ ही आता है। वह कहता था कि उसका दादा भी यही कहता है।"

"अच्छा रमणीक!" माँ ने गम्भीर हो कह दिया, तुम किसी को मत कहना। यह बात गलत है। झूठी बात कहने मे बहुत पाप लगता है।"

रमणीक छठी श्रेणी मे पढता था और वह अभी विवाहादि विषयो पर बहुत कम जानकारी रखता था। इससे वह चुप रहा।

राधा की माँ ने रात खाना खाते समय अपने पति से पूछ लिया, "कर्मू का बेटा जमादार के विषय मे लडको को कुछ झूठ बात कह रहा है। उसके बाप को मना कर दो।"

"क्या झूठ बात कह रहा है ?"

"यही कि जमादार और सरस्वती का अनुचित सम्बन्ध रहा है।"

"और तुम कैसे जानती हो कि यह झूठ है ?"

'जमादार इतने वर्षो से हमारे साथ इतना अच्छा व्यवहार रखता है। हम उसकी प्रत्येक बात को जानते है। भला कौन इसको मानेगा ?"

"मक्खनी! दाल मे काला कुछ जरूर है। सरस्वती और पुरोहित एक दिन चुपचाप गाँव से लापता हो गए। फिर जमादार और मथुरा की माँ भी चले गए। मथुरा कई दिन पहले से ही चला गया था। कहते है सरस्वती का विवाह हो गया है, परन्तु गाँव मे किसी को सूचना तक नही दी। पुरोहित की लडकी को सबका कुछ-न-कुछ देना बनता था, परन्तु उस लेने की चिन्ता भी नही की गयी।

"फिर कर्मू का बडा बेटा किसी काम से लाहौर गया था और वह वहाँ सरस्वती और मथुरा को ठडी सडक पर घूमने देख आया है।"

"कर्मू का बेटा सुन्दर ?" राधा ने नाक चढाकर पूछ लिया।

"हाँ।"

"वह झूठा है।"

"तुम कैसे जानती हो ?"

"पहले वह भी सरस्वती से छेड-छाड करता था। उसको तो मैंने और सरस्वती ने खूब पीटा था। वह भाग खडा हुआ था।"

देवीदयाल ने हँसते हुए कहा, "तो तुम भी झूठ बोलने लगी हो। भला तुम कैसे पीट सकती थी उस हट्टे-कट्टे युवक को ?"

"तो उससे पूछ लो। मै झूठ नही कहती।"

राधा की माँ ने बात बदल दी। उसने कहा, "मै कल सुबह जमादार की पत्नी भगवती से पूछने जाऊंगी। वह कभी झूठ नही बोलती।"

"अपने पति के मान की रक्षा के लिए तो झूठ बोल ही सकती है।"

"तो धर्म-ईमान कुछ भी नही है ?"

"ये सब बडे-बडे आदमी अन्दर से काले ही होते हैं।"

"मेरा मन नही मानता। न तो मैं जमादार भापा को इतना पतित समझती हूँ, न ही भगवती को झूठ बोलने वाली।"

देवीदयाल चुप कर रहा। अगले दिन देवीदयाल होशियारपुर अपनी दुकान की मासिक खरीद के लिए चला गया। मक्खनी जमादार के घर जाने के लिए तैयार होने लगी तो राधा भी साथ जाने को तैयार हो गयी। मक्खनी ने पूछ लिया, "तुम किधर जा रही हो ?"

"तुम्हारे साथ।"

"क्यो ?"

"मैं तो देखना चाहती हूँ कि भगवती कैसे झूठ बोलती है।"

"तो वह झूठ बोलेगी ?"

"नही बोलेगी।"

"तुम देखकर क्या करोगी ?"

"यदि यह सत्य है कि जमादार और उसका बेटा इतने बडे पापी है, जितना रमणीक ने बताया है तो ।" वह कहती-कहती रुक गयी।"

माँ उसे एकाएक चुप कर गयी देख, पूछने लगी, "हाँ तो फिर क्या ?"

"मै इस गाँव मे नही रहूँगी ।"

"तुमको इस गॉव मे रखता ही कौन है ? तुम्हारे लिए होशियारपुर मे प्रबन्ध हो रहा है ।"

"किसलिये ?"

"पगली ! तुम्हारी ससुराल वहाँ बनाने जा रहे है ।"

"कौन बना रहा है ?"

"ससुराल परमात्मा बनाता है । वही तुम्हारे पिताजी को प्रेरणा दे रहा है ।"

"यह गलत है ।"

"क्या गलत है ?"

"फिर बताऊंगी । पहले भगवती के घर चलना चाहिए । मैं रात-भर सो नही सकी ।"

"क्यो ?"

"मुझको रमणीक की बात सुन, बहुत दुःख हुआ है ।"

मक्खनी अपनी लडकी के मनोद्गारो को समझ नही सकी । इससे वह अन्यमनस्क भाव मे लडकी का मुख देखती रह गयी । फिर कुछ सोच वह बोली, "अच्छा, चलो ।"

दोनो घर को ताला लगा चल पडी । रमणीक पाठशाला चला गया था ।

देवीदयाल की दुकान घर के पीछे ही थी । मक्खनी तथा राधा घर के पिछले द्वार से निकल दुकान के सामने आयी तो कमू जुलाहा उनकी बन्द दुकान पर बैठा था । उसने लाला की पत्नी और लडकी को कही जाते देखा तो उठकर पूछने लगा, "भाभी ! भैया कहाँ है ?"

"होशियारपुर गए है, माल खरीदने ।"

"और तुम कहाँ जा रही हो ?"

"जमादार के घर ।"

"क्यो, कुछ काम है ?"

मक्खनी बताना नही चाहती थी। उसने टालने के विचार से कह दिया, "ऐसे ही। बहुत दिन हो गये भगवती से मिले हुए।"

"पर भाभी ।"

"क्यो क्या है ?"

"गाँव वालो ने जमादार और पुरोहित का बॉयकाट कर रखा है।"

"वह क्या होता है ?"

"मेल-वर्तन बन्द। गाँव की पचायत ने तो जमादार को अपने मे से निकाल दिया है।"

"तो फिर ?"

"तो यह कि गाँव के मुखिया को उसके घर नही जाना चाहिए। पचो ने मुझको इस बात पर नियुक्त किया है कि मैं उनके घर मे भगी-कहार को भी जाने से रोकूँ।"

"पर मैं तो भगी-चमार नही हूँ।"

मक्खनी पहले तो कुछ मन मे डरी, फिर कुछ विचारकर जमादार सूरतसिह के घर को चल पडी। पीछे-पीछे कर्मू भी था। कुछ दूर जाकर मक्खनी ने कहा, "तुम अपना काम करो।"

"मै अपना काम ही कर रहा हूँ।"

"क्या काम कर रहे हो ?"

"जमादार के घर जाने वालो को वहाँ जाने से मना कर रहा हूँ।"

"तो कर लिया है न मना ? अब जाओ।"

"नही भाभी, यदि तुम उनके मकान मे जाने लगोगी तो मैं वहाँ लेट जाऊँगा और नही जाने दूँगा।"

"अच्छी बात है, चलो।"

जमादार के द्वार पर गाँव के चमार, जुलाहे, कहार एकत्रित हो रहे थे। बीस के लगभग बच्चे और युवक थे। वे द्वार के चारो ओर लेट रहे थे। कोई कूदकर भी नही जा सकता था।

मक्खनी वहाँ खडी हो गयी। कर्मू उनके समक्ष हाथ जोडकर खड़ा

हो गया। राधा को मजाक सूझा। उसने माँ से कहा, "माँ ! मै अन्दर जाऊँगी।"

"कैसे जाओगी ?"

"यहाँ भूख-हडताल कर बैठ जाऊँगी। जब तक ये लोग मार्ग नही छोडेगे, तब तक कुछ नही लूँगी।"

"नही, राधा बेटी ! यह काम तुमको शोभा नही देता।" कर्मू ने कहा।

"तुम लोग जब झगडा करते हो तो क्या किया जाये ?"

"इस पर लेटे हुओ मे से एक बोल उठा, "हम जमादार को भूखो मार डालेगे।"

"और मैं यहाँ बाहर भूखी मर जाऊँगी।"

राधा जमादार के घर के द्वार के सामने लेटे हुओ के दूसरी ओर भूमि पर बैठ गयी। उसकी माँ भी वहाँ बैठ गयी।

कमू इस सत्याग्रह के विरुद्ध भूख-हडताल का अर्थ नही समझ सका। इस पर भी वह चुप था। वह विचार कर रहा था, कि जब लाला की पत्नी और लडकी भूख से व्याकुल होगी तो स्वयमेव उठ जायेगी। धरना देने वाले स्वयसेवको की तो उसने तीन मण्डलियाँ तैयार की थी, और आठ-आठ घटे प्रत्येक को धरना देना था। इस प्रकार चौबीस घटे जमादार को मकान मे बन्द करने का प्रयत्न किया गया था।

मक्खनी और राधा को वहाँ बैठे एक घटा के लगभग हो गया था। इस समय तक गाँव की बहुत-सी स्त्रियाँ और कुछ भले घरो के लोग भी वहाँ एकत्रित हो गए थे।"

जमादार के विरुद्ध प्रचार को तो सब जानते थे, परन्तु उसके प्रतिकार मे इस धरने का अर्थ समझ नही सके थे। उसमे भी कम समझ मे आने वाली बात थी राधा और राधा की माँ का वहाँ आना और धरणे के विरुद्ध धरना देना।

इस समय तक जमादार के द्वार पर पचास-साठ के लगभग आदमी

एकत्रिन हो गए थे। उनमे से कुछ औरते भी थी। मध्याह्न के बारह बज रहे थे। इस समय दो लडके भागे-भागे वहाँ आए और कर्मू से बोले, "पुलिस आ गयी है।"

"पुलिस! क्या करने?"

"जमादार साथ है।"

इससे तो कर्मू कुछ समझ नही सका कि क्या करे। वह अभी विचार ही कर रहा था कि जमादार सूरतसिंह पुलिस के लट्ठबन्द दस सिपाहियो के साथ वहाँ आ खडा हुआ।

जमादार ने वहाँ भूमि पर देवीदयाल की पत्नी और लडकी को बैठे देखा तो चिन्ता अनुभव करने लगा। उसने समझा कि वे भी सत्याग्रहियो मे सम्मिलित है। इससे उसको पुलिस बुलवाकर उनको पकडवाने का शोक लगने लगा। उसने आगे बढकर राधा से पूछ लिया, "राधा बेटी! तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

"भापा! हम भीतर जाना चाहती है और ये लोग जाने नहीं देते।"

थानेदार ने आगे बढकर पूछ लिया, "कौन रोक रहा है भीतर जाने से?"

राधा ने कर्मू की ओर सकेत कर कह दिया। थानेदार ने कर्मू को बुलाया और पूछा, "तुम! इनको भीतर जाने से रोकते हो?"

"नही, रोकते नही। हाथ जोड विनती करते हैं कि ये भीतर न जाये।"

"ये लेटे हुए लोग हाथ जोड रहे है क्या?"

कर्मू कुछ उत्तर नही दे सका। थानेदार ने सबसे समीप लेटे हुए-से पूछ लिया, "यहाँ क्यो लेट रहे हो?"

उसने स्वय उत्तर देने से बचने के लिए कहा, "कर्मू पच से पूछ लो।"

थानेदार ने कर्मू को हथकडी लगाने को कह दिया और वहाँ सब खडे हुओ को कहा, "देखो! सब सुन लो! मैं घडी मे समय देख रहा

हूँ। दो मिनट के भीतर सब रास्ते से एक ओर हट जाओ, नही तो मै सब पर मुकद्दमा चलाऊँगा।''

सब एक-दूसरे का मुख देखने लगे पर कोई नही उठा। थानेदार ने बडी बडो को हथकडी लगा दी और बच्चो को धकेलकर एक तरफ कर दिया। मार्ग साफ हो गया तो राधा और मक्खनी अन्दर चली गई। पुलिस वालो ने चौदह लोग पकडे थे। उनको मोटर वैन मे बैठाकर बरौडा ले गये।

कर्मू के पकडे जाने से गाँव मे शान्ति हो गई। कर्मू को एक बात का शोक था। वह यह कि लाला देवीदयाल वहाँ नही था। वह होता तो थानेदार से दो बाते तो कर सकता।

२

पिछली रात पचायत मे इस बात का निर्णय करने के उपरान्त ही कि जमादार का सामाजिक बहिष्कार कराया जाये, देवीदयाल घर आया था। बहिष्कार की रूपरेखा भी बना ली गई थी। पैतालीस के लगभग स्वयसेवक भर्ती किये गए थे और उनकी मडलियाँ बनाकर प्रत्येक मडली को आठ घंटे तक धरना देने पर नियुक्त कर दिया था।

प्रात काल जब प्रथम मडली ने मकान का मार्ग रोका तो जमादार प्रात काल भ्रमण को जाने वाला था। उसने एक स्वयसेवक से पूछा, ''यहाँ क्या कर रहे हो?''

उस स्वयसेवक ने बताया, ''हम पचायत की आज्ञा से आपके मकान पर धरना दे रहे है।''

''धरना देने से क्या होगा?''

''आपका बाहर के लोगो से सम्पर्क बन्द कर, आपका बहिष्कार कराया जायगा।''

जमादार पुन घर मे चला गया। उसने द्वार भीतर से बन्द कर लिया और मकान के पिछवाडे की दीवार फाँदकर, बाहर हो, वह सीधा बरौडा जा पहुंचा। वहाँ उसने पुलिस मे रिपोर्ट लिखाई और कर्मू पर

यह आरोप लगा दिया कि मेरे परिवार को मकान मे कैद कर दिया है। थानेदार ने इस रिपोर्ट पर कार्रवाई करने के लिए तुरन्त एक दर्जन सिपाही, एक हैड कान्स्टेबल के अधीन जमादारपुर भेज दिये।

चौदह लोग पकडे गये और तब बरौडा मे उनके बयान हुए तो लाला देवीदयाल के भी वारंट निकल गये।

मक्खनी और राधा भीतर चली गयी तो भगवती ठाकुरजी के समक्ष सिर झुकाये, आँखे मूँदे बैठी थी। जब वे भीतर गयी तो भगवती ने आँखें खोली और मक्खनी को देख पूछने लगी, "आओ, मक्खनी बहिन! बैठो! मै भीतर से देख रही थी कि गाँव वाले तुमको भी मेरे पास आने नही देते। मै आतुर हो ठाकुरजी से सहायता के लिए प्रार्थना करने लगी। भगवान् का लाख-लाख धन्यवाद कि तुम आ सकी हो।"

"मौसी!" राधा ने कहा, "पर बात क्या है?"

"बेटी! तुम्हारे पिताजी, न जाने हमसे क्यो नाराज़ हो रहे है और यह सब उन्होने ही कराया है।"

"तो भापाजी पुलिस लेने गये थे?"

"उनको घर के द्वार मे से जाने नही दिया। इस कारण वे पिछले अहाते की दीवार फाँदकर निकल गये थे।"

"पर भगवती बहिन! यह सरस्वती और मथुरा के विषय मे क्या बात है? लोग बहुत बातें बना रहे है।"

"तो यह बात तुम तक भी पहुँची हैं?"

"रमणीक कही स्कूल मे से सुनकर आया था। उसने हमको बताया है। मैंने लालाजी से पूछा तो वे कहने लगे कि कर्मू का बेटा लाहौर मे मथुरा और सरस्वती को बाग मे सैर करते देख आया हैं।"

"बहुत झूठा है कर्मू का बेटा। यह बात बिलकुल गलत है। सरस्वती का विवाह एक स्कूल-मास्टर से हो गया है। वह अपने पति के साथ बडे दिनो की छुट्टियो में आने वाली है। मथुरा कॉलेज मे पढता है।

"परन्तु बहिन ! कर्मू मे तो इतनी अक्ल है नही कि इस प्रकार की कहानी बना सके। यह तो लालाजी की बात ही प्रतीत होती है।"

राधा इस झूठ मे अपने पिता का हाथ देख, क्रोध मे भर गई। अगले दिन देवीदयाल सायकाल लौटा तो आते ही पकड लिया गया। दो दिन पश्चात् उसकी तथा उसके साथियो की ज़मानत हो सकी।

इस समय केहरसिंह को छ मास का दण्ड हो गया। उसकी अपील उच्च न्यायालय मे कर दी गई। वहाँ उसका दण्ड कम हो गया। बहुत सिफारिशो से पचायत के विरुद्ध पुलिस का मुकद्दमा भी वापस ले लिया गया। देवीदयाल और सब पकडे हुए लोगो ने जमादार से क्षमा माँगी और मुकद्दमा उठाया गया।

जब मुकद्दमे से छुट्टी पा, देवीदयाल पुन शान्ति से दुकान का कार्य करने लगा तो एक दिन राधा ने, जो अब नित्य भगवती से मिलने जाया करती थी, पिता से पूछ लिया, "पिताजी ! आपने यह सब क्यो किया ?"

"मेरी सूचना वही थी और उस सूचना के आधार पर कष्ट सहकर भी सूरतसिंह को सबक सिखाना था।"

"परन्तु सबक तो आपको मिल गया है। दो मास दुकान बन्द रही। माताजी का कथन है कि इस दौरान मे एक हज़ार से ऊपर व्यय हो गये हैं और फिर लिखित क्षमा माँगनी पडी है।"

"परन्तु राधा ! इससे एक लाभ हुआ है, अपने गाँव के लोगो को सत्याग्रह का ढग आ गया है।"

"यह सत्याग्रह था क्या ? यह तो हठ था। कारण यह है कि एक गलत बात के लिए सब-कुछ था। आपने भली-भाँति जाँच नही की और लोगो को भी बिना विचार किये दूसरो को कष्ट देने का स्वभाव डाला है।"

"आम लोग तो ऐसे ही होते है। भूल मेरी थी और उसका फल मैंने पा लिया है। जहाँ तक लोगो का सम्बन्ध हे, वे तो सत्याग्रह की महिमा जान गये है।"

"क्या महिमा जान गए है ? झूठ बोलना, दूसरो को व्यर्थ मे कष्ट देना और पीछे क्षमा माँग लेना।"

"परन्तु राधा ! तुमको तो अब गाँव की बातें छोड, होशियारपुर की बाते सुननी चाहिये। लडका समझदार और सुन्दर है। परिवार लख-पति है। पाँच भाई है और साझा परिवार है। गजेन्द्र सबसे छोटा है। पिता अभी जीवित है।"

राधा चुपचाप यह सुनती रही। जब पिता अपनी बात समाप्त कर चुका तो वह उठकर अपने कमरे मे चली गई। उसी रात को मक्खनी ने लाला को बताया, "राधा कहती है कि वह इन लाला के घर मे विवाह नही करेगी।"

"क्यो ?"

"वह बताती नही। वह कहती है कि यदि विवाह किया गया तो वह घर से भाग जायेगी।"

"तो कहाँ विवाह करना चाहती है ?"

"वह कुछ नही बताती।"

"वह किससे मिलती रहती है ?"

"आजकल वह भगवती से मिलने जाती है।"

"क्यो जाती है ?"

"मुझको तो यही कहती है कि गाँव में और है ही कौन जिससे बात-चीत की जा सके।"

"तो भगवती बडी पढी-लिखी है, जो उससे बाते करने जाती है।"

"जमादार भापा उसको युद्ध की बाते बताया करते है और वह बहुत रुचि से सुनती है।"

"भला एक बनिये की बेटी का क्या सम्बन्ध है युद्ध की बातो से ?"

"तो आप स्वय पूछ लीजिएगा।"

अगले दिन देवीदयाल ने राधा से पूछ ही लिया, "सुना है तुम रोज़ जमादार के घर जाती हो ?"

"हाँ।"

"क्यो ?"

"मैं उनके घर का चलन सीखना चाहती हूँ।"

"क्या है उस चलन मे ?"

"मुझको कुछ भला प्रतीत होता है।"

"कुछ बताओ भी। क्या बात है, जो यहाँ नही है।"

"एक तो वहाँ ठाकुरजी का घर है। उसमे सदैव धूप-दीप जलता रहता है। वहाँ चन्दन घिसा पडा रहता है। ताई मुझको वहाँ ले जाती है। मुझको ठाकुरजी के सामने वन्दना करने को कहा करती है। वह मुझको कहती है कि मै अपने लिए सुख-कारक वर माँगा करूँ।

"वहाँ हम बैठती है तो भगवती रामायण-पाठ करती है। कभी मुझको समझ नही आता, तो समझाती भी है। कभी-कभी जब रामायण-पाठ हो रहा होता है, तो भापाजी आ जाते है और सुनते है, कभी कथा के बाद वे अपनी आप-बीती बाते सुनाने लगते है।"

"किस समय जाया करती हो वहाँ ?"

"मध्याह्न का भोजन करके जाती हूँ और तीसरे पहर चाय पी, लौट आया करती हूँ।"

"तो वहाँ कोई और भी जाता है ?"

"नित्य तो मैं ही जाती हूँ। वैसे कुछ अन्य स्त्रियाँ भी आती है, तो पाँच-दस मिनट तक बैठकर चली जाती है। उनको कथा मे रस नही आता।"

"यह सब ढोग है।"

"इसमे ढोग क्या है ?"

"देखो राधा! ढोग किसी झूठ को सत्य प्रकट करने का नाम है। परमात्मा तो है नही और उसकी मूर्ति बना, उसका शृगार कर धूप-दीप जला, चन्दन लगाकर सामने रखना और फिर उसके सामने ऐसे मस्तक नवाना, मानो वह कोई राजा-रईस हो और उसक भोग लगाना, मानो

वह खाता हो, यह सब असत्य को सत्य बताना है और मैं इसको ढोंग कहता हूँ।"

"परन्तु पिताजी ! इस ढोंग को करने से उनको क्या लाभ होगा ?"

"यह तो मै जाकर देखूँ तो पता चले।"

"भापाजी को कहूँ कि वे आपको अपने ठाकुरजी दिखायें।"

"देखो राधा ! ठाकुर हमारे घर मे भी रखे थे। तुम्हारे बाबा बहुत पूजा-पाठ करते थे। मै भी नित्य प्रात ठाकुरजी के दर्शन करता था, परन्तु मेरे मन मे उन पत्थर की मूर्तियो के लिए कभी भी श्रद्धा-भक्ति उत्पन्न नही हुई। और जब से मुझको गाधीजी के दर्शन हुए है, मैं उन पत्थरो के ठाकुरो को भूल गया हूँ। पिताजी का देहान्त हुआ तो मैं ठाकुरजी को यहाँ से उठाकर ले गया और बडे कुँए के पास बरगद के पेड के नीचे भूमि मे दबा आया हूँ।

"मै समझता हूँ कि जब से मै ठाकुरजी को वहाँ, जहाँ के वे योग्य है छोड आया हूँ, मैं उन्नति ही करता जा रहा हूँ।"

"क्या उन्नति की है आपने ?"

"तुम हमारे घर मे आयी। फिर रमणीक आया। तुम्हारी बहिन सीता तो पहले ही आ चुकी थी। तब से मै न बीमार होता हूँ, न ही काम से थकता हूँ। देश का काम भी करता हूँ। मै जिला काग्रेस कमेटी का सदस्य भी हूँ।"

"यह तो ठाकुरजी घर मे रह जाते, तब भी हो जाता।"

"परन्तु तुम्हारे बाबा की तो यह उन्नति हुई नही।"

"सुना है वे बरौडा मे बहुत बडे धनी आदमी थे।"

"परन्तु अन्त समय मे वहाँ का सब कारोबार मेरे बडे भाई को दे, यहाँ आ गए। तब जमादार को यह बीस एकड भूमि मिली थी। उनको यह स्थान बहुत रमणीक लगा और वे इस वीरान स्थान मे बीस एकड भूमि लेकर रहने लगे। मै उनकी सबसे छोटी सन्तान था। वे मुझको भी यहाँ ले आये।

"वे स्वय और मै भी निर्धन हो गए। उनके जीते-जी हम बाजरे की रोटी और सरसो का साग खाते थे। चने की दाल तो किसी उत्सव के दिन प्राप्त होती थी। जब तक वे जीवित रहे, हमारी यही दशा रही। उनके देहान्त के उपरान्त मैने ठाकुरजी को भूमि मे दबाया तो मेरे ज्ञान-चक्षु खुल गए। अब तुम देखती हो कि जमादार, जो यहाँ का मालिक है, वह भी मेरे नाम से डरता है।

"जब स्वराज्य हुआ तो जमादार की सब भूमि काश्तकारो मे बाँट दूंगा। मैं यहाँ का नम्बरदार बनूंगा और भूमि उन काश्तकारो के नाम दाखिल, खारिज कर दूंगा।"

राधा को यह सब कथा जमादार ने एक दूसरे रूप मे सुनाई थी। वह रूप उसने अपने पिता को नही बताया, परन्तु जब लाला दुकान पर चला गया तो राधा ने वही बात माँ को बताई।

"माँ! भापा कहते थे कि मेरे बाबा का दिवाला पिट गया था। वे अपनी सब सम्पत्ति सरकारी रिसीवर के हाथ सौप, सर्वथा अकिंचन हो इस नये गाँव मे आ गये थे। हमारे तायाजी बरौडा मे ही रह गए थे। पिताजी यहाँ आये थे सन् १९२० मे। उस समय बाबा दिवाला निकालने के शोक के कारण बहुत दुर्बल और हतोत्साह थे। भापा ने उनकी और पिताजी की बहुत सहायता की। भूमि दी, दुकान बनवाने को पैसे दिये। इसके बाद पिताजी का विवाह हुआ। सीता बहिन पैदा हुई तो पिताजी को बहुत क्रोध चढ गया। वे लडके की आशा करते थे। साथ ही सीता अपाग थी।

"१९२५ मे जब सीता दो वर्ष की थी, तब बाबा का देहान्त हो गया था। पिताजी गाधी-वादी बन गए। वे नास्तिक हो गए। पूजा-पाठ त्याग, धन कमाने मे लग गए। उसी वर्ष मेरा जन्म हुआ। तब से पिताजी इस ओर आस-पास के गाँवो के गुण्डो-शोदो को अपने पास रखे हुए हैं। उन्होने एक काग्रेस कमेटी बनाई हुई है और एक पचायत बना ली है। उन गुण्डो के बल-बूते पर धमका-डराकर आस-पास के बीस-पच्चीस गाँवो मे चौधरी

बने हुए है और लोगो मे झगडा कराते है, और फिर सुलह कराते समय काग्रेस के नाम पर चन्दा लेते है और सुख का जीवन व्यतीत करते है।"

अब मक्खनी ने परिवार की कहानी का तीसरा रूप वर्णन कर दिया। उसने बताया, "मेरे पिता बरौडा मे एक बहुत ही निर्धन दुकानदार थे। मेरा विवाह जमादार भापा के कहने से हुआ। मैं आयी तो घर मे भाँग भुजती थी। मैंने तुम्हारे पिता से मिलकर घर की अवस्था सुधारने का यत्न किया। मेरे आने के पूर्व घर मे कोई औरत नही थी। तुम्हारे पिता रोटी बनाते थे, और बाप-बेटा खाते थे।

"मैने अच्छा खाना बनाना आरम्भ किया। घर की सफाई रखनी आरम्भ कर दी। तुम्हारे पिता को दुकान पर बैठने और होशियारपुर से बेचने के लिए माल लाने का अवसर मिलने लगा। दुकान पर बिक्री होने लगी। सीता हुई तो लडकी, और वह भी अपाग। इससे तुम्हारे पिताजी मुझसे नाराज होकर भाग गए। तब मैं दुकान और घर पर बैठने लगी। जमादार भापा ने यह अवस्था देखी तो वे होशियारपुर गए और इनको पकड लाए। इनके लौटने के पश्चात् तुम्हारे बाबा का देहान्त हो गया। तब से मैं यहाँ हूँ। ये दुकान पर, और घर के बाहर क्या करते हैं और क्या नही करते, मैं नही जानती। घर की अवस्था तो सुधरी है। अब मेरे पास आभूषण है। तिजोरी सदा भरी रहती है। परन्तु यह बात ठीक नही कि ठाकुरजी को गाड आने के बाद हमारी अवस्था सुधरी है। ये ठाकुरजी की मूर्ति को बरगद के पेड के नीचे दबाकर आए थे। और उसको मैं जाकर निकाल लायी थी। वे अभी तक मेरे सन्दूक मे रखे है। अब उनकी नित्य पूजा नही होती, परन्तु मैं मन से तो परमात्मा का चिन्तन करती हूँ। मेरा विचार है कि यह भगवान् की कृपा है कि हमारी अवस्था सुधरी रही है।"

"तो माँ! उन मूर्तियो को पुनः प्रतिष्ठित कर दे तो कैसा रहे।"

"मेरे मन मे कई बार विचार आया है, परन्तु तुम्हारे पिता उनका अपमान भी कर सकते है। क्या लाभ होगा इससे, परमात्मा सब स्थान पर

व्यापक है। वह अपने हृदय मे भी रहता है। इसलिये उसकी पूजा-भक्ति अथवा उसका चिन्तन करने के लिए मूर्ति की आवश्यकता नही।"

"तो फिर उन मूर्तियो को किसलिए रख छोडा है ?"

"मैं जब विवाहकर इस घर मे आई थी, तो तुम्हारे बाबा मुझको इन ठाकुरो के समक्ष ले गये थे। मुझको उन्हे प्रणाम करने को कहा गया और मेरा मन कहता है कि जिनके सामने मैने श्रद्धा-भक्ति से सीस नवाया है उनका अपमान तो होने नही दूँगी।"

"तो उनका क्या करोगी ?"

"पहले जब उनको उठाकर लायी थी, विचार था कि घर मे पुन प्रतिष्ठित करूँगी। परन्तु जब उनकी इस कार्य मे अरुचि देखी तो फिर बाहर निकालने का साहस नही कर सकी। अब कई वर्षों से यह विचार कर रही हूँ कि कभी हरिद्वार जाऊँ तो उनको गगा मे विसर्जन कर आऊँ। मेरे जीवन काल मे केवल दो बार हरिद्वार गये है। जब से मैंने इनके विसर्जन का विचार किया है, ये वहाँ जाने के लिए तैयार ही नही होते।"

परिवार की इस तीन प्रकार की कथा ने राधा के हृदय मे विचित्र प्रभाव उत्पन्न किया। जब से जमादार के घर के बाहर गाँव की पचायत की ओर से सत्याग्रह और धरना हुआ था, तब से ही नित्य राधा उस घर मे जाती थी। उसने भगवती को ठाकुरजी को नमस्कार करते देखा था और वह वहाँ की बातो की ओर अधिक जानने की लालसा करने लगी थी।

जब अपने घर मे माँ को यह कहते सुना कि उसका कार्य बिना ठाकुर-जी की मूर्ति का चिन्तन करने के भी चल जाता है, तो वह इस दिशा मे विचार करने लगी।

३

वह क्या चाहती है ? राधा इस विषय मे मनन कर रही थी। भग-वती से मिलने से पूर्व तो वह मन की प्रेरणा से कार्य करती थी। मन

सस्कारो के अधीन प्रेरणा देता है। राधा के सस्कार इस जन्म के तो शून्य-मात्र थे। वह किसी पाठशाला अथवा विश्वविद्यालय मे पढी भी नही थी। रमणीक की पुस्तको को देखकर ही उसने हिन्दी पढनी और लिखनी सीख ली थी। वह अग्रेजी के अक्षर तो पहचानती थी, परन्तु शब्द जोड-पढ नही सकती थी। अत इस जन्म के सस्कार तो सामान्य ही थे, जो एक हिन्दू-परिवार मे हो सकते थे, मन्दिर मे जाना, शिवद्वारे मे जल चढाना, कभी पीपल की जो मन्दिर के बाहर है पूजा करना, घर मे माता-पिता का कहा मानना और बस। इस सामान्य सी प्रेरणा के अतिरिक्त जो कुछ भी वह करती थी, वह कदाचित् पूर्व-जन्म के सस्कारो के अधीन ही होता था। उसको अच्छाई और बुराई का नैसर्गिक ज्ञान था। जब केहरसिह सरस्वती के पीछे लगा था तो वह सरस्वती को बताया करती थी कि उससे बातचीत करना ठीक नही। क्यो ठीक नही, वह समझा नही सकती थी। केहरसिह ने सरस्वती मे भी भाग जाने का प्रस्ताव किया था। उसने राधा से राय की। परन्तु राधा ने उसको इस बात से मना किया।

दिसम्बर की छुट्टियो मे सरस्वती अपने पति के साथ जमादारपुर आई थी। राधा ने उससे पूछ लिया, "सरस्वती! बहुत प्रसन्न हो?"

"बहुत।"

"जीजाजी कैसे ?"

"बहुत प्रेममय है। मेरी प्रत्येक बात मानते है।"

"केहरसिह याद है क्या?"

"वह तो मूर्ख था।"

"उसके साथ भाग जाती तो।"

सरस्वती को कँपकँपी हो गई और बोली, "राधा बहन! तुम ठीक कहती थी। पति एक साथी के अतिरिक्त बहुत कुछ होता है।"

"और वह बहुत-कुछ मास्टरजी है।"

"बहुत-कुछ से भी अधिक। उनसे अधिक मेरी सास है। मुझको

अपनी माँ भूल गई है।"

अनायास ही राधा ने गहरा श्वास लिया।

"क्यो क्या बात है ?"

"कुछ नही।"

सरस्वती ने गले मे बॉह डालकर कहा, "ससुराल जाने की बहुत इच्छा होती हे ?"

राधा के मुख पर मुस्कराहट दौड गई। फिर कुछ विचारकर बोली, "वह तो मैं नित्य जाती हूँ। अपनी सास के चरण छू आती हूँ।"

"और वह क्या कहती है ?"

"कहती है, चिरजीव रहो। सौभाग्यवती रहो। सौ वर्ष तक सोभाग्य का भोग करो। साथ ही पीठ पर हाथ फेर देती है।"

"बहुत अच्छी है वह ?"

राधा आँखे मूँद चिन्तन करने लगी थी। सरस्वती उसका मुख देख रही थी। जब राधा ने सरस्वती के प्रश्न का उत्तर नही दिया तो उसने पूछ लिया, "क्या सोच रही हो राधा ?"

"यही कि तुम्हारे पेट मे कोई बात रह सकेगी अथवा नही ?"

"मेरे पेट मे तो एक और बात है? परन्तु तुम्हारी बात के लिए भी स्थान है। क्या बात है ?"

"तुमने पूछा कि मेरी सास अच्छी है ? मै विचार कर रही थी कि अभी मैंने सास को बताया नही कि वह मेरी सास है। जब वह जानेगी तो फिर अच्छी बनी रहेगी अथवा नही ? यही सोच रही थी।"

"तो बिना उसको बताये ही उसकी पतोहू बन गई हो ?" सरस्वती ने भय की मुद्रा मे पूछ लिया। राधा चुप थी। इस पर सरस्वती ने कहा, "जिस बात से मुझको मना करती थी, वही कर बैठी हो ?"

राधा सरस्वती की बात समझ, खिलखिलाकर हँस पडी। उसने कहा, "ओह ! यह नही सरस्वती ! देखो मैं बताती हूँ। परन्तु किसी से कहना नही।

"मै भापा के सुपुत्र से बचपन से प्रेम करती हूँ। पिछले वर्ष मुझको समझ आया कि मेरा उससे विवाह होगा। इससे मै उससे डरने लगी और उससे दूर रहने लगी। एक ओर तो मै उसको पति के रूप मे देखती हूँ और दूसरी ओर एक ठाकुर के घर मे बनिये की लडकी का विवाह असम्भव प्रतीत होता है।

"मैं इसी दुविधा मे भटक रही थी। एक दिन पुरोहितजी ने उमा-पार्वती की शिवजी से विवाह की कथा कही। मैं भी कथा सुन रही थी। मुझको यह समझ आया कि पार्वती-जैसी दुर्बल मानव-कन्या शिवजी-जैसे बलवान और देवो मे महादेव से विवाह कर सकती है तो एक बनिये की लडकी कैसे एक ठाकुर के घर नही जा सकती ? बस मेरे मन ने निर्णय कर लिया है और मैं तपस्या करने लगी।

"तुम ससुराल गयी और तुम्हारे पीछे यहाँ पचायत ने बहुत झगडा किया। पिताजी का, भापा और उनके लडके से विरोध हो गया। मेरे मन में पिताजी के प्रति ग्लानि भर गयी। तब से मैं नित्य भगवती के घर जाती हूँ और अपने मन मे उनको अपनी सास मान, उनसे सौभाग्य का आशीष ले आती हूँ।"

"तो यह बात कोई नही जानता ?"

"मेरा मन जानता है और अब तुम जान गयी हो। एक दिन भापा-जी कहते थे कि योरुप मे युद्ध आरम्भ हो गया है। उनका लडका उसमे जायेगा। वहाँ यश कमाकर लौटेगा और उपरान्त विवाह करेगा।

"मैं अपने मन को तब तक प्रतीक्षा करने के लिए तैयार कर रही हूँ।"

सरस्वती भी युद्ध के समाचार सुनती रहती थी और अपने पति से जर्मनो की क्रूरता के समाचार सुने थे। जर्मन टैंको, तोपों और हवाई जहाजों से बरसने वाले बमो से विनाश की बातें सुनी थी। इससे वह मथुरासिंह के युद्ध पर जाने की बात सुन काँप उठी।

सरस्वती ने कहा, "पर माँ कह रही है कि तुम्हारी सगाई होशियार-

पुर मे करने का यत्न कर रहे है।"

"कुछ सन्देह तो मुझको भी है।"

"तो फिर क्या करोगी ?"

"मैं कोई ठिकाना बना रही हूं। जहाँ सगाई से पूर्व ही भागकर जा सकूँ।"

सरस्वती चुप रही, परन्तु वह अपनी सखी के मन की बात सुन चिन्ता अनुभव करती रही। उसने भगवती से इस विषय मे बात करने का निश्चय कर लिया। लाहौर लौटने से दो दिन पूर्व सूरतसिंह ने सरस्वती और उसके पति को अपने घर मध्याह्न के खाने के लिए आमन्त्रित किया। भोजन हुआ। जब मास्टर मदनमोहन जमादार से युद्ध की चर्चा करने लगा तो भगवती एव सरस्वती भीतर कमरे मे जा बैठी। सरस्वती ने राधा की बात चला दी। उसने कहा, "मौसी! राधा का विवाह कब होगा ?"

"जब उसकी माँ करेगी।"

"मैं विचार करती हूँ कि मै उससे छ मास छोटी हूँ और मैं तो माँ बनने वाली हूं। उसके तो विवाह की बात भी नही होती।"

"सरस्वती बेटा! विवाह, सन्तान और मृत्यु—ये अपने-अपने भाग्य के अधीन होते है।"

"मौसी, तुम ही कुछ यत्न कर दो। बेचारी का भाग्य खुल जायेगा।

"क्यो ? उसने कुछ कहा है ?" भगवती ने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया।

"कहा तो है। परन्तु बेचारी बहुत ही निराश है।"

"निराशा किस बात की है ? राधा बहुत ही प्यारी लडकी है। उसके विचार भी बहुत अच्छे है। कोई भी लडका उससे विवाह करके अपना सौभाग्य मानेगा।"

"पर मौसी! मै लडके की बात नही कर रही। मैं तो सास की बात कर रही हूँ। पति से पहले तो सास की प्रसन्नता होनी चाहिए न ? मेरी

सास कहती है कि उन्होने मुझको गोद मे ले खिलाया है और तब से ही पसन्द किया हुआ है।"

"सत्य ! परन्तु राधा को गोद मे खिलाने वाली सास कहाँ मिलेगी ?"

"वे तो कई है। इस गाँव मे भी है। परन्तु कोई राधा को अपनी पतोहू बनाने के लिए मानेगी क्या ?"

"पर वह कौन मूर्ख है, जो राधा-जैसी मीठा बोलने वाली लडकी को अपने घर नही ले जाना चाहेगी ?"

"पर एक बात है, मौसी ! जात-बिरादरी न मिले तो क्या होगा ?"

"पर यहाँ ।" भगवती कहती-कहती रुक गयी। उसको कुछ सदेह हो गया। इससे वह सतर्क हो, पूछने लगी, "लडकी के लिए अपने से ऊँची जात मे जाने मे हानि नही।"

"मौसी ! बनिया ऊँची जात है या ठाकुर ?"

"ठाकुर।" भगवती सब समझ गयी। वह सरस्वती की बात करने मे चतुराई पर विस्मय कर रही थी। उसने अनुभव किया। चार मास के वैवाहिक जीवन मे ही यह लडकी बात करने का ढग सीख आई है।

सरस्वती ने कह दिया, "तो ठीक है। राधा ने अपनी सास का निर्वाचन किया है और वह ठाकुर जाति की है। परन्तु मौसी ! लडकी को क्या करना चाहिए, जिससे ऊँची जाति की सास प्रसन्न हो जाये ?"

"सरस्वती !" भगवती ने हंसते हुए कहा, "लाहौर जाकर तुम वकालत पढने लगी हो क्या ?"

"नही मौसी !"

"परन्तु तुमने अपनी सखी की वकालत बहुत खूबी मे की है।"

"मौसी ! मैं तो तुम्हारी बच्ची हूं। तुमसे हा सब-कुछ सीखी हूं।"

"अच्छा सुनो। वह राधा की ठाकुर सास, राधा को बहू बना बहुत प्रसन्न होगी। परन्तु बेटी ! राधा अभी अल्प-वयस्क है। उसको अपने माता-पिता को प्रसन्न करना चाहिए। इसके लिए उसे तपस्या करनी चाहिए।"

सरस्वती ने भगवती का कथन राधा को बता दिया। राधा इससे बहुत प्रसन्न थी और वह बिना चूके नित्य भगवती के पास जाने लगी। भगवती उसको गृह मन्दिर मे ले जाती। राधा ठाकुरजी के चरणो मे शीश नवाती। उन पर पुष्प चढाती। फिर चन्दन से अपने मस्तक पर तिलक लगाती और तब भगवती के चरण स्पर्श करती।

सरस्वती ने जाने से पूर्व राधा को बताया था कि उसकी अवस्था में अपने शिवजी को प्रसन्न करने की इतनी आवश्यकता नही, जितनी अपने माता-पिता को राजी करने की। एतदर्थ वह इस दिशा मे विचार करने लगी।

राधा ने अपनी माँ से भगवती के गुण-गान करने आरम्भ कर दिए थे। एक दिन उसने पूछ लिया, "राधा! बहुत प्रशसा करती हो, मौसी की?"

"इसलिए कि वह बहुत अच्छी है। बहुत मीठा बोलती है। सबको आशीर्वाद देती हैं और किसी का बुरा नही चाहती।"

"राधा! तुम्हारे पिता तुम्हारा विवाह होशियारपुर मे करना चाहते हैं।"

"क्यो?"

"एक धनी-मानी परिवार है। पाँच भाई है। पिता जीवित है। सब इकट्ठे है। तुम वहाँ सुखी रहोगी।"

"माँ! मै वहाँ विवाह नही करूँगी।"

"क्यो?"

"बस, कह दिया नही।"

"परन्तु विवाह तो माता-पिता के कहने से होता है।"

"हाँ, परन्तु मै घर से भाग तो सकती हूँ।"

"भागकर कहाँ जाओगी?"

"जहाँ उस समय मन करेगा।"

इसके पश्चात् मक्खनी और देवीदयाल मे वार्तालाप हुआ और फिर

देवीदयाल और राधा मे। राधा से बात करने के बाद देवीदयाल ने मक्खनी को कह दिया, "तुम लडकी के साथ जमादार के घर जाया करो। उस घर का चलन हमारे घर के चलन से मेल नही खाता।"

उसी दिन मध्याह्न भोजनोपरान्त राधा जाने लगी तो मक्खनी ने पूछ लिया, "भगवती के घर जा रही हो ?"

"हाँ।"

"मै भी चलूँ ?"

"हाँ, बहुत मज़ा रहेगा।"

'क्या मजा रहेगा ?"

"बेटी के साथ माँ को भी अक्ल आने लगेगी।"

"तो वह अक्ल सिखाने का स्कूल है ?"

"हाँ माँ ! नित्य रामायण की कथा होती है। हरि-कथा और सत्सग दोनो दुर्लभ है। ये वहाँ प्राप्त होते हैं। इनसे बुद्धि निर्मल होती है। जब निर्मल बुद्धि से बिचार किया जाता है तो फिर भूल नहीं होती।"

माँ के जाने मे उद्देश्य न तो हरि-कथा सुनने का था, और न ही सत्सग करने का। वह तो अपनी लडकी पर जासूसी करने जा रही थी।

वह गयी, और फिर नित्य जाने लगी। भगवती को राधा की पीठ पर हाथ फेरते हुए आशीर्वाद देते देख, उसके मन मे गुदगुदी होती थी। उसकी सतान को आशीर्वाद मिलता था।

दिन-पर दिन व्यतीत होते गये। जनवरी मे यह क्रम आरम्भ हुआ और अब मार्च आ गया था। इतने काल मे मक्खनी की रुचि कथा सुनने मे राधा से भी अधिक हो गई थी।

देवीदयाल होशियारपुर राधा की सगाई की तिथि निश्चित कर आया था। परन्तु मक्खनी ने कह दिया, "वहाँ सगाई नही होगी।"

देवीदयाल ने विस्मय में पूछा, "क्यो ?"

"लडकी नही चाहती।"

"पर मैं तो तिथि निश्चित कर आया हूँ।"

"तो अब उसको रद्द कर आइये।"

"इससे तो बिरादरी मे भारी अपमान हो जायेगा।"

"तो फिर क्या होगा ? कह दीजिये कि लडकी पढती है। वह एक-दो वर्ष के बाद सगाई तथा विवाह करेगी।"

"नही, मक्खनी ! यह नही होगा। अगले सप्ताह पचमी को सगाई होगी और होली के दिनो मे विवाह हो जायेगा।"

"मैं बता देती हूँ कि लडकी भाग जायेगी।"

"मैं उसको ताला लगाकर बद कर रखूँगा।"

"और मै ताला खोल दूँगी।"

"क्यो ?"

"इसलिये कि यह अपराध है। भूल गये है आप कि भापा को मकान मे रोकने के लिए आपको क्षमा माँगनी पडी थी। इस पर भी छूटे थे तो भारी सिफारिश से।"

"वह बात दूसरी थी। भापा और राधा मे बहुत अतर है।"

"पर बात एक ही है।"

"पर मैं पूछता हूँ बात क्या है ?"

"आप कुछ दिन ठहरिये। मैं जान सकी तो बता दूँगी। वर्तमान अवस्था मे लडकी या तो विष खाकर मर जायेगी, अन्यथा घर से भाग जाएगी। और मैं उसके भाग जाने मे सहायक हो जाऊँगी।"

"क्यो ?"

"मैं उसका मर जाना पसन्द नही करती।"

देवीदयाल इस नई परिस्थिति से घबरा उठा। उसने तो पत्नी को राधा पर जासूसी करने के लिए भेजा था, परन्तु वहाँ जाकर तो माँ और लडकी मे अधिक मतैक्य हो गया, और पति-पत्नी मे मत-विरोध।

देवीदयाल ने बहाना बनाकर सगाई रोक दी। इस पर भी वह यह जानने के लिए उत्सुक था कि जमादार के घर मे क्या जादू खेला जाता

है, कि उसकी लडकी के साथ उसकी पत्नी भी उसका विरोध करने लगी थी।

एक दिन वह जमादार सूरतसिंह की बैठक मे जा पहुंचा। जमादार अपनी बन्दूक साफ कर रहा था। देवीदयाल बन्दूक की सफाई होती देख, विस्मय मे मुख देखता रह गया।

सूरतसिंह ने कहा, "आओ लाला देवीदयाल! बहुत दिन के बाद दर्शन दिए है। गाँव मे भी रहते हो अथवा नही?"

"नही भापा।"

"कहाँ रहते हो?"

"अंग्रेज बहुत बदमाश कौम है। इस युद्ध-काल मे भी टरका देना चाहती है।"

"देखो देवीदयाल! बनियो को तो सब टरका देते है। कोई शूरवीर मुकाबले मे हो तो उसको टरकाया नही जाता। उससे लडा जाता है।"

"हिन्दुस्तानी शूरवीर तो है।"

"क्या शौर्य दिखाया है तुम्हारे गुरु ने? देखो, मैं मथुरा को मिलने लाहौर गया था। वह आजकल एक त्रिलोचन्द्र एडवोकेट, की कोठी मे रहता है। बहुत बडा वकील है। पाँच सौ रुपया एक पेशी का लेता है और दिन मे दो-तीन पेशियाँ हो जाती है।

"उसने बताया कि वाइसराय ने काग्रेस को युद्ध मे सहयोग देने के लिए कहा था और कहा था कि युद्ध के पश्चात् देश मे विधान बनाने के लिए सभा बना दी जायेगी। गाधीजी तो मान रहे थे, परन्तु पडित जवाहरलाल और मौलाना आजाद नही माने। गाधीजी की आत्मा तो यह कहती थी कि हिटलर अधर्मी है और उसका विरोध करना चाहिए, परन्तु हिटलर ने रूस से सन्धि कर ली और पडितजी रूस के हक मे है। इसी कारण वे हिटलर का भी विरोध करना नही चाहते।

"यह सौदेबाजी और सौदेबाजी मे अधर्म का पक्ष लेने के लिए गाधीजी भी तैयार हो गये है।"

"वह वकील कोई पागल है जो ऐसी बाते करता है। अपने देश की वकालत कैसे अधम का पक्ष हो गया।"

"देखो, मैं बताता हूँ। यह कर्मू जुलाहा मेरा विरोधी है। इसने एक दिन मुझको मेरे मकान मे ही कैद कर रखने का यत्न किया था। यह अब भी मेरे विपरीत बकवास करता रहता है। यदि कल इसके घर मे डाका पड जाय और डाकू इसकी स्त्री और लडकी को उठाकर ले जाना चाहें, तो मुझको अपनी बन्दूक ले, उसकी सहायता के लिए कहोगे अथवा मेरे यह कहने को पसन्द करोगे कि मरने दो साले को। मेरा गाँव मे एक शत्रु कम हुआ।

"यही गाधीजी और काग्रेस कर रही है। इगलैड ने हमारे साथ शत्रुता की है। इस पर भी वे जर्मनो और रूसियो से भले लोग है। इन दोनो ने मिलकर इगलैड पर आक्रमण कर दिया है। दिन रात हवाई जहाजो से बम गिराते रहते हैं। इस समय यह कहना कि हिन्दुस्तान छोड जाओ, हमको इगलैड के शत्रुओ से भी सुलह कर लेने का अधिकार मिल जाये, यह न नीति है न ईमानदारी।

"भगवान् जाने, कभी भारत स्वतन्त्र हो और उस पर शत्रु आक्रमण करे तो हमारे पडोसी देश भी हमारे शत्रु के साथ सन्धियाँ करते फिरे, तो हम कैसा अनुभव करेगे ?"

"जब हम स्वतन्त्र होगे तब देख लेगे।"

सूरतसिंह ने यह कह दिया, "भगवान् न करे कि इन बनियो के हाथ मे देश का राज्य आये। ये स्वय मरेगे और देश तथा सारी प्रजा को मुसीबत मे डाल देगे।"

"तो भापा ! तुम अग्रेजो के साथ मिल, इन बनियो का कचूमर निकाल दो।"

"मैंने तो कल 'वार ऑफिस' को अपना पूर्व परिचय देकर, अपनी सेवाएँ युद्ध-काल के लिए अर्पित कर दी है। मेरा रक्त जर्मनी और इटली के अत्याचारो के समाचार सुन-सुन खौलने लगा है। कल मैंने पत्र लिखा

हैं और आज मैंने बन्दूक निकाल साफ करनी आरम्भ कर दी है।

"मैं एक छोटा-सा रेडियो लाहौर से खरीद लाया हूँ और शाम को युद्ध के समाचार सुना करता हूँ। यह कहा जा रहा है कि जर्मनी और रूस मिलकर भारत पर आक्रमण करने की योजना बना रहे है और मै इन खूंखार दरिदो से अपने देश की रक्षा के लिए तैयार हो रहा हूँ।"

"हम तो रूस का स्वागत करने की तैयारी कर रहे है।"

"भगवान आपकी तैयारी से पहले ही आपको ससार से उठा ले। आप जानते नही कि आप किनका स्वागत करने के लिए तैयार है।"

देवीदयाल आया था मक्खनी और राधा के विषय मे जानकारी प्राप्त करने और फंस गया राजनीति मे। इससे जमादार की बददुआ को मन-ही-मन पी गया और पूछने लगा, "भापा! आपके घर मे नित्य मध्याह्न के समय क्या होता है ?"

"क्यो ? किस लिए पूछ रहे रहो ?"

"भापा! नित्य राधा और राधा की माँ घर का ताला लगा, इधर आ जाती है।"

"ओह! भाई राधा की मौसी नित्य रामायण की कथा करती है। वे भी सुनने आ जाती है।"

"तो कथा पडिताइन से क्यो नही कराते ?"

"इसलिए कि पडिताइन पढी तो हैं परन्तु अर्थ ठीक नही लगा सकती। यह तुम्हारी भाभी खूब लगाती है।"

"मुझको सन्देह होने लगा है कि वे गलत अर्थ लगाती है।"

"क्या गलत अर्थ लगाये हैं उसने ?"

"राम-रावण के युद्ध की बाते सुन-सुन बेटी बाप से और पत्नी पति से लडने लगी है।"

सूरतसिह हँस पडा। हँसते हुए उसने पूछ लिया, "और इस युद्ध मे राम कौन है और रावण कौन है ?"

देवीदयाल इस व्यग का अर्थ नही समझ सका। इसलिए टुकर-टुकर

मुख देखता रह गया। जमादार ने अर्थ समझा दिया— 'देवीदयाल ! युद्ध सदा भले और बुरे मे होता है। बुरे लोग रावण का प्रतीक होते है और भले राम का। दो भले लोग कभी नही लडते और दो बुरे भी परस्पर नही लडते। लडने वालो मे सदा अच्छाई और बुराई का अन्तर रहता है। भले हो यह अन्तर कुछ मात्रा का ही हो।

'देखो, हिटलर और स्टालिन एक ओर है। ये दोनो रावण के प्रतीक है और इगलैड तथा फ्रास दूसरी ओर है। ये राम लक्ष्मण का प्रतीक है।'

"भापा ! फ्रास तो गया।"

'नही, गया नही। लक्ष्मण को मेघनाथ की शक्ति से मूर्छा आ गयी है। हनुमान, मेरा मतलब है 'डीगाल' उसके लिए सजीवनी लेने गया हुआ है। फ्रास जी उठेगा, और फिर दोनो भाई रावण और कुम्भकर्ण का सामना करेगे।"

"भापा ! मक्खनी को कहला दो कि मुझसे तो न लडा करे। न मैं रावण हूँ न ही कस हूँ।"

"क्या लडाई की बात की है उसने ?"

"मै राधा की सगाई होशियारपुर मे झागीमल्ल, करोडीमल्ल वालो के छोटे लडके से कर आया था। माँ बेटी दोनो बागी हो गयी है और कहती है वहा विवाह नही होगा, और यदि मैने बलपूर्वक किया तो घर छोडकर भाग जायगी।"

"तो देवीदयाल ! किसी अन्य स्थान पर विचार कर लो। आखिर घर मे झगडा खडाकर, विवाह कैसे कर सकोगे ?"

"भापा ! इतना अच्छा रिश्ता मिलेगा नही ?"

"क्या अच्छाई है उनमे ?"

"वे लखपति है।"

"इससे कोई अच्छा-बुरा नही होता।"

"तो किससे होता है ?"

"देखो देवीदयाल! तुम कांग्रेस मे काम करते हो। काम का ढग अच्छा हो चाहे बुरा, है तो देश का। अपना धन, समय और परिश्रम व्यय करते हो और कैद होने के लिए भी तैयार हो। बताओ उनके परिवार वालो ने भी कोई जनता के हित का कार्य किया है? कोई मन्दिर बनाया है? कोई अस्पताल, स्कूल खुलवाया है? किसी सभा-समाज को लाख-दो-लाख रुपया दिया है? उनके परिवार मे कभी किसी ने धर्म, देश अथवा जाति के लिए कोई त्याग किया है? बताओ क्या किया है उन्होने, अच्छेपन का काम?"

देवीदयाल मुख देखता रह गया। सूरतसिंह ने उसे चुप देख, कह दिया, "राधा तुम्हारी लडकी है। वह तो समाज-कल्याण का कार्य करने वालो को अच्छा समझती है। इससे वह वहाँ विवाह पसन्द करेगी, जहाँ अच्छे लोग होगे।"

"तो यह बात भाभी ने माँ-बेटी को पढा दी है?"

"नही देवीदयाल! भगवती ने कुछ नही सिखाया। उसने तो रामायण की कथा सुनाई है। हरि-कथा सुनने से बुद्धि निर्मल होती है और निर्मल बुद्धि ऐसे ही विचार करती है जैसे मैंने बताए है।

४

देवीदयाल ने अपनी पत्नी से पूछ लिया, "आखिर कब तक प्रतीक्षा करनी होगी?"

"कितना रुपया व्यय करने वाले है आप राधा के विवाह पर?"

"बीस पच्चीस हजार तो करूँगा ही।"

"तो रुपया मुझको दे दीजिए और समझिए कि विवाह हो गया।"

"क्या मतलब?"

"बात यह कि एक बडा भारी युद्ध हो रहा है। सारे ससार मे आतक छाया हुआ है। यहाँ लोग विचार कर रहे है कि रूस हिन्दुस्तान पर आक्रमण करेगा। तब कौन मरेगा और कौन जीएगा। इस कारण युद्ध का भय मिट जाने पर विवाह होगा।"

करने के लिए देहरादून जाना था।

मथुरासिंह कमीशन मिलने की बात से प्रसन्न था। इस पर भी वह उत्तीर्ण न हो सकने की आशंका से चिन्तित अवश्य था। पिता ने सरकारी पत्र देखा। पत्र अंग्रेजी मे था। वह पढ नही सका। इस पर मथुरासिंह ने पढकर सुना दिया।

सूरतसिंह ने राधा और मक्खनी को भीतर जाते देखा तो कह दिया, "राधा और उसकी माँ आ गयी हैं।"

मथुरासिंह उठकर उनके पीछे-पीछे भीतर चला गया। भगवती माँ इस वाले कमरे मे वगगन पर रामायण की पोथी रख, पढना आरम्भ करने के लिए तैयार बैठी थी। मथुरासिंह ने वहाँ पहुँच कह दिया, "चाची! पाँय लागूँ।"

"ओह, मथुरा! छुट्टियो पर आगे हो?"

"हाँ चाची! और सेना मे भरती होने देहरादून जा रहा हूँ।"

"कब?"

"पाँच जुलाई को वहाँ पहुँचना है। लिखा है तीन दिन तक परीक्षा होगी। यदि ले लिया गया, तो सेना मे अफसर बन जाऊँगा।'

"सत्य? भापा से भी बडा अफसर?"

"हाँ चाची! परन्तु कहते हैं, परीक्षा बहुत कठिन होती है। देखो, पास होता हूँ या नही।"

"तुम पास हो जाओगे।"

"चाची! तुम्हारा आशीर्वाद चाहिये और बहिन राधा की शुभ कामना।"

राधा का मुख लाल हो गया और वह भूमि की ओर देखने लगी।

"आओ मथुरा! तुम भी कथा सुनो।" भगवती ने कह दिया। मथुरासिंह भी कथा मे बैठ गया। भगवती ने कथा आरम्भ कर दी। युद्ध का ही प्रसग था। लक्ष्मण और मेघनाथ के युद्ध की कथा थी।

कथा के बाद भगवती ने प्रसाद मे बताशे बाँटे और सब उठ खडे

हुए। मक्खनी भगवती से बातें करने लगी। गाँव की अन्य स्त्रियाँ चली गयी। मथुरासिह ने राधा से पूछ लिया, "राधा ठीक हो ?"

राधा ने स्वास्थ्य-समाचार देने के स्थान कह दिया, "मैं आपसे एक बात पूछना चाहती हूँ।"

"हाँ, पूछो।"

"यहाँ नही, एकान्त मे।"

"क्यो, क्या बात है ?"

"कुछ है।"

"तो मै तुम्हारे घर आऊँगा। रमणीक से भी तो मिलना है और चाचा को नमस्कार करनी है।"

"हाँ, आइयेगा। कब आयेगे ?"

"आज तीसरे प्रहर। चाचाजी से तो दुकान पर ही मिल लूँगा।"

"हाँ। रमणीक पाँच बजे स्कूल से लौटता है।"

मक्खनी घर जाने को तैयार हुई तो मथुरासिंह से पूछने लगी, "हमारे घर भोजन के लिए कब आओगे, बेटा।"

"चाची! वह तो रविवार के दिन ही ठीक रहेगा। वैसे चाचा और रमणीक से मिलने, आज तीसरे प्रहर आऊँगा।"

"अच्छा चाय वहाँ ही पीना।"

तीसरे प्रहर मथुरासिंह राधा के घर पर पहुँच गया। देवीदयाल घर पर नही था। वह किसी से मिलने एक पडोस के गाँव मे गया हुआ था। उसने घर का द्वार खटखटाया तो राधा द्वार खोलने आ गयी। पूर्व इसके कि मथुरासिंह भीतर जाए, राधा ने मार्ग रोकते हुए कहा, "मै आपको यह कहना चाहती हूँ कि आप मुझको बहिन मत कहा करो।

"क्यो ?"

"मैं बहिन बनना नही चाहती। मै मै ' ।" वह कह नही सकी। रक्ताभ मुख से भूमि की ओर देखने लगी। दो क्षण तक आगे कहने का यत्न कर वह लौट पडी, और मकान मे चली गयी। मथुरा इसका

अर्थ समझ गया था, परन्तु वह उसकी इच्छा की पूर्ति मे अनेको बाधाओं को समझ, उसका समाधान चाहता था। वह अभी कुछ कह भी नही सका था कि राधा भीतर चली गयी। मथुरासिह ने द्वार मे घुसते हुए आवाज़ दे दी, "चाची ! चाची !"

मक्खनी भीतर के कमरे से चली आयी। मथुरासिह को देख, उसने कहा, "आओ ! बेटा ! आओ !" वह उसको बैठक-घर मे ले गयी और वहाँ बैठा, दीवार से लगी घडी मे समय देख बोली, "रमणीक अभी आधे घटे मे आएगा। रमणीक के पिताजी भी कही गए हुए हैं। वे भी आने ही वाले हैं।"

मथुरासिह बैठा तो मक्खनी ने बैठते हुए कहा, "राधा चाय का सामान ठीक करने गयी है।"

"अभी जल्दी क्या है ? चाची ! रमणीक के आने तक तो ठहरूँगा ही।"

मक्खनी ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "सुना है वहाँ तुम किसी बडे वकील की कोठी मे रहते हो।"

"हाँ चाची ! एक श्री त्रिलोकचन्द्र है। हाईकोर्ट के वकील है। पिछले वर्ष मैं पहाड पर भ्रमण करने गया तो वकील साहब भी सैर करने गए हुए थे। मार्ग मे हम दस दिन इकट्ठे रहे तो परस्पर घनिष्ठता हो गयी। शिमला मे उन्होने मुझको अपने मकान मे रख लिया। वहाँ उनकी पत्नी और बच्चो से परिचय हो गया। बच्चे मुझसे पढने लगे और उनकी माँ मुझको अपने पुत्र के समान समझने लगी। जब हम लाहौर गए तो उन्होने मुझको अपनी कोठी मे रख लिया। मैं दोनो बच्चो को पढा देता हूँ और उन्होने मुझको अपनी कोठी मे एक कमरा दे रखा है। भोजन भी उनके साथ ही करता हूँ।"

"तब तो बहुत आराम मे रह रहे होगे, इस बार ?"

"हाँ, बोर्डिंग हाउस के खाने से तो अच्छा खाना मिलता है और पढने की अधिक सुविधा रहती है।"

"पर बेटा ! तुम सेना मे किस लिए भरती हो रहे हो ?"

"पिताजी कहते थे कि यह हमारा पारिवारिक कार्य है। इसको करना ही चाहिये। मै अभी निश्चय नही कर सका था कि वकील साहब से बातचीत हो गई। उन्होने बताया कि देश के युवको को देश की रक्षा के लिए सैनिक-कार्य सीखना चाहिये।

"चाची ! आज सेना का कार्य तो एक इजीनियर के कार्य से भी कठिन हो गया है। इसमे बहुत कुछ सीखने और अभ्यास की आवश्यकता रहती है। स्वराज्य मिलेगा तो हमको देश की सेना मे भरती हो, इसकी सेवा के लिए तैयार रहना चाहिये।"

"पर रमणीक के पिता तो कहते है कि स्वराज्य सरकार मे सेना और पुलिस की आवश्यकता नही रहेगी। यहाँ रामराज्य होगा।"

"परन्तु चाची ! राम राज्य मे भी सुभट्ट और सैनिक थे। दशरथ और राम भी तो युद्ध लडते थे। यदि विश्वामित्र ने राम को युद्ध के लिए अस्त्र-शस्त्र न दिये होते तो रावण और मेघनाद मरते कैसे ?"

मक्खनी टुकर-टुकर मुख देखती रह गई। फिर कुछ विचार कर बोली, "मेरा जी डरता है।"

"किस बात से ?"

"युद्ध है और सुना है जर्मनी अग्रेजी सेना का ऐसा सफाया कर रहे हैं जैसे ये मच्छर-मक्खियाँ हो।"

"ये सब कहने की बाते हैं। जर्मनी पिछले छ-सात वर्ष से छिपे-छिपे शस्त्रास्त्र बनाने की तैयारी करता रहा और अग्रेज तथा फ्रासीसियो से बडी मीठी मीठी बाते कर, उनको धोखे मे रखता रहा है। इस कारण आरम्भ मे जीत उसकी ही हो गई है। परन्तु अन्त मे उसकी पराजय होगी, यह निश्चय है।

"अब पूर्ण अग्रेजी राज्य मे शस्त्रास्त्र बनने लगे है और एक-दो वर्ष मे ही जर्मनी पीछे रह जायेगा। तब अग्रेज विजयी होगे।"

"तुम्हारे चाचा तो बहुत भयकर बाते करते हैं।"

"चाची ! तुम चिन्ता मत करो। मै तो युद्ध से जीवित लौटूँगा। तुम्हारा आशीर्वाद होना चाहिये।"

"बात पुन वकील साहब की पत्नी, उनकी कोठी और खाने-पीने के विषय मे होने लगी। अभी कॉलेज की पढाई और खेल-कूद की बातें हो रही थी कि देवीदयाल आ गया। गर्मी से व्याकुल वह आया तो मक्खनी ने उठकर अपने पति के लिए ठडा शर्बत बना दिया। देवीदयाल ने मथुरा-सिह को देख पूछा, 'मथुरासिह ! कब आये हो ?"

"आज प्रात काल ही पहुँचा हूँ।"

"मैंने तो सत्याग्रह के लिए अपना नाम दर्ज करा दिया है।"

"सत्याग्रह ? कैसा सत्याग्रह ?"

गाधीजी व्यक्तिगत सत्याग्रह आरम्भ करने वाले है। इस बार एक-एक स्वयसेवक सरकारी अधिकारियो को सूचना देकर युद्ध के कार्यों मे विघ्न डालने का यत्न करेगा। सूचना मे सत्याग्रही वह स्थान जहाँ तोड-फोड का कार्य करना होगा, वह समय और दिन, जब वह कार्य करना होगा, बता देगा और फिर वह वहाँ पहुँच, तोड-फोड करने का यत्न करेगा। इसलिये पूर्ण देश मे स्वयसेवक भरती हो रहे हैं। मैंने अपना नाम दे दिया है।"

'चाचा ! इससे क्या होगा ?"

"होगा यह कि सरकार को ज्ञात हो जायेगा कि हिन्दुस्तान के लोग उनके साथ युद्ध मे सम्मिलित नही हैं।"

"कितने लोगो के नाम दे दिये है ?"

"अभी तो पॉच सौ के लगभग है। परन्तु इनकी सख्या बढेगी।"

"चाचा ! जानते हो पिछले छ-सात मास मे सेना मे भरती कितनी हुई है ?"

"कितनी हुई है ?"

"दो लाख के लगभग।"

"ठीक है। ये लोग भाडे के टट्टू है। इधर लोग स्वेच्छा से भरती

हो रहे है।"

"सेना मे भी तो स्वेच्छा से भरती हो रहे है। यहाँ हिन्दुस्तान मे 'कासीक्रप्शन'[1] नही हो रही। हाँ, सेना मे एक बहुत साधारण-सा वेतन मिलता है। परन्तु चाचा! मै तो यह कहना चाहता हूँ कि यदि पाँच-छ सौ स्वयसेवको के युद्ध-विरोधी अभियान से देश मे युद्ध का विरोध प्रकट होता है, तो दो लाख सैनिको की भरती से क्या प्रकट होगा?"

"कुछ नही। अधिक-से-अधिक यह कहा जायेगा कि सरकार के पास धन बहुत है और हिन्दुस्तान मे गरीबी बहुत है।"

मथुरासिंह हँस पडा। हँसकर उसने कहा, "चाचा, बात यह है कि देश मे एक बहुत बडी सख्या मे ऐसे लोग है जो गाधीजी के उपायो को ठीक नही मानते। इस पर भी वे गाधीजी की निन्दा नही करते। यह तो गाधीजी ही हैं, जो उन लोगो की निन्दा करते है, जो उनके ढग को गलत समझते है।"

"परन्तु देश के समाचार-पत्र तो गाधीजी के बपौती नही। वे भी तो गाधीजी की प्रशसा करते है।"

"प्रशसा करने मे मुझको आपत्ति नही, परन्तु देश मे काग्रेस के अतिरिक्त देश का काम करने वालो की निन्दा से तो कोई प्रयोजन नही। यह एक अनधिकार-चेष्टा है। गाधीजी की ओर से हो अथवा समाचार-पत्रो की ओर से। यह निन्दा अशोभनीय है।"

"परन्तु उन्होने कभी ऐसी निन्दा नही की।"

"की क्यो नही! पडित जवाहरलाल को सदा अन्य नेताओ पर अधिमान देते रहे। १९२९ मे सीता-रामैया पर १९३६ मे सरदार पटेल पर और फिर १९३९ बाबू सुभाष बोस पर। हिंसावादी क्रान्तिकारियो की निन्दा मे उन्होने सभा की परन्तु मेरठ-केस के कम्यूनिस्ट क्रान्तिकारियो से उन्होने सहानुभूति प्रकट की।"

जब-जब कभी काग्रेस मे उनसे मतभेद रखने वालो का बल बढा के

---

1 जबरी-भरती।

राजनीति त्याग बैठे और ज्यो ही लोग उनकी हाँ-मे-हाँ मिलाने वाले आये वे राजनीति मे आ गये।"

"मथुरा! तुम्हे किसी ने वरगला दिया है?"

"नही चाचा! मै स्वय बुद्धि से विचार कर कहता हूँ कि इस समय सेना मे भरती होना देश की सेवा है और यदि कोई युद्ध-कार्य मे विघ्न डालता हैं तो वह उन भरती हो रहे सैनिको को हानि पहुँचाने वाला सिद्ध होगा।"

"परन्तु युद्ध मे तो भरती नही होना चाहिए। तुम्हारे पिता ने भी अपने को सेना-कार्य के लिए उपस्थित किया था। मालूम नही क्या परिणाम हुआ है?"

"उनको धन्यवाद का पत्र आ गया है और लिखा है कि देश के युवा-रक्त रहते हुए वृद्ध रक्त की आवश्यकता प्रतीत नही होती। हाँ, उनका नाम रजिस्टर कर लिया है और यदि आवश्यकता पडी तो उनको बुला लिया जायेगा। चाचा मैं जा रहा हूँ। पाँच जुलाई को मेरी पेशी है।"

"कहाँ?"

"देहरादून में। ऐसा प्रतीत होता है कि मैं ले लिया जाऊँगा। मैं युवा हूँ, स्वस्थ हूँ और फुटवाल का खिलाडी हूँ। मुझे कमीशन मिलेगा और मैं सेना मे अधिकारी बनूँगा। स्वराज्य होने तक सेना-कार्य सीख लूँगा। तब स्वतत्र भारत की सेना मे कार्य करूँगा।"

"स्वतत्र भारत को सेना की आवश्यकता नही पडेगी। हमारा विचार किसी भी दूसरे देश पर आक्रमण करना नही होगा। अतः कोई दूसरा भी हम पर आक्रमण नही करेगा।"

"तब ठीक है। तब मुझको अवकाश मिल जायेगा और मैं अपना शेष जीवन विवाह कर गाँव मे व्यतीत करूँगा।"

"तो पहले विवाह नही करोगे?"

"युद्ध पर जाते हुए मैं यह मोह का फदा गले मे डाल नही सकता।"

५

रमणीक आया तो चाय लग गयी। चाय पी गयी तो राधा ने पकौड़े और नमकीन उबले चने बनाकर चाय के साथ रख दिए। जब मथुरा चाय पी रहा था तो राधा माँ के पास चुप-चाप बैठी थी। मथुरा ने कह दिया "चाचा! मेरे युद्ध से लौटने तक तो राधा का विवाह कर दोगे न?"

विचार तो यही है।"

"तो मैं जाने से पूर्व ही आशीर्वाद देकर जाऊँ।"

"मै तो चाहता हूँ कि तुम्हारे युद्ध-क्षेत्र मे जाने से पूर्व ही राधा का कन्यादान हो जाये। परन्तु राधा की माँ झगडा कर रही है।"

"क्यो चाची! क्या कहती हो?"

"मैं तो केवल यह कहती हूँ कि युद्ध के बाद विवाह होगा। लोग कह रहे है कि अग्रेज दुर्बल है और रूस तथा जर्मनी दोनो मिलकर हिन्दुस्तान पर आक्रमण करेगे। ये दोनो भारत के हिस्से का आपस मे बँटवारा कर लेगे। उस समय यहाँ घोर उपद्रव मचेगा। अत विवाह तो उसके बाद ही हो सकेगा।"

"चाची! तुम व्यर्थ मे डर रही हो। राज्य-परिवर्तन से सब लोग मरेंगे नही और ससार की सब स्त्रियाँ विधवा नही होगी।

"तो फिर ऐसा करो। पहले अपना विवाह कर लो। फिर हम राधा का भी कर देगे।"

"पर चाची! मै तो युद्ध मे लडने जा रहा हूँ।"

"क्या जाने राधा का घर वाला भी युद्ध को चल पडे। तब क्या होगा?"

"पर चाची। अग्रवालो की भरती नही हो रही।"

"जब देश पर कठिनाई की घडी आएगी तो कौन-कौन युद्ध करेगे, किसको त्याग करना पडेगा, अभी से कैसे कहा जा सकता है।"

"सुना है न मथुरासिंह!" अब देवीदयाल बोल पडा, "यह औरत किस दिशा मे विचार कर रही है? इसीलिए मै सत्याग्रह मे नाम दे आया हूँ।

अब के कैद हुआ तो युद्ध बद होने से पूर्व छूटूँगा नही। तब यह जाने इसका काम जाने। न मैं यहाँ हूँगा, न देखूँगा कि क्या खराबी होती है और क्या नही होती ?"

मथुरासिंह ने पति-पत्नी को लडने के लिए तैयार देख, कह दिया, "चाची ! युद्ध तो दस वर्ष तक भी चल सकता है। क्या तब तक राधा को घर बैठा रखोगी ?"

"बेटा ! जब तुम बिना विवाह के दस वर्ष तक रह सकते हो तो कोई दूसरा भी रह सकता है। रही रमणीक के पिता की बात। ये सत्याग्रह आदि मे नही जायेगे। सत्याग्रह इनके मान की बात नही है। यदि कही जेल मे चले भी गए तो नमक-सत्याग्रह के दिनो की भाँति इनके सुख-सुविधा का प्रबन्ध जेल के बाहर से करना पडेगा। तब कर्मू जुलाहे ने छ मास मे दो हजार रुपया व्यय कर बाहर से इनके खाने-पीने का प्रबन्ध किया था। रोज भोजन जाता था और 'अच्छा छोडो। तुम यहाँ से कहाँ जा रहे हो ?"

"चाची तीन तारीख की रात को चलकर मैं चार को देहरादून पहुँच जाऊँगा। पाँच को वहाँ उपस्थित होना है। फिर आठ तारीख को वहाँ से लौट आऊँगा। यदि मैं चुन लिया गया तो जुलाई मास की पन्द्रह तारीख तक जहाँ आज्ञा होगी, जाना होगा।"

देवीदयाल कह रहा था, "मथुरासिंह ! तुम युद्ध पर जाने की बात इस प्रकार कर रहे हो, मानो तुम किसी बरात पर जा रहे हो।"

मथुरासिंह हँस पडा। हँसकर बोला, "बरात पर तो नही। हाँ, वैसे कर्तव्य-पालन के लिए जा रहा हूँ। परमात्मा ने राजपूतवश मे उत्पन्न किया है। उसने इस वश का एक कर्तव्य नियत किया हुआ है और मैं उसका पालन करने जा रहा हूँ।'

मथुरासिंह के पूर्ण वार्त्तालाप का प्रभाव सुनने वालो पर भिन्न-भिन्न हुआ। देवीदयाल को समझ आया था कि राजपूतो की मूर्खता अभी भी इनके रक्त मे उपस्थित है। ये केवल-मात्र शौर्य दिखाने के लिये भाले ले

एक-दूसरे को बीच डालते थे। उसको मथुरासिंह का व्यवहार कुछ ऐसा ही समझ आ रहा था और उसे उसका युद्ध मे जाना मूर्खता के अतिरिक्त अन्य कुछ समझ नही आ रहा था।

मक्खनी के मन मे मथुरासिंह की अकाल-मृत्यु उसको युद्ध मे खेचती हुई ले जा रही प्रतीत हो रही थी। यद्यपि उसको राधा की मथुरासिंह से विवाह की इच्छा का ज्ञान नही था। इस पर भी वह स्वय मथुरासिंह को एक सुन्दर, पढा-लिखा, बुद्धिमान् और ओजस्वी युवक समझती थी। साथ ही वह उसके प्रति पुत्र की-सी भावना रखती थी। इससे वह मथुरा-सिंह के इतने भय के कार्य मे जाने से भयभीत थी।

राधा मथुरासिंह के युद्ध पर जाने से गर्व अनुभव करती थी। वह मन मे समझ रही थी कि उसका प्रेम एक शूरवीर एव बुद्धिशील युवक से है। वह भावना उसके हृदय मे उल्लास उत्पन्न कर रही थी।

आज राधा ने मथुरा को अपने मन की बात बताने का यत्न किया था और वह समझती थी कि मथुरा समझ गया है। इसके पश्चात् वह समझती थी कि उसने अपना कर्तव्य पालन कर दिया है और यह उसका काम है कि वह उसका हाथ पकडने का यत्न करे।

राधा ने मन मे यह धारणा कर लिया था कि उसके लिए अब प्रतीक्षा करने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नही और वह अनन्त काल तक प्रतीक्षा करने के लिए तैयार थी।

मथुरासिंह ने राधा के माता-पिता के सामने राधा के विवाह की चर्चा चलाकर यह जानने का यत्न किया था कि राधा ने जिस बात की ओर सकेत किया है, वह क्या उसके माता-पिता से स्वीकृत योजना है ? उसको समझ आया था कि देवीदयाल तो राधा के मन की बात से सर्वथा अनभिज्ञ है। राधा के माँ के मनोभाव स्पष्ट नही थे। वह मन मे विचार करता था कि राधा की माँ किसलिए राधा का विवाह अभी करना नही चाहती। वह युद्ध-काल मे विवाह करने से इन्कार क्यो करती है ? क्या उसका भी विचार उसे अपना दामाद बनाने का है ?''

वैसे वह समझता था राधा पत्नी के रूप मे सर्वथा ग्रहण करने योग्य है, परन्तु जीत पात की बाधा, शिक्षा मे अन्तर, राजनीतिक दृष्टिकोण मे भी अन्तर था। वह अपने माता-पिता के मान जाने की बात भी नहीं जानता था। एक स्वाभिमानी राजपूत, जो युद्ध मे दूसरो का रक्त बहाना और अपना बलिदान करना बच्चो का खेल समझता हो, कैसे एक बनिया और वह भी विकृत बुद्धि वाले के परिवार से सम्बन्ध बनाना स्वीकार करेगा ?

इस सब-कुछ विचार करने पर भी वह इस दिशा मे अग्रसर होना नही चाहता था। अब तो वह युद्ध पर जाने की तैयारी मे था। इसलिए उसका ध्यान इस ओर नही था।

यद्यपि अपने परिवार की परम्परा और वकील त्रिलोकचन्द्रजी की प्रेरणा बहुत प्रबल सिद्ध हो रही थी, परन्तु देश का वातावरण जो गाधी-वादियो ने बना रखा था, कम प्रभावयुक्त नही था। गाधीजी दिन-रात अपने 'हरिजन' मे कह रहे थे कि अहिंसा ही ससार को दुख एव कष्टो से मुक्ति दिला सकती है। युद्ध करना तो पशुओ की प्रकृति है।

अहिंसा एव तपस्या का मार्ग तो पत्थर को भी मोम कर सकता है। इस कारण भारत को भी अपनी आध्यात्मिक परम्पराओ के अनुरूप अपना व्यवहार रखना चाहिये।

गाधीजी के ये मनोद्गार कभी उसके मन मे सशय उत्पन्न कर देते थे परन्तु जब वह गाधीजी के आन्दोलन का पूर्ण इतिहास पढता था तो उसे अपने मन के सशय छिन्न-भिन्न होते दिखाई देने लगते थे।

वह पाँच जुलाई को देहरादून जा पहुँचा। वहाँ एक सौ से ऊपर पढ़े-लिखे युवको को बुलाया गया था। ये लोग सेना मे कमिशण्ड ऑफिसर बनने वाले थे।

तीन दिन तक कठोर परीक्षा होती रही। तीसरे दिन सबको एकत्रित कर वहाँ ही बता दिया कि केवल पन्द्रह युवको का चुनाव किया गया है। शेष को साधारण पदवियो के लिए यत्न करने के लिए कहा गया।

मथुरासिंह का नाम पन्द्रह की सूची मे तीसरे नम्बर पर था।

इन पन्द्रह युवको को जब्बलपुर मे बीस जुलाई को एमरजेन्सी ट्रेनिंग के लिए उपस्थित होने को कहा गया। सबको कमिशन वाइसराय के हस्ताक्षरो से मिलने वाली थी।

छ दिन अनुपस्थित रह मथुरासिंह घर पहुँचा और अब उसने पिता को बताया कि उसे सेना मे कमिशन मिल गयी है, तो पिता ने प्रसन्नता से घूमते हुए पुत्र को गले लगाया, और उसकी माँ के पास ले गया।

भगवती इस समय कथा कर रही थी। सूरतसिंह ने मक्खनी और अन्य स्त्रियो के सामने ही अपनी पत्नी को कह दिया, "लो भगवती! तुम्हारा पुत्र अब सेना का एक अफसर, मुझसे भी बडा बन गया है।"

भगवती ने मथुरा को एक कोने मे बैठ जाने का सकेत कर, कथा जारी रखी।

राधा का मुख अलौकिक दीप्ति से चमकने लगा था। मथुरासिंह यह देख रहा था। उसको यह समझ आया था कि वह उसके भरती हो जाने से प्रसन्न थी।

कथा समाप्त हो गयी। पिता-पुत्र को नौकरी मिल जाने से अति प्रसन्नता थी, और नौ-दस स्त्रियाँ जो उस दिन कथा सुनने आयी थी, मथुरा और उसकी माँ को बधाई देने लगी।

भगवती ने मथुरा को बुलाकर ठाकुरजी के समक्ष दडवत्-प्रणाम करने के लिए कहा। मथुरा ने भूमि पर लेट प्रणाम किया तो माँ ने उसकी पीठ पर हाथ फेर कर आशीर्वाद दे दिया, और जब वह उठा तो ठाकुरजी के आगे रखे चन्दन से उसके माथे पर तिलक लगा दिया।

इसीलिए पिता उसको वहाँ लाया था। मथुरासिंह चन्दन चर्चित मस्तक से बाहर बैठक मे आया तो स्त्रियाँ विदा हो गयी। पीछे रह गयी मक्खनी और राधा।

मक्खनी ने आज राधा को कहा, "तुम घर जाओ। मैं भगवती बहन से किसी विषय मे राय करना चाहती हूँ।"

राधा समझ गयी कि उसके तथा मथुरासिंह के विषय मे कुछ बातचीत होगी। राधा ने अपनी माँ से अपने मन की बात कह दी थी। यह मथुरासिंह के देहरादून जाने के पश्चात् बात हुई थी।

उसकी माँ ने एक स्पष्ट बात करने के लिए उससे पूछा था, "देखो राधा ! तुमने मुझको कहा था कि तुम होशियापुर वाले लडके से विवाह नही करोगी, यद्यपि तुमने कारण नही बताया था, परन्तु मैंने तुम्हारा पक्ष लेकर तुम्हारे पिता से झगडा करना आरम्भ कर दिया है। वे नाराज़ हो, वर्धा गए है और गाधीजी के आश्रम मे एक मास रहने के पश्चात् सत्याग्रह करेगे। यदि वे पकड लिए गए तो फिर हम अकेली रह जायेंगी। बताओ तब क्या करेगे ?"

"माँ ! हम अकेली नही है।"

"तो और कौन है, हमारे साथ। रमणीक तो अभी बच्चा है। वह कुछ कर नही सकता।"

"रमणीक है। परन्तु माँ ! एक और है। वह रमणीक और पिताजी से भी अधिक बलवान, सामर्थ्यवान और दयालू है। मेरा तात्पर्य भगवान् से है।"

"परन्तु अब तक तुम्हारा विवाह हो जाता, तो एक धनी-मानी से हमारा सम्बन्ध हो जाता और समय-कुसमय पर आश्रय हो जाता।"

'परतु क्या परमात्मा से भी अधिक धनवान हैं वे ?"

"हैं तो परमात्मा का रूप।"

"नही माँ ! तुम नही जानती। परमात्मा ही मुझसे कहता है कि वहाँ विवाह नही होना चाहिए।"

"कैसे कहता है, वह ?"

"जब मैं प्रात काल स्नानादि कर माला फेरती हूँ तो राम-राम कहते-कहते मेरी आँखो के सामने वे धनुष-बाण लिए आते हैं। मुझको आशीर्वाद देते और कहते है कि मेरा घर वहाँ नही है।"

मक्खनी राधा का मुख देखती रह गयी। उसको सन्देह हुआ कि राध

को भ्रम हो रहा है। इससे उसने पूछ लिया, "राधा ! तू पागल तो नहीं हो गई ?"

"नहीं माँ ! वे मुझको यह भी कहते है कि मेरा सुहाग बना रहेगा। उसको कोई मिटा नहीं सकता।"

"यह तो ठीक है, परन्तु यदि तुम्हारा घर होशियारपुर मे नही तो कहाँ है ?"

"यही इस गाँव मे ! वे मुझको कभी उस घर की ओर सकेत भी करते है।"

"किस घर की ओर ?"

"वे कहते है कि मौसी का घर ही मेरा घर है।"

"क्या ! भगवती बहिन का ?"

"हाँ माँ !"

"राधा ! यह कैसे हो सकता है ?" मक्खनी ने आवेश मे कहा।

"क्यो माँ ! हो क्यो नही सकता !"

"वे राजपूत हैं, हम वैश्य है। भला जाति से बाहर भी कही विवाह होते है।"

"माँ ! मैंने सरस्वती की माँ से पूछा था। उन्होने पडितजी से पूछकर बताया था कि हिन्दुओ मे छोटी जात की लडकी बडी जात के घर जा सकती है। तब से मैं इस बात को असम्भव नही मानती। पडिताइन ने कहा था कि जैसे मानव-कुल पार्वती को देव कुल महादेवजी से विवाह करने के लिए तपस्या करनी पडी थी, वैसे ही छोटी जाति की लडकी को बडी जाति मे विवाह करने के लिए तपस्या करनी आवश्यक है।"

"सो माँ ! मैं तपस्या कर रही हूँ।"

"कैसे तपस्या कर रही हो ?"

"एक तो मैं अपनी माँ को सन्तुष्ट कर रही हूँ। दूसरे मौसी से नित्य आशीर्वाद ले लेती हूँ। माँ ! तुम दोनो प्रसन्न हो गयी हो। अभी तक अपने पिता और भापाजी के विषय मे कुछ नही कह सकती। मैं निरन्तर

यत्न कर रही हूँ। शेष भगवान् भरोसे ही है।"

"परन्तु मैं इस सम्बन्ध को मानी नही। साथ ही एक व्यक्ति और है। मथुरा मान जायेगा क्या ? वह इतना पढ-लिखकर और इतनी बडी नौकरी पाकर तुम-जैसी अनपढ देहातिन, गँवार लडकी से विवाह करेगा क्या ?"

"माँ ! तुम और मौसी राजी हो जायेगी, तो वे मान जायेगे।"

"कैसे जानती हो ?"

"मै उनके मन की बात अपने मन से जानती हूँ। वे माँ का कहा कभी टालेगे नही।"

"तो उससे इस विषय पर कभी बात हुई है ?"

"नही, बात तो नही हुई। इस पर भी मै उनको बचपन से जानती हूँ।"

माँ को सन्तोष नही हुआ। यही कारण था कि उस दिन भगवती से पूछने बैठ गयी। राधा गयी तो मक्खनी ने पूछ लिया "भगवती बहिन ! इस लडकी का अपने घर मे चित्त नही लगता। तुमने इसको मोह रखा है।"

"हाँ, यह इतनी अच्छी है कि मेरा चित्त इसको यहाँ ही रख लेने को करता है।"

"परन्तु बहिन ! मनुष्य की सब इच्छाएँ पूर्ण हो ही जायेगी, कोई नही जानता है।"

"क्यो, क्या बाधा है, तुम्हारी इच्छा की पूर्ति मे।"

"एक तो तुम्हारी इच्छा का प्रश्न है। फिर तुम्हारे पति और राधा के पिता की भी इच्छा का प्रश्न है। आपके अतिरिक्त मथुरा के मन का भी मुझको पता नही।"

"सबसे बडी बात है, भगवान् की इच्छा। उसकी इच्छा हुई तो सब-कुछ हो सकेगा।"

"तो लडकी से तुम्हारी बातचीत हुई है ?"

"नही। इस पर भी मै जानती हूँ, वह इस घर मे आकर रहना चाहती है।"

"कैसे जानती हो ?"

"राधा के प्रत्येक व्यवहार से यही बात प्रकट होती है। मै न तो उसको अपने विचारो से प्रोत्साहित कर सकती हूँ, न ही उसको किसी प्रकार आशा दिला सकती हूँ। कारण यह है कि इसमे बहुत कुछ है, जो मेरे अधीन नही है। अत मैंने घटनाओ को भगवान् के आश्रय छोड दिया है। जैसे वह रखेगा वैसे ही रहने का मेरा अधिकार है।"

"परन्तु बहिन ! तुमने मथुरा को भरती होने से मना क्यो नहीं किया ?"

"उनके पिता मरने से कभी भयभीत नही होते। युद्ध करना वे अपना जातीय कार्य समझते है और उनके मस्तिष्क मे यह बात बैठी हुई है कि पढे-लिखे भारतीय सेना मे भरती होगे तो भारत का उद्धार होगा।"

मक्खनी के मन का सशय निवारण हो गया। उसको एक स्थिर कार्यक्रम दिखाई देने लगा। वह समझ गई थी कि भगवती राधा और मथुरा के विवाह के लिए यत्न करेगी। भापा भगवती का कहा मान लेगे। इस पर भी वे मथुरा के युद्ध से लौटने से पूर्व न तो राधा को बाँधना चाहती थी, न ही मथुरा को।"

इससे वह अपने व्यवहार के विषय मे विचार करती हुई घर आ गई। राधा उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह माँ से बातचीत का परिणाम जानना चाहती थी। इस कारण वह अपनी माँ का मुख देखने लगी।

माँ ने उसके मन के भाव को समझकर, कह दिया, "राधा ! अब तुम्हारे सुहाग और मथुरा के जीवन के लिए हम सबको भगवान् से प्रार्थना करनी चाहिये।"

"माँ ! मैं जानती हूं वे युद्ध से सम्मानित हो लौटेगे।"

६

मथुरा देहरादून से लौटा तो लाला देवीदयाल भी वर्धा से लौट आया। मथुरासिंह ने बीस जुलाई को जबलपुर मे उपस्थित होना था। उसके जाने मे अभी चार दिन थे कि देवीदयाल से भेंट हो गई। मथुरासिंह देवीदयाल से मिला तो पूछने लगा, "चाचा! सत्याग्रह नही हो रहा क्या?"

"सत्याग्रह तो हो रहा है, परन्तु मुझको भरती नही किया गया। महात्माजी पढे-लिखो के अतिरिक्त किसी मेरे-जैसे व्यक्ति को इस व्यक्तिगत सत्याग्रह की स्वीकृति नही दे रहे। दो हजार स्वयसेवक वहाँ गये थे। महात्माजी ने केवल बीस आदमी चुने है। वे प्रति सप्ताह एक आदमी को इसके लिए भेजना चाहते है।"

"इतने कम क्यो?"

"वे कहते है, "सैनिक तो शत्रु के शरीर को जीतने जाते है और हम शत्रु के मन और आत्मा पर विजय प्राप्त करने का विचार रखते है। इस कारण सत्याग्रह मे सख्या की गणना नही होती। इसमे आत्मबल मुख्य है।"

"तब तो ठीक है। महात्माजी ने हिटलर के मन और आत्मा पर विजय पाने का यत्न किया था, उन्होने हिटलर को एक पत्र भी भेजा था। परन्तु वे अपने उद्देश्य मे सफल नही हुए। जहाँ वे सफल नही हुए वहाँ हम प्रयत्न कर रहे है। हम उसके शरीर पर विजय पाकर महात्माजी के चरणो मे ला बैठायेगे, जिससे वे उसके मन और आत्मा को जीत सकें।"

देवीदयाल समझा नही। इस पर जमादार सूरतसिंह ने रामायण मे से एक बात सुना दी। उसने सुनाया, "रावण मरते समय भी ललकारकर कह रहा था—

'गर्जेउ मरत घोरख भारी, कहाँ राम रन हतो पचारी॥'

अर्थात् मरता-मरता भी वह यही कह रहा था, कहाँ है राम? मैं उसकी

रण मे हत्या कर दूंगा ।"

"कुछ आसुरी आत्माएँ ऐसी होती है, जो मर जाती हैं पर परास्त नही होती ।"

देवीदयाल का विचार था कि वह सत्याग्रह कर जेल मे चला जायेगा और फिर वह राधा के विवाह के विषय मे अपनी पत्नी से झगडा करने से बच जायेगा । परन्तु सत्याग्रह मे उसको सम्मिलित नही किया गया । इससे वह निराश हो, गाँव मे आया और पुन लडकी के विवाह का यत्न करने लगा ।

अब तो मक्खनी का राधा के विवाह के विषय मे विरोध स्पष्ट और दृढ हो गया । मक्खनी ने कह दिया, "मुझको एक ज्योतिषी ने बताया है कि यदि लडकी का विवाह तीन वर्ष के भीतर किया तो वह शरीर त्याग देगी ।"

"किस ज्योतिषी ने बताया है ?"

"एक बहुत बडे महात्मा मुझको मिले थे ।"

इस सूचना से कुछ काल के लिए तो देवीदयाल घबराया । पश्चात् मन मे कुछ विचारकर, कहने लगा, "मुझको ऐसी बाते मे किंचिन्मात्र भी विश्वास नही ।"

"परन्तु मुझको तो है । मुझसे अधिक राधा को है और वह अभी मरना नही चाहती ।"

इस पर लाला मुख देखता रह गया । मक्खनी ने आगे कह दिया, "मैंने कहा था कि विवाह युद्ध के उपरान्त होगा । इससे मैने अपना विचार बताया था कि युद्ध तीन वर्ष मे समाप्त हो जायेगा ।"

"मक्खनी ! महात्माजी तो कहते थे कि युद्ध तो सात वर्ष तक चलेगा । तब तक वे बिना स्वराज्य के रह नही सकते ।"

"यह उनको किस ज्योतिषी ने बताया है ?"

"वे स्वय बहुत बडे महात्मा हैं । ज्योतिषियो से भी बडे हैं । उनका कथन असत्य नही हो सकता ।"

"कुछ भी हो, उन्होने यह ज्योतिष नही लगाया कि राधा विवाह कर जीवित रहेगी ।"

इस प्रकार मक्खनी ने अपने पति का मुख बन्द कर दिया । इस पर भी उसका हृदय शान्त नही किया जा सका । वह मक्खनी के व्यवहार को एक माँ के व्यवहार के विपरीत समझता था ।

जिस दिन मथुरासिंह ने गाँव से जबलपुर के लिए विदा होना था, सूरतसिंह ने गाँव के मुख्य-मुख्य आदमियो को भोज दे दिया । बीस के लगभग पुरुष और लगभग दस स्त्रियाँ भोज पर आमन्त्रित थी । इसमे राधा और मक्खनी भी थी, लाला देवीदयाल भी वहाँ आया था । खीरपूडी शाक, चटनी अचार तथा मिठाई थी । सबने पेट भरकर खाया और सूरत-सिंह का धन्यवाद किया । मथुरासिंह को पुष्प मालाएँ पहनाकर सबने विदा किया ।

मथुरासिंह को जब स्त्रियाँ तिलक दे रही थी तो राधा भी उनमे तिलक लगाने आयी । तिलक लगाते हुए उसने धीरे से कह दिया, "कब दर्शन होगे ?"

"युद्ध पर जाने से पूर्व तो एक बार आऊँगा । तीन मास की शिक्षा के बाद एक-दो दिन के लिए ।"

"मैं आपकी प्रतीक्षा मे रहूँगी ।"

"धन्यवाद, राधा ।"

बस, इतना ही कहा और सुना जा सका । राधा का विचार था कि यह उसके आराम को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है ।

मथुरासिंह भी प्रतीक्षा का अर्थ समझता था इस पर भी वह इस समय धन्यवाद से अधिक नही कह सका । इस समय उसका मन राधा से अपने सम्बन्ध के विषय मे पहले से अधिक स्पष्ट था, वह भी उससे विवाह की इच्छा करने लगा था ।

जबलपुर मे मथुरासिंह को एक बैठक मे दस अन्य शिक्षार्थियो के साथ रखा गया । वैसे तो तीन सौ अफसर शिक्षा के लिए आये हुए थे ।

वे सब भिन्न भिन्न बैठको मे ठहरे हुए थे। प्राय सब-के-सब ग्रेजुएट थे और देश के भिन्न-भिन्न स्थानो से आये थे। मथुरासिंह की बैठक मे सब-के-सब पजाब के रहने वाले थे। इन दस मे दो मुसलमान, तीन सिख तथा एक ऐंगलो इण्डियन था और शेष चार हिन्दू भिन्न-भिन्न जाति के थे। सबका एक ही मैस था, ऐंगलो इण्डियन था—कार्ल माईकल। वह अम्बाला का रहने वाला था। इसका पिता वहाँ की कैन्टीन का मैनेजर था।

यो तो सब दस-के-दस आपस मे बहुत सुहृदयता से रहते थे, परन्तु माईकल का मथुरा से सम्बन्ध अन्य से अधिक घना होने लगा था।

मथुरासिह ने एक दिन बताया, "मै लाहौर गवर्नमेन्ट कॉलेज मे एम० ए० की श्रेणी मे पढता था।"

"तो पढाई छोड क्यो आये हो ?" माईकल ने आश्चर्य मे पूछकर कहा।

"पढाई तो युद्ध के पश्चात् भी हो सकती है, परन्तु युद्ध पढ़ाई के पश्चात् रहेगा या नही, कहा नही जा सकता।"

माईकल मुस्कराया। उसने समझा कि कोई मोटी बुद्धि का आदमी है। पुन उसने हँसी-हँसी मे पूछ लिया, "तो युद्ध कोई मिठाई है जो कुछ दिनो मे बासी हो जाती है।"

मथुरासिह का सतर्क उत्तर था, "बासी नही मित्र! इसके तो समाप्त हो जाने की बात है।"

"ओह, नो। यह युद्ध दस वर्ष तक चलेगा।"

"सत्य! इस पर भी यह एक सौभाग्य का अवसर है, जिसमे मैं भी भाग ले रहा हूँ।"

"सौभाग्य ? कैसा सौभाग्य ?"

"हमारे धर्म-शास्त्र मे लिखा है," मथुरासिह ने गीता, मे से एक श्लोक, जो त्रिलोकचन्द्र प्राय सुनाया करता था, उसका अर्थ सुना दिया। उसने कहा, "इस प्रकार का युद्ध क्षत्रियो के लिए स्वर्ग का द्वार है।"

"स्वर्ग का द्वार ?"

"हाँ। हम इस युद्ध को धर्म युद्ध समझते है। इसी शास्त्र मे लिखा है कि धर्म के निमित्त किया हुआ युद्ध से बढकर अच्छा कार्य एक क्षत्रिय के लिए अन्य कोई नही।"

"परन्तु तुम समझते हो कि यह तुम्हारे धर्म का युद्ध है? क्या इससे बर्लिन मे तुम्हारे मन्दिर स्थापित होने वाले है।"

"धर्म का अर्थ मन्दिर स्थापित करना-कराना नही। देखो माईक! धर्म के दस लक्षण बताये है। ईसाइयो मे उनको 'टैन कमान्डमैन्ट्स' कहते है। उनके पालन करने वालो को धर्मात्मा कहते है और उनका विरोध करने वालो को अधर्मी। युद्ध तब होता है जब एक पक्ष अधर्माचरण करने लगता है। उस समय अधर्माचरण करने वालो को नियत्रण मे करना धर्म होता है। मै समझता हूँ कि यही करने, मै जा रहा हूँ।"

माईकल इस व्याख्या को सुन हंस पडा। हँसते हुए उसने कहा, "मैं ऐसा नही समझता। मैं न तो अग्रेजो को धर्मात्मा मानता हूँ, न ही जर्मनी को। दोनो मे युद्ध हुआ है, "इस कारण कि दोनो के स्वाथ एक-दूसरे को काटते है।"

"अग्रजो ने एक लम्बी-चौडी 'एम्पायर'[1] बना रखी है। ये बलपूर्वक उसमे अपना राज्य रखे हुए है। जर्मनी भी अपना साम्राज्य बनाना चाहता है। वे भी साम्राज्य बलपूर्वक ही बनायेगे। इस कारण दोनो के स्वार्थो मे 'कैल्श' उत्पन्न हो गया है। यह है युद्ध। दोनो अधर्मी हैं। दोनो आततायी है, दोनो स्वार्थी है।"

"परन्तु मिस्टर माईकल! यदि तुम ऐसा समझते हो तो इस जान-जोखम के काम मे क्यो भरती हुए हो?"

"जस्ट टू हैव ए फन इन लाइफ।"[2]

"वाह! भला क्या मजा है गोली से किसी मनुष्य को मारने मे?"

"यह तो तुम जब कभी मैदानेजग मे जाओगे तभी अनुभव कर सकोगे। कभी शिकार खेलने गए हो?"

---

१. साम्राज्य, २ जीवन का रस लेने के लिए।

"हाँ, एक बार चीते का शिकार खेलने गया था। कुल्लु के मार्ग पर एक चीता हर दूसरे-तीसरे दिन किसी राही को चट कर जाता था। मेरे पिता ने उसके शिकार के लिए अपनी सेवा समर्पित कर दी। तब मैं, मेरे पिता और धर्मशाला के एक मजिस्ट्रेट बन्दूक लेकर गए और वहाँ छिपकर बैठ गए। वह चीता आया तो सबसे पहले मैंने बन्दूक चलाकर उसे चित कर दिया।"

"चीते के शिकार से अधिक मजा तो खरगोश और लूमड के शिकार मे आता है।"

"क्या मजा आता है?"

"जब वे ची-ची करते हुए भागते है और शिकारी बन्दूक लिए उनके पीछे भागता है तो चेज[1], का लुत्फ तो करके देखने की ही बात है।"

"मेरा मत इससे भिन्न है। मगर विचार अपना-अपना है। मुझको तो अपने से अधिक बलशाली जीव से लडने मे आनन्द आता है। जब कोई मुकाबले का शत्रु हो और मैं यत्न कर, उसको परास्त करूँ तो जो आनन्द आता है उसकी तुलना मैं भला किसी दुर्बल जीव का, जिसमे मुकाबला करने का सामर्थ्य नही हो, और जो विरोध भी न कर सके, उसे मारने मे क्या रस आ सकता है?"

"जब शत्रु दुर्बल हो तो इसमे अपना क्या दोष है?"

"परन्तु वह शत्रु हो तब न।"

"जिसके साथ लड पडे, वही शत्रु बन गया।"

"नही, लडने अथवा न लडने से कोई शत्रु नही बन जाता। शत्रु तो वह है, जो अधर्माचरण करता है। कभी नीति के विचार से हम शत्रु से भी नही लडते। इस पर भी वह शत्रु तो रहता ही है।"

मथुरासिंह ने देखा कि माईकल युक्ति करने मे बहुत ही दुर्बल है। इसका कारण यह था कि माईकल मात्रा से अधिक मद्य का सेवन करता था। सैनिक मैंस मे मद्य सस्ती मिलती थी और न्यूनाधिक मात्रा मे लग-

१ पाछा करन।

भग सभी लोग पीते थे ।

रात के भोजनोपरान्त आधी बोतल सामने रख, उसे पीते हुए माई-कल ने मथुरासिह को बताया, ' सैनिक जीवन के अनेकानेक आनन्दो मे से यह भी एक है । बाजार मे ह्विस्की की बोतल अठारह रुपये मे मिलती है और यहाँ केवल नौ रुपये मे ही । '

"तब तो मै इस मजे से वचित हूँ । इस पर भी मैं अपने को किसी प्रकार से घाटे मे नही समझता ।"

"जब तुम पीने लगोगे तो तब समझोगे कि तुम घाटे मे थे और इससे आने वाले रस का भी अनुभव करने लगोगे । सिह ! मैने तुम्हारा कल वाला वार्त्तालाप अपने अन्य साथियो को बताया था । तुम फिलॉसोफर हो, इस कारण तुम अच्छे सिपाही नही बन सकते ।"

"परन्तु हमारा ट्यूटर कल कह रहा था कि वर्तमान 'लॉट' मे से मैं सबसे श्रेष्ठ हूँ । इस लॉट मे हम तीन सौ से अधिक ऑफिसर हैं ।"

"तुम्हारी हँसी उडाने के लिए वह इस प्रकार कह रहा होगा ।"

"हाँ, हो सकता है । लेकिन किसी दिन तुम उससे मेरे सम्बन्ध मे बात करके पता करना कि वह भी मुझे मूर्ख समझता है अथवा कुछ और ।"

"तो और कौन मूर्ख समझता है ?"

"वे सब, जो मुझे फिलॉसोफर मानते है । फिलॉसोफर के अर्थ सम्भवतया उनके मस्तिष्क मे मूर्ख के ही होते है ।"

"ओह ! नो ।" गिलास मे पडी सारी शराब को अपने पेट मे डालते हुए माइकल ने कहा, "बस, आज इतनी ही पीऊँगा ।" बोतल को कार्क लगा, उसने जेब मे रख लिया । उस दिन उसने चौथाई बोतल ही पी थी । कहने लगा, "दोस्त ! अगर तुम भी पीने लगो तो बहुत मजा रहे ।"

"क्या मजा होगा ?"

"मुझे एक साथी मिल जायेगा ।"

"साथी तो मैं बिना पिये भी तुम्हारा हूँ ही ।"

"मेरा मतलब शराब पीने मे साथी से है।"

"ऐसे साथी हमारे ग्रुप मे अनेको है।"

"वे सब तो गँवार है। जब सब मिलकर बैठते है, तो औरतो के अतिरिक्त और कोई विषय ही उनकी बात का नही होता।"

"तब तो वह एक एडीशनल[1] मजा रहता होगा।"

"नही सिंह! तुम नही समझते। तुम्हारा दिल अभी किसी सुन्दरी के सु.यनो से उलझा नही।"

मथुरासिंह अपनी प्रेमिका का नाम, इन अर्ध-चरित्रहीन साथियो मे भी लेना नही चाहता था। इस कारण उसने कह रखा था कि उसकी कोई प्रेमिका नही है। माइकल ने एक दिन यह भी पूछा था कि अभी तक उसने किसी स्त्री का रसपान भी किया है अथवा नही? मथुरासिंह ने उसके उत्तर मे अपनी अनभिज्ञता ही व्यक्त की थी। उसके साथ रहने वाले बैरक के अन्य साथी हँसी मे उसे साधु कहा करते थे।

औरतो के विषय मे माइकल की बाते सुनकर मथुरासिंह हँस दिया करता था। आज भी उसने बात को समाप्त करने के लिए अपने दोस्त के कटाक्ष का उत्तर नही दिया। वह केवल मुस्करा दिया था। उनके सब साथी बैरक मे जा चुके थे, किन्तु वे अभी भी मेज पर ही बैठे थे। माइकल ने आज औरतो के विषय को नही छेडा। बाते करते हुए उसने कहा, "हमारी बैरक के अन्य साथी तो सैमी-ब्रूट्स[2] है। मैं उनके सामने ऐलिस की बात करना नही चाहता। वह भले घर की लडकी है। उसकी माँ मसूरी के सेंट जोजफ हाई स्कूल मे अध्यापिका है। मेरे लिए वह आदर्श नारी है। मैने उसके साथ प्रेम किया और वह मुझसे प्रेम करने लगी। परन्तु उसके पिता ने मुझे आवारा समझकर मेरे साथ उसकी शादी स्वीकार नही की। ऐलिस अभी अल्पायु है। दो वर्ष मे ही वह वयस्क हो जावेगी, तब हमे स्वेच्छा से विवाह करने की स्वतन्त्रता होगी। उसकी स्मृति मे मैं अब किसी भी औरत की संगति पसन्द नही करता। ये कटरे

१ अतिरिक्त, २. अर्ध-पशु।

की औरतें तो उसकी तुलना मे मुझे बदसूरत दिखाई देती है। व्यवहार और स्वभाव मे तो ऐलिस साक्षात् गॉडेस[1] ही हे। इसमे मैं अब किसी बाज़ारी औरत की ओर देख भी नही सकता। वास्तव मे दो वर्ष प्रतीक्षा मे निकालने के लिए ही मै सेना मे चला आया हूँ।

"मुझे कमीशन मिल जाने से ऐलिस और उसके माता-पिता की दृष्टि मे मेरा मूल्य बढ गया है। मैं इससे बहुत प्रसन्न हूँ।"

"माइकल ! यदि तुम यह शराब पीना भी छोड दो, तो निश्चय जानो कि अपनी प्रेमिका की दृष्टि मे तुम और भी उच्च हो जाओगे।"

"उसने मुझसे ऐसा कभी कहा नही।"

"जब अगली बार मिलो तो उससे इस विषय मे पूछकर देख लेना कि वह क्या कहती है ?"

माइकल उसका मुख देखता रह गया। बैरक के अन्य साथी इन दोनो को अर्ध विक्षिप्त मानते थे। वे समझ नही पाते थे कि ये दोनो परस्पर बैठकर किस प्रकार की बाते करते है।

जब ये दोनो मैस मे रह जाते तो वे लोग यही समझते थे कि बोतल खाली किये बिना ये लोग सोने के लिए नही आवेंगे।

शिविर का जीवन अत्यन्त व्यस्त जीवन होता था। सब प्रात चार बजे उठ, शौचादि नित्य-कर्म से निवृत्त हो, ठीक पाँच बजे मैदान मे पक्ति-बद्ध खडे हो जाते थे। मथुरासिंह तो इस एक घण्टे मे स्नान कर, दस मिनट जप भी कर लिया करता था। दो घटे के कठिन शारीरिक-परिश्रम के अनन्तर सवा सात से सवा आठ बजे तक एक घटा चाँदमारी का अभ्यास होता था। फिर दो घटे वे लोग पढाई करते थे। पढाई मे 'पोलिटिकल साइस', 'वार स्ट्रेटैजी', 'रीडिंग मैप्स' आदि-आदि की शिक्षा होती थी।

साढे दस बजे ब्रेकफास्ट के लिए ये लोग मैस मे आते थे। ग्यारह बजे प्रैक्टिकल फाइटिंग की शिक्षा के लिए जाना होता था। वहाँ से साढे-

१ देवी।

बारह बजे बैरक्स मे लौटने। एक से दो तक लंच होता, फिर आधा घंटा विश्राम के अनन्तर उनको हिन्दुस्तान की मुख्य भाषाओ मे से एक भाषा सीखनी पडती थी। मथुरासिंह गोरखाली सीख रहा था। चार बजे अपने शिविर मे वे युद्ध पर कोई-न-कोई पुस्तक पढते थे। छ बजे के बाद उनको छुट्टी होती थी। तब वे प्राय अपने मित्रो के साथ घूमने चले जाया करते थे।

प्रति सप्ताह शनिवार के दिन उनकी परीक्षा हुआ करती थी। उसमे प्रायोगिक और लिखित दोनो ही सम्मिलित थी।

इस प्रकार सप्ताह के बाद सप्ताह बीत रहे थे। साथ ही दिन-प्रति-दिन मथुरासिंह और माइकल मे घनिष्ठता बढती जा रही थी।

: ७

रविवार का दिन था। माइकल का, 'वार स्ट्रैटैजी' के शिक्षक के साथ खाना था। वह स्कॉटलैंडवासी अंग्रेज़ था और अपनी पत्नी तथा कन्या-सहित बैरको से कुछ दूर एक बँगले मे रहता था। मध्याह्न के पश्चात् माइकल करनल स्टैनले के बँगले से लौटा, तो उसने देखा कि मथुरासिंह अपनी प्रिय पुस्तक गीता का अध्ययन कर रहा है। कभी-कभी मथुरासिंह उसके कुछ अंश पढकर माइकल को समझाया भी करता था। आज माइकल आया तो उसको समीप बैठाकर मथुरासिंह ने बताया, "देखो, क्या सुन्दर बात लिखी है—

'हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं
जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय
युद्धाय कृतनिश्चय ॥'

"धर्मयुद्ध मे कोई मारा जाय तो स्वर्ग प्राप्त होता है। और यदि युद्ध जीत ले तो भूमि का भोग प्राप्त होगा। अत उठो और युद्ध करो।"

उसके समीप बैठते हुए माइकल ने कहा, "मेरे मन मे यह संशय बना रहता है कि जर्मनी को परास्त करना धर्म है अथवा अंग्रेज़ो को

परास्त होने देना ?"

"इस विषय मे मैंने तुमको अपना मत बता दिया था और तुम उस समय समझ भी गए थे। देखो, जहाँ तक हिटलर की अपनी जाति का सम्बन्ध है। हिटलर उसकी उन्नति मे सदा धर्मयुक्त व्यवहार करता था। ससार की कोई भी जाति दूसरी जाति पर यह प्रतिबन्ध नही लगा सकती कि वह अमुक कार्य न करे अथवा इतनी सेना न रखे। परन्तु जब सेना का दुरुपयोग होने लगा तो नि सन्देह इसमे दोष हिटलर का था। मुसोलिनी का ऐबिसीनिया पर आक्रमण हिटलर का जुकोस्लाविया और पोलैंड पर अधिकार तथा पोलैंड का रूस के साथ बंटवारा, ये बाते तो किसी प्रकार भी क्षम्य नही। मैं राइनलैंड का बलपूर्वक अपने अधिकार मे कर लेना भी कोई स्तुत्य कार्य नही समझता।"

"परन्तु अंग्रेज़ो ने भी ऐसा ही कुछ किया हुआ है।"

"जब अंग्रेज़ो के विरुद्ध उसके उपनिवेश लडेगे तो हम अंग्रेज़ो का विरोध करेंगे। परन्तु ये तो अपने अधीनस्थ उपनिवेशो को बिना युद्ध के भी स्वतन्त्र करते जा रहे हैं, यह युद्ध उन उपनिवेशो को स्वतन्त्र कराने के लिए नही हो रहा है। यह तो स्वतन्त्र देशो को अपने अधीन करने के लिए किया जा रहा है। फिर हिटलर का यहूदियो के साथ जो व्यवहार है, वह तो नितान्त लज्जास्पाद है।"

"परन्तु सिह ! क्या हम पोलैंड को स्वतन्त्र करने के लिए युद्ध कर रहे है ? हम तो अग्रज की महिमा बढाने के लिए लड रहे है।"

"मैं ऐसा नही समझता। अंग्रेजो ने पोलैंड के साथ सधि की हुई थी कि वे एक दूसरे की सहायता करेगे। सहायता की आवश्यकता पोलैंड को तब पडी जब जर्मनी ने उस पर अकारण आक्रमण कर दिया। इस समय, इस युद्ध मे हम धर्म की स्थापना का पक्ष ले रहे हैं। मै तो ऐसा ही समझता हूँ।"

"तुम्हारी समझ की बात मैंने मिस्टर स्टैनले को बताई थी। वे कहते थे कि इस ट्रेनिंग इस्टीट्यूट के शिक्षको का मत है कि तुम अति प्रतिभा-

शाली शिक्षार्थी हो और तुमको इगलैड के स्कूल ऑफ मिलिटरी साइसिज मे तीन मास के प्रशिक्षण के लिए भेजा जावेगा।"

"सच ! तब मुझे मिस्टर स्टैनले का धन्यवाद करना चाहिए।"

"मैंने जब यह बताया कि तुम हिटलर को अधर्मी मानते हो, इस कारण तुम उसकी सेना से लडने के लिए जा रहे हो तो मिस्टर स्टैनले ने मुझसे कहा कि वह तुम से मिलकर बहुत प्रसन्न होगा।"

मथुरासिह चुप रहा। माइकल ने ही बात आगे चलाते हुए कहा, "आज खाने के सारे समय मे तुम्हारी ही बाते होती रही है। मै समझा था कि मिसेज स्टैनले मुझसे अपनी लडकी का परिचय कराना चाहती है, परन्तु वहाँ जाकर विदित हुआ कि किसी ने उनको बताया है कि मै और तुम घनिष्ठ मित्र हैं और वे तुम्हारे विषय मे व्यक्तिगत सूचना प्राप्त करना चाहती हैं। मुझे कुछ सन्देह हो रहा है कि फ्लोरा तुम पर मुग्ध हो रही है।

"श्रीमती स्टैनले ने मुझसे तुम्हारे विवाह के विषय मे पूछा था। तुम्हारी सगाई वगैरह की बात भी पूछी और फिर यह भी जानना चाहा कि तुम किसी लडकी से प्रेम तो नही करते।

"कर्नल स्टैनले अग्रेजो के विषय मे तुम्हारे विचार, गाधीजी के विषय मे तुम्हारी धारणा आदि बाते पूछते रहे है। इसी कारण मुझे विश्वास-सा हो रहा है कि लडकी 'हैड एण्ड टैल इन लव विद यू'[1]।"

' इससे तुम्हे तो भारी दुख और निराशा हुई होगी ?"

"निराशा किसलिये ?"

"तुम स्वय उस लडकी से परिचय करने के लिए गये थे और निकल आई बात कुछ दूसरी ही।"

"दोस्त ! मैं सच कहता हूँ कि मिस स्टैनले मे मेरी कोई रुचि नही है। मेरी ऐलिस मुझे पसन्द है। यो तो फ्लोरा भी अपने ढग की सुन्दर लडकी है, पर मेरे मन मे ऐलिस ही समाई हुई है।"

---

१ तुम्हारे सम्मोहन मे पूर्णतया फँसी हुई है।

"तो तुमने सब-कुछ बता दिया है अथवा कुछ छिपाकर भी रखा है ?"

'गाधी के विषय मे तुम्हारे विचार मैने उन्हे नही बताये। क्योकि मुझे डर था कि वे तुम्हे कही विद्रोही न मान बैठे। मैने कहा कि राजनीति के विषय मे हम परस्पर कोई बात नही करते।"

मथुरासिह चुप रहा। माइकल बोला, "माँ अथवा लडकी, कोई-न-कोई, तुमसे सम्पर्क स्थापित करेगी। लडकी तो उसी समय मुझसे पूछ रही थी कि मैं तुम्हे वहाँ ला सकता हूँ। मेरे उत्तर देने से पहले ही स्टैनले ने कहा कि वे स्वय तुम्हे बुलायेगे, मुझे कष्ट करने की आवश्यकता नही।"

. ८

ट्रेनिग स्कूल मे हॉकी और फुटबाल के मैच भी होते थे। इसके लिए कई मडलियाँ बनी हुई थी। उनमे परस्पर प्रतियोगिता होती रहती थी। परन्तु एक दिन गोरा रेजिमेट की ससैक्स तीन सौ सात' की फुटबाल टीम को आफिसर्स ट्रेनिग स्कूल की ओर से चुनौती भेजी गई। इस प्रकार दोनो फुटबाल टीमो मे प्रतियोगिता निश्चित हो गई।

मथुरासिह को आफिसर्स ट्रेनिग स्कूल की टीम का कैप्टन बनाया गया। रविवार के दिन शाम को पाँच बजे मैच था। स्कूल के शिक्षक एव शिक्षार्थी सभी मैच देखने के लिए एकत्रित हो गये थे। कर्नल स्टैनले का परिवार भी मैच देखने के लिए आया।

यह समझा जाता था कि गोरा रेजिमेट की टीम बहुत अच्छा खेलने वाली है। हिन्दुस्तान-भर की सभी छावनियो मे उस टीम ने नाम कमाया था।

मैच आरम्भ हुआ और खेल आरम्भ होने के दो मिनट बाद ही मथुरासिह की टीम ने गोरा टीम पर एक गोल कर दिया। मथुरासिह सेंटर फार्वर्ड खेल रहा था और टॉस के बाद ज्यो ही गेद उसके पास आया कि वह उसको ले उडा और विपक्षियो के गोल मे डालकर ही उसने गेद को छोड़ा। मथुरासिह का शरीर मजबूत और लचकदार था। अतः उसने

ड्रिबलिंग मे सबको मात कर दिया।

पुन खेल आरम्भ हुआ। इस बार वह पुन गेंद लेकर जा रहा था कि गोरा टीम के एक खिलाडी ने 'फाउल प्ले' दे दिया। ट्रेनिंग स्कूल को फ्री किक तो मिल गई पर इससे कुछ बना नही।

अब खेल आरम्भ हो गया और दोनो ओर से ही भली प्रकार खेला जाने लगा। ट्रेनिंग स्कूल की टीम मे यह दोष था कि वह भानुमती का पिटारा जैसा था। भिन्न भिन्न स्थानो से आये खिलाडी केवल मैच के लिए एकत्रित हो गये थे। इस कारण टीम के खिलाडियो मे परस्पर समन्वय नही हो सका। दूसरी ओर गोरी टीम के सब खिलाडी परस्पर मिलकर खेलते थे। गोरी टीम ने पन्द्रह मिनट मे गोल उतार दिया। दोनो पक्ष फिर बराबर-बराबर खेलने लगे।

आधा समय समाप्त होने से पूव पुन गेंद मथुरासिंह के पास आया और इस बार भी उसने गोल करके ही छोडा। आधे समय के समाप्त होते-होते मथुरासिंह ने एक गोल फिर कर दिया।

इस पर तो गोरा टीम सतर्क हो गई और उसके तीन खिलाडी सिर्फ मथुरासिंह के पीछे ही लगे रहे।

गोरा टीम के लाख प्रयत्न करने पर भी आधे समय मे मथुरासिंह ने उस पर पॉच गोल कर दिये। गोरा टीम ने बहुत प्रयत्न करके केवल एक गोल उतारा।

खेलने वाले और देखने वाले सभी अनुभव कर रहे थे कि खेल का निर्णय मथुरासिंह ने ही किया है। अपने पक्ष के सब सातो-के-सातो गोल उसने ही किये थे। जब भी उसके पाँव मे गेंद आया, उसने गोल किये बिना उसे नही छोडा। दो गोल हो जाने के बाद तो सभी यह समझ रहे थे कि सारे खेल मे एक वही जादूगर है।

खेल के अन्त मे गोरा टीम के कैप्टन ने उससे हाथ मिलाया और ट्रेनिंग स्कूल की टीम ने उसको कधो पर उठा लिया। शिक्षक-वर्ग ने उसका बधाई दी। करनल स्टैनले और उसकी पत्नी ने उससे हाथ मिलाया

और रात को भोजन पर अपने घर आने का निमन्त्रण दे दिया।

मुस्कराती हुई पास खडी फ्लोरा की ओर दृष्टि जाने पर मथुरासिंह समझ गया कि यह सब उसके लिए ही किया जा रहा है। करनल ने अपनी लडकी का परिचय कराते हुए कहा, "मिस्टर सिंह ! यह है मेरी लड़की फ्लोरा स्टैनले। यह तुम्हारे खेल की बहुत ही प्रशसक है।"

मथुरासिंह ने भारतीय रीति से हाथ जोडे, किन्तु फ्लोरा ने अपना हाथ आगे बढा दिया। मथुरासिंह को भी विवश हाथ मिलाना पडा।

मैच के बाद माइकल मथुरासिंह से मिला और पूछने लगा, "कहो, कैसी लगी फ्लोरा ?"

"अच्छी है।"

"उसकी मुस्कराहट मे एक विचित्र सम्मोहन है।"

"तुम तो कहते थे कि ऐलिस इससे भी अच्छी है ?"

"वह बहुत ही मीठा बोलती है।"

"और यह ?"

"यह तुम स्वय ही सुनकर बताना।"

मथुरासिंह ठीक साढे आठ बजे करनल स्टैनले के बँगले पर जा पहुँचा। वहाँ जाकर उसने देखा कि भडकीले वस्त्र धारण किये हुए स्टैनले माता, पुत्री बरामदे मे बैठी उसकी प्रतीक्षा कर रही है। करनल स्टैनले ड्राइग-रूम मे बैठा सिगार पी रहा था।

परस्पर हाथ मिलाये गए और उसके हाथ मे अपना हाथ डाले फ्लोरा मथुरासिंह को भीतर ले गई। करनल ने उठकर मथुरासिंह से हाथ मिलाया। करनल ने उसे अपने पास बैठाया तो फ्लोरा उसकी दूसरी ओर बैठ गई।

ह्विस्की और सोडा मँगवाया गया। जब दोनो को मिलाकर करनल ने एक गिलास मथुरासिंह के आगे किया तो उसने हाथ जोड क्षमा याचना करते हुए कहा, "मै तो इसका पान नही करता।"

"वट।"

"सर ! मैने आज तक इसको चखा नही। मैं इसका पीना बिलकुल पसन्द नही करता।"

एक मिनट तक तीनो मथुरासिह का मुख देखते रहे। कुछ देर बाद मिसेज स्टैनले ने कहा, "परन्तु तुम्हारा मित्र माइकल तो खूब पीता है।"

"जी हाँ, मित्रता का आधार पीना अथवा न पीना नही है। उसमे कुछ 'गोल्डन क्वालिटीज' है, और मैं उसके उन गुणो पर मुग्ध हूँ।"

फ्लोरा पूछने लगी, "क्या गुण है, उसमे ?"

"वह सत्य बोलता है। जुआ नही खेलता। क्रोध नही करता। हमारे अन्य साथियो की अपेक्षा वह अपने मन, वचन और कर्म पर नियन्त्रण रखता है। पर-स्त्री की ओर दृष्टि नही करता। इस कारण मैं उसे बहुत पसन्द करता हूँ।"

'परन्तु वह पीता तो है ?"

"यह उसका स्वभाव है।"

"आप शराब पीना नापसन्द करते हुए भी उसको पीने के लिए मना नही करते ?" करनल ने पूछा।

"मैं किसी को भी मना नही करता।"

"तो मैं पी सकता हूँ ?"

"बडी खुशी के साथ।"

'तुम इसको सिन[1] नही समझते ?"

"शराब पीने को ?"

"हाँ।"

"पाप तो समझता हूँ, परन्तु अपराध नही।"

"क्या मतलब ?"

"पाप उन कर्मों को कहते हैं जो स्वय तथा दूसरो को मानसिक, शारीरिक और आत्मिक हानि पहुँचावे।

"अपराध वे कृत्य है, जिनको समाज और सरकार ने वर्जित घोषित

१. पाप।

किया हुआ है। ये भी दूसरो को हानि पहुँचा सकते है।

"उदाहरण के रूप मे कोई व्यक्ति किसी सार्वजनिक स्थान पर मूत्र-त्याग कर दे। मूत्रत्याग करना तो निरापद कार्य है, परन्तु सार्वजनिक स्थान पर मूत्रत्याग करने से नागरिक-जीवन मे खराबी आती है। इससे यह पाप तो नही, परन्तु अपराध है, अर्थात् दडनीय है।

"इसी प्रकार कोई व्यक्ति वेश्यागमन करता है। वेश्या तो रजिस्टर्ड है। वेश्यागमन से किसी के भी नागरिक अधिकारो मे बाधा नही पडती। इस कारण इसे अपराध तो नही कह सकते, परन्तु यह व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए हानिकर है, इस कारण यह पाप है।

"यह कृत्य यदि किसी औरत से उसकी स्वीकृति के बिना किया जाय तो अधर्म है तथा अपराध है और यदि औरत स्वस्थ है तथा उसके स्वास्थ्य पर किसी प्रकार का दुष्प्रभाव नही पडता और वह इसके दु ख का कारण भी नही बनता तो यह पाप नही है।

"अधर्म तो दडनीय है, किन्तु पाप कभी-कभी राज्य की ओर से दड-नीय नही भी होता। इस पर भी परमात्मा तो उसको दड देता ही है।

"किसी की हत्या करना तो पाप भी है और अधर्म भी।"

करनल स्टैनले सुरकियाँ लगाकर पी रहा था। वह जब पीने लगा तो फ्लोरा मथुरासिंह से बाते करने लगी। उसने पूछा, 'मिस्टर सिंह! पाप अधिक खराब होता है या अपराध?"

"खराब तो दोनो ही है। अपने-अपने क्षेत्र मे दोनो हानि करते है। परन्तु सब पाप अपराध नही होते और कभी राज्य उन कामो को भी अपराध घोषित कर देता है जो पाप न हो। यह अस्वाभाविक बात समय पर बदलनी पड जाती है।

"उदाहरण के रूप मे अमेरिका मे शराब-बन्दी थी। शराब-घर मे बैठकर अपने पैसे से पीना पाप होते हुए भी अपराध नही। यह किसी दूसरे व्यक्ति को हानि नही पहुँचाती। इसको अपराध घोषित किया गया तो जनता ने इसका विरोध किया।

"एक व्यक्ति झूठ बोलता है। वह कहता है कि उसने परमात्मा देखा है। और इस इतने-मात्र से किसी को हानि नही पहुँचती। इस कारण अपराध तो नही, परन्तु पाप है। यदि इसको भी अपराध मान लिया गया तो लोग आपत्ति करेगे।

"अत कोई कार्य पाप और अपराध दोनो होने से दडनीय हैं, परन्तु अकेला पाप ही होने से सरकार द्वारा दडनीय नही हो सकता।"

इतनी व्याख्या से पाप और अपराध के विषय मे उसके मुख से सुनकर फ्लोरा मथुरासिह की विश्लेषणात्मक प्रतिभा पर चकित रह गई। उसने कहा, "आपका मित्र ठीक ही कहता था कि आप फिलॉसोफर हैं।"

"इस पर भी मै सर्वथा प्रेक्टिकल[1] हूँ। प्रेक्टिकल हम उस व्यक्ति को कहते है, जो निश्चयात्मक बुद्धि और कार्यान्वित बुद्धि रखता है। मेरा मन डिसाइसिव[2] है और मैं अपने विचारो को कार्य मे ला भी सकता हूँ। जो बात कार्य मे परिणत नही की जा सकती, उसकी सच्चाई के विषय मे सन्देह बना रहता है और वह केवल फिलॉसोफी की रील्म[3] में ही रहता है।"

इतने मे बैरे ने आकर भोजन की सूचना दी। वे सब उठकर भोजन करने के कमरे मे चले गये।

भोजन करने बैठे तो बातचीत का विषय बदल गया। करनल स्टैनले ने कहा, "हिन्दुस्तान मे बडे विचित्र लोग है। आज पडित जवाहरलाल ने वार ऐफर्टस[4] मे बाधा डालने के लिए घोषणा की है।"

"हाँ, मैंने भी समाचार-पत्रो मे पढा है।"

"इसके विषय मे तुम क्या समझते हो?"

"मैं हिन्दुस्तान मे हिन्दुस्तानियो का राज्य चाहता हूँ। परन्तु उसके लिए गाधी इत्यादि जिस ढग से कार्य कर रहे है, उसे मै उपयुक्त नहीं समझता।"

"क्यो उसमे क्या कमी है?"

---

१ व्यावसायिक, २ निश्चयात्मक, ३ विचारक्षेत्र, ४. युद्ध-प्रयास।

"यह तो किसी को उसकी कठिनाई मे तग करके उससे अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाली बात है। यह नैतिक दृष्टि से गलत है।"

"किन्तु वे तो कहते है कि व्यक्तिगत सत्याग्रह केवल सिम्बोलिक[1] है। यह सरकार को तग करने के लिए नही। यह तो यह दिखाने के लिए है कि भारत के लोग स्वेच्छा से अग्रेजो की युद्ध मे सहायता नही कर रहे हैं।"

"इतनी-सी बात के लिए इतना बखेडा करने की आवश्यकता नहीं है। केवल समाचार-पत्रो मे घोषणा-मात्र कर देना भी उतना प्रबल सिद्ध होता, जितना कि इस कार्य से होगा। वास्तव मे गाधीजी का यह कहना कि हिन्दुस्तान अग्रेजो की विजय नही चाहता, सर्वथा ठीक नही है। हिन्दुस्तान जानता नही कि वह क्या चाहता है।

"देखिये, मैं आपको अपना विचार बताता हूँ। यो तो जितने भी लोग है, उनके सबके अपने-अपने विचार है। इस पर भी तीन प्रकार के विचार मुख्य है। एक सुभाष बोस और उनके साथियो का विचार। वे तो 'ओपन आर्म्ड रिवोल्ट'[2] चाहते है। दूसरे, गाधीजी है, वे अग्रेज की विजय तो चाहते है, परन्तु उन्हे अग्रेजो पर विश्वास नही कि वे अपना वचन भी पूरा करेंगे अथवा नही। तीसरे है पडित जवाहरलाल के साथी। उनका न तो अग्रेज की जीत-हार से सम्बन्ध है, न गाधीजी के सत्याग्रह से। ये तो रूस की जीत और उसी प्रकार के राज्य मे रुचि रखते है। ये लोग इस समय अति दुर्बल है। इस कारण गाधीजी की हाँ-मे-हाँ मिलाते है। वास्तव मे वे प्रतीक्षा कर रहे है और अवसर मिलते ही कुछ कार्यवाही करने वाले है।

"इन तीनो के अतिरिक्त एक बहुत बडी सख्या मे जनता है जो स्वराज्य तो चाहती है, परन्तु विश्वास और अविश्वास मे भटक रही हैं। वह न तो बोलना जानती है और न सगठित ही है।"

"तो सरकार को क्या समझना चाहिये ?"

१, साकेतिक, २ खुला सशस्त्र विद्रोह।

"सरकार को इस विशाल जनता का विश्वास प्राप्त करना चाहिये। सरकार अल्पसख्यको का विश्वास प्राप्त करने का यत्न करती है। इससे बहुसख्यक जनता सरकार को चालबाज समझती है।"

"परन्तु गाधीजी तो कहते है कि वे बहुसख्या मे हैं।"

"वे बहुसख्या मे नही है। हाँ, यदि सरकार ऐसा समझती है तो फिर उसको उनका विश्वासपात्र बनना चाहिये।"

"तो कौन है बहुसख्या मे ?"

"वे इस देश के हिन्दू विचार के लोग है। सरकार मजहबी विचार से अल्पसख्यक मुसलमानो को सगठित होने मे सहायता देती है। सैक्युलर-विचार से यह मजहब-विहीन अल्पसख्यको को पसन्द करती है। राजनीतिक विचार से सरकार कम्युनिस्टो को, जो अति अल्प सख्या मे हैं, सहायता दे रही है। ये तीनो प्रकार से अल्पसख्यक लोग सरकार को धोखा देने का अवसर देख रहे है। बहुसख्या के लोग स्वराज्य तो चाहते हैं, परन्तु सरकार को मिथ्या पथगामी जान, समझ नही पा रहे कि क्या करे।"

"तो तुम क्या सुझाव देते हो ?"

"मेरे विचार मे सरकार ने १८५८ से जो-जो किया है और पग-पग पर जिस प्रकार यहाँ के लोगो को अधिकार दिये है। इन सबका उल्लेख एक घोषणा द्वारा सरकार करे। वह अपनी घोषणा मे यह भी कहे कि वह मुसलमानो को तथा सैक्युलर विचारो के लोगो को तथा राजनीतिक अल्पसख्यको को प्रोत्साहन देकर भूल करती रही है। वह युद्ध समाप्त होने पर यहाँ धर्म-स्वतन्त्रता स्वीकार करती हुई, इगलैंड-जैसा पूर्ण स्वराज्य यहाँ पर भी दे देगी। वह पूर्णरूप से हिन्दुस्तानी राज्य होगा। भारत के टुकडे नही होगे, किसी के मजहब पर प्रतिबन्ध नही होगा। सबको योग्यता और परिश्रम के अनुसार उन्नति का अवसर मिलेगा।"

करनल स्टैनले समझता था कि सरकार ऐसा नही चाहती। उसने

इगलैंड के राजनीतिज्ञ मिस्टर चर्चिल का वक्तव्य सुनाते हुए कहा, "इगलैंड अपना साम्राज्य छोडना नही चाहता । हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र करने का अर्थ है, साम्राज्य का छिन्न-भिन्न होना । ऐसा वह नही कर सकता ।"

"परन्तु मैं तो कह रहा हूँ कि जो कूटनीति इस समय चली जा रही है, अर्थात् अल्पसख्यको की आड लेकर बहुसख्यको पर शासन करना, अधिक काल तक चल नही सकेगी । गाधी और जवाहर की चले अथवा न चले, यह कूटनीति तो नही चलेगी । यह विफल होगी और परस्पर-मैत्री भी जावेगी । स्पष्ट, सरल और सत्य नीति के अवलम्बन से भारत और इगलैंड की मैत्री बढेगी और इससे इगलैंड को वही लाभ होगा, जो इसको एक उपनिवेश के रूप मे रखने से मिल रहा है ।"

"परन्तु अग्रेज यह समझता है कि हिन्दू, जो इस देश से प्रेम करता है, कभी भी अग्रेज के पक्ष मे नही होगा ।"

"ऐसा इसलिए है कि प्रारम्भ से ही अग्रेजो ने हिन्दुओ को हानि पहुँचाने का कार्य किया है । यहाँ अस्सी प्रतिशत से अधिक हिन्दू हैं । हिन्दुओ को दबाने के लिए अग्रेजो ने सदा मुसलमानो को उभारा है । हिन्दुओ को दुर्बल करने के लिए अग्रेजो ने उनमे परस्पर झगडा उत्पन्न करने का यत्न किया है ।

"एक शक्तिशाली और भली जाति को अपना मित्र बनाने की अपेक्षा अग्रेज ने उनको मित्र बनाया है जिनकी न तो कोई परम्परा है, न इतिहास । जो सदा धोखा और फरेब का व्यवहार करते है । अग्रेज ने यह समझ लिया है कि वह अल्पसख्यको के बल पर बहुसख्यको पर राज्य कर सकेगा ।

"ससार मे ऐसा कभी हो नही पाया । कभी होगा भी नही । और इसका स्वाभाविक परिणाम यह है कि बहुसख्यक अग्रेजो के शत्रु है ।"

"परन्तु अब क्या हो ?"

"मुसलमानो मे अल्पसख्यको के प्रतिनिधि जिन्ना हैं । मुसलमान स्वय देश मे अल्प सख्या मे है । अग्रेज देश की बहुसख्यक जाति को छोड़

इस दावत के अवसर पर स्टैनले-परिवार पर मथुरासिंह का प्रभाव सामान्य रहा। उसके फुटबाल के खेल ने मथुरासिंह को स्टैनले-परिवार कि दृष्टि मे एक नेता के रूप मे उपस्थित किया था। उसके पाप और अपराध की व्याख्या ने उसे एक मीमासक के रूप मे उपस्थित किया था। परन्तु हिन्दुस्तान की राजनीति के विषय मे उसके विचारो से उसको भ्रान्त-मन समझा गया।

फ्लोरा को स्टैनले की इतनी बात से सन्तोष नही हुआ। वह उससे और अधिक बात करना चाहती थी।

खाने के बाद जब मथुरासिंह विदा होने लगा तो फ्लोरा ने कहा, "मैं आपसे मिलकर बहुत खुश हूँ। क्या फिर कभी इस प्रकार मिलने का सुअवसर सुलभ हो सकता है?"

"मेरे लिए आपसे मिलकर बाते करना सदा प्रसन्नता का ही सूचक होगा। मैं नित्य साय पाँच बजे के बाद खाली रहता हूँ।"

"तो कल मिस्टर माइकल के साथ मैं आपको चाय के लिए आमन्त्रित करती हूँ।"

६

अगले दिन प्रात. की परेड के बाद मथुरासिंह के ट्यूटर ने इस्टीट्यूट के उच्चाधिकारी ब्रिगेडियर कोलवेल की एक लिखित आज्ञा उसके हाथ मे दी। उसमे लिखा था, "मिस्टर मथुरासिंह को आज्ञा दी जाती है कि एक आवश्यक विषय पर वार्त्तालाप करने के लिए वह आज मध्याह्नोत्तर ठीक दो बजे स्टाफ-रूम मे उपस्थित हो जावे।"

मथुरासिंह जानता था कि उसे किस बात के लिये बुलाया जा रहा है। परन्तु उसके साथियो ने जब उक्त 'नोट' पढा तो लम्बा-सा मुँह करके उससे पूछने लगे, "क्या तुम्हारा कोर्ट मार्शल हो गया है?"

मथुरासिंह हँस पडा। उसने किसी प्रकार का उत्तर नही दिया। सबसे अधिक चिन्ता माइकल को लग गई थी। जब सब लोग इधर-उधर हुए तो उसने एकान्त पा पूछा, "यह क्या हुआ सिंह!"

"तुमने पढा तो है कि मुझे स्टाफ-रूम मे उपस्थित होने की आज्ञा है।"

"पर क्यो ?"

"इस पर इस विषय मे कुछ लिखा नही है।"

"सभी का यह अनुमान है कि कल रात तुमने अपने साधुपन में फ्लोरा को नाराज कर दिया है।"

"अपनी जानकारी मे तो मैने ऐसी कोई बात नही की। उसने तो आज साय पाँच बजे तुम्हे और मुझे साथ ही, चाय पर आमन्त्रित किया है।"

"सत्य! परन्तु यह क्या है? सिह! मैं सच कहता हूँ कि यदि तुम्हारे साथ कोई गडबड हुई तो मैं भी त्याग-पत्र देकर चला जाऊँगा।"

"परन्तु दोस्त! बीमारी से पहले ही इस प्रकार का हल्ला तो ठीक नही।"

"मेरा दिल डरता है। तुमने या तो राजनीति पर खुलकर बात की है या अनिच्छुक फ्लोरा को बलपूर्वक चूमने का यत्न किया है। दोनो को मैं एक-जैसा ही अपराध मानता हूँ।"

"मेरी समझ से ऐसी एक भी बात नही हुई है।"

"तो एक तीसरी भी बात हो सकती है। फ्लोरा ने तुमसे प्रेम प्रकट किया होगा और तुमने उसका प्रेम ठुकरा दिया होगा।"

हंसते हुए मथुरासिह बोला, "खूब! या तो मैने उसके सम्मान पर आघात किया है या उसने मेरे सम्मान पर। दोनो सर्वथा परस्पर-विरोधी बातो का एक ही परिणाम ?"

"हाँ, ऐसा भी होता देखा गया है।"

"परन्तु मित्र! यह कोर्ट-मार्शल नही है। यदि ऐसा होता तो मुझे इस आज्ञा के साथ आरोप-पत्र भी मिलता।"

इससे माइकल की चिन्ता कुछ कम हुई। इस पर भी पिछले दिन के फुटबाल के मैच का हीरो सबकी चिन्ता का विषय बन गया। और मथुरा-

सिह के लौटकर आने तक यह चिन्ता सबके मन मे बनी रही ।

मध्याह्नोत्तर दो बजे की गोष्ठी मे मथुरासिह को दुनिया के मानचित्र के सामने खडा कर कहा गया कि वह अपने कथन को समझावे कि यूरोप का युद्ध अफ्रीका यौर बलकान मे किस प्रकार जीता जा सकता है ।

मथुरासिह ने सक्षेप मे अपना आशय समझा दिया । हाथ मे 'प्वाइटर' लेकर उसने बताया, "जर्मन और इटली मित्र है । इनके दूसरे दर्जे के मित्र हैं रूस और जापान । इनकी मित्रता सदिग्ध हे । इस पर भी ये मित्र ही समझे जाते है और ये दोनो अग्रेजो के विरुद्ध युद्ध नही कर रहे ।

"मेरी यह योजना केवल वर्तमान स्थिति के लिए ही है ।

"ऐक्सिस शक्तियो मे इटली जर्मन से दुर्बल है । अफ्रीका की ओर फैलने वाले इटली के हाथो को अग्रेजी साम्राज्य काट सकता है ।

"दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैड और हिन्दुस्तान अपनी सुदृढ सेनाएँ मिश्र मे भेज, इटली के इन उपनिवेशो पर आक्रमण कर सकते है । इसके लिए दो लाख सिपाही, दो सहस्र लडाकू जहाज और दो सहस्र टैक चाहिए । इसके अतिरिक्त मरुभूमि पर चल सकने वाली मोटर गाडियाँ भी चाहिए ।

"मिश्र और लीबिया की सीमा पर युद्ध होगा, इस युद्ध की सहायता के लिए भूमध्यसागर का समुद्री बेडा सहायता कर सकता है ।

"यदि आक्रमण तेजी और दृढता से किया जाय तो ऐक्सिस की अजेयता को मिथ्या सिद्ध किया जा सकता है । एक बार ऐसा सिद्ध किया तो हमारे मित्रो की सख्या बढेगी ।

"मुझे विश्वास है कि यह 'ऐक्सिस शक्तियो' का दुर्बलतम स्थान है । और हम इटली के ऐबिसीनिया उपनिवेश को दो मास मे मुक्त करा सकते है । वहाँ से एक बडी मात्रा मे सैन्य-सामग्री प्राप्त हो जावेगी । इससे एक लाभ यह भी होगा कि ऐबिसीनिया के साधन हमको उपलब्ध हो जावेगे ।

"तीन मास मे हम भूमध्यसागर के ट्युनिशिया अथवा ट्रिपोली के सागर पर पहुँच जावेगे । मौराको से डी गाल की सेनाएँ, अलजीरिया

मे बढती हुई हमारी सेनाओ से मिल सकेगी और हम सिसली पर आक्रमण कर देगे ।

"ग्रीस की रक्षा का उत्तरदायित्व हमे अपने पर लेना चाहिए। सिसली पर आक्रमण के साथ ही यूनान के द्वारा रूमानिया बलगारियाँ को जर्मनी से स्वतन्त्र कराने का प्रबन्ध करना चाहिए।

"इन दो आक्रमणो का परिणाम यह होगा कि जर्मन का इगलैंड पर दबाव कम होगा, इगलैंड से जर्मन के औद्योगिक क्षेत्रो पर बमबाजी अधिक उग्रता से हो सकेगी।"

"यदि रूस और जापान पूरे तौर पर शत्रु के पक्ष मे हो गये तो योजना मे अन्तर पड सकता है। इस पर भी मेरा विचार है कि रूस जर्मनी से पूरे तौर पर नही मिलेगा। जापान का जर्मनी से मिलना अधिक सम्भव है। उस अवस्था मे अमेरिका अवश्य मित्र-राष्ट्रो से मिलेगा।

"इस नई परिस्थिति मे भी अफ्रीका का और इटली का युद्ध तो होगा। शेष योजना रूस के मन को जानने के बाद बनाई जा सकती है।"

मथुरासिंह की सक्षिप्त योजना की व्याख्या मे भी एक घटे से अधिक समय लग गया। फिर उससे प्रश्न पूछे जाने लगे।

स्टैनले ने पूछा, "आप यह किस आधार पर कह रहे हैं कि रूस पूरे तौर पर जर्मनी से नही मिलेगा।"

"क्योकि दोनो की विचारधाराये भिन्न है। वे एक-दूसरे का विश्वास नही करते। वे एक-दूसरे के शत्रु है। साथ ही रूस बिना युद्ध के ही अपनी स्थिति सुदृढ करने मे लाभ समझता है।"

"रूस अग्रेजो से क्यो नही मिल सका ?"

"जहाँ तक विचारधारा का सम्बन्ध है, इगलैंड रूस के अधिक समीप था। परन्तु वह जर्मनी से बहुत दुर्बल था। रूस को एक दुर्बल देश की मित्रता मे लाभ प्रतीत नही हुआ।"

"स्वेच्छा से तो रूस जर्मन से लडेगा नही। वह बलवान शत्रु से लडने की इच्छा नही रखता।"

एक अन्य आफिसर ने पूछा, "जापान के युद्ध मे सम्मिलित होने से अमेरिका क्यो युद्ध मे सम्मिलित होगा ?"

"क्योकि दोनो प्रशान्त महासागर के प्रतिद्वन्द्वी है। अभी तक अमेरिका ने युद्ध के विचार से आवश्यक स्थानो पर अधिकार जमा रखा है। यदि जापान ने अपने को सुदृढ करने का यत्न किया तो पमेरिका इसको पसन्द नही करेगा।"

इस व्याख्यान तथा प्रश्नोत्तरो को टेप पर रिकार्ड कर लिया गया था। परिणाम यह हुआ कि इस व्याख्यान की गूँज हिन्दुस्तान के केन्द्रीय सैनिक कार्यालय और फिर इगलैड तक जा पहुंची।

तीन मास के प्रशिक्षण के बाद जब मथुरासिंह की नियुक्ति का प्रश्न उपस्थित हुआ तो उसे चीफ आफ दी स्टाफ के केन्द्रीय कार्यालय मे नियुक्त कर दिया। वह लेफ्टिनेट पद का अधिकारी माना गया।

मथुरासिंह को दिल्ली छावनी मे आये अभी पन्द्रह दिन भी नही हुए थे कि अपनी पत्नी, लडकी तथा लडके के साथ लाला देवीदयाल उससे मिलने के लिए आ पहुँचे।

सैनिक वेश मे मथुरासिंह बहुत ही आकर्षक प्रतीत होता था। टाँगे से उतर राधा ने जब उसे देखा तो मन्त्र-मुग्ध-सी मूर्तिवत् उसे देखती खडी रह गई।

देवीदयाल और मक्खनी तो आगे चले आये। मथुरासिंह अपने बँगले के बरामदे मे उनके स्वागत के लिए खडा था। उसने देखा कि चाचा और चाची तो चले आये है परन्तु राधा वही निश्चल खडी है। एकाएक उसको खयाल आया कि अभ्यागतो का स्वागत करने के लिए उसे ताँगे तक जाना चाहिए था। इससे वह राधा की ओर चला। देवीदयाल ने उसे ताँगे की ओर जाते देखा तो हाथ मे पकडा ट्रक भूमि पर रख दिया।

समीप पहुँच मथुरासिह ने कहा, "राधा! यहाँ खडी क्या कर रही हो? आओ न?"

राधा सचेत हुई और अपने सामने मथुरासिह को खडे देखा तो उसने

उसके चरणो को स्पर्श किया। फिर मुस्कराकर साथ चलते हुए बोली, "आप तो बिलकुल ही बदल गये है।"

"हॉ, कुछ दुबला हो गया हूँ। शरीर की चर्बी ढल गई है।"

"मैं यह नही कह रही। आप बहुत ।" वह कहती-कहती रुक गई। अब तक वे लाला देवीदयाल के समीप पहुँच गये थे। रमणीक ने हाथ जोड नमस्कार किया तो मथुरासिंह ने उसकी पीठ पर हाथ फेर उसे प्यार किया। बोला, "रमण! पढाई कैसी चलती है?"

बात करते हुए सब ड्राइग रूम मे जा पहुँचे। मथुरासिंह कहने लगा, "मैं देख रहा था कि भापा और माताजी क्यो नही आये। वे तो एक मास से लिख रहे थे कि वे आने वाले है।"

"वे हरिद्वार गये है। मुझे वर्धा जाना है। इस कारण मैने सोचा कि मैं तो पहले ही मिल लूँ।"

"पर चाचा! तुम्हारी खद्दर की टोपी कहाँ है?"

"मुझे ऐसा बताया गया था कि किसी खद्दर की टोपीधारी के तुमसे मिलने आने पर तुम्हारे अफसर तुमसे नाराज भी हो सकते है। इस कारण मैंने दिल्ली स्टेशन पर ही खद्दर के कपडे अपने ट्रक मे बन्द करके ये दूसरे कपडे पहन लिये थे।"

"तो चाचा! तुम्हे सरकारी अफसरो की नौकरी की भी चिन्ता रहती है?"

देवीदयाल मुस्करा दिया, वह कुछ बोला नही। उसने न राधा को मथुरासिंह के चरण स्पर्श करते देखा था। इससे उसको किसी प्रकार की परेशानी भी नही हुई। मक्खनी ने उसको राधा के मन की भावना का परिचय दे दिया था। इससे पहले तो वह परेशान हुआ था, परन्तु जब मक्खनी ने उसकी स्वीकृति के बिना भी राधा का विवाह मथुरासिंह से करने की धमकी दी तो वह शान्त हो गया। उसका विचार था कि वह दो-तीन मास गाधी-आश्रम मे रहे और वहाँ जाने से पूर्व वह राधा की सगाई का निश्चय कर जाये।

यो तो मथुरासिंह के दिल्ली आने से पूर्व सूरतसिंह उससे मिलने की इच्छा कर रहा था। परन्तु उनका विचार था कि किसी रेजिमेंट मे जाने से पूर्व वह जमादारपुर मे आयेगा और वे उसको लेकर गगा-स्नान करा-कर ही नौकरी पर भेजेगे। परन्तु एकाएक उनको समाचार मिला कि उसकी नौकरी दिल्ली के सैनिक कार्यालय मे लगी है और उसका 'पद' लेफ्टिनेन्ट का है। साथ ही उन्हे यह भी बताया गया कि उसे घर आने का अवकाश नही मिला, इसलिये वह गाँव नही आ पाया। इस पर उसके माता-पिता अपने पूर्व निश्चयानुसार हरिद्वार चले गये। वहाँ उन्होने अपने लडके की दीर्घायुष्य के लिये यज्ञ का अनुष्ठान रखा हुआ था।

देवीदयाल को वर्धा मे जाकर रहने की स्वीकृति मिली और वह वहाँ जाने के लिये तैयार होने लगा तो मक्खनी ने कहा कि दो दिन दिल्ली चलकर मथुरासिंह से मिलेगे। इस कारण वे भी साथ ही चल दिये। देवीदयाल ने मथुरासिंह को तार भेज दिया था। मथुरासिंह का विचार था कि उसके माता-पिता आ रहे होगे और देवीदयाल तो वैसे ही उनके साथ आ रहा होगा।

देवीदयाल को बिना अपने माता-पिता के आया देख, मथुरासिंह को विस्मय हुआ। परन्तु राधा के अपने माता-पिता के सामने ही उसके चरण-स्पर्श करने से उसके आश्चर्य की सीमा नही रही।

इस पर भी उसने प्रथम प्रश्न खद्दर के वस्त्रो के विषय मे किया और देवीदयाल का उत्तर सुन, उसकी हँसी निकल गई। उसने कहा, ' तो चाचा को मेरी नौकरी की चिन्ता है ?''

राधा और उसकी माँ मथुरासिह का बँगला देखने के लिए भीतर चली गई थी। देवीदयाल ने मुस्कराते हुए कहा, ''देखो बेटा ! अब मैं तुमको अपने पुत्र के समान ही मानता हूँ। इसलिए मुझे तुम्हारा हित प्रिय है।''

''इससे पूर्व मैं तुम्हे बेटा-जैसा नही दिखाई देता था क्या ? अब तक क्या मैं यो ही तुम्हे चाचा कहता रहा हूँ ?''

"तब तो मैं रस्मी तौर पर चाचा था, अब मैं वास्तव मे चाचा हूं। समझे हो न ? क्या राधा की चरण-वदना तुमने स्वीकार नही की ? मैं सब देख रहा था।"

"तो चाचा ! तुम आशीर्वाद देत हो न ?"

"बिलकुल। मैने भापा और भाभी से पूछ लिया है, दोनो राजी है।"

"परन्तु मुझसे तो पूछा ही नही ?"

"उसकी तुमने अभी तांगे के समीप स्वय ही घोषणा कर दी है कि तुम जमादारपुर गाँव के निवासी लाला देवीदयाल के जामाता हो।"

"लेकिन चाचा मेरा तो यह कहना है कि युद्ध समाप्त होने से पूर्व मैं विवाह नही करूँगा।"

"यह तुम राधा से बात करना। तुम मेरे दामाद हो ? राधा को तुम कब अपने घर ले जाओगे यह तुम दोनो के निर्णय करने की बात है।"

"तो ठीक है। मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है कि चाचा एक स्वतत्र व्यक्ति की भाँति विचार किया करते है।"

मक्खनी और राधा बँगला देखकर आई तो मक्खनी बोली, "अच्छी साफ-सुथरी और पक्की कोठी है।"

"हाँ, चाची ! पर नौकरी ऐसी है कि मुझे कभी भी युद्ध-भूमि पर भेजा जा सकता है। इस कारण मेरे सामान मे से यहाँ पर केवल ट्रक और एक बिस्तरा ही है। शेष सब तो सरकारी सामान है।"

"तो यह धर्मशाला है ?"

"हाँ, चाची ! मैं अपनी यात्रा मे जाते हुए कुछ दिन यहाँ पर रह रहा हूँ।"

"अच्छा देखो, तुम्हारे चाचा तो कल प्रात काल चले जायेगे। मैं और राधा यहाँ दो-तीन दिन ठहरेगे। तब तक तुम्हारी माँ और भापा-जी आ जायेगे और हम उनके साथ ही गाँव को लौट जायेगे।"

"चाची ! यह तो बहुत प्रसन्नता की बात है। अभी भोजन करो, आराम करो और फिर मैं आपको दिल्ली की सैर कराने के लिए ले चलूँगा।"

"दिल्ली की सैर तो हम भापा और बहन भगवती के आने पर उनके साथ ही करेंगे।"

"और चाचा ?"

"वे तो बीसियों बार दिल्ली देख चुके हैं।"

मथुरासिंह के कार्यालय के साथी उससे मिलने के लिए आये और वहाँ उसके गाँव वालों को बैठा देख उससे उनका परिचय प्राप्त करने लगे। उसने बताया कि ये उसके गाँव के महाजन लाला देवीदयाल हैं, उसके परिवार पर उनकी बड़ी कृपा रहती है। मथुरासिंह के साथियों ने समझा कि उसके परिवार को ये लालाजी आवश्यकता के अवसर पर रुपया उधार देते होंगे। खूब अच्छा ब्याज लेते होंगे और कदाचित् आज भी वे किसी प्रकार के लेन-देन की बात करने के लिए आये होंगे। इस कारण उनकी दृष्टि में देवीदयाल एक अति तुच्छ जीव ही था।

इस पर भी सभ्यता के नाते वे देवीदयाल से मिले और उसकी बातें सुनते रहे। देवीदयाल उनको अपने जमादारपुर में साधारण स्थिति में आकर रहने से लखपति बनने तक की कथा सुनाने लगा। इस कथा से तो मथुरासिंह के साथी और भी स्पष्ट रूप से लाला को गरीबों का रक्त चूसने वाला समझने लगे।

इस प्रकार वे मथुरासिंह को मकड़ी के जाले में फँसी हुई मक्खी समझकर उससे सहानुभूति रखने लगे। सहसा उठते हुए उनमें से एक व्यक्ति ने कहा, "सिंह ! आज टैनिस खेलने के लिए नहीं चलोगे ?"

"टैनिस का क्या खेलना ? फुटबाल खेलने चलना हो तो चलूँ।"

आफिसर लोग फुटबाल को गँवारों का खेल समझकर खेला नहीं करते थे। सिंह के साथी कौल ने उसकी बाँह-में-बाँह डालते हुए उसको अपने साथ घसीटकर कहा, "इन देहातियों को यहाँ देख तुम्हें भी देहा-

तियो के खेल का स्मरण हो आया है क्या ?"

"जब कोई शहरी अपनी शारीरिक दुर्बलता के कारण कोई काम न कर सके तो उसको गँवारू काम कहकर उसकी हँसी उडाने का यत्न करता है।"

"सत्य ?"

"मिस्टर कौल ! इसकी परीक्षा हो सकती है। मै टैनिस खेलता हूँ और तुम आधा घटा फुटबॉल खेलकर देखो। फुटबॉल खेलने वाला तो टैनिस खेल लेगा किन्तु टैनिस खेलने वाला फुटबॉल नही खेल सकता।"

कौल इस कथन की सत्यता समझता था। वह यह भी जानता था कि मथुरासिह तो दोनो खेलो को बडी योग्यता से खेल सकता है। इतने मे उसका एक साथी भीतर जाकर उसका टैनिस का बल्ला उठा लाया। सब क्लब की ओर चल पडे। मार्ग मे कौल ने अपने मन की बात बताते हुए कहा, "मिस्टर सिंह ! लाला देवीदयाल तुम्हारे सम्बन्धी है कोई ?"

"हाँ, ये लालाजी पिताजी के घनिष्ठ मित्रो मे से है।"

"मै तो समझा था कि कोई सूदखोर महाजन होगा।"

"सूदखोर भी हो सकते है, मुझे पता नही है। हमको कभी रुपया लेने की आवश्यकता नही पडी। पिताजी की आय सदा इतनी रही है कि वे मेरा कॉलेज का बोझा सुगमता से सहन कर सकते थे।"

"परन्तु इस लाला की पत्नी तो खूब भूषणो से लदी हुई है। इतनी सम्पत्ति देहात मे तो ईमानदारी से एकत्रित नही हो सकती।"

"यह प्रश्न यदि लाला के सम्मुख कर देते तो मैं उन्हे अपनी जीवन-कथा सुनाने के लिए कह देता।"

"तो क्या वे सब सत्य बता देते ?"

"हाँ, वे हमारे परिवार के सम्मुख झूठ नही बोल सकते। पिताजी उनकी सब बाते जानते है।"

१०

देवीदयाल तो अगले दिन बम्बई के लिए रवाना हो गया। बम्बई से

हैदराबाद और वहाँ से वर्धा जाने का विचार था। उसके परिवार के शेष सब व्यक्ति मथुरासिंह के पास रह गए। वे लोग दिन को कोठी पर रहते थे और मथुरासिंह अपने कार्यालय मे चला जाता था। वह छावनी से सरकारी जीप मे अपने कार्यालय जाता-आता था।

मथुरासिंह के 'मिलिटरी स्ट्रैटेजी' के अध्यापक करनल स्टैनले को हाई कमाण्डर ने दिल्ली बुलाया। पिछले दिन लन्दन से हिन्दुस्तान के कमाण्डर-इन-चीफ का तार आया था और उसके अनुसार स्टैनले को जबलपुर से दिल्ली बुलाया गया था। प्रात काल के हवाई जहाज से वह दिल्ली जा पहुँचा था। स्टैनले को विदित नही था कि उसे किस कारण बुलाया गया है।

मथुरासिंह कार्यालय मे पहुँचा ही था कि कमाण्डर-इन-चीफ ने उसको बुला लिया। वहाँ पहुँच, मथुरासिंह ने कमाण्डर-इन-चीफ को सैल्यूट किया तो उसे बैठने का सकेत मिल गया। स्टैनले भी वहाँ पर उपस्थित था।

कमाण्डर-इन-चीफ ने उनको बुलाने मे कारण बताते हुए कहा, "पिछले महीने जबलपुर मे रिकार्ड किया मथुरासिंह का व्याख्यान हमको यहाँ मिला। मैने वह चीफ ऑफ दी स्टॉफ को सुनाया था। एक के अतिरिक्त जिसका कि मैं परिचय नही देना चाहता, सबने उसको 'हौर्स इन द एयर'[1] समझा था। हम मिस्टर स्टैनले का वह आग्रह कि अपने कमेन्ट्स के साथ उस व्याख्यान को लन्दन भेज दे, स्वीकार न करते, यदि वही सदस्य उसके भेजे जाने का हठ न करते।

"रिकार्ड को वहाँ भेजे जाने के पाँच दिन बाद हमे केबल मिला है कि मिस्टर सिंह को दिल्ली के केन्द्रीय कार्यालय मे रखा जाये। उसकी किसी समय भी आवश्यकता पड सकती है। अत हमने सिंह की नियुक्ति दिल्ली मे कर दी।

"कल हमे एक और केबल मिला है कि मिस्टर स्टैनले और मिस्टर सिंह को हिन्दुस्तान से बाहर जाने की तैयारी की आज्ञा दी जाये। लन्दन

---

१ हवाई घोडा।

से डिस्पैच चल पडा है और हमे आशा है कि तीन-चार दिन मे यहाँ पहुँच जायेगा। तदनुसार आप दोनो को जाना होगा।"

मथुरासिंह कल्पना करने लगा था कि क्या आज्ञा हो सकती है। स्टैनले ने तुरन्त कह दिया, "सर! मैं समझता हूँ कि मिस्टर सिंह की योजना को कार्यान्वित करने योग्य समझा गया है।"

"मुझे बहुत दु ख है।" कमाण्डर इन-चीफ ने कहा, "यदि लन्दन वालो की व्यावहारिक बुद्धि होती तो हमको इस पराजय का मुख नहीं देखना पडता।"

मथुरासिंह समझ रहा था कि दिल्ली के अधिकारियो को उसकी योजना स्वीकार्य नही थी। इस पर भी उसको अपनी योजना पर विश्वास था। आज उसकी समझ मे यह बात आ गयी कि उस सर्वथा अनुभवहीन नवीन लेफ्टिनेन्ट को चीफ ऑफ दि स्टॉफ के समीप क्यो रखा गया है? पिछले पन्द्रह दिन मे उससे किसी प्रकार का काम नही लिया गया था। आज उसको इसका रहस्य विदित हुआ कि उसको तो लन्दन के चीफ ऑफ दि आर्मी स्टॉफ की आज्ञा के आधार पर दिल्ली रखा गया है। वास्तव मे दिल्ली कार्यालय वाले तो उसको इस अधिमान के योग्य नही समझते थे।

कमाण्डर-इन-चीफ ने दोनो को आज्ञा सुना दी। उसने कहा, "आप लोग दुनिया के किसी भी कोने मे जाने के लिए तैयार रहिए। इतना कह उनको जाने का सकेत देने के लिए उसने उठकर हाथ बढाया। स्टैनले ने हाथ मिलाया। कमाण्डर ने मथुरासिंह से हाथ नही मिलाया। मथुरासिंह ने सैल्यूट किया और बाहर चला आया। मथुरासिंह ने पूछा, "आप कब पहुँचे है?"

"कल रात आठ बजे मुझे सूचना मिली थी कि मुझे तुरन्त दिल्ली पहुँचना चाहिए। सुबह चार बजे एक हवाई जहाज आ रहा था, मैं उसमें बैठकर चला आया। मुझे सन्देह हो रहा था कि कदाचित् इगलैड जाना पडेगा। अत मैंने अपनी पत्नी और लडकी को तुरन्त दिल्ली के लिए

रवाना कर दिया है। वे भी आज सायकाल मेल ट्रेन से यहाँ पहुँच जायेगे।"

"कहाँ ठहरने का विचार है।"

"अभी तक तो मेरा 'किट' बाहर के वेटिंग-रूम मे रखा हुआ है। यहाँ पहुँचते ही मैने 'एस्टेबलिशमेट' वालो को कहा है कि मेरे लिए किसी होटल मे दो रूम के सैट का प्रबन्ध कर दे। आशा है अब तक प्रबन्ध हो गया होगा।"

"मै आपको अपने बँगले मे चलने के लिए कहता, परन्तु गॉव से मेरे कुछ सम्बन्धी आये हुए है। इस कारण बँगले मे भारी भीड-भाड लगी हुई है।"

"मैं समझता हूँ कि किसी होटल मे स्थान मिल ही जायेगा और मुझे वहाँ सुविधा भी अधिक रहेगी। इस पर भी मिस स्टैलने तुमसे मिलने के लिए उत्सुक प्रतीत होती है।"

'हम उनके स्वागत के लिए शाम को स्टेशन पर एक साथ ही चलेगे।"

"यह तुम्हारे लिए ठीक ही होगा। परन्तु सिंह! यह कमाण्डर तो उजड्ड प्रतीत होता है। उसको इगलैंड के अधिकारियो की शान मे वह कुछ कहना नही चाहिए था, जो उसने कहा है।"

मथुरासिह इसमे अपनी सम्मति नही देना चाहता था, पुन वह चुप ही रहा। उसे चुप देख स्टैनले ने कहा, "मैं समझता हूँ कि हिन्दुस्तान के सैनिक अधिकारी स्वय गधे है। यदि इनमे कुछ भी बुद्धि होती तो हिन्दुस्तान की यह हालत न होती, जो आज है।"

"मुझे तुम्हारी वह बात ठीक प्रतीत हुई है कि हम हिन्दुस्तान के नेताओ के साथ बातचीत करते है। हम गलत 'इटरैस्ट'[1] के साथ समझौता कर रहे है।"

आखिर मे मथुरासिह को मुख खोलना ही पडा। उसने कहा, "ठीक

१ हितो।

साथी तो तभी मिलते है, जब अपना व्यवहार उचित दिशा मे हो। यदि अग्रेज यहाँ की सैनिक श्रेणियो को एकत्रित कर उनको हिन्दुस्तान के नेता मान, अपना व्यवहार निश्चय करते तो स्वराज्य तो जल्दी देना पडता, परन्तु हिन्दुस्तान की स्वराज्य सरकार सदा अग्रेजो की सहायक रहती।

"मेरे पिताजी कहा करते है कि अग्रेज़ी पार्लियामेट मे वकीलो का जोर है। इस प्रकार वे हिन्दुस्तान के वकीलो से ही बातचीत और सौदा करना चाहते हैं। दोनो देशो के वकील एक-दूसरे को धोखा दे अपना काम निकालना चाहते है और दोनो ही असफल हो रहे है। इस धोखा-देही को सभ्य भाषा मे 'डिप्लोमैसी' का नाम दिया जाता है।

"यदि दोनो कौमो की बातचीत सैनिको द्वारा हो तो उसमे डिप्लो-मैसी कम होगी और वह स्थायी होगी।"

स्टैनले मुस्कराता रहा। वह मन मे विचार कर रहा था कि राज्य-कार्य मे डिप्लोमैटिक व्यवहार एक आवश्यक वस्तु मानी जाती है। सत्य ही इसका अभिप्राय स्पष्टवादिता नही, अपितु छल, फरेब है।

मथुरासिंह स्टैनले को अपने घर ले गया। तब तक देवीदयाल बम्बई जा चुका था और उस दिन मक्खनी रमणीक को लेकर घूमने गई हुई थीं। राधा भी साथ जाती, किन्तु घर को अकेला छोडना ठीक न समझ, वह नही गई। यह सोचा गया था कि मथुरासिह तो चार बजे से पहले आयेगा नही और मक्खनी एक घटे तक लौट आयेगी। राधा अब भली-भाँति हिन्दी पढने लगी थी और एक पुस्तक जो वह स्टेशन पर से खरीदकर लाई थी, बैठी पढ रही थी।

अत वह मथुरासिह को किसी अग्रेज के साथ आया देख, विस्मय मे मुख देखती रह गई। मथुरासिंह ने कहा, "राधा! चाची कहाँ है?"

"वे रमणीक के साथ जरा आस-पास की बस्ती देखने के लिये गई हैं।"

"तुम साथ क्यो नही गईं?"

"माँ कहती थी कि नौकरो के हवाले घर छोडना ठीक नही।"

"परन्तु, मैं तो नित्य ही उसके हवाले छोडकर जाया करता था ?"

"हमे यह विदित नही था।"

"अच्छा, तुम भीतर बैठो। ये मेरे अध्यापक है। जबलपुर मे मैं इनसे पढता था।"

राधा पिछले कमरे मे चली गई। मथुरासिंह ने घंटी बजाई और बैरा आया तो उसको चाय बनाकर लाने के लिए कह दिया। स्टैनले ने बैठते हुए कहा, यह लडकी तुम्हारी क्या लगती है ?"

"यह मेरी रिश्तेदार है।"

"बहुत सुन्दर है।"

"सत्य ?"

"हाँ, यदि मैं युवा होता तो इससे विवाह करने का यत्न करता।"

"परन्तु यह अग्रेजी का तो एक अक्षर भी नही जानती।"

"क्यो, इसकी किसी स्कूल मे शिक्षा नही हुई।"

"हमारे गाँव मे कोई स्कूल नही है, मैं भी तो गाँव के बाहर ही जाकर पढा हूँ।"

"परन्तु अभी यह कोई पुस्तक तो पढ रही थी ?"

"वह तो हमारी अपनी भाषा की पुस्तक थी। यह भाषा इसने अपने भाई और मेरी माँ से सीखी है।"

"फिर भी यदि मेरे वश की बात होती तो मैं इसका अपहरण कर लेता।"

"ओह! परन्तु उसकी इच्छा से अथवा बलपूर्वक ?"

"ऑफ कोर्स! उसकी इच्छा से।"

"तब तो वह आपके साथ भागना कभी स्वीकार नही करती।"

"मैं युवा होता तब भी नही ?"

'हाँ, तब भी नही।"

"मगर लोग कहते है कि मै तो खूबसूरत व्यक्तियो मे से हूँ ?"

"मैं जानता हूँ कि वह आपसे सुन्दर युवक से प्रेम करती है।"

"'एण्ड हू इज दैट डैविल'[1] ?"

"एक व्यक्ति हमारे ही गाँव का रहने वाला है।"

"'आई एम सौरी फार दि गर्ल'। मुझे विश्वास है कि वह मुझ-जितना धनी नही हो सकता। मैं एक जागीर का मालिक हूँ। हमारे मेन्शन मे बीस तो लिविंग-रूम है। इस समय भी मेरी आय पचास हजार पौंड प्रतिवर्ष है।"

"परन्तु करनल! उस बात को कहने से लाभ ही क्या जो असम्भव हो। आप युवा नही। आपकी शादी हो चुकी है, आपकी पत्नी भी सुन्दर है। आपकी एक कन्या है। इसलिये आपको तो अब नये विवाह का विचार भी मन मे नही लाना चाहिये।"

"'एनी वे,' मै समझता हूँ कि तुमको अफ्रीका चलने के लिए तैयार रहना चाहिये।"

"मैं दुनिया के दूसरे छोर तक जाने के लिये तैयार हूँ।"

"मैं समझता हूँ कि मेरा जब तक कही निश्चय नही हो जाता, मै पत्नी और लडकी को यहाँ छोड जाना चाहता हूँ। यदि तुम्हारे पीछे यह मकान खाली रहता है, तो मेरी पत्नी और लडकी यहाँ रह सकती है क्या ?"

"हम कल पता करेगे। कदाचित् मेरी नियुक्ति दिल्ली मे ही रहेगी। और हमारा मिशन पूर्ण हो जाने के बाद मै यही लौटूँगा। इस प्रकार यदि यह बँगला मुझसे छीना न गया तो आपकी पत्नी और पुत्री यहाँ रह सकती है।"

"ठीक है, मै इसमे तुम्हारी सहायता कर दूँगा।"

वे अभी चाय पी रहे थे कि मक्खनी और रमणीक लौट आये। किसी गोरे व्यक्ति को वहाँ बैठा देख, दोनो सीधे भीतर चले गये। स्टैनले ने चाय पी और फोन करके टैक्सी मँगवाई। मथुरासिंह के साथ अपना सामान उठा, वह मैरीना होटल मे चला गया। उसके लिये वही कमरो

१ कौन है वह शैतान ?

का प्रबन्ध किया गया था। कुछ देर आराम कर, वे नई दिल्ली स्टेशन पर जा पहुँचे।

गाड़ी आने पर मिसेज़ एण्ड मिस स्टैनले को लेकर वे पुन होटल मे आ गये। रात चारो ने साथ ही खाना खाया और जब मथुरासिंह अपनी कोठी पर वापस जाने के लिये नीचे उतरा तो मिस स्टैनले उसके साथ नीचे आई। चलते-चलते उसने पूछा, "आप फ्रन्ट पर जा रहे है ?"

"अभी कुछ पता नही। मुझे तथा तुम्हारे पिताजी को आज्ञा हुई है कि हमे हिन्दुस्तान से बाहर जाने के लिए तैयार रहना चाहिये।"

"मैं समझती हूँ कि पापा तो लन्दन जायेगे और आप किसी फ्रन्ट पर।"

"परन्तु अभी तो कही फ्रन्ट बना नही ?"

"यदि आप भी इगलैंड गए तो मै आपके साथ जाऊँगी। और यदि आप कही अन्यत्र गए तो मैं हिन्दुस्तान मे ही आपकी प्रतीक्षा करूँगी।"

"किसलिये ?"

फ्लोरा ने इसका उत्तर नही दिया। वह चुपचाप सीढियाँ उतरती रही। मथुरासिंह ने बात बदलकर कहा, "मैने तुम्हारे पापा और मम्मी को कल का लच अपने घर पर लेने का निमन्त्रण दिया है। मेरी इच्छा है कि तुम भी आओ। वहाँ मेरे कुछ सम्बन्धी आये हुए है, मै तुमको उनसे मिलाऊँगा।"

"मैं आऊँगी।"

"थैंक यू। फ्लोरा ! तुम अपने पापा के साथ इगलैंड चली जाना। हिन्दुस्तान का जलवायु स्कॉटलैंड के जलवायु की भाँति अच्छा नही हो सकता।"

"मेरा भाई जौन हवाई सेना मे पायलॉट है। आजकल पायलॉट भारी सख्या मे मारे जा रहे है।"

"हम सभी ईश्वर की दया पर आश्रित है।"

"मैं समझती हूँ कि पापा आपको अपनी ऐस्टेट पर देखकर बहुत

प्रसन्न होगे।"

"मिस्टर स्टैनले की मुझ पर बडी कृपा है। युद्ध के बाद यदि आपका निमन्त्रण आया तो मै अवश्य आऊँगा।"

मथुरासिह अपने बँगले मे पहुँचा तो अपने माता-पिता को आया देख, बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उनके चरण-स्पर्श किये और माता-पिता ने उसे आशीर्वाद दिया।

मथुरासिह ने अपनी स्थिति के विषय मे बताया, "मै किसी भी क्षण देश से बाहर जाने की आज्ञा की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। आप आ गये यह बहुत ही अच्छा हुआ। मुझे तो यहाँ एक सप्ताह की भी छुट्टी नही मिली।"

उसकी माँ बोली, "हमे तो राधा और मक्खनी को यहाँ बँगले मे बैठे देखकर विस्मय हुआ है।"

"हाँ, ये लोग कल चाचा के साथ एकाएक आ पहुँचे थे।"

फिर गाँव तथा अन्यान्य विषयो पर परस्पर बाते होती रही।

तृतीय परिच्छेद

काहिरा के अग्रेजी सैनिक-शिविर मे एक कमरे मे लगभग पन्द्रह सैनिक अधिकारी बैठे थे। मथुरासिह उनके सम्मुख अपनी योजना बता रहा था। उसके पीछे दीवार पर उत्तरी अफरीका का मान-चित्र टँगा था।

मथुरासिह को सुनने वाले ईस्टर्न कमाण्ड के कमाण्डर-इन-चीफ और चीफ ऑफ दि स्टॉफ थे। साथ ही उसमे भूमध्यसागर के एडमिरल और पूर्वी हवाई सेना के चीफ भी थे।

मथुरासिह कह रहा था, "जब तक शस्त्रास्त्रो से सज्जित रूस हिटलर की पीठ पर खडा है, हिटलर सुख का साँस नही ले सकता। यह मेरा निश्चित मत है। उसने उसे इगलैड का भय दिखाकर और आधे पोलैड, लिथूनियाँ, लैटबिया, इस्टोनिया और फिनलैड-रूपी भेट तश्तरी मे प्रस्तुत कर, शान्त रखने का यत्न किया है। परन्तु वह जानता है कि न तो रूस इससे सन्तुष्ट रहेगा और न ही वह जर्मनी की पश्चिम मे प्रगति देख, निश्चित रह सकेगा। इस कारण मेरा मत है कि हिटलर ने सत्य हृदय से जुलाई मास मे अग्रेजो के साथ सधि कर लेने का यत्न किया था।

' इगलैड को हिटलर पर विश्वास नही है। साथ ही इगलैड, योरुप के महाद्वीप पर एक ही बडी शक्ति के होने को, अपनी सुरक्षा के लिए ठीक नही समझता। अत उनको हिटलर अथवा योरुप की किसी भी एक महान् शक्ति से स्थायी सधि नही हो सकती।

"इगलैड की इस राजनीतिक मनोवृत्ति को सफल बनाने के लिए हम सैनिक क्या कर सकते है, यह एक प्रश्न है।

"इसमे मैं हिटलर मुसोलिनी सयोग को तोडना प्रथम कर्तव्य सम-

झता हूँ । दोनो मे मुसोलिनी दुर्बल है । उसकी दुर्बलता है उसकी औद्योगिक शक्ति का सर्वथा स्वतन्त्र न होना । १९१४ और १९३९ मे अन्तर यह पड गया है कि जहाँ १९१४ मे सेना का दस प्रतिशत यन्त्रसज्जित (मैकेनाइज्ड) था, वहाँ अब १९३९ मे वह पचानवे प्रतिशत हो गया है। इस यन्त्रीकरण का प्राण है पैट्रोल। और मुसोलिनी इस विषय पर निर्भर करता है रूमानिया और बलगेरिया पर । ऐबिसीनिया मे तेल की खोज मे उतनी सफलता नही मिली, जिससे कि वर्तमान युग की यन्त्र-सुसज्जित सेना को चालू रखा जा सके ।

"अत इसके लिए मेरी दो योजनाएँ है । ऐबिसीनिया के अन्नादि से इटली को वचित कर, वहाँ के नागरिको को भूखे मार, अपने नेता की नीति के औचित्य पर विचार करने के लिए उनको विवश करना ।

"इस कार्य के लिए हमको इटली और ऐबिसीनिया का सम्बन्ध-विच्छेद करना होगा । यह मिश्र मे से लीबिया पर आक्रमण करने से हो सकता है ।

"मिस्र मे आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैड, हिन्दुस्तान और कुछ सीमा तक केनाडा और दक्षिण अफरीका से सेना पहुंचाई जा सकती है। सैनिक उपकरण बिना किसी प्रकार की बाधा के अमेरिका से प्रशान्त तथा हिन्द-महासागर से यहाँ आ सकता है। यदि इसके लिए यत्न किया जाय तो दो मास मे हम यहाँ दो लाख सेना एकत्रित कर सकते है और नवम्बर दिसम्बर तक आक्रमण भी आरम्भ कर सकते है। मरुभूमि और वहाँ की जल-वायु हमारे कार्य मे बाधक हो सकती है, परन्तु इस क्षेत्र मे शत्रु की दुर्बलता हमारे लिए बहुत सहायक होगी । इस क्षेत्र मे शत्रु को प्रबल होने से रोकने के लिए हमको भूमध्यसागर से समुद्री बेडे को सजग और सतर्क करना चाहिए ।

"मेरा विचार है कि मुसोलिनी यूनान मे परास्त हो चुका है। इससे यह स्पष्ट है कि मुसोलिनी शत्रु का दुर्बल अग है । कदाचित् योरुप मे उसकी प्रगति को रोकने के लिए हिटलर उसकी सहायता करना नही चाहता।

"इस योजना से हमे यह लाभ होगा कि हम योरुप मे घुसने के लिए एक ऐसा द्वार पा जायेगे जो हम फ्रास के किनारे पर नही पा सके। नार्वे मे हम अपने पाँव नही जमा सके। फ्रास से हमको वापस आना पडा है। परन्तु मुझको विश्वास है कि सिसली मे हम पाँव जमा लेगे, साथ ही वहाँ से डनक्रिक की भाँति धकेले नही जा सकेंगे।

"इस विजय से इगलैंड के काम मे वृद्धि होगी। हमको नये मित्र मिलेगे। योरुप मे जर्मनी का सामना करने के लिए हमे एक नया मोर्चा मिल जायेगा। तब हम पुन फ्रास मे अपनी सेनाएँ ले जा सकेगे।"

इस व्याख्यान के बाद सामान्य वाद-विवाद हुआ। छ घटे की इस बैठक के बाद दो घटे आराम कर पुन तीन घटे की बैठक हुई, जिसमे उस सब सामग्री की सूची तैयार की गई, जिसकी उपलब्धि पर यह समर आरम्भ किया जा सकता था।

सिगापुर से ब्रिटिश सेना के कमाण्डर-इन-चीफ जनरल वेवल भी इस कान्फरेंस मे सम्मिलित था। इगलैंड से मिस्टर ईडन उपस्थित था।

एक दिन हवाई जहाज मे बैठाकर मथुरासिंह को काहिरा पहुँचा दिया गया था। मिस्टर स्टैनले को लदन बुला लिया गया था और वह भी अपने परिवार के साथ उसी हवाई जहाज़ मे सवार हुआ, जिसमे मथुरासिंह अपनी यात्रा कर रहा था।

मथुरासिह को जब जाने की आज्ञा मिली तो उसके माता-पिता अभी उसके पास ही ठहरे हुए थे। मक्खनी, राधा और रमणीक भी गये नही थे।

जाते हुए सूरतसिंह ने कहा, "क्या हम तुमको छोडने के लिए हवाई-अड्डे पर नही आ सकते ?"

"आप लोग आ सकते हैं। आइए।"

वह उन सबको अपनी सैनिक जीप मे बैठाकर पालम हवाई अड्डे पर ले गया। स्टैनले-परिवार भी वहाँ खडा था। जिस दिन स्टैनले-परिवार मथुरासिंह के लिए मध्याह्न भोजन के लिए आया था, उस दिन के

फ्लोरा के हाव देखकर राधा समझ गई थी कि उसके मथुरासिंह के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। अपने सन्देह को निराधार समझ वह चुप रही थी। आज जब फ्लोरा ने मथुरासिंह को जीप मे से उतरते देखा तो लपककर उसके पास जा, उसकी बाँह-मे-बाँह डाल, उसे एक ओर ले गई।

उसने कहा, "मुझे यहाँ आकर विदित हुआ है कि आप भी इसी हवाई जहाज़ से यात्रा कर रहे है।"

"सच ! तब तो आनन्द की बात है। दो दिन की यात्रा हँसी हँसी में कट जायेगी।"

"मै अपने मन मे यह इच्छा कर रही हूँ कि आप लन्दन मे आइये ?"

"यह तो अधिकारियो की इच्छा पर निर्भर है।'

"मै चाहती हूँ कि ।"

"क्या ?"

"यही कि आप वहाँ आइए।"

'फ्लोरा ! मै सरकारी मुलाज़िम हूँ। सरकार की आवश्यकताओ पर ही मेरा आना-जाना निर्भर है।"

"फिर भी मैं चाहती हूँ ।"

"क्यो चाहती है आप ?"

"आप वहाँ आयेगे तो बताऊँगी।"

"अच्छा, अब मुझे अपना सामान जहाज़ मे रखवा लेने दो।"

"आपका किट पापा ले गए है।"

मथुरासिंह काउटर पर गया और उसने अपने काहिरा जाने की आज्ञा दिखाई तो उसका भार तोला गया और उसके हस्ताक्षर इत्यादि करवा लिये गए। उसके किट पर उसका नाम नम्बर आदि लिखकर चिपका दिया गया।

इसी समय घटी बजी और वह अपने माता-पिता आदि से विदा लेने के लिए आया और माता-पिता के चरण स्पर्श करने लगा। माँ ने पीठ पर हाथ फेर आशीर्वाद दिया। पिता ने पीठ थपथपाकर कहा, "मान

और सम्मान-सहित शीघ्र लौटकर आना।"

मक्खनी को नमस्कार कर, जब वह राधा की ओर मुडा तो उसकी आँखो मे जल छलकता देख पूछने लगा, "क्या बात है राधा ?"

राधा ने तुरन्त आँखे पोछ ली और मुस्कराते हुए बोली, "वह लडकी आपके साथ ही जा रही है ?"

"हाँ, क्यो ?"

मथुरासिह का उत्तर सुन, राधा मुख देखती रह गई। मथुरासिह को कुछ सदेह हुआ तो उसने पूछा, "क्यो, तुम्हे ईर्ष्या होती है क्या ?"

उसके सिर ने इस बात से इनकार किया किन्तु, आँखो ने उसके विपरीत बात बताई। उसके अविरल आँसू बह रहे थे। मथुरासिह ने हाथ जोड नमस्कार करते हुए कहा "राधा! व्यर्थ मे रो-रोकर आँखे खराब कर रही हो ? वह लडकी मेरी कुछ भी नही लगती।"

'मैं यह नही कह रही "

"तो रो क्यो रही हो ?'

"कुछ नही, यो ही। अब आप हिन्दी मे पत्र लिखेगे तो मैं पढ सकूँगी।"

इससे अधिक बात करने के लिए अवकाश नही था। जहाज़ की सीढियो मे चढते हुए मथुरासिह ने एक बार पीछे मुडकर जगले के साथ खडे अपने सम्बन्धियो की ओर देखा, हाथ हिला उनको विदा का सकेत किया। उन्होने ने भी उसके उत्तर मे सकेत किया।

हवाई जहाज पालम से कराची, बगदाद और इराक होता हुआ तीसरे दिन काहिरा पहुँचा। काहिरा के हवाई अड्डे पर जब वह स्टैनले-परिवार से विदा ले रहा था तो फ्लोरा ने सहसा उसके बराबर मे खडी होकर उसके होठो का चुम्बन ले लिया। मथुरासिंह बे-खबर खडा था। इस एकाएक आक्रमण से वह घबरा उठा। स्वय को उसकी बाहो से छुडाते हुए कहने लगा, "यह हमारा हिन्दुस्तानी तरीका नही है।"

"परन्तु मैं तो अग्रेज लडकी हूँ, हमारे सीने मे हिन्दुस्तानियो से अधिक-

अग्नि है।"

'परन्तु' " इससे अधिक वह कुछ नही कह पाया। मिसेज़ स्टैनले वहाँ आ गई थी।

मथुरासिह जीप मे चढा तो फ्लोरा ने अपना रूमाल हिलाकर उसे विदा किया।

ब्रिटिश सैनिक-शिविर मे पहुँचते ही कान्फरेस आरम्भ हो गई। कान्फरेस के अगले दिन कमाण्डर-इन चीफ मिडिल ईस्ट और जनरल आकिनलेक मथुरासिह को साथ लेकर काहिरा से पश्चिम की ओर चले गये। मिस्र की सीमा पर पहुँचने मे उनको पाँच घटे लगे। सालूम मे इटालियन छावनी थी। उससे तीन मील पूर्व की ओर अग्रेजी छावनी थी। वे वहाँ पहुँचे तो समाचार मिला कि बैनगाजी से सालूम तक पक्की सडक बन गई है। इसका यह अर्थ था कि किसी भी दिन इटली की सेना धडा-धड सालूम पर पहुँच सकती है। सारे मिस्र मे अग्रेजी सेना का केवल एक डिवीजन था। मिस्र की रक्षा के लिए यह पर्याप्त नहीं था। सिदी बरानी एक समुद्री बन्दरगाह था, जहाँ से सामान आता था।

सैनिक भेदियो ने बताया कि सालूम मे इटेलियन सेना दो रेजिमेन्ट से अधिक नही। ये सैनिक किसी बडी सेना के खाने-पीने के लिए प्रबन्ध कर रहे है।

इतनी सूचना पर्याप्त थी। उन लोगो ने मध्याह्न का भोजन किया और शाम को वापस काहिरा पहुँच गये।

उसी सायकाल पिछली कान्फरेस मे तैयार किया डिस्पैच चीफ ऑफ दि आर्मी स्टॉफ को लन्दन भेज दिया गया। मथुरासिह अगले दिन के आक्रमण की योजना बनाकर जनरल आकिनलेक के पास गया। उसको कुछ ऐसा लगा कि इस युद्ध-अभियान का कमाण्डर-इन-चीफ वही बनने वाला है।

कान्फरेन्स से पाँचवे दिन लन्दन से मथुरासिह को ले जाने के लिए हवाई जहाज आया और उसी हवाई जहाज मे जनरल आकिनलेक को

मिडिल ईस्ट का कमाण्डर-इन-चीफ बनाने की आज्ञा भी आई। मथुरा-सिंह लन्दन पहुँचा तो उसे सीधे प्रधान-मत्री के कमरे मे पहुंचा दिया गया।

प्रधान-मत्री ने उससे हाथ मिलाते हुए अपने साथ सोफे पर बैठाकर कहा, "तो आप है मिस्टर एम० सिंह ?"

"जी।"

"मुझे बताया गया था कि आप मिस्र की सीमा पर निरीक्षण करने के लिये गए थे।"

"जी, मै जनरल आकिनलेक के साथ गया था।"

"क्या देखा है ?"

"आज नवम्बर की दस तारीख है। यदि हम इन सर्दियो मे बैनगाजी तक अधिकार नही कर लेते, तो मिस्र इटालियन सेना के अधिकार मे हो जायेगा।"

"जनरल कितनी सेना चाहता है ?"

"वह उसने अपने डिस्पैच मे लिखा है। मेरे विचार मे उसके अतिरिक्त भी कुछ सेना सकट-काल के लिए सुरक्षित चाहिए।"

"हिन्दुस्तान मे कितनी लायल (विश्वसनीय) सेना है ?"

"ठीक-ठीक तो कमाण्डर-इन-चीफ फार इडिया ही बता सकते है। मेरे ज्ञान मे यह सख्या बारह लाख से कम ही होगी। इसमे यत्र-सज्जित सेना बीस डिवीजन के लगभग है।"

"उसमे से कितने डिवीजन हिन्दुस्तान भेज सकता है ?"

"यदि मैं प्रबन्ध करने वाला होऊँ तो बर्मा की सीमा को रक्षित करने के लिए तीन डिवीजन और अतिरिक्त सुरक्षा के लिए तीन डिवीजन, ये छः डिवीजन छोडकर शेष चौदह डिवीजन भेजे जा सकते है।"

"यदि गाधीजी ने बगावत कर दी तो ?"

"उसके लिए पुलिस पर्याप्त है।"

प्रधान-मत्री मुस्कराया फिर पूछने लगा, "तुम फ्रन्ट पर लडने के

लिए जाना चाहते हो, या यहाँ चीफ ऑफ दि आर्मी स्टॉफ के कार्यालय मे रहना चाहते हो ?"

"मै सेना मे लडने के लिए भरती हुआ था। परन्तु जब्बलपुर पहुँचकर मुझे बताया गया कि लडने की अपेक्षा लडाने वाले अधिक जिम्मेदार और योग्य व्यक्ति होने चाहिये। इसलिए मेरे ऑफिसर्स को यह निश्चय करना चाहिए कि युद्ध-विजय के लिए मैं किस कार्य के लिए उपयुक्त हूँ।"

"कहाँ ठहरे हो ?"

"मुझे एयरोड्रोम से सीधा यहाँ लाया गया है। मेरा किट बाहर जीप मे रखा है।"

"अभी तो मिलिटरी होस्टल मे ठहरने का प्रबन्ध हो जायेगा। कल तक वहाँ आगे की आज्ञा की प्रतीक्षा करिए।"

मथुरासिंह सैल्यूट कर बाहर आ गया।

२

लन्दन का मिलिटरी होस्टल टेम्ज के दक्षिणी तट पर मेहकम मे था। मथुरासिंह को अनुभव हुआ कि इगलैंड मे अधिकारी अधिक समझदार और काम करने मे चुस्त है। वह होस्टल के बाहर ही जीप से उतर रहा था कि होस्टल की एक वैटरेस ने आकर उसको कार्ड और कमरे का नम्बर देकर बताया, "वैटरेस नम्बर इक्कीस हूँ। मुझे आज्ञा है कि आपके आराम का प्रबन्ध करूँ।"

एक तीस-बत्तीस वर्ष की स्त्री सैनिक वेश मे मथुरासिंह के सामने खडी थी। मथुरासिंह ने कार्ड लिया कमरे का नम्बर देख, वैटरेस का धन्यवाद कर, अपना किट और सूटकेस उठाया और बोला, "क्या आप मुझे बता देगी कि कमरा नम्बर तीन सौ चालीस किधर होगा ?"

"आइये, आप अपना सूटकेस मुझे दे दीजिए।"

"नेवर माइड, चलिए।"

उसका कमरा तीसरी मजिल पर था और वहाँ से कुछ ही अन्तर पर

रैस्टोरॉं था। वैटरेस ने उसका सामान कमरे मे रखवाया और स्वय उसको लेकर रैटोरॉं मे चली गई। वहाँ उसने मथुरासिंह को कहा, 'यहाँ कार्ड दिखाकर अपना नाम दर्ज करा दीजिए।''

फिर वह उसको उसके कमरे मे ले गई और उसको स्नानागार इत्यादि सब दिखाकर बोली, "मैं साय चार बजे तक अपने कमरे मे रहूँगी। मेरे बाद नम्बर पन्द्रह आयेगी, तब मै उसको अपना चार्ज दे जाऊँगी।"

मथुरासिंह ने पुन धन्यवाद किया और अपने भाग्य के विषय मे विचार करने लगा। कॉलेज मे भरती होने के समय राधा अथवा फ्लोरा का विचार तक नही था। उसको सेना मे भरती किया गया। अब न केवल वह सेना मे प्रतिष्ठित पद पर ही है बल्कि दो सुन्दर लडकियाँ उसे प्रेम भी कर रही है। वह देख रहा था कि फ्लोरा तो उस पर आक्रमण कर उसके हृदय पर अधिकार जमाने की बात कर रही है।

उसने स्नान किया और रैस्टोरॉं मे जाकर भोजन किया। फिर वह अपने कमरे मे आराम करने चला गया।

साय की चाय पीने वह रेस्टोरॉं मे गया तो उसे वहाँ स्टैनले मिल गया। मथुरासिंह खाने के कमरे मे प्रविष्ट हो ही रहा था कि उसने उसे देख लिया। "हैलो, मिस्टर सिह!" उसने आगे बढकर उसका अभिवादन किया, "तो आ गये हो ?"

"यस मिस्टर स्टैनले! वेयर आर मिसेज़ एण्ड मिस स्टैनले ?"

"वे आज एडनबरा पहुँच गई होगी। यदि उनको लेने के लिए वहाँ मोटर आई हुई होगी तो इस समय तक वे अपने 'मैन्शन' मे होगी।"

"तो मैंने उनको मिस कर दिया है ?"

"तुम कमाण्डर-इन-चीफ से मिले हो ?"

"अभी नही। कैयरो मे वहाँ के अधिकारियो से बातचीत हुई है।"

मथुरासिह ने नही बताया कि वह प्रधान-मत्री से मिला है।

"तुम्हारी योजना नम्बर एक का रहस्य है।" स्टैनले ने उसको बतलाया।

"सत्य ? कौन कहता है ?"

"मैं कह रहा हूँ। तुमको इस विषय मे किसी से भी बात नही करनी चाहिए।"

"तो उस विषय मे कुछ किया जाने वाला है ?"

"यह तो मैं नही जानता। चीफ आँफ दि स्टाफ ने मुझसे अनेकों प्रश्न किये थे। जब मैंने सबका उत्तर दे दिया तो मुझे कहा गया कि मुझे इस विषय मे किसी से बात नही करनी है।"

मथुरासिंह मुस्कराता रहा। स्टैनले ने पूछा, "कहाँ ठहरे हो ?"

"कमरा नम्बर तीन सौ चालीस मे।"

"इसी होटल मे ?"

"जी।"

"मैं भी इसमे आ गया हूँ। कल रात रॉयल होटल मे ठहरा था। मेरा परिवार गया तो मैं यहाँ आ गया हूँ। कम-से-कम मेरे पिछले कुछ साथी यहाँ मिल जाते हैं। अब तुम भी आ गये हो। यह बहुत अच्छा हो गया है।"

दोनो ने चाय पी। स्टैनले ने कई अफसरो से मथुरासिंह का परिचय कराया। फिर वह मथुरासिंह के साथ उसके कमरे मे चला गया। वहाँ वैटरेस खडी थी। उसके हाथ मे मथुरासिंह के लिए एक चिट्ठी थी। मथुरासिंह ने चिट्ठी ले ली। उस पर 'कान्फिडेन्शियल' का लाल लेबल चिपका हुआ था। मथुरासिंह ने उसे पढा। पत्र मे लिखा था—'दिसम्बर बीस निश्चित है। तैयार रहो और आज्ञा की प्रतीक्षा करो'—'लार्ड इजमे' कमाण्डर-इन-चीफ।

"कमाण्डर-इन चीफ को तुम्हारे यहाँ आने का ज्ञान है ?" स्टैनले ने पूछा।

"मैं समझता हूँ, है।"

स्टैनले इस परिस्थति से प्रसन्न था। वास्तव मे उसने ही मथुरा-सिंह की योजना को लन्दन मे भेजा था। दिल्ली मे तो उस योजना ने

कोई उत्साह उत्पन्न नही किया। कदाचित् इसका कारण यह था कि युद्ध मे दिल्ली के अधिकारी तो केवल-मात्र मुद्राकन करने वाले थे। युद्ध की गतिविधि मे उनका कोई हाथ नही था। पूर्ण युद्ध का सचालन लन्दन से हो रहा था।

उस दिन छ बजे के लगभग स्टैनले गया तो पुन वैटरेस नम्बर पन्द्रह उसके लिये एक पत्र लाई। उसमे लिखा था—'पत्रवाहक के साथ चले आओ'—'इजमे।'

मथुरासिह ने पूछा, "कौन लाया है पत्र ?"

"एक सैनिक लाया था। वह नीचे जीप मे बैठा है।"

"उससे जाकर कहो, मैं कपडे पहन रहा हूँ। पाँच मिनट मे नीचे आता हूँ।"

वैटरेस के जाने पर मथुरासिंह ने कपडे बदले और होस्टल के नीचे आ गया। बाहर निकलकर उसने देखा कि लन्दन कोहरे से भरा हुआ है। उसने अपने टॉर्च से सकेत किया तो पत्रवाहक वैटरेस के साथ उसको लेने के लिए आया और कहने लगा, "दिस वे सर !"

मथुरासिह को चीफ ऑफ दि स्टाफ की मीटिंग मे ले जाकर बैठा दिया गया। वहाँ पर इस बात पर चर्चा होती रही कि आक्रमण किस प्रकार किया जाय। इसके लिए कितने सैनिक चाहिये, कितनी सामग्री की आवश्यकता होगी। मरु-भूमि मे कौन लोग चलेगे, इत्यादि।

कान्फरेस के बाद लार्ड इजमे ने मथुरासिंह को बताया कि उसको दस दिसम्बर को लन्दन से काहिरा जाना चाहिए। वहाँ वह जनरल आक्निलेक के सम्मुख उपस्थित हो जाये। इस प्रकार कान्फरेस समाप्त हो गई। मथुरासिह वहाँ से निकला तो उसे दस डाउनिंग स्ट्रीट पर रात के भोजन का निमन्त्रण मिल गया। वह उसी जीप मे वहाँ के लिए चला गया। वहाँ एन्थनी ईडन, मिस्टर एटली, सर ए० वी० एलेक्जेडर और सर जोन साइमन उपस्थित थे।

प्राइम मिनिस्टर ने मथुरासिह का परिचय कराया, "हमारी हिन्दु-

स्तानी सेना का एक युवक लेफ्टिनेट जिसके युद्ध के विषय मे कुछ नये विचार है।"

वास्तव मे वे लोग भी मथुरासिंह का जब्बलपुर वाला व्याख्यान टेप रिकार्डर से सुन चुके थे। खाना लग जाने पर जब बैरे बाहर चले गए तो प्राइम-मिनिस्टर ने वार्तालाप आरम्भ किया। सिंह से ही उसने कहा, "मिस्टर सिंह! हमको तुम्हारी एक बात समझ मे नही आई। तुमने अपने जब्बलपुर वाले भाषण मे कहा है कि प्राय शान्ति मे भावी युद्धो के बीज छिपे होते है। इससे तुम्हारा क्या अभिप्राय था?"

"हमारी हिन्दुस्तानी जीवन-मीमासा मे" मथुरासिंह बताने लगा, "मानव-बुद्धि को त्रिगुणात्मक माना है। त्रिगुण का अर्थ है, सात्विकी, राजसी और तामसी। सात्विकी का अर्थ है गौडली, राजसी का अर्थ है फाइटिंग अर्थात् अधिकारो को प्राप्त करने मे लीन और तामसी का अर्थ है ईविल अर्थात् भागो मे रत।

"युद्ध में वे लोग ही जीतते है, जिनमे प्रथम दो गुण होते है। ईश्वरीय गुण और अपने अधिकारो को प्राप्त करने की सामर्थ्य। इन दो प्रकार की बुद्धियो के लोग ही युद्ध मे लडा और मरा करते है। और फिर जाति मे से ये दोनो गुण कम होकर रह जाता है, तामसी गुण।

'युद्धो के उपरान्त प्राय ऐसे लोग ऊपर उभर आते है, जो भोग-प्रधान होते है। वे सुस्त, प्रमादी, विषय-वासना मे लिप्त और खतरे से बचने वाले अर्थात् एस्केपिस्ट प्रवृत्ति वाले होते है। और ये लोग ही दुष्टो को पुन उभरने का अवसर देते है।

"ये प्रमादी लोग अपने को धर्मात्मा, शान्तिप्रिय और दयालु प्रकट करते है। वास्तव मे ससार मे दुष्ट शक्तियो को फलने-फूलने तथा सगठित होने का अवसर देते हे।"

इगलैड के प्रधान-मत्री को ऐसा अनुभव हुआ कि यह हिन्दुस्तानी नवयुवक कदाचित् उसकी पार्लियामेट की वक्तृताएँ पढता रहा है। इस कारण बोला, "तो तुम मेरी नीति को पसन्द करते हो?"

'युद्ध से चार-पाँच वर्ष पहले के आपके दिये हुए व्याख्यान मैंने पढ़े है। यदि वे ठीक उद्धृत हुए है तो मैं उनमे व्यक्त विचारो से सर्वथा सहमत नही हूँ।"

"तुम्हारा किस बात से मत-भेद है ?"

"आपका कहना है कि वारसेल्ज की सन्धि का पालन करने के लिये जर्मनी को विवश किया जाय।

"मेरा कहना है कि वह सधि ही गलत थी। इसलिए कोई भी आत्माभिमानी जाति उसके पालन के लिए तत्पर नही हो सकती। उस सधि मे यह होना चाहिये था कि जर्मनी मे प्रजातन्त्र राज्य होगा, और प्रतिनिधियो के लिए दो-तीन शर्तें होनी चाहिए थी। एक तो यह कि जर्मनी स्वेच्छा से शस्त्रास्त्र बना सकता है, परन्तु उन्हे छिपाकर नही बनायेगा। जब जर्मनी अपनी सैनिक तैयारी मे किसी प्रकार का भी लुकाव-छिपाव करेगा, तुरन्त मित्र-राष्ट्रो की सेनाएँ जर्मनी पर अधिकार कर लेगी।

"इसके साथ ही अपनी तैयारी उससे प्रबल रखनी चाहिए थी। जिस समय हिटलर ने चोरी-चोरी हवाई जहाज़ बनाने आरम्भ किये थे, उससे पहले अपने पास बढिया हवाई जहाज़ होने चाहिए थे और हिटलर पर तुरन्त आक्रमण कर देना चाहिए था।

"सात्विक प्रकृति के लोग न झूठ बोलते है, न ही झूठ को सहन करते है। उनमे शक्ति होनी चाहिए जिससे कि वे अधर्मी लोगो को दण्ड दे सके।"

"परन्तु इससे तो शस्त्रास्त्र बनाने की होड लग जाती और हम बिना युद्ध के ही बर्बाद हो जाते ?"

"मैं उस बरबादी का अर्थ नही समझ सकता। हम तो अब बरबाद हो रहे हैं, उस अवस्था मे तो बहुत कम बरबादी होती।"

"परन्तु उनकी चोरी-चोरी की जाने वाली तैयारी का पता किस प्रकार लगता ?"

"वह पता तो इगलैंड के उस समय के एक साधारण नागरिक मिस्टर चर्चिल को भी पता था। फिर इगलैंड के शासक यदि नही जान सकते, तो वे राज्य के एक परमावश्यक अग का भी पालन नही कर पा रहे।

"वारमेल्ज की सधि मे सबसे आवश्यक शर्त यह होनी चाहिए थी कि जर्मनी अपने शस्त्रास्त्रो का निर्माण छिपाकर नही रख सकेगा। यदि उसने ऐसा किया तो एक पराजित शत्रु की भाँति उसके देश पर अधिकार कर लिया जायेगा। लीग ऑफ नेशन्ज शान्ति स्थापित करने के लिए नही प्रत्युत शान्ति की रक्षा के लिए एक सैनिक गुट होना चाहिए था।

"ऐसा करने मे यदि मित्र-राष्ट्रो को त्याग और तपस्या का जीवन भी व्यतीत करना पडता तो उसको बरबाद होना नही कहा जा सकता। त्याग और तपस्या से जातियाँ बरबाद नही होती, प्रत्युत वे सुदृढ और श्रेष्ठ होती हैं।

'मान लीजिए, इगलैंड मे जन-साधारण के पास मोटरे कम होती और जाति के पास हवाई जहाज़ अधिक होते तो कौन-सा अनर्थ हो जाता ?"

'इससे तो जाति मे असन्तोष उत्पन्न हो जाता।"

"सन्तोष और असन्तोष तो मन की अवस्था का नाम है। इसका शारीरिक सुख-सुविधा के साथ किसी प्रकार भी सम्बन्ध नही। एक निर्धन, केवल आलू खाकर निर्वाह करने वाली जाति अधिक सतुष्ट हो सकती है और मुर्गा-मछली खाने वाले लोग दुखी तथा असतुष्ट हो सकते हैं। प्राय ऐसा ही होता है, मन की अवस्थाएँ तो बनाई जाती है।"

मिस्टर एटली ने प्रश्न किया, "परन्तु दूसरे देशो मे सुख-साधनो की प्रचुरता देख, तो लोग अपनी सरकार से असन्तुष्ट हो जाते।"

"ऐसा कुछ नही होता। यदि राज्य समाचार-पत्रो द्वारा जनता को ठीक परिस्थिति का ज्ञान करा सकता।

"भले लोगो को अपना अस्तित्व रखने के लिए सुसगठित होना तथा

सुदृढ होना आवश्यक है और उसके लिए राज्य के पास धन होना चाहिए। धन लोग देते है। केवल उनको विश्वास होना चाहिए कि उस धन द्वारा प्रस्तुत साधनो से सरकार देश की भलाई ही करेगी।"

"ऐसा सन्तोष हिन्दुस्तानियो को क्यो नही होता ? वे इस युद्ध के समय अशान्ति क्यो उत्पन्न कर रहे है ?"

"इसलिए कि अंग्रेज शासक वहाँ के जन-साधारण के मन मे यह विश्वास नही बैठा सके कि उनका शासन उन लोगो के लिए हितकर है। वहाँ के शासक जब इस प्रकार की बात कहते है, तो उनके कथन, निराधार अथवा वस्तुस्थिति के सर्वथा विपरीत होने के कारण, वहाँ के लोगो को मान्य नही होते।

"एक अन्य भी कारण है। अंग्रेज वहाँ का शासक जनहिताय बनना नही चाहता, अपितु वहाँ फूट डलवाकर वह शासक रहना चाहता है। वहाँ के अल्पसख्यको के गुटो को भडकाकर वह बहुसख्यको के हितो का विरोध करता है।"

"यह तो डिप्लोमेसी है, बहुसख्यक लोगो को इससे बचना चाहिये।"

"जब शासक दुष्ट-नीति से राज्य चलाना चाहते है तो शासितो से उनको गिला भी नही करना चाहिए। मेरा कहना है कि धोखेबाजी का प्रतिकार सरलता से कभी नही हो सकता।"

"परन्तु हम उनको मटियामेट कर सकते है।"

"ठीक है, परन्तु उनको अपनी रक्षा के लिए हाथ-पाँव मारने का अधिकार तो है ही। यदि शासक प्रजा की दुर्बलता, अर्थात् हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य से लाभ उठाकर अपना शासन दृढ करना चाहते हैं तो प्रजा भी उनका अनुकरण कर सकती है। वे शासन की दुर्बलता का लाभ उठाकर उसे उलटना चाहते है।"

"मिस्टर एटली ने बात बदलते हुए कहा, "अब क्या होगा ?"

"कुछ नही होगा। शासन को सत्य-हृदय से भारत की जनता को विश्वास दिलाते रहना चाहिये कि युद्ध के पश्चात् वहाँ पूर्ण स्वराज्य

मिलेगा और युद्ध प्रयास चालू रखना चाहिए। परिणाम यह होगा कि युद्ध-प्रयास मे विघ्न डालने वालो का पक्ष दुर्बल होता जायेगा।"

"परन्तु स्वराज्य अभी क्यो न दे दिया जाय ?"

"इस समय वहाँ ऐसी शक्तियो मे सगठन नही है, जो कि ठीक राजनीतिक सूझ-बूझ रखते हो। इस समय वहाँ दो सगठन हैं—एक तो मुस्लिम लीग का, जो अवसर मिलते ही अग्रेजो को धोखा देगा और दूसरा है, इडियन नेशनल काग्रेस। यह सगठन राजनीति मे निरा कोरा ही है।

"सैद्धान्तिक विचार से काग्रेस वालो मे भी परस्पर मतभेद है। वहाँ दो गुट हैं—एक है, पडित नेहरू का और दूसरा, सरदार पटेल का। महात्मा गाधी उन दोनो गुटो मे सुलह कराने के लिए उस गुट को बढावा दे देते हैं, जो विरोधी विचार रखता है। यह उनके महात्मापन के कारण ही है।

"वे तो शान्ति के मोह मे अशान्ति उत्पन्न करने वाले गुट की सहायता करते रहते है। यदि उनके हाथ मे राज्य-सत्ता गई तो वे जर्मनी और रूस से सधि कर उनकी सहायता कर देगे। यदि नेहरू गुट के हाथ मे राज्य गया तो वह रूस के साथ ही हो जायेगा। पटेल गुट युद्ध करेगा और अग्रेज़ो के पक्ष मे युद्ध करेगा, परन्तु गाधीजी उसका विरोध करेंगे और पटेल मे यह साहस नही कि गाधीजी के विरोध को सहन कर सके।"

अब प्रधान-मत्री ने बात बदलते हुए कहा, "यदि जापान हमारे विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दे तो क्या होगा ?"

"रूस से सन्धि किये बिना जापान युद्ध मे सम्मिलित नही हो सकता।"

"क्यो ?"

"क्योकि रूस की जर्मनी से सन्धि है। जापान के युद्ध मे सम्मिलित होने पर रूस सारा बालकान जर्मनी के हाथ मे छोड, चीन को सहायता दे, जापान को पछाड देगा। अमेरिका, इगलैड और रूस इन तीनो से जापान एक साथ ही नही जूझ सकता।"

"रूस हमारे साथ मिल सकता है क्या ?"

"मिल सकता है, किन्तु तभी, जब जर्मनी उसको विवश कर दे। अभी भी जापान और रूस की सन्धि हो रही है। ऐसी अवस्था मे जर्मनी रूस पर आक्रमण कर देगा। जापान मित्र-राष्ट्रो से युद्ध छेड देगा और रूस भी आप लोगो से सन्धि करना चाहेगा। परन्तु यह सधि अमेरिका और इगलैड के लिए अत्यन्त हानिकरक होगी। यह विश्व-शान्ति के लिए घातक होगी।"

इस प्रकार भिन्न-भिन्न राजनीतिक विषयो पर उस दिन रात के डिनर पर बात होती रही। उस वार्त्तालाप मे मथुरासिह मुख्य रूप से भाग लेता रहा। उसको विदा करते समय प्रधान-मत्री ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा, "मिस्टर सिह! तुम कुशल कूटनीतिज्ञ हो। युद्ध सचा-लन के विषय मे तो अभी तुम्हारी परीक्षा होनी शेष है। हाँ, राजनीतिक विषय मे तुम प्रवीण प्रतीत होते हो।"

"यह इस कारण कि मैंने इतिहास को एक विशेष दृष्टिकोण से पढा है।"

"किस दृष्टि से पढा है ?"

"मैंने ऐतिहासिक नेताओ पर दृष्टि रखकर इतिहास की विवेचना की है। इतिहास जनता का होता है, परन्तु उसके निर्माता नेता लोग होते है। नेता न निर्वाचित होते है, न ही निर्मित। वे स्वयभू होते है। नेता होने मे उनके पूर्व-जन्म के कर्म-फल, माता-पिता द्वारा उनके शरीर की बनावट, उनके गुरुओ की शिक्षा मुख्य कारण होते है।"

"नेता दैवी भी होते है और आसुरी भी। जिसके जैसे सस्कार होगे, वैसा ही वह नेता बनेगा।"

३

नवम्बर की पन्द्रह तारीख थी और मथुरासिह के मोर्च पर जाने मे अभी बीस दिन शेष थे। लॉर्ड इजमे से मिलकर बीस दिन की छुट्टी ले आया और स्टैनले के गॉव जाने के लिए तैयार हो गया। स्टैनले अब तक

कई बार उसको वहाँ चलने के लिए कह चुका था, अब तो कई दिन से उसको लेने के लिए फ्लोरा लन्दन मे आई हुई थी।

मथुरासिह को छुट्टी मिली तो वह 'एडनबरा' जा पहुँची। स्टैनले भी उसके साथ ही था। स्टेशन पर स्टैनले की पत्नी अपनी मोटर मे उनके स्वागत के लिये आई हुई थी। वहाँ से वोनैस पन्द्रह मील के अन्तर पर था। सब मोटर-गाडी मे वहाँ जा पहुँचे।

वास्तव मे स्टैनले मैन्शन एक विशाल, सुदृढ और सुन्दर भवन था। वह एक पहाडी के ऊपर बना था और 'फर्थ ऑफ फोर्थ' का सागर वहाँ से बहुत लुभायमान दिखाई देता था। मैन्शन के चारो ओर चीड का जगल था। उस जगल मे चलती हुई मोटर उनके फाटक पर पहुँचती थी। फाटक के अन्दर पुष्प-वाटिका थी। उसमे एक गिलास-रूम भी था, जिसमे गरम देशो के पुष्प लगे हुए थे। महल का द्वार बहुत ऊँचा था। उस तक पहुँचने के लिए काले पत्थरो की पन्द्रह सीढियाँ पार करनी पडती थी।

द्वार मे घुसते ही एक बरामदा था और उसके पीछे हॉल था। इस हॉल मे कभी उस स्थान के रहने वालो के उत्सव अथवा नाच इत्यादि हुआ करते थे। नीचे की मजिल पर हॉल के तीन ओर दफ्तर और मालिक के कारोबार सम्बन्धी प्रबन्ध के लिए कमरे थे।

पहली मजिल पर रहने के दस सैट थे। प्रत्येक सैट मे तीन कमरे, स्नानागार आदि थे। इसी मजिल पर रसोईघर, भोजन-कक्ष भी था। यहाँ आने वाले अतिथि रहा करते थे। कभी-कभी तो सब सैट भर जाया करते थे और मैन्शन मे बहुत चहल-पहल रहती थी। इन्ही सैटो मे एक मथुरासिह को भी मिल गया। उससे ऊपर वाली मजिल पर घर के लोग रहते थे। अथवा कोई बहुत ही निकट सम्बन्धी आता तो उसे भी उसी मजिल मे स्थान दे दिया जाता था।

मिसेज स्टैनले स्वय मथुरासिह को उसके कमरे मे ले गई। प्रात. छ. बजे से लोग एडनबरा पहुँचे थे। ठीक दस बजे ब्रेकफास्ट के लिए घटी बजी तो फ्लोरा स्वय मिस्टर सिंह को साथ ले जाने के लिए उसके

पास आई।

मथुरासिह कपडे पहन, डाइनिग हॉल मे जाने के लिए तैयार हो रहा था कि फ्लोरा आई और हाथ जोड नमस्कार करने लगी। मथुरासिंह को विस्मय हुआ, उसने मुस्कराते हुए उत्तर मे हाथ जोडे तो फ्लोरा ने कहा, "यह ग्रीट करने का हिन्दुस्तानी तरीका है।"

इतने कहने के क्षण-भर मे ही वह लपककर मथुरासिंह के निकट पहुँची और उसका आलिगन करते हुए उसके होठो का चुम्बन कर बोली, "और यह है ग्रीट करने का अग्रेजी तरीका।"

फ्लोरा ने उसे छोडा तो मथुरासिंह ने कह दिया, "यह तो बहुत ही भयानक तरीका है।"

"भयानक! भला, क्या भय है इसमे?"

"इस प्रकार तो हम केवल अपनी विवाहिता के साथ ही कर सकते हैं।"

"तो मैं आपकी विवाहिता हो जाऊँगी।"

"तुम भला कैसे हो जाओगी?"

"'सिम्पली इन दि नैचुरल वे'[1]।"

"विवाह तो प्राकृतिक वस्तु नही है। यह तो समाज द्वारा निर्माण किया गया है और समाज प्राकृतिक नही, कृत्रिम है।"

दोनो कमरे से निकल खाने के हॉल की ओर चल पडे थे। उन दिनो एक अन्य परिवार वहाँ अतिथि के रूप मे ठहरा हुआ था। यह पडोस का एक ज़मीदार-परिवार था। लार्ड एसक्विथ गौर्ट की पत्नी थी और उसका पुत्र विलियम गौर्ट था। विलियम चौबीस-पच्चीस वर्ष का युवक था। उसकी छोटी बहिन प्रमिला गौर्ट भी उनके साथ थी। वह इक्कीस वर्ष की युवती फ्लोरा की सहेली थी। गौर्ट और स्टैनले-परिवारो की परस्पर पुरानी मैत्री थी। लार्ड गौर्ट नौसेना मे एक जहाज़ी बेडे का कमाण्डर था और इस समय एटलाटिक सागर मे उसका बेडा

---

१. शुद्ध प्राकृतिक तरीके से।

विलियम मुस्कराता हुआ बोला, "माँ ने पिताजी को कहकर मुझे फ्रन्ट पर जाने के अयोग्य घोषित करवा दिया है। इस पर भी मैं इस क्षेत्र मे सिविल सुरक्षा मे सहयोग दे रहा हूँ।"

"यह अच्छा कर रहे है आप, परन्तु लाखो माताओ के पुत्र देश के लिए मरने के लिए तैयार हैं। जो आज सेना मे नही जा सका, वह लज्जा तो अनुभव करता ही होगा।"

"न तो सब-के-सब युवक मोर्चे पर जा सकते है और न ही युद्ध-प्रयास केवल मोर्चे पर ही हो रहा है। मै घर पर रहकर भी इस युद्ध को सफल बनाने मे सहायता कर रहा हूँ।"

मथुरासिंह को इसमे सन्तोष नही हुआ। वह समझता था कि कौन किस काम के योग्य है, इसका निर्णय तो अधिकारी करते है। यही जबरी भरती का अर्थ है। यदि यह निश्चय कि कौन क्या काम करे, व्यक्ति की इच्छा और सुविधा पर छोड दिया जाय, तो जातीय युद्ध-प्रयास चल ही नही सकता।

इस पर भी उसने बात को बदलकर कहा, 'यहाँ सिविल गार्ड की सख्या कितनी है?"

"चालीस से पचास की आयु के भीतर के लोग सिविल गार्डस् बन सकते हैं। मैं उनको सगठित कर रक्षा के लिए शिक्षित करता हूँ।"

मथुरासिह समझ गया कि मिसेज गौर्ट कोई दुर्बलात्मा है। वह उस-की तुलना अपनी माँ से करता था और उसमे वह उसे बहुत घटिया पाता था। उसे अपनी माँ का व्यवहार अति श्रेष्ठ प्रतीत होता था।

मिस्टर स्टैनले ने बातो-ही बातो मे बताया, "लार्ड गौर्ट और मुझमे यह निश्चय हुआ था कि यदि बच्चे पसन्द करे तो दोनो परिवारो मे विवाह-सम्बन्ध बन सकते हैं। यह विलियम फ्लोरा से विवाह की इच्छा करता है। मेरे हिन्दुस्तान जाने से पूर्व लगभग दोनो मे निश्चय हो चुका था कि इनका परस्पर विवाह होगा। फ्लोरा ने यह इच्छा प्रकट की थी कि विवाह युद्ध-समाप्ति के बाद हो। परन्तु अब विलियम तो फ्रण्ट पर

जा नही रहा है। इस कारण यह और इसकी माँ विवाह के विषय मे बात करने के लिए आये हुए है।"

मथुरासिह ने विलियम गौर्ट को देखा तो उसको वह कुछ मोटी बुद्धि का व्यक्ति प्रतीत हुआ। वह यह समझ रहा था कि एक धनी बाप के बेटे और सजातीय युवक को छोडकर फ्लोरा क्यो उसके पीछे पडी है। विलियम शरीर से स्वस्थ और रूप मे सुन्दर तो था, परन्तु उसमे बुद्धि और साहस की कमी थी।

अगले दिन बहुत प्रात काल जब मथुरासिह बिस्तर पर ही था कि फ्लोरा नौकरानी के हाथ चाय लिवाकर कमरे मे आ गई। मथुरासिंह नाइट-सूट पहने हुए था। कमरे का द्वार भीतर से बन्द नही था। फ्लोरा ने द्वार पर थाप दी और भीतर चली आई। अभी प्रात काल के चार ही बजे थे। मथुरासिंह उठा तो फ्लोरा ने कहा, "यहाँ तो अभी आधी रात है, परन्तु आप तो घडी से उठने वाले है न।"

"धन्यवाद मिस स्टैनले! कई दिनो बाद इस प्रकार आनन्ददायक बिस्तर पर लेटने के कारण गहरी नीद आ गई थी। किन्तु अब मै तैयार हू।"

फ्लोरा नाइट-गाउन पहने हुए थी। वह एक स्टूल लेकर उसके पलग के पास बैठ गई। नौकरानी ने पलग पर नैपकिन बिछाकर उस पर चाय रख दी और फिर प्रश्न-भरी दृष्टि से फ्लोरा की ओर देखने लगी। फ्लोरा ने कह दिया, "ठीक है सूसन! अब तुम जा सकती हो। मिस्टर गौर्ट तो नौ बजे से पहले नही उठेगे। पापा और मम्मी आठ बजे उठते है। उनको उनके समय पर चाय दे देना।"

सूसन के चले जाने पर फ्लोरा ने मथुरासिह को कहा, "कल हम बात समाप्त नही कर सके थे। दिन-भर मे गौर्ट-परिवार वालो से बाते करती रही हूं। आपसे मिलने का अवसर ही नही मिला। मैं आपसे विवाह करना चाहती हूँ। आपने कहा कि विवाह की रस्म अस्वाभाविक है। यह कृत्रिम है। रात भर मै इस पर विचार करती रही हूँ कि इस

प्रकार की आर्टिफिशल बात की चिन्ता की क्या जरूरत है। हम अपना व्यवहार स्वाभाविक क्यो नही बना लेते।"

फ्लोरा चाय बना रही थी। मथुरासिह ने उसका समाधान करने के लिए कहा, "फ्लोरा! हम एक समाज मे रहते हैं। उस समाज मे हमारे माता पिता, भाई-बन्धु, मित्र-परिचित सभी लोग है। ये सब सम्बन्ध भी कृत्रिम हैं। इन सम्बन्धो को हम तोड नही सकते, इसी कारण इस कृत्रिम समाज के अन्य कृत्रिम नियमो को भी हम नही तोड सकते।"

"मै इन नियमो को पार कर जाना चाहती हूँ। मैं इन बनावटी सम्बन्धो से बँधना नही चाहती। मेरे सम्बन्धी मेरे स्वाभाविक व्यवहार को स्वीकार करेगे अथवा नही, मै यह नही जानती। इस पर भी मै ऐसा करना चाहती हूं।"

"परन्तु फ्लोरा! यह महल, यह साजो-सामान, यह सुख-सुविधा भी उसी कृत्रिम समाज की देन है। समाज ने यह नियम बनाया है कि बाप की सम्पत्ति का अधिकारी पुत्र बने। पुत्र के अभाव मे पुत्री भी उस सम्पत्ति की अधिकारिणी मानी जाती है। स्वाभाविक तो वह है जो कमाए वह खाये। जो न कमाए उसे कुछ न मिले।"

"तो यह 'इनहैरिटेन्स' की प्रथा अस्वाभाविक है। इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि सोशियलिज्म ठीक है।"

"नही, ये दोनो ही कृत्रिम है। समाजवाद मे व्यक्ति की सरप्लस आय की मालिक सरकार बन जाती है। व्यक्तिवाद मे इस आय का मालिक वह है जिसे आय करने वाला नियुक्त कर दे। दोनो आधार भिन्न-भिन्न होने से दोनो भिन्न-भिन्न प्रभाव उत्पन्न करने वाले हैं। दोनो नकली प्रबन्धो मे मैं व्यक्तिवाद के प्रपच को ठीक मानता हूँ। मैं समाज को मानव का मालिक बनना पसन्द नही करता। मैं मानव को समाज का मालिक मानता हूँ। हम कुछ विशेष प्रयोजन के लिए समाज को अपनी आय का अश देते है। हम यह पसन्द नही करते कि समाज सबका मालिक हो और जन उसके सेवक। मालिक मानव है। समाज अर्थात्

सरकार उसकी सेविका है।"

फ्लोरा इस स्पष्ट विश्लेषण को समझ रही थी। वह यह समझी कि किसी जागीर का उत्तराधिकारी बनाना कानून का अधिकार नही। अपितु यह किसके पास जाय, इसका निर्णय जागीर के मालिक की इच्छानुसार होना चाहिए।

परन्तु वह तो विवाह के विचारो से भरी हुई थी। इस कारण उसने सम्पत्ति का प्रश्न छोडकर पूछा, "परन्तु इसका विवाह से क्या सम्बन्ध है?"

"यह कि समाज के विवाह की प्रथा निर्माण की है। उस द्वारा बनाई प्रथा को पालन करने वाले को समाज उत्तराधिकार दिलाकर पुरस्कृत करता है। विवाह के अतिरिक्त सन्तान को माता-पिता के उत्तराधिकार और समाज से वचित कर देता है।"

"अर्थात् यदि मै माता-पिता की इच्छा के विपरीत सम्बन्ध बनाऊंगी तो वे मुझको मेरे अधिकारो से वचित कर देगे।"

"हो सकता है। इस पर भी उनके मन की बात मैं इतनी जानता हूँ कि वे तुम्हारा विवाह लार्ड गौर्ट के सुपुत्र विलियम से करना चाहते हैं।"

"किसने कहा है यह ?"

"मिस्टर स्टैनले ने।"

"बात यह है कि मैं जब एक वर्ष की बालिका-मात्र थी, मेरे पिता ने हँसी-हँसी मे अपने मित्र लार्ड गौर्ट को कह दिया था कि वे मुझको विलियम से विवाह देगे। परन्तु उस समय यह भी बात हो गई थी कि यदि हम दोनो पसन्द करेगे तब ही उनकी ओर से इसमे कोई आपत्ति नही होगी।"

"तब तो ठीक है, तुम्हे उससे विवाह करने मे क्या आपत्ति है ?"

"हिन्दुस्तान जाने के समय तक मैं अपने पिता का कहना मानने की इच्छा रखती थी। उस समय विलियम को युद्ध मे जाने से आनाकानी

करना मुझको उसकी चतुराई प्रतीत हुई थी। और मैं समझती थी कि वह मेरे लिए ही अपनी रक्षा करना चाहता है। परन्तु जबलपुर मे पिता-जी ने मुझे आपका परिचय देते हुए बताया था कि यह युवक है जो माता-पिता का इकलौता बेटा होता हुआ भी युद्ध मे जाना अपना कर्तव्य मानता है। मैं विस्मय मे आपके विषय मे जानने की इच्छा करने लगी। मै आपको अर्द्ध-विक्षिप्त मानती थी। हिन्दुस्तान मे तो 'कोसक्रिप्शन' थी नही।

"बाद मे आपसे भेट हुई। आप पागल प्रतीत नही हुए। आप मुझे एक औसत हिन्दुस्तानी से अधिक समझदार और सूझ-बूझ रखने वाले तथा कर्तव्य का पालन करने वाले दिखाई दिए। आपने बताया कि आत्मा मरती नही। मरने पर शरीर बदलता है, वैसे ही जैसे वस्त्र बदलते है। धर्म युद्ध करना क्षत्रियो का काम है। आप भी क्षत्रिय है, इस कारण जर्मन युद्ध मे अग्रेजो को धर्म का पक्ष लेते देख आप स्वेच्छा से और माता-पिता की अनुमति से सेना मे भरती हुए है।

"आपके इस कथन ने मेरे मन मे क्रान्ति उत्पन्न कर दी है। मैं उसी दिन से आपसे प्रेम करने लगी हूं। आपका अपने प्रति शीतल व्यवहार देख, मैं उसमे उष्णता लाना चाहती हूँ।"

"परन्तु मैं तो अभी विवाह कर ही नही सकता। मै युद्ध मे जा रहा हूँ और नही जानता कि वहाँ क्या हो जाय? इस कारण मैं अपने पीछे विधवा छोडना नही चाहता।"

"इसीलिए मैं स्वाभाविक विवाह तो अभी कर लेना चाहती हूं। नियम से फिर पीछे होता रहेगा।"

"नो! नो!" मथुरासिह ने सतर्क होते हुए कहा। वह कूदकर पलग से नीचे उतर आया और कुरसी पर बैठ गया।

"अब आप क्या करेगे?" मुस्कराकर फ्लोरा ने पूछा।

"स्नान करूँगा और पूजा-पाठ करूँगा।"

"पूजा-पाठ मे क्या करते हैं?"

"मैं यत्न करता हूँ कि मैं ईश्वर की उपासना करूँ।"

"इस कार्य से कब तक निवृत्त हो जायेंगे ?"

"लगभग दो घंटे लग जायेंगे।"

"ठीक है, मैं छ बजे आऊँगी, जिससे आपके 'कम्यूनियन विद गॉड' के पश्चात् देखूँ कि कुछ मेरे लिए भी स्थान है अथवा नहीं ?"

"अच्छी बात है।" इतना कह मथुरासिंह उठा और स्नानागार में चला गया।

४

पिछली रात मिस्टर स्टैनले और उसकी पत्नी में फ्लोरा के विवाह के विषय में बातचीत होती रही थी। स्टैनले की पत्नी और फ्लोरा ने लेडी गौर्ट को अपने हिन्दुस्तान से लौटने की सूचना नहीं दी थी। इस पर भी डेढ़ वर्ष के बाद 'मैन्शन' में प्रकाश हुआ, वह दूर-दूर तक दिखाई दिया। गौर्ट-परिवार का महल बिलकुल समुद्र के तट पर था और वहाँ से स्टैनले मैन्शन दिखाई देता था। माँ-पुत्र ने उसमें प्रकाश देखा, तो विस्मय करने लगे कि स्टैनले ने अपने लौटने की सूचना क्यों नहीं दी। अगले दो दिन तक वे सूचना की प्रतीक्षा करते रहे। फिर वे विचार करने लगे कि उन्हें स्वयमेव बिना सूचना के वहाँ जाना चाहिए अथवा नहीं। एक दिन उन्होंने अपना नौकर भेजकर यह पता करवाया कि कौन-कौन आया है। उसने उन्हें वहाँ का समाचार दिया कि मिसेज और मिस स्टैनले आई हैं। मिस्टर स्टैनले अभी नहीं आये।

इस पर माँ-बेटा विचार करते रहे कि वे अपने-आप मिलने आएँ अथवा नहीं। बहुत विचारोपरान्त और विलियम के हठ करने पर माँ बेटा और मिस गौर्ट वहाँ चले आए। जब वे आए तो फ्लोरा पुन. लन्दन गई हुई थी। वे मिसेज स्टैनले से मिलकर लौटने वाले थे कि फ्लोरा का तार आ गया कि वह अपने पिता और मिस्टर सिंह के साथ कल प्रातः-काल की गाडी से आ रही है, उनके लिए स्टेशन पर मोटर भेज दी जाए।

इस सूचना पर तो उन्होंने वहीं टिक जाना उचित समझा।

स्टैनले ने अपनी पत्नी से कहा, "यह विलियम आया है। मैं समझता हूँ कि यह विवाह का प्रबन्ध करने के लिए आया है।"

"परन्तु यह विवाह होगा नही।"

"क्यो ?"

"फ्लोरा विलियम को पसन्द नही करती।"

"पहले तो करती थी ?"

"हाँ, करती थी। परन्तु अब अवस्था बदल गई है। मिस्टर सिह एक नया 'फेक्टर' उसकी दृष्टि मे आ गया है।"

"तो क्या वह सिह से विवाह करना चाहती है ?"

"हाँ, उसने मुझे हिन्दुस्तान मे ही बताया था कि वह एक 'डिज़ायरेबल' युवक है। अब वह उसको यहाँ लाने के लिए लन्दन गई थी। और जाने से पहले उसका कमरा ठीक ढग से सजवा गई थी। मुझे विश्वास है कि वह उससे प्रेम करती है और वह इन दिनो उससे किसी-न-किसी प्रकार का वचन ले लेगी।"

"यह तो बहुत बुरा होगा।"

"क्या बुरा होगा !"

"क्या स्टैनले रक्त, अब हिन्दुस्तानी रक्त से मिलेगा ?"

"कुछ हानि है इसमे ? क्या दोनो रक्तो मे कुछ अन्तर है ?"

"तो तुम 'एग्नोस्टिक' हो गई हो ?"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि जो आँखो से न दिखाई दे, वह है अथवा नहीं, तुम नही मानतीं।"

"मैं तो साइस मे विश्वास रखती हूँ। जो कुछ साइस बतायेगी मैं वही मान सकती हूँ।"

"तो फिर हिन्दुस्तानी गुलाम क्यों है ?"

"यह खून की खराबी के कारण नही। यह साइस की कमी के कारण है। जिस दिन वे हमारे बराबर साइस पढ लेंगे, वे स्वतन्त्र हो जायेगे।"

"तो हमको उन्हे कुछ नही पढाना चाहिए।"

"वे स्वयमेव पढ रहे है। देखा नही कि मिस्टर सिंह के मस्तिष्क से ऐसी योजना निकली है कि इगलैड के विशेषज्ञ भी उसे मान गये है।"

"यदि मैं उसे आगे नही बढाता तो वह आगे नही बढ सकता था।"

"इससे उसको क्या हानि होती ? हानि तो इगलैड को होती।"

स्टैनले निरुत्तर हो चुप रहा। उसे चुप देख, पत्नी ने कहा, "मैंने लडकी को कहा है कि यदि मिस्टर सिंह मान जाय तो मुझे कोई आपत्ति नही होगी।"

"परन्तु फ्लोरा अकेले तुम्हारी ही लडकी तो नही है ?"

"मेरा यह मतलब नही। मेरे कहने का अभिप्राय तो यह है कि यदि वह मिस्टर सिंह से विवाह कर ले तो भी मेरी सम्पत्ति की वह उत्तराधिकारिणी रहेगी।"

स्टैनले ने फिर कुछ नही कहा। दोनो चिरकाल इसी प्रकार चुपचाप बैठे रहे। अन्त मे उसकी पत्नी ने पूछा, "अब आपको क्या आपत्ति है ?"

'मैं तो अपने परिवार को शुद्ध पवित्र अग्रेजी परिवार रखना चाहता हूँ।"

"वह आप अपने लडके के परिवार से रखियेगा।"

वास्तव मे वह अपने लडके जॉन के जीते-जी लडकी को कुछ भी देना नही चाहता था। लडकी को जो कुछ भी मिलने वाला था, वह उसकी माँ से ही था। अत वह समझ रहा था कि फ्लोरा के विवाह मे उसकी ओर से की जाने वाली आपत्ति कुछ भी महत्व नही रखती।

इस पर भी उसका अग्रेजी अभिमान भडक रहा था। वह एक अधीनस्थ जाति के लडके से अपने परिवार का सम्बन्ध पसन्द नही कर सका।

रात वह बहुत देर तक इस विवाह को रोकने के विषय मे विचार करता रहा। उसने ही सिंह की भूरि-भूरि प्रशसा कर उसको उच्च-से-उच्च अधिकारी से मिलकर अपने विचार प्रकट करने का अवसर दिलाया था। अब वह अपने कहे के विपरीत प्रचार नही कर सकता था।

उसको एक सन्तोष था कि उसका लडका जॉन भी उन्नति कर रहा है। पाइलॉट से वह स्क्वैड्रन लीडर की पदवी पर पहुँच गया था। वह नित-नये कारनामे दिखा रहा था।

एकाएक उसके मन मे एक विचार आया और उसको वह कार्य मे लाने के लिए लन्दन जाने की सोचने लगा। उसने शीघ्रातिशीघ्र मथुरासिह से पहले ही लन्दन जाने का निर्णय कर लिया।

उस दिन स्टैनले-दम्पती आठ बजे उठे। इस समय तक मथुरासिह और फ्लोरा डेढ घटे तक मैनर के जगल मे घूम आये थे। और जगल के एकान्त मे, फ्लोरा मथुरासिह को अपने से विवाह के लिए तैयार करने मे सफल हो गई।

मथुरासिह पूजा से उठा ही था कि फ्लोरा सर्वथा श्वेत फ्लैल की पोशाक पहने और होठो तथा नखो पर लाली लगाये उसके सामने आ खडी हुई।

"कहिए, अब आप क्या चाहती है?" सिह ने पूछा।

"मैं आपको यहाँ के 'पाइन वूड' की सैर कराने के लिए ले चलने के लिए आई हूँ।"

"सत्य?"

"ब्रेकफास्ट तो यहाँ दस बजे मिलेगा। उससे पूर्व हम लौटकर आ जायेंगे।"

वे दोनो चल पडे। अभी उषा की लालिमा भी दिखाई नही पड रही थी। चाँदनी का प्रकाश फैला हुआ था। फ्लोरा के हाथ मे टॉर्च थी। वे दोनो रिज पर घूमते हुए दूर निकल गये। पेडो से छन-छनकर आने वाले चाँदनी के प्रकाश मे वे दोनो चले जा रहे थे, मथुरासिह ने इससे प्रभावित होते हुए कहा, "बहुत रमणीय है?"

"आजकल तो दस बजे सूर्य निकलता है। कभी हवा मे धुध हो तो ग्यारह बजे तक भी अँधेरा ही रहता है। आज आसमान साफ है और चाँदनी छिटकी हुई है।"

दोनो बाँह-मे-बाँह डाले जा रहे थे। फ्लोरा बाएँ हाथ मे टॉर्च पकडे अँधेरा आने पर प्रकाश कर रही थी। वे दोनो एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जो पहाडी का पूर्वी किनारा था। वह स्थान सपाट था और पत्थर बडे साफ थे। उसे देख, फ्लोरा ने कहा, "यह है वह स्थान, जहाँ मै आपको लाना चाहती थी।"

"क्या है यहाँ ?"

"बैठ जाइए, फिर बताऊँगी।"

वहाँ की शीतल वायु से मथुरासिंह भी स्वय मे स्फूर्ति अनुभव कर रहा था। वह बैठ गया। फ्लोरा ने वहाँ बैठते हुए कहा, "यह स्थान है, जहाँ मेरे माता-पिता ने विवाह किया था।"

"तुम्हे कैसे मालूम हुआ ?"

"एक दिन माँ ने बताया था। वह इस महल मे अपने माता-पिता के साथ आकर ठहरी हुई थी। पिताजी उसको वन-भ्रमरण के लिए यहाँ ले आये और यहाँ पर उन्होने बातो-ही बातो मे विवाह का निश्चय कर लिया और फिर स्वाभाविक विवाह कर लिया। इस स्थान को देखकर मेरी माँ मधुर स्मृतियो मे लीन हो जाती है।"

"उन दोनो मे विवाह से पहले ही समागम हो गया था।"

"ऐसा यहाँ प्राय हो जाता है। हम लोग अपने विवाह का साथी स्वय ढूँढते है, फिर इस प्रकार की घटना प्राय हो जाया करती है।"

"ठीक है, परन्तु जहाँ परस्पर विवाह हो जाय, वहाँ ठीक है, किन्तु जिनका विवाह नही हो पाता; उनके लिए तो यह दु ख का कारण भी बन सकता है ?"

"हाँ, मगर स्कॉटिश लडके ऐसे बहुत कम है जिनके मन चलायमान हो जाते है।"

"तुम कभी इस स्थान पर विलियम के साथ मिली हो ?"

"नही, अभी नही। मिलने से पूर्व ही मेरा मन उससे ऊब गया है। वास्तव मे विलियम के विषय मे उसको प्रेम-बन्धन मे बाँधने का यत्न ही

नही कर रही थी। मुझे किसी बलि के बकरे की भांति ले जाया जा रहा था। परन्तु वेदी पर पहुँचने से पूर्व ही मुझे ज्ञान हो गया कि वह युवक मानवी गुणों से रहित है। इसी कारण मैंने उससे पीछा छुडाने का यत्न किया है। अब आप इसमे मेरी सहायता कर दीजिये।"

"अर्थात् तुमसे विवाह से पूर्व ही मैं तुम्हारे साथ सम्बन्ध बना लूँ, जिससे कि तुम अपनी माँ की परम्परा को स्थायी कर सको।"

फ्लोरा हँस पडी। उसने मथुरासिह की कमर मे हाथ डालते हुए कहा, "यह आवश्यक नही है। मैं तो आपसे अपने जीवन-भर के लिए साथी होने का वचन माँग रही हूँ। शेष बात तो गौण है।"

"ठीक है।" उस एकान्त मे प्रेम-याचना करने वाली को शान्त करने के लिए मथुरासिह ने मार्ग ढूँढ लिया। उसने फिर कहा, "पहले हम यह देखें कि हमारा विवाह सम्भव भी है कि नही।"

"इसमे असम्भवता क्या है?"

"मैं हिन्दुस्तानी हूँ, मैं जानता हूँ कि स्टैनले-परिवार स्कॉटलैंड के विशिष्ट परिवारो मे से है। मैं सेना के एक साधारण सिपाही का लडका हूँ। मेरी आय मेरे पिता के अनन्तर दस हजार रुपया अर्थात् आठ नौ सौ पौड वार्षिक से अधिक नही होगी।

"इसके अतिरिक्त हमारे विवाह मे एक और बाधा है। मैंने अपनी पत्नी का निर्वाचन किया हुआ है। तुमने मेरे दिल्ली वाले बगले मे अपनी माँ के साथ आई हुई एक लडकी को देखा होगा। मैं उससे विवाह करने के लिए वचनबद्ध हूँ।

"एक तीसरी बाधा है। मेरे पिता का मकान, जिसमे मेरी पत्नी को रहना होगा, इस मैन्शन के एक अथवा दो कमरो के बराबर भी नही है। वह स्थान तुमको अनुकूल नही बैठेगा।"

"आप यह बताइए कि यदि ये तीनो बाधाएँ मार्ग मे न होती तो क्या आप मुझसे विवाह करने के लिए तैयार हो जाते?"

"हम हिन्दुस्तानी किसी लडकी को अपनी रक्षा मे लेने से इनकार

नही कर सकते। वह रक्षा का हाथ बहिन के लिए भाई का भी हो सकता है और पत्नी के लिए पति का भी। परन्तु मैं उक्त बाधाओ को उल्लघनीय नही मानता।"

इतना कह मथुरासिंह वहाँ से उठने लगा तो फ्लोरा ने उसके गले मे बाँह डालकर कहा, "मेरी बात सुनेगे भी नही ?"

"वह तो इस वासनामय स्थान से लौटने पर ही सुनी जा सकती है। मेरे विचार से यह स्थान किसी कुमार अथवा कुमारी के परस्पर मिलकर एकान्त मे बैठने के लिए उपयुक्त नही है।"

"नही, मै इसको पवित्र स्थान मानती हूँ। आप शान्ति से सुन तो लीजिये कि मै आपकी आपत्तियो को आपत्ति नही मानती।"

मथुरासिंह स्वय को पराभूत होता-सा अनुभव कर रहा था।

"आपने प्रथम आपत्ति की है हमारे परिवार के विषय मे। कोई भी लडकी अपने पिता के परिवार का अग नही होती। लडकियाँ पति के घर मे जाती है और उसी परिवार का अग बन जाती है।

"दूसरी आपत्ति थी उस लडकी की, जिससे मैने दिल्ली मे सकेतो से बातचीत करने का यत्न किया था। परन्तु हिन्दुस्तान मे तो पति दो पत्नियाँ रख सकता है। मैं उसके साथ आपकी भागीदार बनने के लिए तैयार हूँ।"

"इसके लिए उसकी स्वीकृति लेनी तो आवश्यक है। मुझे इसकी कोई सम्भावना प्रतीत नही होती।"

"मै उसको मना लूँगी।"

"परन्तु फ्लोरा ! हम तो बहुत ही निर्धन है ?"

"मुझे अपनी माताजी से आधे मिलियन की डौअरी मिलने वाली है। उससे तो हम दुनिया के किसी भी भाग मे आनन्दपूर्वक रह सकते है।"

"परन्तु यदि तुम्हारी माता ने यह सम्बन्ध पसन्द न कर वह डौअरी न दी तो ?"

"मैं जानती हूँ कि उन्हे इमसे प्रसन्नता होगी।"

"यह जानना आवश्यक है ।"

"मैं आपकी उनसे प्रत्यक्ष बात करा सकती हूँ ।"

"हिन्दुस्तान मे माता-पिता की स्वीकृति तो विवाह की रस्म के समय होती है ।"

"वह भी हो जायेगी ।"

"दो विवाह तो हिन्दुस्तानी रीति से विवाह करने पर ही हो सकते है । ऐसा यहाँ हो नही सकता ।"

"मै आपके साथ हिन्दुस्तान चलूँगी ।"

"तो यह सब-कुछ अभी नही हो सकता । इसके लिए युद्ध के बाद ही समय मिल सकता है ।"

"तो आप मुझे स्वीकार करते है ।"

"उक्त बाधाओ की उपस्थिति मे किस प्रकार कर सकता हूँ ?"

"आप उन्हे मुझ पर छोडिए । मैं उन्हे दूर कर लूँगी ।"

"पहले ऐसा कर लो, तभी विवाह के विषय मे निश्चयात्मक बात हो सकती है ।"

"ओह ! धन्यवाद !" कसकर मथुरासिह का आलिगन करते हुए फ्लोरा ने कहा ।

मथुरासिह ने धीरे से उसके बाहुपाश से स्वय को मुक्त करते हुए कहा, "आओ, अब चलते है ।"

"अब यहाँ पर बैठने मे क्या हानि है ।"

"इस स्थान की परम्पराये ठीक नही है ।"

"वह तो हो गई । आपने मुझे आपके साथ विवाह के मार्ग मे उपस्थित बाधाओ को दूर करने की स्वीकृति दे दी है ।"

"आओ, हम किसी अन्य स्थान पर चले ।"

"साढे सात बजे यहाँ पर पूर्व की ओर से 'ट्वाई लाइट'[1] का दृश्य बहुत सुन्दर होता है । बैठिए, हम उसे देखकर चलेंगे ।"

---

१ उषा ।

"परन्तु मैं विवाह से पूर्व इस प्रकार का आलिगन पसन्द नही करता। मेरे लिये यह एक पवित्र सम्बन्ध है। मै इसे अपवित्र करना नही चाहता।"

वे दोनो पुन उसी पत्थर पर बैठ गए, किन्तु एक-दूसरे से कुछ दूर हटकर। मथुरासिह अनुभव कर रहा था कि वहाँ वायुमण्डल मे, और वहाँ की पश्चिम की ओर जाने वाले चाँद के प्रकाश मे एक विचित्र मादकता है। इस पर भी वह अब आत्मविश्वास से भर रहा था। वह समझता था कि उसने वासना पर न केवल स्वय नियन्त्रण कर लिया है अपितु फ्लोरा को भी उसने शान्त कर दिया है।

मथुरासिह अब फ्लोरा को अपने युद्ध पर जाने की बात करने लगा था। उसने कहा, "हम लीबिया की भूमि को इटली वालो के रक्त से रजित करने के लिए जा रहे है। हमारे देश मे एक स्थान कुरुक्षेत्र नाम से विख्यात है। आज से पाँच सहस्र वर्ष पूर्व वहाँ एक बहुत बडा युद्ध हुआ था। ऐसा लिखा हुआ मिलता है कि उस मैदान मे अठारह दिन तक दो सेनाये परस्पर घोर युद्ध करती रही थी, और वहाँ पर लगभग एक करोड मानवो की हत्या हुई थी। उस युद्ध मे वहाँ की भूमि मे इतना नर-रक्त समा गया था कि पाँच हज़ार वर्ष बाद भी वहाँ की भूमि मे उपज के लिए खाद डालने की आवश्यकता नही पडती।

"अब हम भी लीबिया की मरु-भूमि को हरा-भरा मैदान बनाने जा रहे हैं।"

फ्लोरा को एकाएक कपकपी हो उठी। मथुरासिह ने पूछा, "क्यो, क्या हुआ है?"

"मैं विचार करती थी कि यदि आपको कुछ हो गया तो?"

"सेना मे भरती होने वाला प्रत्येक सैनिक इतना भय तो सदा अपने सिर पर लेता ही है। आज के युद्ध मे चालीस-पचास लाख के लगभग युवक तो अवतीर्ण हुए ही है। कौन मरेगा और कौन नही, यह कोई नहीं जानता। इसके जानने की आवश्यकता भी नही है। मैं तो यह जानता

हूँ कि ससार मे इतनी बुराई बढ गई है कि उससे लडना जीवन के भोग से अधिक आवश्यक हो गया है ।"

इसके बाद मथुरासिह ने अपने पिता के मुख से सुने हुए पिछले युद्ध के कई कारनामे फ्लोरा को सुनाये । युद्ध-क्षेत्र मे अपने साथियो को मरता हुआ देखकर कोई भी सैनिक भयभीत अथवा अस्थिर नही होता । मरने वाले मरते है और अन्य सैनिक आगे बढते जाते है । कोई नही कह सकता कि अगले पग पर उसकी भी मृत्यु हो जायेगी ।

इस प्रकार बाते करते-करते आठ बज गये । इस समय पूर्व की ओर से धीमा-सा प्रकाश ऊपर उठता हुआ दिखाई देने लगा । यह मधुर चाँदनी का प्रकाश नही था । उससे अधिक बलशाली और तीव्र प्रतीत होता था । चाँदनी फीकी पड रही थी ।

वे दोनो उठे और घर के लिये वापस चल पडे । आते हुए फ्लोरा गम्भीर थी और मथुरासिह अपनी विजय पर गर्व अनुभव कर रहा था ।

जब वे घर पहुँचे तो मिस्टर तथा मिसेज स्टैनले कोठी के बाहर घास के मैदान मे चहलकदमी कर रहे थे । दोनो नाइट गाउन पहने हुए थे । स्टैनले सिगार पी रहा था और उसकी पत्नी गुलाब की क्यारी के पास खडी खिले हुए गुलाब की शोभा निहार रही थी । आकाश मे धुँधला प्रकाश फैल रहा था । फ्लोरा और सिह उनके पास पहुँचे तो सिंह ने उनको प्रणाम किया । स्टैनले ने उससे पूछा, "कहाँ से आ रहे हो ?"

"मिस स्टैनले मुझे 'पाइन फोरेस्ट' मे घुमाने के लिये ले गई थी ।"

"कैसा लगा वह स्थान ?"

"बहुत मोहक है ।"

"घूमने से तो भूख लग आई होगी ?"

"हाँ, भूख तो लगी है ।"

"फ्लोरा !" स्टैनले ने आवाज़ दी, परन्तु माँ-बेटी बाते करती हुई वहाँ से निकल गई थी । स्टैनले की आवाज़ उन तक नही पहुँची । उसने

फिर सिंह को कहा, "अच्छा, तुम अपने कमरे मे चलो । वहाँ बैरा तुमको कोई हलका-सा ब्रेकफास्ट दे जायेगा । शेष तुम हमारे साथ दस बजे कर लेना।"

"थैंक यू ।" यह कहकर मथुरासिंह मैन्शन की ओर चल पडा । वह मन मे विचार कर रहा था कि माँ बेटी को अपनी सफलता अथवा असफलता का समाचार सुना रही होगी । उसने फ्लोरा को सर्वथा निराश तो किया नही था । इस पर भी ऐसी शर्ते लगाई थी कि जिनका युद्ध से पूर्व पूर्ण होना सम्भव नही था । युद्ध मे कौन जियेगा और कौन मरेगा, यह वह कैसे जान सकता था ? युद्ध तक तो वह किसी को भी आशा-विहीन नही करना चाहता था ।

इस प्रकार विचार करता हुआ वह अपने कमरे मे पहुँचा । वह अभी बैठा ही था कि बैरा एक ट्रे मे उबले अण्डे पौरीज और काफी ले आया । मथुरासिंह ने खाया और फिर स्वाध्याय करने लगा । वह मिलिटरी साइस पर कोई पुस्तक पढ रहा था कि श्रीमती स्टैनले ने कमरे मे प्रवेश किया । मथुरासिंह ने उठकर उसका स्वागत किया । उसने बैठते हुए मथुरासिंह से पूछा, "मिस्टर सिंह ! किसी प्रकार का कोई कष्ट तो नही हो रहा ?"

"नही मौम ! मैं यहाँ का आनन्द ले रहा हूँ । चाँद की रोशनी मे मुझे रिज दृश्य बहुत ही मनोहर लगा है । मैं आज की इस सैर को कभी भूल नही सकता । फ्लोरा कदाचित् सबसे सुन्दर स्थान पर ले गई थी ।"

"मैं उसे कह रही हूँ कि वह तुम्हे स्कॉटलैंड के कुछ अन्य सुन्दर स्थानो पर ले जाये । वे स्थान यहाँ से एक-एक दो-दो दिन की यात्रा पर है।"

"यदि वह इतना कष्ट कर सके तो मै उसका आभारी रहूँगा ।"

"उसने मुझे वे सब बाते बताई है जो तुमने विवाह के विषय मे उससे की हैं। तुमने तीन आपत्तियाँ की है । एक तो फ्लोरा के पिता का आत्माभिमान हिन्दुस्तानी युवक से अपनी कन्या का विवाह पसन्द नही करेगा ।

तुम्हारा विचार ठीक है, परन्तु सिह ! यह इगलेड है। यहाँ के युवक और युवतियाँ अपने माता-पिता के विचारो की परवाह नही करती। लड-कियाँ पिता के धन की मोहताज नही होती। मै इतना कुछ दे रही हूँ कि वह अपना जीवन बहुत मजे मे निकाल सकेगी। उसको अपने पिता से कुछ नही लेना है।

"तुम्हारी दूसरी आपत्ति हे कि हिन्दुस्तान मे तुमने किसी लडकी को विवाह का वचन दिया है। मै इसको पसन्द नही करती। कोई भी औरत 'बाईगैमी' पसन्द नही करेगी। परन्तु इसे मैं विवाह करने वाली की रुचि पर छोडती हूँ। फ्लोरा को तुमने बता दिया है, यह ठीक ही किया है। इसका उत्तर वह स्वय देगी। तीसरी बात है कि युद्ध समाप्त होने पर विवाह हो सकेगा।

"मुझे तो इसमे भी कोई आपत्ति नही, परन्तु इस विषय मे भी फ्लोरा ही तुमसे बात करेगी।"

"अच्छी बात है। मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि यदि मुझसे विवाह होना है तो वह हिन्दुस्तान मे हिन्दुस्तानी रीति से होगा, तब ही हो सकेगा।"

"यह बात भी फ्लोरा के ही विचार करने की है।"

"बस, फिर तो केवल एक बात रह जायेगी। वह यह कि उस हिन्दु-स्तानी लडकी से राय करनी आवश्यक है।"

"परन्तु सिह ! यह बताओ कि तुम फ्लोरा को पसन्द करते हो अथवा नही?"

"मौम ! मैं उसको बहुत अच्छी लडकी समझता हूँ। मैं उसके अच्छी पत्नी बनने पर विश्वास करता हूँ। परन्तु कुछ वचन हैं, जो मैं पहले ही कर चुका हूँ। उनका मूल्य मै अन्य सब बातो से अधिक समझता हूँ।"

"भूल से यदि तुमने कोई वचन दे दिया हो तो उसका पालन करना किस प्रकार आवश्यक हो गया?"

"वह वचन मैंने भूल से नही दिया था। जब मैंने उसको वचन दिया

था, तब फ्लोरा के विषय मे मै कुछ नही जानता था। यह ठीक है कि शारीरिक और कुछ मानसिक गुणो मे फ्लोरा राधा से श्रेष्ठ है, परन्तु वचन तो वचन ही होता है, उसे बदला नही जा सकता।" •

"श्रीमती स्टैनले टुकर-टुकर सिंह का मुख देखती रह गई। फिर कुछ विचारकर उसने कहा, "ये आजकल हमारे अतिथि मिस्टर गौर्ट और उसकी माँ फ्लोरा से विवाह का निश्चय करने के लिए आये हुए है। जबलपुर जाने से पूर्व तक फ्लोरा ने इससे विवाह के लिए कभी असहमति व्यक्त नही की थी, किन्तु जबलपुर जाकर उसके विचारो मे परिवर्तन हुआ है और अब तो वह उससे घृणा करने लगी है।"

"परन्तु मौम! वह अच्छा, स्वस्थ और सुन्दर युवक है। उसमे क्या खराबी देखी है, फ्लोरा ने?"

"वह सेना मे भरती नही हुआ। वह झूठ बोलकर और झूठा सर्टिफिकेट बनवाकर सेना मे भरती होने से बच गया है।"

"ऐसा उसने क्यो किया है?"

"उसकी माँ और वह दोनो ही भीरु है। वे मरने से डरते है।"

'परन्तु लार्ड गौर्ट तो नौसेना मे है।"

"हाँ, है तो। पर वह अपनी पत्नी का पुत्र नही है।"

मुस्कराकर मथुरासिंह बोला, "परन्तु यह युद्ध तो चलने वाला नही है और वैसे सभी प्रकार से वह स्वस्थ मस्तिष्क वाला युवक प्रतीत होता है।"

"फ्लोरा उसे ऐसा नही मानती।"

दस बजे तक फ्लोरा की माँ मिस्टर सिंह से बाते करती रही। आखिर मे यह निश्चय हुआ कि वह और फ्लोरा चार-पाँच दिन का पर्यटन का कार्यक्रम निश्चित कर ले। फ्लोरा का कहना था कि यदि सिंह पसन्द करे तो वे लोग ग्लासगो, एडनबरा, लीथ और वहाँ से सागर के मार्ग से वारविक जाये। वहाँ पर उसके नाना-नानी अपनी वृद्धावस्था व्यतीत कर रहे हैं। फ्लोरा के प्रति उनका बहुत स्नेह था। फ्लोरा भी

उनसे मिलने के लिए लालायित थी।

मिसेज स्टैनले ने कहा, "परन्तु मिस्टर सिह ! यदि तुम लोग परस्पर विवाह का निश्चय कर लो तब तो यह भ्रमण उचित है, अन्यथा मै इस को पसन्द नही करती।"

"हाँ, विवाह का निश्चय तो इससे पूर्व ही हो जाना चाहिए।"

: ५ :

उस दिन फिर ब्रेकफास्ट और डिनर के समय के अतिरिक्त फ्लोरा और मथुरासिह को परस्सर मिलने का अवसर नही मिला। यह तो रात को खाने के बाद सिह के मिस्टर स्टैनले के शराब पीने मे सम्मिलित न हो सकने और उसे तथा मिस्टर विलियम को ड्राइग-रूम मे छोडकर अपने शयनागार मे चले जाने पर ही सम्भव हो सका। उसने मिस्टर स्टैनले से कहा, "मैं प्रात चार बजे उठा करता हूँ। अत रात्रि मे शीघ्र ही सोना पसन्द करूँगा।"

मिस्टर स्टैनले से अवकाश ग्रहण कर जब वह अपने कमरे मे पहुँचा तो वहाँ फ्लोरा को बैठे देख विस्मय करने लगा। वह द्वार पर ही ठिठक गया था। उसे विस्मय मे खडा देख फ्लोरा बोली, "आइए, वही क्यो रुक गए ?"

"मुझे आपको इस समय यहाँ देखकर विस्मय हो रहा था।"

"क्या प्रात चार बजे से रात के दस बजे कोई भिन्न होते है ?"

हँसता हुआ मथुरासिह कहने लगा, "मेरे लिए तो नही। परन्तु तुम्हारे इस घर मे मान-प्रतिष्ठा की बात कह रहा हूँ।"

"मैं इसकी चिन्ता नही करती। मैं माँ को बताकर आई हूँ कि मैं आपके साथ भ्रमण का कार्यक्रम बनाने के लिए जा रही हूँ।"

"हाँ, मै तो चलने के लिए तैयार हूँ। मेरे विचार से यह बहुत ही मनोरजक कार्यक्रम होगा। परन्तु मौम कहती थी "

"हाँ, वे कह रही थी कि हमको इससे पूर्व अपने विवाह का निश्चय कर लेना चाहिए।"

"मै जितना ही इस विषय पर विचार करता हूं उतना ही इसको असम्भव समझने लगता हूँ।"

"आप विवाह की बात पर विचार कर रहे है अथवा किसी व्यापार की बात पर ? युद्ध और प्रेम के विषय पर जो लोग विचार करते रहे है, वे लोग पिछड जाया करते है। इगलैड की यही दशा हुई है। मैं अपनी भी वैसी दशा करना नही चाहती।"

"तो क्या करना चाहती हो ?"

"एक बात तो मैने कर दी है। वह यह कि मिस्टर गौर्ट को मै स्पष्ट शब्दो मे अपनी अस्वीकृति बता आई हूं। साथ ही मैने उसके विषय मे अपने मन के विचार भी साफ-साफ बता दिये है।"

"क्या बताया है ?"

"यही, कि वह भीरू है, वह देशद्रोही है, वह किसी अग्रेज की सन्तान नही इत्यादि।"

"तुमने व्यर्थ मे ही एक धनी पडोसी को अपना शत्रु बना लिया है।"

"मुझे उससे किसी प्रकार का भय प्रतीत नही होता।"

फ्लोरा की बात सुनकर मथुरासिह गम्भीर विचारो मे डूब गया। फ्लोरा ने फिर बताया, "मै आपकी सब शर्ते मानती हूँ। युद्ध के अन्त तक मैं विवाह के लिए प्रतीक्षा करने को तैयार हूँ। मैं आपके साथ हिन्दुस्तान चलूंगी। आपकी प्रेमिका से अनुनय-विनय करके मै उसको अपने सहपत्नी बनने के लिए तैयार कर लूंगी और फिर हिन्दू रीति से विवाह कर लूंगी।"

मथुरासिह मन मे विचार करने लगा कि तब क्या होगा, इसकी चिन्ता करना व्यर्थ है। इस कारण वह कुछ बोला भी नही। फ्लोरा ने ही आगे कहा, "कल ठीक ग्यारह बजे हम मोटर से ग्लासगो के लिए प्रस्थान करेगे, वहाँ हम दो दिन रहेगे और फिर दस दिन का भ्रमण कर यहाँ लौट आयेगे।"

"ठीक है।"

'बहुत खूब। आपने अब वचन दे दिया है, इसलिए कल दस बजे ब्रेकफास्ट से पहले तैयार रहियेगा।"

इतना कहकर वह जाने के लिए उठ खडी हुई। मथुरासिह उसे कमरे के द्वार तक छोडने के लिए आया तो फ्लोरा एकाएक घूमी और उससे लिपट गई। इस बार उसने मथुरासिह को अधिक मीठा और प्रेम-मय पाया।

जी-भर आलिगन करने के बाद खुशी से नाचती हुई वह कमरे से बाहर निकल गई।

उधर बैठक मे बैठे हुए गौर्ट और स्टैनले फ्लोरा की गौर्ट को दी गई अस्वीकृति पर विचार कर रहे थे। स्टैनले ने कहा, "फ्लोरा इस हिन्दुस्तानी युवक से प्रेम करने लगी है।"

"आपको जब यह विदित था तो आपने उसे रोका क्यो नही?"

"मैं तो हिन्दुस्तानियो को अग्रेजो से निम्न श्रेणी का व्यक्ति मानता हूँ। मेरा विचार था कि मेरी लडकी भी इसी प्रकार के विचारो वाली होगी। परन्तु मैं देख रहा हूँ कि मेरा अनुमान बिलकुल गलत निकला है। इस युवक के गुणो ने उसके मस्तिष्क पर भारी प्रभाव डाला है।"

"क्या गुण हैं उसमे?"

"मिलटरी स्ट्रटेजी के विषय मे उसके अपने विलक्षण विचार हे। उसके विचारो को सुनकर इगलैंड के चीफ आफ दि स्टाफ बहुत प्रभावित हुए है। यह युवक इतिहास का ज्ञाता है और उसके विषय मे उसको बहुत जानकारी है। पॉलिटिकल साइस के विषय मे भी उसके विचार विशेष है। भाषा पर इसका अच्छा अधिकार है और यह अपने विचारो को भली प्रकार समझा सकता है। साथ ही वह सुन्दर और स्वस्थ युवक है। अधिकाश हिन्दुस्तानियो की अपेक्षा इसका वर्ण भी गौर है और रूप-रेखा भी अच्छी है।"

"तो आप समझते हैं मुझे अपने विवाह के लिये किसी अन्य लडकी का चयन करना चाहिये?"

"मैं तो इतना कर सकता हूं कि इस नवयुवक को यहाँ से विदा करवा उसे युद्ध के मोर्चे पर भिजवा दूं। लार्ड इज़मे मेरे मित्र है। मैं इसको आक्रमण करने वाली सेना की हरियावल के साथ भिजवा सकता हूँ। किन्तु अपनी इच्छाओ मे तुम इतने मात्र से सफल नही हो सकते। सफलता प्राप्त करने के लिए तुम्हे स्वय को उससे श्रेष्ठ प्रकट करना होगा। ऐसा तुम घर बैठे हुए नही कर सकते।

"तुम्हारा स्वय को हृदय का रोगी घोषित कर देश और जाति को धोखा देना फ्लोरा को विदित हो गया है। इसका प्रभाव तो तुम अपने श्रेष्ठ कर्मों से ही मिटा सकते हो।"

"यह तो मेरी माँ की ममता ने मुझसे ऐसा कार्य करवाया है, अन्यथा मैं तो भरती होने के लिए तैयार था।"

"तो अब पुन 'मेडिकल' परीक्षा मे जा सकते हो। दुर्भाग्य से तुम वकील हो, सेना मे वकील के लिए कोई कार्य नही होता।"

"स्टैनले का विचार था कि वह अगले ही दिन लन्दन के लिए जाकर वहाँ से मिस्टर सिह के लिए काहिरा के मोर्चे पर जाने की आज्ञा दिलवा देगा। इससे विलियम के लिए अवसर प्राप्त हो जायेगा।"

अगले दिन ब्रेकफास्ट के समय अपनी पूरी यूनिफार्म पहने हुए मथुरा-सिंह मेज़ पर बैठा था। स्टैनले ने उसे इस परिधान मे देखकर पूछ लिया, "मिस्टर सिह! कही जा रहे हो क्या?"

"जी, फ्लोरा मुझे अपनी मोटर मे स्कॉटलैंड के कुछ मुख्य-मुख्य स्थानो को दिखाने के लिए ले जा रही है।"

"कहाँ ले जा रही हो, फ्लोरा?"

"यहाँ से ग्लासगो, वहाँ से एडनबरा, फिर लीथ और अन्त मे बर-विके।"

"सिह को अपने नाना-नानी से मिलाओगी?"

"हाँ, वे भी हम दोनो को आशीर्वाद देगे।"

"तो तुम लोगो ने विवाह करने का निश्चय कर लिया है?"

"जी, इन्होने स्वीकृति दे दी है।"

मथुरासिह केवल मुस्करा रहा था। उसने कुछ कहा नही। स्टैनले ने अपनी लड़की से ही पूछा, "कब कर रही हो विवाह ?"

"युद्ध के पश्चात्।"

"यदि तुम्हे इस प्रकार विवाह करना था तो विलियम को इतने दिनों तक बाँधकर क्यो रखा ?"

"वह तो दोनो ही बाँधकर रखे हुए थे। पर पापा! वह तो सर्वथा भीरू निकला। वह देश-जाति के लिए भी मरने से डरता है।"

"तुम नही डरती मरने से ?"

"मरने से डरती तो थी। परन्तु जब से इनके साथ मेरा सम्पर्क हुआ है मै यह समझ गई हूं कि मरना तो वस्त्र बदलने के समान है, इससे डरने की आवश्यकता नही।"

"तो तुम्हे यह विश्वास हो गया कि मरने के बाद तुम फिर जन्म लोगी ?"

"हाँ, पहले थी और बाद मे भी रहूँगी। यही युक्तियुक्त सिद्धान्त है। इसमे सन्देह के लिए स्थान नही रहता।"

"तो फिर यह स्मरण क्यो नही रहता कि पहले हम कहाँ थे, और क्या थे ?"

"ऐसा इसलिए है कि वह इन्स्ट्रुमैंट जो स्मरण रखता है, शरीर के साथ टूट जाता है। इनका कहना है कि इस मस्तिष्क के अतिरिक्त एक अन्य यन्त्र है जो मरने पर टूटता नही और आत्मा के साथ-साथ नए जन्म मे भी जाता है। उसको मन कहते है। उस पर देरी से प्रभाव होता है और उसमे, पूर्व-घटित घटनाओ को स्मरण रखने के लिए अधिक समय और योग्यता की आवश्यकता है।"

"तो तुम वैसा देख रही हो अब ?"

"नही, अभी नही। परन्तु मैं जब हिन्दुस्तान मे जाऊँगी तो उस यन्त्र से काम करना सीखूंगी।"

स्टैनले तो मुख देखता रह गया। खाना समाप्त हुआ तो फ्लोरा अपनी अमेरिकन गाडी, गैरेज से निकालकर ले आई। उसमे जब मथुरा-सिंह का किट और फ्लोरा का सूटकेस रखा गया तो फ्लोरा ने अपने माता-पिता से विदा ली। मथुरासिंह ने भी छुट्टी ली और दोनो मोटर कार मे सवार होकर चल दिए।

आज विलियम तथा उसकी माँ और बहिन ने प्रात काल का अल्पाहार अपने कमरे मे ही किया। जब फ्लोरा की मोटर चली गई तो वे लोग भी जाने के लिए नीचे उतर आए। विलियम और उसकी माँ का विचार था कि स्टैनले अपनी लडकी को समझायेगा। परन्तु जब उन्होने खिडकी मे से मथुरासिंह को फ्लोरा की मोटर मे जाते देखा तो वे समझ गए कि उनकी आशा फलीभूत नही हुई।

स्टैनले-दम्पती उनको विदा कर अभी हॉल की ड्योढी पर ही खडे थे कि गौर्ट-परिवार ऊपर से उतर आया। उनकी नौकरानी उनका सामान भी नीचे उतारकर ले लाई थी।

"तुम भी जा रहे हो, विलियम ?"

"मैं समझता हूँ कि अब हमारे यहाँ ठहरने मे कोई लाभ नही।"

"जैसा मन मे आए करो। तुम मेरे बचपन के मित्र के सुपुत्र हो, इस कारण जब भी तुम्हारी इच्छा हो तुम आ सकते हो। यहाँ सदा तुम्हारा स्वागत ही होगा।"

"पामिला !" स्टैनले ने लडकी को सम्बोधित कर कहा, "तुम आजकल क्या करती हो ?"

"अभी तक तो 'हसबैंड हटिंग' का काम करती थी और अब कुछ सैनिक-कार्य करने का विचार रखती हूँ। माँ तो मना कर रही है परन्तु मैं इसे अपना कर्तव्य समझती हूँ।"

"बहुत सुन्दर ! तुम जाओगी तो हम सभी को बहुत प्रसन्नता होगी।"

विलियम इससे स्वय को और भी अधिक लज्जित अनुभव करने लगा

था। उसने बात बदलने के लिए अपनी माँ से कहा, "मामा ! अब चलो न।"

सब मकान के बाहर आ गये। उनकी नौकरानी सामान उठाकर ले गई थी। उसने सामान मोटर मे रखा, और गौर्ट-परिवार भी मोटर मे आ बैठा और वहाँ से चल दिया।

उन सबके चले जाने पर स्टैनले ने अपनी पत्नी से कहा, 'मै आज रात की गाडी से लन्दन जा रहा हूँ।"

"कुछ काम है क्या ?"

"मैं भी ड्यूटी पर रिपोर्ट करना चाहता हूँ।"

"कही भेजने वाले है आपको ?"

"मैं अब एक्टिव सर्विस पर नही भेजा जाऊँगा।"

"विश यू गुड लक।"

"तुम्हे फ्लोरा को अकेले मिस्टर सिंह के साथ नही भेजना चाहिए था।"

"लडकी अब सज्ञान हो चुकी है। मै उसे किस प्रकार मना कर दूँ।"

कन्धो को झटकाते हुए स्टैनले ने असन्तोष व्यक्त किया और फिर अपने कमरे मे जाकर पुस्तक पढने लगा।

शाम की चाय पीकर उसने ड्राइवर से गाडी निकलवाई और एडनबरा स्टेशन के लिए चल दिया।

मथुरासिंह और फ्लोरा एक सप्ताह के भ्रमण के बाद लौटे। दोनो अति प्रसन्न थे। एक बात विशेष हुई। फ्लोरा ने अपनी माँ से कहा, "मामा ! मैंने नर्सिंग का काम सीखा हुआ है, मैं रेड क्रास के अधीन कार्य करने वाली एम्बुलैंस कौर्प मे अपना नाम लिखवाना चाहती हूँ।"

"बहुत अच्छा है, ईश्वर तुम्हारा भला करेगा।"

"हम कल ही लन्दन के लिये चले जायेंगे।"

अगले दिन फ्लोरा और मथुरासिंह भी लन्दन जा पहुँचे। मथुरासिंह तो अपने मिलिटरी होस्टल मे चला गया और फ्लोरा एक होटल मे ठहर गई। भरती होने तक उसने होटल मे ही रहने का निश्चय किया था।

स्टैनले होस्टल मे ही ठहरा हुआ था।

रात के खाने के समय मथुरासिंह स्टैनले से मिला। स्टैनले ने पूछ लिया, "तो तुमको तार मिल गया है, मिस्टर सिंह ?"

"कैसा तार ?" विस्मय मे उसने पूछा।

"तुमको समय से पहले जाने की आज्ञा हो चुकी है।"

"तार तो नही मिला। मै तो स्वयमेव पन्द्रह तरीख तक काहिरा मे उपस्थित होने के लिए यहाँ चला आया हूँ।"

"क्यो बोनेस मे दिल नही लगा ?"

"लगा तो था। परन्तु फ्लोरा आ रही थी, इसलिए मै भी आ गया हूँ।"

"ओह ! फ्लोरा कहाँ ठहरी है ?"

"अभी तो रॉयल होटल मे ठहरी है। आप उसे टेलीफोन कीजिये, वह आपसे मिलने के लिए उत्सुक है।"

"क्यो, मुझसे क्या काम है उसको ?"

"सर्टिफाइड नर्स होने से वह अपनी सेवाएँ किसी अस्पताल अथवा एम्बुलैंस कौर्प्स को देना चाहती है।"

"तो इसमे मै क्या कर सकता हूँ ?"

"आप सिफारिश करके किसी मोर्चे पर लगवा सकते है।"

"आजकल तो लन्दन ही मोर्चा बना हुआ है। बिना सूचना के बम-बाजी होने लगती है और सैकडो ही उसमे घायल हो जाते है।"

"तो उसकी ड्यूटी यही लगवा दीजिए।"

"मैं समझता हूँ कि बदलती परिस्थिति मे तुम्हारी योजना विलीन होती जाती है।"

"क्यो ?"

"हिटलर ने अब मुसोलिनी को पीछे कर, स्वय बलकान पर अधिकार करने का निश्चय किया है।"

"इसका मेरी योजना से क्या सम्बन्ध है ?"

"इसी सम्बन्ध मे तो तुमको यहाँ बुलाया गया है।"

"अच्छी बात है, मैं अभी अपने आने की रिपोर्ट कर देता हूँ।"

६

खाना समाप्त कर, मथुरासिंह ने चीफ ऑफ दि स्टाफ के सचिव कर्नल बैंक को टेलीफोन कर दिया। उसने कहा, "यहाँ आकर मैंने सुना है कि मुझे छुट्टी से वापस बुलाने के लिए बोनेस मे तार भेजा गया है।"

"किसने बताया है?"

"मिस्टर जे० डब्ल्यू० स्टैनले ने।"

"आप इस समय आ सकते है?"

"हाँ, मैं आ सकता हूँ।"

"मैं आपके लिए गाड़ी भेज रहा हूँ, आप तुरन्त आ जाइए।"

पाँच मिनट मे एक जीप उसको लेने के लिए आ गई और आध घटे मे वह सैनिक-कार्यालय मे पहुँच गया।

कर्नल ने बताया, "हमारी सेना का जमघट देख, ट्युनिशिया मे शत्रु-सेना की विशेष हलचल देखी गई है। इस कारण आक्रमण शीघ्र करने का निश्चय किया गया है। आक्रमण की तिथि बीस दिसम्बर की अपेक्षा दस दिसम्बर कर दी गई है। इससे आपको तुरन्त काहिरा चला जाना चाहिए। यहाँ से ढाई बजे दिन के जिबराल्टर के लिए हवाई जहाज मिलेगा, वहाँ पर से आगे का प्रबन्ध होगा। यदि आप समय पर पहुँच गए तो अपनी कमान सम्हाल सकते है।"

मथुरासिंह ने बताया कि वह तुरन्त जाने के लिए तैयार है। अत दस मिनट मे उसके कागजात तैयार किये गए और उसको 'क्रायडन' पहुँचने के लिए कह दिया गया।

मथुरासिंह होस्टल मे पहुँचा। उसने अपना किट लिया और उसी जीप मे क्रायडन को चल पडा। वह अभी मार्ग मे ही था कि ब्लैक आउट का सायरन बज गया, ड्राइवर ने जीप को एक शैल्टर मे ले जाकर खडा कर दिया। अँधेरे मे जीप चलानी कठिन हो गई थी।

जर्मन बमबाजो ने एक बहुत बडा हवाई आक्रमण कर दिया था। नगर पर सैकडो बम फेके जाने लगे और सैकडो अग्रेजी लडाकू तथा 'स्पिट फायर' उनका सामना करने के लिये आकाश मे पहुँच गए। जहाँ भूमि पर धमाको और स्थान-स्थान पर आग लगने से प्रकाश हो रहा था, वहाँ आकाश मे भी जुगनू की भाँति चकमक हो रही थी। सारे आकाश मे घोर गर्जन-तर्जन सुनाई दे रहा था। यह गोलाबारी लगभग बीस मिनट तक रही और फिर पाँच मिनट बाद 'क्लियर आउट' का साइरन बज गया। लन्दन मे रोशनी हो गई, लोग शैल्टरो से निकलकर काम-धन्धो पर आने लगे।

आधा घन्टा विलम्ब से मथुरासिह भी कायडन पहुँच गया। जाने से पूर्व उसके मन मे फ्लोरा से मिलने, अथवा कम-से-कम उससे फोन पर बात करने की इच्छा थी। परन्तु इसके लिए समय नही था। एयरोड्रोम पर पहुँचते ही उसको, जाने के लिए तैयार खडे, हवाई जहाज मे बैठा दिया गया।

आगे समय पर हवाई जहाज मिलते गए और अगले दिन सायकाल वह काहिरा जा पहुँचा। हवाई अड्डे से उसे सीधे कमाडिंग आफिसर-जनरल आकिनलेक के सामने उपस्थित किया गया। मथुरासिह के सामने पहुँते ही उसने पूछा, "यात्रा मे बहुत थक गए हो ?"

"बहुत तो नही, हाँ साधारण थकावट है।"

"ठीक है, जीप मे सो जाना। रात सालूम के फ्रन्ट पर आक्रमण की योजना है। तुम सैन्ट्रल सेना के कक्ष के ब्रिगेडियर नियुक्त हुए हो। जाओ और अपना काम सम्हालो।"

मथुरासिह ने सैल्यूट किया और जिस जीप मे वह हवाई अड्डे से आया था, उसी जीप मे सालूम के लिए चल पडा। अपने किट मे से बिस्कुट निकालकर उसने खाये और जल पिया। इस प्रकार कुछ भोजन का आधार हो गया। लगभग तीन बजे वह मोर्चे पर पहुँच गया और उसने सेना के अपने विग मे जाकर अपना चार्ज ले लिया। उसके अधीन

पाँच सौ जीप और उनमे दो सहस्र सैनिक, बन्दूको, हथगोलो से सुसज्जित तैयार खड़े थे। यह हिन्दुस्तानी सेना थी। उसके स्थानापन्न अधिकारियो ने उसे आक्रमण-सम्बन्धी सब कागज, आज्ञाएँ और मानचित्र दिये। उसने टॉर्च के प्रकाश मे वे सब देखी, पढी और समझकर शत्रु के विषय मे सूचना ज्ञात की। तब वह कार्य के लिए तैयार हो गया।

ठीक साढे चार बजे हवाई जहाजो ने आक्रमण आरम्भ किया। शत्रु के रक्षा-स्थानो पर हवाई जहाज़ो से बम गिराये गए। आधे घटे की इस बमबाजी के बाद हवाई जहाज़ लौटे तो सेना आगे बढी। शत्रु के शिविर मे हवाई आक्रमण से फैली घबराहट अभी शान्त नही हुई थी कि दन-दनाती हुई सेना आगे बढने लगी।

तीन ओर से सालूम पर आक्रमण हुआ। मध्यवर्ती सेना की कमान मथुरासिंह के हाथ मे थी, शत्रु-सेना ने बाधा उपस्थित की परन्तु यह सब कुछ इतनी शीघ्रता मे हुआ कि शत्रु के पाँव उखड गए।

नगण्य-सी हानि से ही सालूम विजय कर लिया गया। आठ बजे से पहले ही वह शत्रु-सेना से खाली हो गया। मित्र-सेना के तीनो विंग के अधिकारी मिले और आगे की योजना पर विचार हो गया। दो घटे विश्राम करने के बाद उनकी सेना बैनगाज़ी की सडक पर चल पडी। यहाँ का मार्ग रेतीला था। केवल सडक पर ही मोटरें इत्यादि चल सकती थी। अत दोनो पक्ष एक-दूसरे के पीछे सडक पर चलने लगे। मथुरासिंह का सैनिक विंग सबसे आगे था। अन्य दोनो विंग पीछे थे। यह निश्चय था कि यदि कही शत्रु सेना का विरोध हुआ तो पिछले विंग दोनो बगल मे फैलकर शत्रु-सेना को घेरने का यत्न करेगे।

आगे बढते समय हवाई जहाज़ो की एक टुकडी उनके आगे-आगे थी। उसका स्थल-सेना के कमाण्डरो के साथ रेडियो द्वारा सम्पर्क बना था और वे बताते जाते थे कि शत्रु सेना की हलचल क्या है।

सालूम से सेना का अभियान दस बजे दिन के आरम्भ हुआ था और तीन घन्टे तक वे निर्विघ्न-रूप से आगे बढते गये। सालूम से तीस मील

आगे गाडियो को आराम दिया गया। वहाँ जल का एक स्रोत था, वहाँ पर गाडियो के इजन को ठडा किया गया और आधे घटे ठहर कर वे पुनः आगे के लिए चल पडे। तीन बजे के लगभग हवाई जहाज के रेडियो से सूचना प्रसारित हुई कि आधे मील के अन्तर पर शत्रु-सेना छिपी हुई है। मथुरासिह ने सेना को सडक छोड, फैल जाने के लिए कह दिया। प्रगति तो धीमी पड गई, परन्तु जो शत्रु सेना मित्र-सेना को घेर लेने के लिए छिपी पडी थी, वह स्वय ही घिर गई। योजनानुसार मथुरासिह का विग तुरन्त ही शत्रु सेना से जूझ गया। पीछे आने वाले विग दाये बाये फैलने लगे। ताकि बीच वाला विंग घेरे मे न आ जाय। परन्तु शत्रु की सेना बहुत अधिक थी। उसके पास टैंक थे और तोपखाना था। इस कारण मित्र-सेना के पिछले विंग उस तेजी के साथ नही बढ सके, जिस तेजी से मथुरासिह वाला दल आगे बढ रहा था।

रात के दस बजे तक घमासान युद्ध होता रहा। मथुरासिह अपनी सेना के साथ शत्रु-सेना पर मार-धाड करता हुआ सेना के पार चला गया। परन्तु दोनो अन्य पक्षो की टुकडियाँ कई कारणो से आगे नही बढ सकी। वे आक्रमण-पर-आक्रमण करती रही, परन्तु शत्रु-सेना के पाँव नहीं उखाड सकी।

रात के दस बजे शत्रु की सेना ने मथुरासिह की टुकडी के लिए मार्ग छोड दिया। उन्होने अपना पूरा बल दाहिने, बाये विग्स पर डाल दिया। वे दोनो पीछे हटने लगे तो मथुरासिह समझ गया कि वह घिर गया है। उसके लौटने के लिए मार्ग नही था।

मित्र-सेना के दोनो पक्ष भारी क्षति उठाकर लौट गये। मथुरासिह के लिए आगे बढने के अतिरिक्त चारा नही था। एकाएक मथुरासिह को अपनी भयावह स्थिति का ज्ञान हुआ तो उसने उस स्थान का मानचित्र निकाला और दाहिनी ओर घूम गया। शत्रु इस चाल को समझ नहीं सका। वह समझने लगा कि मध्यवर्ती टुकडी तो हथियार डालने का यत्न कर रही है, परन्तु मथुरासिह ने वहाँ से तीन मील पर स्थित छोटे-से

बारदिया बन्दरगाह की ओर दौड लगाई। सैनिक-दृष्टि से वह एक अनावश्यक स्थान था। इससे वहाँ पर आक्रमण की आशका नही की जा रही थी।

अपनी दिन-भर की थकी-माँदी टुकडी के साथ मथुरासिह उस बन्दरगाह पर जा पहुँचा। थोडा-सा झगडा हुआ, परन्तु ये तो वहाँ जाकर विद्युत् की भाँति झपट पडे और वहाँ के सरक्षको को थोडे समय मे ही परास्त कर लिया।

शत्रु का विचार था कि मित्र-सेना तबरूक की ओर जा रही है। तबरूक की ओर बहुत बलशाली सेना खडी थी। मथुरासिह उधर जाता तो सब-के-सब या तो मारे जाते अथवा युद्ध-बदी बना लिये जाते। बारदिया की ओर जाना तो अप्रत्याशित चाल थी।

मथुरासिह की टुकडी की पाँच सौ जीपो मे से दो सौ ही बची थी। दो सहस्र सैनिको मे से केवल आठ-नौ सौ सैनिक बचे थे। थके-माँदे घायल और अल्प सामग्री के साथ ये वहाँ जा पहुँचे। इस पर भी वहाँ पहुँचते ही इन्होने किलाबन्दी आरम्भ कर दी। साथ ही रेडियो से चारो ओर एस० ओ० एस० भेजने आरम्भ कर दिये।

शत्रु ने बारदिया का घेरा डाल दिया था। मथुरासिह ने समुद्र की ओर से मार्ग खुला रखने के लिए भारी यत्न जारी रखा।

शत्रु-सेना ने पुन सालूम पर अधिकार कर लिया। अग्रेजी आक्रमण ग्यारह की प्रात काल आरम्भ हुआ था, बारह की रात को मथुरासिह की हिन्दुस्तानी सिपाहियो की टुकडी बारदिया पहुँची थी। तेरह तारीख को मथुरासिह ने किलाबन्दी की और उसी दिन सायकाल शत्रु सेना ने इस किलेबन्दी को तोडने का यत्न आरम्भ कर दिया। मथुरासिह के एस० ओ० एस० का भी परिणाम निकला। फलस्वरूप अठारह तारीख को एक 'एयर क्राफ्ट कैरियर' वहाँ आ गया और मथुरासिह से सम्पर्क बना घेरा डालने वाली शत्रु-सेना पर हवाई जहाजो से आक्रमण करने लगा। एक घण्टे की बमबाजी से घेरा डालने वाली शत्रु-सेना भागी तो समुद्री

मार्ग से मथुरासिंह की सेना को वहाँ से निकाला गया।

इक्कीस तारीख को मथुरासिह और उसके साथी सिकन्दरिया मे उतार दिये गए। लन्दन और काहिरा मे इस आक्रमण के विषय मे लिखा-पढी हो रही थी। जब मथुरासिह की मिडिल-ईस्ट फोरसेज के कमाण्डर-इन-चीफ के सामने पेशी हुई तो उसने इस पूर्ण घटना के विषय मे अपने बयान दिये। बयान हो जाने पर उसको बताया गया, "ग्यारह तारीख का आक्रमण लन्दन के आदेश पर परिपक्व तैयारी पर किया गया था। यह आदेश किसने दिया था और क्यो दिया था, इसकी जाँच हो रही हे।"

"मेरा निवेदन है," मथुरासिंह का कहना था, "कि प्रथम जनवरी को पुन आक्रमण किया जाय। इस बार यदि आज्ञा दी जाय तो आक्र-मण की योजना के विषय मे अपने विचार उपस्थित करूँ।"

"हाँ, बनाओ।"

दीवार के साथ लगे मानचित्र के पास जाकर मथुरासिह ने बताना आरम्भ किया, "अपनी योजना मैंने अपने प्रथम डिस्पैच मे लन्दन के 'चीफ़ ऑफ दि स्टाफस' के सम्मुख रखी थी। उसमे मैंने तीन दिशाओ से आक्रमण करने के विषय पर लिखा था। एक तो भूमध्य-सागर के किनारे-किनारे सालूम, बारदिया, तबरूक, गजाला इत्यादि होते हुए। इस मार्ग की रक्षा के लिए एक एयर क्राफ्ट कैरियर और एक बैटल-शिप इस किनारे पर गोला-बारी करे।

दूसरा मार्ग कापूजो, नी हाजीन, वीर टैंगाडीर से मिचिल्ली और डरना। और तीसरा मार्ग होना चाहिए सिदिऊमर से आरम्भ होकर गियाराबून, अनजीला बैनगाज़ी को।

मुझे विश्वास है कि इस तीसरे मार्ग से हम शत्रु को पीछे से घेर डालेंगे। प्रथम मार्ग पर घोर विरोध होगा। परन्तु यदि हमारे समुद्री बेडे ने ठीक ढग से सहयोग दिया तो सब के-सब शत्रु युद्ध-बन्दी हो जायेंगे। बीच के अर्थात् दूसरे मार्ग पर हमारे टैंक उनका कचूमर निकाल देंगे। परन्तु जिस समय हमने तीसरे मार्ग से बढना आरम्भ किया तो ऊपर की

दोनो शत्रु सेनाएँ हथियार डाल देंगी ।

कमाण्डर-इन-चीफ बहुत देर तक विचार करता रहा । फिर उसने पूछा, "इस तीसरे मार्ग से कौन जायेगा ?"

"हिन्दुस्तानी सेना जायेगी ।"

"और उसका नेतृत्व तुम सम्हालोगे ?"

"हाँ, यदि आज्ञा हो तो मैं कर लूँगा ।"

अब इसी योजना पर तैयारी होने लगी । ग्यारह तारीख और पहली जनवरी मे भारी अन्तर था । दो लाख सेना को एक साथ चालना दी गई । इस बार मथुरासिह को पचास हजार सैनिक देकर सिदिऊमर की ओर से किरेनाइका के दक्षिण मे सर्वथा मरुभूमि मे बढने की आज्ञा दे दी गई । मथुरासिह ने तीन सौ मील के मार्ग पर जाना था । इस कारण उसने अपना सामान और सेना सिदिऊमर मे एकत्रित कर ली । उसने अपना आक्रमण अन्य दो सेनाओ के चलने से एक दिन पीछे आरम्भ किया ।

मथुरासिह का विचार ठीक निकला । शत्रु, उस ओर से आक्रमण की आशा नहीं करता था । मथुरासिह का विचार था कि इस मार्ग से जल का प्रबन्ध न होने से किसी बडी सेना के आक्रमण की आशा नही की जायेगी ।

जब हिन्दुस्तानी सेना गियारावूब पहुँची तो बेनगाजी मे इधर से आक्रमण की सूचना भेजी गई । परन्तु वहाँ यह समझा गया कि उनको धोखा देकर सेना को उस ओर बरगलाने के लिए झूठा आक्रमण है । अगले दिन यह आक्रमण अजीला पहुँच गया । इस पर शत्रु सेना मे चिन्ता व्यक्त की जाने लगी । इस पर भी आक्रमण का सबसे अधिक बल समुद्र-तट के मार्ग पर था । शत्रु ने भी उसी मार्ग पर अपनी पूर्ण शक्ति से विरोध आरम्भ किया हुआ था । उस ओर से सेना का बल हटाकर तीसरे मार्ग पर ले जाने से वे प्रथम मार्ग पर अपनी पराजय निश्चित समझते थे ।

इसी प्रकार के विचार मे एक दिन और कट गया। हिन्दुस्तानी सेना अजेदाबिया पहुँच गई। इस समाचार से तो बेनगाजी मे चिन्ता फैल गई। इस समय एक मजबूत हवाई-आक्रमण किया गया। हवाई गोला-बाजी से सेना मे हानि तो हुई, परन्तु उसकी प्रगति नही रुक सकी। बेनगाज़ी से सेना की एक टुकडी अजेदाबिया के मार्ग पर भेजी गई। परन्तु वह इतनी सुदृढ नही थी कि हिन्दुस्तानी सेना की प्रगति को रोक सके। इस समय एक 'एयर क्राफ्ट' कैरियर से हवाई गोलाबारी आरम्भ कर दी। एक बैटलशिप भी वहाँ आ पहुँचा। और उन्होने दिन-भर नगर पर गोलाबारी कर, पैट्रोल के टैको को फूंक डाला। बारूद के गोदामो को आग लगा दी। यह सब योजनानुसार हो रहा था।

७

अफरीका मे प्रथम आक्रमण की असफलता पर वाद-विवाद छिड गया। एन्थनी ईडन काहिरा पहुँचा और वहाँ के कमाण्डर-इन-चीफ से मिल-कर उसने सब वृत्तान्त जाना। उसे भी विश्वास हो गया कि लन्दन से आक्रमण की तिथि बदलकर पन्द्रह दिन पहले कर देना इसमे बहुत बडा कारण था। उस समय तक मथुरासिंह बारडिया मे घिरा हुआ था। जब वह काहिरा मे पहुँचा तब तक ईडन लन्दन वापस जा चुका था। और वहाँ पर उस आक्रमण के विषय मे जाँच आरम्भ हो चुकी थी।

चीफ ऑफ दि स्टाफ के पास जब ईडन का वक्तव्य पहुँचा तो आक्र-मण की तिथि बदलने का उत्तरदायित्व कोई नही लेता था। अफरीका की इस योजना मे इगलैड का प्राइम-मिनिस्टर बहुत रुचि प्रकट कर रहा था और इसकी असफलता की सूचना पर उसे बहुत चिन्ता हुई। यद्यपि जनरल आकिनलेक ने आश्वासन दिया था कि नियत दिन तक पुन आक्रमण की तैयारी पूर्ण हो जायेगी, परन्तु इस रहस्य, कि यह तिथि किसने और क्यो बदली, यह एक समस्या बनी रही।

प्राइम-मिनिस्टर ने इस घटना की जाँच के लिए तीन सदस्यो की एक कमेटी नियुक्त कर दी। प्राइम-मिनिस्टर ने यह भी पूछा कि एक युद्ध-

नीतिज्ञ को मोर्चे पर और वह भी सबसे आगे क्यो भेजा गया ?

सारे कागजो की जॉच-पडताल से विदित हुआ कि युद्ध-सूचना-विभाग से एक पत्र आया था, जिसमे यह सूचना थी कि इटली और सिसली के बन्दरगाहो पर अफरीका के लिए एक अति विशाल सेना का अभियान हो रहा है। उसके कुछ घटे पश्चात् दूसरा समाचार आया कि चीफ आफ दि स्टाफ की यह सम्मति है कि अफरीका की योजना बनाने वाले हिन्दुस्तानी अधिकारी को तुरन्त अफरीका भेजना चाहिए। इसके पश्चात् एक तीसरी सूचना आई कि आक्रमण की तिथि बीस दिसम्बर की अपेक्षा दस दिसम्बर कर दी गई है।

ये सब सूचनाएँ दस डाउनिग स्ट्रीट से प्रसारित की गई थी। किन्तु उन दिनो न तो चीफ आफ दि स्टाफ की कोई मीटिंग उस स्थान पर हुई और न ही कोई अधिकारी उनके विषय मे जानता था। इन बनावटी सूचनाओ का स्रोत वह कार्यालय विदित हुआ, जिसमे कई दिनो से जे० डब्ल्यू० स्टैनले काम कर रहा था। परन्तु उसके साथ एक घटना हो गई थी।

जिस समय मथुरासिंह लन्दन से चलने वाला था, एक बहुत प्रबल जर्मन एयर रेड हुई थी और उस रेड मे स्टैनले का लडका स्क्वैड्रन लीडर जॉन स्टैनले मारा गया था। उसके हवाई जहाज को हवा मे ही आग लगा दी गई थी। जलता हुआ हवाई जहाज टेम्ज नदी मे गिर पडा था। यद्यपि बचाने वाले जहाज ने उस हवाई जहाज के पायलॉट्स को बचाने का यत्न किया था, किन्तु केवल एक आदमी को जीवित बचा सके थे। शेष सब जलकर भस्म हो गए थे। स्टैनले को जब यह सूचना मिली तो वह अचेत हो गिर पडा। उसे अस्पताल पहुँचाकर सचेत करने का यत्न किया जाने लगा।

इस प्रकार आक्रमण की तिथि बदलने की जाँच एक बन्द गली मे जाकर रुक गई। इसी समय अफरीका के नवीन आक्रमण के समाचार आने लगे। यह आक्रमण पहली जनवरी को आरम्भ हुआ था। इस तिथि

तक स्टैनले सचेत तो हो गया था, परन्तु उसका मस्तिष्क ठीक प्रकार से काम नही कर रहा था। वह सबसे यही कहता था, "मैने अपने लडके की हत्या कर दी। मैंने ही अपने लडके की हत्या की है।"

कर्नल बैक को चीफ आफ दि स्टाफ के सचिव पद से हटाकर किसी अनावश्यक कार्य पर लगा दिया गया। इसके अतिरिक्त स्टैनले के अर्द्ध-पागल हो जाने के कारण अन्य किसी पर कोई कार्यवाही नही की जा सकी।

स्टैनले के अचेत होते ही फ्लोरा और उसकी माँ को सूचना भेज दी गई और अगले दिन वे भी उसके पास आ पहुँचे। ठीक पन्द्रह दिन बाद स्टैनले सचेत तो हुआ, परन्तु उसका मदात्यय बाद तक जारी रहा। इस समय उसको बोनैस मे ले जाया गया, जहाँ उसकी सेवा-शुश्रूषा होने लगी।

समाचार-पत्रो मे बेनगाज़ी से आक्रमण की सूचनाये आने लगी। प्रथम सूचना तो यही थी कि तबरूक के आस-पास बहुत घमासान युद्ध हो रहा है। फिर एकाएक समाचार आया कि हिन्दुस्तानी सेना ने इटैलियन सेना को आउट फ्लैक कर बेनगाजी बन्दरगाह पर आक्रमण कर दिया है। और इसके कुछ समय बाद ही समाचार आया कि बेनगाज़ी पर मित्र-सेनाओ का अधिकार हो गया है।

इसके अगले दिन समाचार आया कि इटालियन सेनाये तबरूक के पास घिर गई है। उन्होने हथियार डाल दिये है। लगभग बीस हज़ार सैनिको को बन्दी बना लिया गया है।

अगले दिन समाचार मिला कि इस चमत्कारक विजय का श्रेय उस हिन्दुस्तानी अधिकारी की योजना के कारण है, जो बेनगाज़ी पर अधिकार करते हुए मारा गया है।

दुनिया-भर मे बेनगाजी की विजय की धूम मच रही थी। जानकार क्षेत्रो मे इसे हिटलर की पराजय का श्रीगणेश समझा जा रहा था। परन्तु फ्लोरा अपने रुग्ण पिता की सेवा करती हुई यह समाचार पढकर

कि वह हिन्दुस्तानी अधिकारी जो अफरीका के आक्रमण की योजना बनाने वाला था, बेनगाजी मे मारा गया है, व्याकुल हो उठी। उसका भाई मारा जा चुका था। पिता का मस्तिष्क खराब हो गया था और उसका मगेतर भी मारा गया था। उसके लिये तो ससार ही अन्धकार-मय हो गया था।

उसने पूरा समाचार जानने के लिए अपनी लन्दन जाने की इच्छा प्रकट की। उसकी माँ ने मना नही किया। फ्लोरा उसी दिन एडनबरा से लन्दन को रवाना हो गई। अगले दिन वह युद्ध-कार्यालय मे जा पहुँची।

युद्ध कार्यालय मे जा, वह पूछगीछ के कार्यालय मे जाकर वहाँ के अधिकारी से पूछने लगी, "बेनगाज़ी, युद्ध के मृतको की सूची आप लोगो के पास आ गई है क्या ?"

"नही, अभी नही आई।"

फ्लोरा चिन्ता व्यक्त करती हुई निस्तब्ध-सी रह गई। लोगो की भीड देखकर लार्ड इज़मे वहाँ आ गया था। वह उस क्लर्क से पूछने लगा, "ये लोग क्या पूछ रहे है।"

"इन लोगो के सम्बन्धी अफरीका-युद्ध मे गये हुए है और आज के समाचार-पत्रो मे यह समाचार पढकर कि तबरूक मे घमासान का युद्ध हुआ है, जिसमे इटालियन सेना की पराजय हुई है। ये अपने सम्बन्धियो के विषय मे जानने के लिए मृतको की सूची देखने के लिए एकत्रित हुए हैं।"

"तुम यह सूचना प्रसारित कर दो कि इस युद्ध मे हिन्दुस्तानी सैनिक सबसे आगे लडे है और मित्र-सेना की बहुत कम हानि हुई है। मृतका की सूची आते ही उनके सम्बन्धियो को सूचित कर दिया जायेगा।'

इतना कह लार्ड इज़मे ने पूछताछ की खिडकी से झाँककर देखा। वह चाहता था कि बाहर एकत्रित व्यक्तियो मे से किसी को मौखिक रूप से यह सूचना दे दे, जिससे कि समाचार प्रसारित होने से पूर्व ही उन लोगो को सान्त्वना मिल जाय। यह देखते हुए उसकी दृष्टि फ्लोरा पर

रखो। यहाँ की अपेक्षा वहाँ उसकी चिकित्सा भली प्रकार हो सकेगी।" लार्ड इज्मे ने गम्भीर दृष्टि से फ्लोरा की ओर देखते हुए कहा।

फ्लोरा जानती थी कि लन्दन मे योग्य-से-योग्यतम डॉक्टर मिल सकते हैं। यदि लार्ड इज्मे उसके पिता को वही रखने के लिए कह रहा है तो इसमे कुछ रहस्य होगा। वह प्रश्न-भरी दृष्टि से लार्ड की ओर देख रही थी।

फ्लोरा को अपने पिता का यह कहना कि उसने ही जॉन की हत्या की है, रहस्यमय प्रतीत होने लगा था। वह सहसा उठी और इज्मे का धन्यवाद कर कमरे से बाहर निकल गई।

फ्लोरा वापस बोर्नेस मे जा पहुँची। लन्दन मे उसके लिए कुछ भी आकर्षण नही रहा था। मथुरासिंह के निधन का समर्थन तो हुआ था, परन्तु कैसे, यह वह जान नही सकी। जब वह बोर्नेस मे पहुँची तो उसका पिता, जो उस समय लॉन मे बैठा हुआ था, उसके पहुँचने पर घबराकर उठा और मैन्शन की ओर भाग खडा हुआ। फ्लोरा की माँ ने पूछा, "क्यो, क्या बात है ?"

"पुलिस आई है।" घबराकर स्टैनले ने जबाब दिया।

"पुलिस क्यो आयेगी ?" मोटर से उतरते हुए फ्लोरा ने अपने पिता को रोककर पूछा।

"मुझे पकडने के लिये।"

"क्यो, आपने क्या किया है ?"

"मैंने जॉन की हत्या की है।"

"पर वह तो जीवित है।" फ्लोरा ने उसके मस्तिष्क का बोझ हलका करने के लिए झूठ बोल दिया।

स्टैनले यह सुनकर गम्भीर-सा हो गया। उसने फिर कुछ नही कहा।

इस प्रकार का व्यवहार वह कई दिन से कर रहा था। जब भी उसके मस्तिष्क मे विद्यमान विचारो के विपरीत कोई बात वह सुनता तो उसी समय गम्भीर-सा बनकर ऐसा भाव बनाता, मानो वह उस समस्या

को समझ नही पा रहा हो।

फ्लोरा अपनी माँ को अलग मे ले गई और उसको उसने लार्ड इज्मे की बात बताई। उसकी माँ ने सुनकर कहा, "तुम उससे पूछती कि लन्दन मे क्यो नही हो सकती ?"

"मेरे मन मे यह विचार तो आया था कि पूछ लूं। परन्तु यह विचार-कर कि उसकी चेतावनी और पापा का बार-बार जॉन की हत्या की बात करने का सम्बन्ध किसी युद्ध-रहस्य के साथ न हो। इस कारण उनसे न पूछ, मैं सीधी तुमसे राय करने के लिए यहाँ चली आई हूँ।"

"वर्तमान परिस्थिति मे तुम्हारे पिता कह रहे हैं कि अब तुम्हे विलियम से विवाह कर लेना चाहिए। मैंने जब इसका कारण पूछा तो कुछ बोले नही। जैसे अभी जॉन के जीवित होने की बात सुनकर उन्होने किया था। लन्दन से क्या समाचार लाई हो ?"

"मिस्टर सिह के विषय मे पूछने के लिए मैं वार-ऑफिस मे गई थी। बेनगाजी पर आक्रमण करने वाली सेना के हताहतो की सूची अभी तक उस कार्यालय मे पहुँची नही है। मुझे उसे देखने के लिए पुन लन्दन जाना पडेगा। लार्ड इज्मे कह रहे थे कि एक सप्ताह के भीतर पूर्ण सूची हमारे पास आ जायेगी।"

"ठीक है, एक सप्ताह बाद पुन लन्दन जाकर पता कर लेना।"

चतुर्थ परिच्छेद

बेनगाज़ी के युद्ध मे मित्र-राष्ट्रो के दस सहस्र सैनिक खेत रहे। इनमें अधिकाश सैनिक हिन्दुस्तानी थे। बेनगाज़ी मे प्रवेश करते ही हाथापाई का युद्ध शुरू हो गया और मकान-मकान, गली-गली पर अधिकार करने के लिए युद्ध करना पडा।

कठिनाई यह उत्पन्न हुई कि मित्र-सेना ने इटली वालो की जितनी तैयारी समझी थी उससे कही अधिक तैयारी वहाँ थी। पिछले बीस-बाईस दिन मे इटली ने बीस सहस्र सेना केवल बेनगाज़ी भेज दी थी और उस सेना ने वहाँ अधिकाश नागरिको के घरो पर अधिकार कर रखा था।

इटली के सैनिक भी देख रहे थे कि बेनगाज़ी पर मित्र-सेना के अधिकार हो जाने पर उन्हे पूर्ण अफ्रीका से निकलना पडेगा। इस कारण वे यहाँ पर दिल देकर लडने के लिए कटिबद्ध थे।

जनवरी पाँच को जब बेनगाजी पर आक्रमण हुआ तो इटालियन-सैनिक लडने-मरने के लिए तैयार हो गए। एक मोर्चा तो शिविर के बैरियर पर लगा। टैको के सामने कुछ भी न कर सकने के कारण वे टैको के लिए मार्ग छोड एक ओर को हट गए। परन्तु ज्यो ही हिन्दुस्तानी सैनिक आगे बढे, इन्होने युद्ध आरम्भ कर दिया। घोर युद्ध छिड गया। इस पर भी हिन्दुस्तानियो के साहसी आक्रमण को रोका नही जा सका। बहुत से इटालियन खेत रहे और बाकी हटते हुए नगर मे प्रविष्ट होने लगे। हिन्दुस्तानी सिपाही उनका पीछा करते हुए नगर की गलियो तथा बाज़ारो मे पहुँच गये। इटालियन सिपाही मकान की छतो पर गोलियाँ और हथगोले चला रहे थे। मथुरासिंह ने इस स्थान पर मोटर-गाडियाँ

मे बैठकर लडाई करना असम्भव जान, उसने बाजार के कोने से ही मकान-मकान पर आक्रमण कर उस पर अधिकार करने की योजना चालू कर दी।

बाजार के एक कोने पर सशस्त्र गाडियाँ खडी कर वहाँ पर तोपे गाड दी गयी। उन तोपो से मकानो पर गोलाबारी होने लगी। नगर के दूसरे सिरे पर इटालियन सेना की तोपे आकर खडी हो गयी। उनकी ओर से भी गोलाबारी होने लगी।

अब मथुरासिह ने मकानो को गिराना आरम्भ कर दिया। साथ ही फ्लेम थ्रोअर यन्त्रो से मकानो पर पैट्रोल फेककर आग लगानी आरम्भ कर दी।

तोपे और फ्लेम थ्रोअर काम तो कर रहे थे, परन्तु इससे सैनिक-प्रगति बहुत कम हो रही थी। परिणाम यह हुआ कि दो दिन तक वे कुछ प्रगति नही कर सके। इन दो दिनो मे उन्होने वैसे शत्रु सेना को काफी क्षति पहुँचाई थी। तीसरे दिन कार्य सुगम हो गया। मित्र-सेना की प्रगति होने लगी और नगर के उस ओर खडा शत्रु का तोपखाना बन्द हो गया। तोपची भाग गये थे। अब मथुरासिह ने अपने सैनिको को मोटरगाडियो से उतार, पैदल नगर पर अधिकार करने की आज्ञा दे दी।

इस समय तक समुद्र-तट से मित्र-सेना पहुच गई। अब तो इटैलियन सैनिक हथियार डालने लगे और बन्दी बनने लगे।

मथुरासिह शेष कार्य अपने अधीनस्थो को सोपकर लौटने लगा तो एक गली से कई स्त्रियो के चीखने-पुकारने का शब्द सुनाई दिया। मथुरा-सिह ने यह शब्द सुना तो यह समझकर कि नागरिको पर शत्रु के सैनिक किसी प्रकार का अत्याचार कर रहे है, उसने अपनी सगीन-चढी बन्दूक ली और समीप खडे दस सैनिको को ले, उस मकान के नीचे जा खडा हुआ।

सैनिको ने नीचे का द्वार खटखटाया तो एक युवती ऊपर की मजिल पर खुली खिडकी से नीचे झाँकने लगी। वह अर्द्ध-नग्नावस्था मे थी और

सकेतो से तथा अपनी अरबी भाषा मे सहायता के लिए आह्वान कर रही थी।

मथुरासिह ने अपने साथियो को द्वार तोडने की आज्ञा दे दी। द्वार तोडते हुए द्वार के समीप लगी सुरग फट गई।

इससे उस मकान का अग्रिम भाग धडाम-से नीचे गिर गया। जो हिन्दुस्तानी सैनिक द्वार तोड रहे थे वे इस धमाके मे टुकडे-टुकडे हो गये। मथुरासिह और उसके कुछ साथी मकान के आगे गिरने वाले मलबे के नीचे दब गये। मकान तीन मजिल वाला था, मकान का अग्र-भाग जो गिरा तो लगभग तीस फुट का एक ढेर वहाँ पर लग गया।

इस समय तक कैनेडियन और आस्ट्रेलियन सैनिक दोनो ओर से घुस आये। पूर्ण नगर अधिकाशतया ईट और चूने का ढेर-सा हो गया था। योजनानुसार बहुत बडी सख्या मे युद्ध बन्दी बने और युद्ध-सामग्री हाथ आई।

हिन्दुस्तानी सेना को बेनगाज़ी मे ही रह जाने की आज्ञा थी। ब्रिगेडियर-जनरल मथुरासिह ला-पता पाया गया। यह अनुमान लगाया गया कि वह मारा गया है। लगभग बीस सहस्र से अधिक शत्रु-सेना के मरे और दस सहस्र हिन्दुस्तानी सैनिक काम आये। शत्रुओ के बीस सहस्र के लगभग सैनिक बन्दी भी बनाये गए।

नगर के प्रबन्ध मे एक सप्ताह लग गय। और उसके बाद शवो को ढूँढा जाने लगा। लगभग मित्र-सैनिको के सभी शव और आहत सैनिक ढूँढ लिये गए। इन शवो और घायलो मे मथुरासिह नही मिला।

उसे मृत अथवा किसी अग्निकाण्ड मे भस्म हो गया समझ, रिपोर्ट कर दी गई कि उसकी मृत्यु हो गई है।

भूमध्यसागर मे अग्रेजी क्रूजरो और बैटल शिप्स ने अपना अधिकार जमा रखा था और इटली के जहाज अपने देश के बन्दरगाहो मे छिपे बैठे थे।

बेनगाज़ी मे तीनो सेनाओ का समागम हुआ और वे वहाँ से आगे

बढने का विचार करने लगे। दरना और इलमर्ज तारीफ इत्यादि समुद्र-तट के नगरो को अधिकार मे लेते हुए वे त्रिपोली पर जा पहुंचे।

इटली की इस पराजय का परिणाम यह हुआ कि इथोपिया मे, जिस पर इटली ने १९३५ मे बलपूर्वक अधिकार जमा लिया था, बगावत हो गई और थोडे से ही हिन्दुस्तानी तथा अफरीकन सैनिको के वहाँ भेजने से वह देश स्वतन्त्र हो गया। एक बहुत बडी सख्या मे इटली के सैनिक वहाँ भी बन्दी बन गए।

इथोपिया के स्वतन्त्र हो जाने से हिटलर घबरा उठा। मुसोलिनी लज्जित हुआ। हिटलर नये साथी ढूँढने मे लग गया। हिटलर जानता था कि साथी तो वही बन सकता है जो उसके समान ही बलशाली हो। दुर्बल को साथी बनाने मे लाभ नही, उससे सहायता मिलने की अपेक्षा स्वय पर वह बोझ बन जाता है। इस समय जापान के अतिरिक्त अन्य कोई भी राज्य इस योग्य नही था कि जिसे हिटलर अपना बनाने मे लाभ समझे। एक बार पुन इगलैड से सुलह करने का यत्न हुआ।

कही बाल्डविन अथवा चैम्बरलेन इगलैड के प्राइम-मिनिस्टर होते तो यह सम्भव था कि इगलैड और जर्मनी मे सन्धि हो जाती, परन्तु चर्चिल को यह योजना पसन्द नही आई। इसके विपरीत चर्चिल ने अपना एक विशेष दूत रूस भेज दिया और रूस को मित्र-राष्ट्रो से सन्धि का निमत्रण दे दिया। सर स्टैफर्ड क्रिप्स को रूस से सन्धि के लिए मास्को भेजा गया।

२ :

मथुरासिह की मृत्यु का समाचार हिन्दुस्तान के जमादारपुर और स्कॉटलेंड बोनैस मे जा पहुँचा। दोनो स्थानो पर इसकी प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न हुई। मथुरासिह की मृत्यु की पक्की सूचना फ्लोरा को तीस जनवरी को मिली और इस अवधि मे वह निरन्तर बोनैस और लन्दन के चक्कर काटती रही।

बेनगाजी का मलबा उठाया गया तो फिर भी मथुरासिह का कोई

चिह्न नही मिला। लार्ड इज्मे को जब यह विदित हुआ कि स्टैनले की लडकी उस हिन्दुस्तानी युवक से उत्कट प्रेम करती है तो उसने मथुरासिह की पूर्ण सूचना प्राप्त करने के लिए अफ्रीका हाई-कमाण्ड के कार्यालय को लिखा-पढी की।

तीस जनवरी को अन्तिम सूचना मिली। सात जनवरी को जब इटेलियन सैनिक भाग रहे थे, एक मकान मे कुछ औरतो की चीख-पुकार सुनकर मथुरासिह उन औरतो को बचाने के लिए दस-बारह सैनिको के साथ उस मकान का दरवाज़ा तुडवाने के लिए गया था। दरवाजा तोडते हुए एक बहुत बडा धमाका हुआ था जिससे मकान का अग्रभाग गिर गया था। सब सैनिक जो वहाँ औरतो की रक्षा के लिए गये थे या तो धमाके से उड गये थे अथवा मलबे के नीचे दब गये थे। दस मे से केवल एक सैनिक का शव धुएँ मे काला पडा हुआ मिला है। ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रिगेडियर जनरल मथुरासिह-सहित शेष सब उस धमाके से टुकडे-टुकडे हो गये।

मथुरासिह मर गया घोषित किया जाता है।

इस रिपोर्ट को फ्लोरा को दिखाया गया तो वह आँखो मे आँसू लेकर युद्ध-कार्यालय से लौट आई और वहाँ से बोनैस मे जा पहुँची।

इस समय तक मिस्टर स्टैनले सब प्रकार से ठीक हो गया प्रतीत होता था। अब वह अनर्गल प्रलाप नही करता था, किन्तु अपनी शारीरिक आवश्यकताओ की माँग के अतिरिक्त अन्य कुछ कहता नही था। जब-जब भी फ्लोरा मथुरासिह की खबर पूछने के लिए लन्दन जाती थी तो वह अपनी पत्नी से उसके विषय मे पूछता रहता था।

फ्लोरा अपने पिता की सेवा बडी लगन से करती थी। उसकी पत्नी समझती थी कि वह इसी कारण उसके विषय मे पूछता होगा। इस बार जब फ्लोरा लौटी तो बहुत ही शोक-ग्रस्त होने से उसका मुख पीला पड गया था। जिस समय वह आई मिस्टर स्टैनले उस समय लॉन मे बैठा हुआ था। फ्लोरा को गाडी से उतरता देख वह उठ खडा हुआ। उसकी

पत्नी ने पूछा, "कहाँ जा रहे है ?"

"फ्लोरा से सहानुभूति प्रकट करने ।"

"सहानुभूति ?"

"हाँ, देख नही रही हो, उसके मुख पर मुर्दनी छाई हुई है ।"

पति-पत्नी दोनो ही उठकर फ्लोरा की ओर चल पडे । फ्लोरा मोटर से उतरकर मैंशन की तीसरी मजिल पर स्थित अपने कमरे मे चली गई । पति-पत्नी दोनो ही उसके पीछे वहाँ जा पहुंचे ।

माँ ने फ्लोरा से पूछा, "क्या समाचार लाई हो ?"

फ्लोरा फूट पडी । वह विह्वल होकर रोने लगी तो माँ उसकी पीठ को सहलाती रही । फ्लोरा ने यद्यपि कुछ कहा नही था परन्तु उसकी मुखाकृति और उसका रुदन मथुरासिह की मृत्यु के समाचार की पुष्टि कर रहे थे ।

फ्लोरा रोती रही और उसके माता पिता उसको सान्त्वना देते रहे । आज स्टैनले ने उससे एक बात कही, "मैं अब ठीक हूँ और शीघ्रातिशीघ्र अपनी ड्यूटी पर लन्दन चला जाना चाहता हूँ । इस कारण फ्लोरा, अब तुम साहस पकडकर माँ का इस घर मे साथ दो । युद्ध के परिणामो को कौन टाल सकता है ?"

"परन्तु डियर !" श्रीमती स्टैनले कहने लगी, 'तुम अभी पूर्ण रूप से स्वस्थ नही हुए हो ।"

"मैं ठीक हूँ, पिछले दस दिन से मुझको पागलपन का दौरा नही पडा और मैं भी यह समझता हूँ कि देश पर इस भीड के अवसर पर मुझे अपना कार्य करना चाहिए ।

"मुझे खेद है कि मैं सक्रिय सेना की आयु से बडा हो गया हूँ । अन्यथा मैं तो बन्दूक कन्धे पर रखकर मोर्चा पर जाता और वीरगति पाने का यत्न करता ।"

यह बात सुनकर श्रीमती स्टैनले के पूर्ण शरीर मे कपकपी छा उठी । इस पर भी वह उठी और अपने पति की बाँह-मे-बाह डाल उसे अपने

कमरे मे ले गई। दो दिन तक फ्लोरा अपने कमरे मे ही रही। उसके लिए वही पर भोजन आदि का प्रबन्ध होता रहा। दोनो दिन बीच-बीच मे उसकी माँ उसको सान्त्वना देने के लिए आती रही। फ्लोरा धीरे-धीरे मथुरासिह के मृत्यु समाचार के आघात से स्वस्थ होती जा रही थी। तीसरे दिन जब माँ उसके पास बैठने के लिए आई तो उसने देखा कि फ्लोरा बाहर जाने के लिए तैयार हो रही है। उसने पूछा, "कहाँ जा रही हो?"

"रिज पर घूमने के लिए।"

'सब व्यथ है फ्लोरा! तुम्हारे पिता लन्दन जाकर युद्ध-प्रयासो मे योगदान का विचार कर रहे है। हम दोनो यहाँ अकेली हे, इस कारण अब हमे भविष्य के विषय मे विचार करना चाहिए। युद्ध कालीन परिस्थितियो में व्यतीत काल की घटनाओ के लिए रोना धोना ठीक नही।"

"माँ! आज तो मै वहाँ जा रही हूँ। रिज पर बैठकर मैं उनको अपना अन्तिम नमस्कार करना चाहती हूँ। वहाँ से लौटकर मैं अपने नये जीवन पर विचार करूंगी।'

"तुम्हारे पिता तो आज सायकाल की चाय के पश्चात् लन्दन के लिए रवाना होने वाले है।"

"मैं उनको अपनी मोटर मे ले जाकर स्टेशन पर छोड आऊँगी।"

"तब तो ठीक है, तुम रिज पर से कब तक लौट आओगी?"

"मध्याह्न भोजन के समय से पहले ही आ जाऊँगी।"

जनवरी मास मे वह स्थान पूर्ण-रूपेण हिमाच्छादित हो रहा था। फ्लोरा मार्ग भली प्रकार जानती थी, इस कारण वह निधडक चली जा रही थी। धूप निकल आई थी। इस पर भी वायुमण्डल मे बहुत शीत था। इससे बचने के लिए फ्लोरा ने नाक-कान मे मफलर लपेटा हुआ था।

यद्यपि रिज को फ्लोरा पैदल ही गई थी तदपि लौटते समय वह विलियम गौर्ट की कार मे थी। लार्ड तथा मास्टर गौर्ट स्टैनले से मिलने

के लिए आ रहे थे कि मार्ग मे उनको रिज से आती हुई फ्लोरा मिल गई।

लार्ड गौर्ट ने गाडी रोक दी। विलियम गाडी चला रहा था। लार्ड गौर्ट ने सकेत से फ्लोरा को समीप बुलाया। उसने पूछा, "कहाँ घूम रही हो ?"

फ्लौरा उनका अभिवादन करके ही मौन हो गई। गौर्ट ने पूछा, "तुम्हारे पिताजी अब कैसे है ?"

"लगभग ठीक है।"

"जौन की मृत्यु का समाचार और उससे तुम्हारे पिता को अस्वस्थ हो जाने का समाचार सुनकर उनसे मिलने के लिए यहाँ आया हूँ।"

मेन्शन मे पहुँचकर फ्लोरा उनको सीधे डाइनिग-हॉल मे ले गई। उसकी माँ वहाँ खडी भोजन की व्यवस्था देख रही थी। मिस्टर स्टैनले आज लन्दन जाने वाला था। इस कारण वह आज भोजन पर विशेष प्रबन्ध करवा रही थी। गौर्ट पिता-पुत्र को आया देख वह हॉल से बाहर आ गई और दोनो का उसने मुस्कराकर स्वागत किया। उसने मिस्टर गौर्ट से पूछा, "आप घर कब आये है ?"

"मै कल ही आया हूँ। हमारे बैटल-शिप की बर्कन हैड के शिपयार्ड मे मरम्मत हो रही है। इसमे एक सप्ताह लग जायेगा। अन अवसर से लाभ उठाने की दृष्टि से मै घर चला आया हूँ। यहाँ आकर मुझे जॉन के वीरगति प्राप्त करने और उसके आघात से स्टैनले के बीमार होने का समाचार मिला है। मुझे यह सुनकर बहुत दु ख हुआ। मिस्टर स्टैनले अब कैसे है ?"

"अब कुछ ठीक है, आज तो वे लन्दन जाने की तैयारी कर रहे है।"

"यह तो बडी प्रसन्नता की बात है कि वे स्वस्थ हो गए है। रास्ते मे मुझे फ्लोरा ने बताया तो था कि वे कुछ ठीक है। अब आप के मुख से उसकी पुष्टि सुनकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है।"

वे लोग स्टैनले के कमरे मे जा पहुँचे। दोनो बडे प्रेम से मिले और

फिर बैठकर बाते करने लगे। भोजन मे अभी आधा घण्टा था। फ्लोरा वस्त्र बदलने के लिए अपने कमरे मे चली गई।

स्टैनले बताने लगा, ' अपने पुत्र के वीरगति प्राप्त करने के अनन्तर मुझे सब कुछ व्यर्थ प्रतीत होने लगा है। मैं आज लन्दन जाने के लिए तैयार हूं। अपने शोक को भूलने के लिए मै किसी युद्ध-प्रयास मे सक्रिय-रूपेण लग जाना चाहता हूं।"

"तो एक बात करो। मेरे साथ जहाज पर चलो। वहाँ अधिक रुचि-कर घटनाओ का सामना करना पडेगा।"

"बहुत खूब ! परन्तु इसके लिए तुम यत्न करो तो हो सकेगा। वैसे तो मैंने नौ-सेना की शिक्षा कभी ग्रहण नही की।"

"मैं तीन दिन मे लन्दन जा रहा हूँ। तुम मेरे साथ ही चलो। लार्ड एडमिरल से मिलकर सब निश्चय करा दूंगा। वहाँ पर कुछ हल्का काम दिलवा दूंगा।"

स्टैनले ने विलियम से पूछा, "विलियम ! तुम आजकल क्या कर रहे हो ?"

"मैं भी नौ-सेना मे भरती हो रहा हूँ। पाँच दिन पूर्व टैस्ट के लिए गया था। उसमे मैं सफल हो गया हूँ।"

"मिस्टर स्टैनले ! तुम मेरे साथ ही चलो और मैं समझता हूँ कि मैं तुम्हे शीघ्र ही अपने साथ सागर पर ले चलूंगा।"

"तुम्हारी बात है तो ठीक।"

गौर्ट ने फिर उसकी पत्नी से कहा, "मिसेज स्टैनले ! तुम और फ्लोरा हमारी अनुपस्थिति मे इकट्ठे गौर्ट-मेन्शन मे रह जाओ तो अच्छा रहेगा। कभी-कभी यहाँ भी आ जाना, इस प्रकार दिल बहल जायेगा। हम समझ रहे है कि यह युद्ध अभी कई वर्षों तक चलेगा।"

"मुझे तो अब इसका शीघ्र अन्त दिखाई दे रहा है। इस समय तक हम बेनगाजी पर अधिकार कर चुके है और मुझे विश्वास है कि इस वर्ष के अन्त तक इटली परास्त हो जायेगा।"

"तुम युद्ध-विज्ञान के विशेषज्ञ हो। इससे मै तुम्हे गलत तो नही कह सकता। परन्तु मैं इतना जानता हूँ कि मुझे भी भूमध्य सागर मे जाने की आज्ञा होगी। कदाचित् रोम पर आक्रमण के लिए मेरा बैटल-शिप भी जाये।"

"मैं समझता हूँ कि रोम पर आक्रमण करने की आवश्यकता नही पडेगी। हम सिसली मे उतरेगे और फिर स्थल-मार्ग से आगे बढते हुए इटली पर विजय प्राप्त करते जायेगे।"

"ओह! तो हम बैटल-शिप मे 'वाच डौग' की भाँति केवल पहरे-दारी पर ही रहेगे?"

"देखे, यह योजना एक हिन्दुस्तानी स्ट्रेटेजियन की है। उसका विचार था कि इससे हम रूस और जर्मनी दोनो को एक ही समय मे परास्त कर लेगे।"

"मै समझता हूँ कि वह सर विन्सैट चर्चिल का 'फैड' है। वास्तव मे बालकान को पराजित कर उसे अपने अधीन रखने की धुन तो कई सौ वर्षों से अग्रेज कन्जर्वेटिव राजनीतिज्ञो का शौक रहा है।"

"परन्तु वर्तमान परिस्थति मे यही एक कार्यान्वित होने योग्य योजना है।"

"वह हिन्दुस्तानी अधिकारी कौन है?"

"सुना है उसका बेनगाजी मे देहान्त हो गया है।"

"तो फिर बात पक्की रही। मैं सात फरवरी तक लन्दन पहुचंगा। तुम भी मेरे साथ ही चलो और तब तक के लिये मैं मिसेज और मिस स्टैनले को अपने मेन्शन मे आमन्त्रित करता हूँ।"

स्टैनले ने यह सुनकर अपनी पत्नी की ओर देखा तो उसने अपनी पुत्री की ओर देख लिया।

फ्लोरा ने कह दिया, "मै समझनी हूँ कि इससे पापा का स्वास्थ्य ठीक होगा।"

"तो तुम सब लोग हमारे साथ ही चलो। विलियम भी तो मेरे साथ

ही लन्दन जा रहा है। स्त्री-वर्ग वहाँ एक साथ रहेगा और हम लोग पुरुषो के क्रूड खेल, युद्ध मे भाग लेने के लिए जायेगे।''

३

मथुरासिंह के निधन का समाचार तार द्वारा सूरतसिंह को भी मिला। तार मे लिखा था—मथुरासिंह ने बेनगाजी के युद्ध मे बहुत ही मानयुक्त भाग लिया है। उसमे लडते हुए उसका पता नही चला। अब जाँच से पता चलता है कि एक सुरग के फूटने से उसके शरीर के टुकडे-टुकडे हो गये थे। अब पूर्ण जाँच के बाद विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि उसने वीरगति प्राप्त की है। हिन्दुस्तान की सरकार उसके सम्बन्धियो के प्रति सहानुभूति प्रकट करती है और उसकी सेवाओ के प्रतिकार के विषय में विचार कर रही है।

सूरतसिंह को जब यह समाचार मिला तो वह स्तब्ध रह गया। परमात्मा पर उसका बहुत भरोसा था, परन्तु वह काँपते हाथो से तार को पकडे हुए किंकर्तव्यविमूढ-सा हो गया। समाचार सुनाने के लिए वह भगवती के पास गया तो वह उस समय मन्दिर मे बैठी चिन्तन कर रही थी। राधा उसके पास ही बैठी थी। यह प्रातःकाल की पूजा का समय था। सूरतसिंह ने ऊपर खडे होकर आवाज दी, ''भगवती '' इससे अधिक वह कुछ कह नही सका। उसका गला रुँध गया था।

भगवती ने ठाकुरजी की ओर से मुख उठाकर पति की ओर देखा। वह काँपते हाथो से तार उठाये हुए था और उसकी आँखो से अविरल आँसू बह रहे थे।

भगवती एक क्षण मे ही सब समझ गई और उसने हाथ के सकेत से अपने पति को भी भगवान् के चरणो मे आ जाने के लिए कहा।

सूरतसिंह भीतर आ, भगवान् की प्रतिमा के सम्मुख साष्टाग प्रणाम करता हुआ भूमि पर लेट गया। कितनी देर तक वह इसी प्रकार लेटा रहा और उसकी आँखो से अविरल अश्रुधारा प्रवाहित होती रही। फिर वह उठा और अपने आँसू पोछने लगा।

राधा भी समझ रही थी कि उस तार मे क्या दुखान्त सूचना हो हो सकती है। पीत मुख परन्तु शुष्क आँखो से वह यह सब देख रही थी। थोडी देर मे ठाकुर सूरतसिह पद्मासन लगाकर बैठ गया। भगवती ने गगाजल ले अपने पति को चरणामृत पान करने के लिए दिया और फिर पति की ओर देखकर पूछा, "मथुरे का कोई अशुभ समाचार है ?"

सूरतसिह ने सिर हिलाकर स्वीकृति-सूचक सकेत किया। इससे उसकी आँखें पुन डबडबा आयी। दो क्षण आँखे मूँद भगवती ने फिर कह दिया, "यह समाचार सत्य नही हो सकता। किससे पढाया है तार ?"

'राधा के भाई रमणीक से।"

"वह ठीक प्रकार से अर्थ नही समझ पाया होगा। आप जाकर बडौदा मे किसी से पढा लाइये। मेरा मन कहता है कि राधा का सुहाग मिट नही सकता।"

सूरतसिह उठा और अपने कमरे मे जा, कपडे बदल, तार ले, वह बडौदा के लिए चल दिया। सूरतसिह के जाने के बाद राधा ने भगवती से पूछा, "मौसी ! क्या मतलब है इसका ?"

'बेटा ! लाहौर से तार आया है, परन्तु कुछ भ्रम हो गया है।"

"तो यह सत्य नही है ?"

"ईश्वर इतना अन्याय नही कर सकता।"

तीन घन्टे बाद जब सूरतसिह लौटा तो उसकी सूरत मे कोई अन्तर नही था बल्कि उसकी थकान और भी बढ गई थी। निराशा से बैठता हुआ वह कहने लगा, "भगवती ! यह समाचार सत्य है।"

"क्या सत्य है ?"

"हम अब सन्तानविहीन हो गये है।"

भगवती अन्यमनस्क-भाव मे मुख देखती रही। फिर कुछ विचार कर कहने लगी। "परमात्मा ! तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो, तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो, तुम्हारी इच्छा पूर्ण हो।"

रमणीक चार बजे स्कूल से लौटा तो उसने अपने माता पिता को

सूरतसिंह के पास मथुरासिंह की मुत्यु के समाचार का तार आने की बात बताई ।

यह समाचार सुनकर उसके माता-पिता सूरतसिंह के घर को चल दिये । रमणीक घर पर ही रहा । वे लोग सूरतसिंह के घर पहुँचे तो वे दोनो पति-पत्नी अभी भी ठाकुर की प्रतिमा से सम्मुख बैठे हुए थे राधा उसी प्रकार भगवती के पीछे बैठी हुई थी । लाला देवीदयाल और उसकी पत्नी आए तो तीनो को शान्त-चित्त बैठे देख चकित रह गए । भी उनके समीप ही जाकर बैठ गए । देवीदयाल ने पूछा, "भापा को तार आया है ?"

"हाँ, लाला ! बहुत बुरा समाचार है ।"

"तो रमणीक का कहना सत्य है ?"

"हाँ, तार उसने ही पढा था ।"

"दिखाओ तो ।"

तार भी वही ठाकुरजी के चरणो मे रखा था । सूरतसिह ने उठाकर देवीदयाल को दे दिया । वह उसे खोलकर पढने लगा । वह थोडी सी अग्रेज़ी जानता था । उसने भी जब देखा कि उसमे 'हीरोज डैथ' लिखा हैं तो तार पुन ठाकुरजी के चरणो मे डाल दिया ।

दस-पन्द्रह मिनट तक वे लोग चुपचाप वहाँ बैठे रहे । फिर देवीदयाल ने राधा से कहा, "राधा ! चलो घर चले ।"

राधा ने भगवती के मुख की ओर देखा तो वह बोली, "हाँ बेटी ! जाओ । तुमने प्रात काल से कुछ खाया नही । घर जा स्नान कर, कुछ खा-पी लो ।"

देवीदयाल ने कहा, "भापा ! तुम भी तो उठो । भाग्य के आगे किसी का बस नही चलता । अब तो अपना जीवन सन्तोष और धैर्य से ही व्यतीत किया जा सकता है ।"

राधा अपने माता-पिता के साथ घर को चली गई । राधा ने स्नान किया और फिर भोजन किया । फिर वह अपनी खाट पर जाकर लेट गई ।

अगले दिन प्रात काल उठकर राधा भगवती के घर जाने लगी तो उसकी माँ ने पूछा, "कहाँ जा रही हो ?"

"मौसी के घर पर।"

"अब क्या रखा है वहाँ ?"

"जो पहले रखा था।"

"पहले तो उसका लडका था वह अब रहा नही। अब तुमको वह अब भूल जाना चाहिए।"

"माँ ! उनके लिए तो जाती नही थी वे तो तब भी घर पर नही थे। मै तो ठाकुरजी की कथा सुनने और उनकी पूजा करने के लिए जाया करती थी।"

"मतलब तो वही था। तुम्हारा विवाह मथुरासिंह से होने वाला था वह अब हो नही सकेगा। अब तो तुम्हारे विवाह का कही अन्यत्र प्रबन्ध करना होगा।"

"वह तो देखा जायेगा। अभी तो मैं पूजा करने के लिए जा रही हूँ।"

"नही, तुम्हारे पिताजी मना करते है।"

"क्यो, वे मना क्यो करते है ?"

"जहाँ तुम्हारा विवाह होगा, वे तुम्हारा इस प्रकार उनके घर जाना पसन्द नही करेगे।"

"माँ ! आज तो मै जाती हूँ। इस दु ख के समय मे मौसी को छोड देना मै उचित नही समझती।"

इतना कह वह घर से निकल गई। गाँव की अन्य स्त्रियाँ भी शोक प्रकट करने के लिये आई हुई थी। राधा आगे जाकर भगवती के पास बैठ गई। भगवती ने उससे कहा, "राधा ! तुम भीतर मन्दिर मे जाकर बैठ जाओ।"

वह भीतर चली गई। वहाँ बैठ उसने रामायण पढनी आरम्भ कर दी। बाहर स्त्रियाँ आती थी, शोक प्रकट कर चली जाती थी। घर की

बैठक मे ठाकुर सूरतसिंह बैठा था। पुरुष-वर्ग उसके समीप शोक व्यक्त करने के लिए आता था। लाला देवीदयाल भी प्रातःकाल आया था और कुछ देर वहाँ बैठकर फिर अपनी दुकान पर चला गया था। किसी ने सूरतसिंह से कहा, "यह लाला तो कहता था कि महात्मा ने ऐसी विधि निकाली है कि जिससे न युद्ध होंगे और न उसके परिणाम स्वरूप हत्याये होगी। उन्होने युद्ध का विकल्प सत्याग्रह निकाला है।"

इस दुःख के समय भी सूरतसिंह के मुख पर मुस्कान दौड गई। बुद्धि से विचार करने पर किसी को भी देवीदयाल की बात समझ मे नही आती थी। राजा और प्रजा के झगडो की बात एक है परन्तु वहाँ बैठे देहातियो की सहज बुद्धि मे यह बात नही आती थी कि किसी दुष्ट प्रकृति के शत्रु से सत्याग्रह द्वारा किस प्रकार दुष्टताई छुडाई जा सकती है।"

राधा के आने के कुछ देर बाद मक्खनी आई और भगवती को भीतर ले जाकर कहने लगी, "बहिन! राधा को समझा दो कि वह अब यहाँ न आया करे।"

"वह अभी बच्ची है। उससे नाराज़ नही होना चाहिए। उसके सुख-स्वप्न चूर-चूर हो गए है। प्रेम से समझाओगी तो समझ जायेगी। उसके विवाह के लिए कोई पढा-लिखा युवक ढूंढो। मै उसको समझा दूंगी।"

उसी रात देवीदयाल से बातचीत हुई। रात के भोजन के समय उस ने राधा को समझाना आरम्भ कर दिया, "राधा! यह सम्बन्ध ईश्वर को स्वीकार नही था, इसलिए ही यह दुर्घटना हो गई है।"

"यह तो मै समझ रही हूँ, परन्तु मै अभी विवाह नही करूँगी।"

"क्यो?"

"मैं अभी कुछ दिनो तक प्रतीक्षा करना चाहती हूँ।"

"किसकी प्रतीक्षा करना चाहती हो?"

"मौसी कहती है कि उनका मन कहता है कि वे अभी जीवित है।"

"तुम कुछ मूर्ख होती जाती हो।"

"नहीं पिताजी! प्रतीक्षा करने मे कोई हानि नही है।"

"किन्तु तुम्हारे वहाँ जाने मे तो हानि है।"

"क्या हानि है ?"

"यही कि इससे तुम्हारे विवाह का प्रबन्ध करने मे कठिनाई होगी।"

"माँ !" उसने अपनी माँ की ओर देखकर कहा, "मै युद्ध समाप्त होने से पहले विवाह नही करूँगी। मेरा मन भी कहता है कि वे लौटकर आ जायेगे।"

"अच्छा, एक बात का वचन दो तो मै अभी तुम्हारे विवाह का प्रबध नही करूँगा।"

"कैसा वचन ?"

"यही कि तुम उनके घर पर नही जाया करोगी।"

"एकदम तो नही। हाँ, धीरे-धीरे जाना बन्द कर दूँगी। परन्तु यदि युद्ध समाप्त होने से पूर्व आपने विवाह करने का यत्न किया तो मै घर से भाग जाऊँगी।"

"कहाँ भाग जाओगी ?"

"इस विषय मे अभी तो कोई विचार नही किया किन्तु विचार करने मे देर भी कितनी लगती है ?"

बात को टालने के लिए मक्खनों ने कह दिया, "हाँ, तुम्हारी इच्छा के विपरीत तुम्हारा विवाह हम नही करेगे।"

"क्या मुसीबत है ? सूरतसिह और उसकी पत्नी ने तो लडकी का मस्तिष्क ही खराब कर दिया है।"

"तो फिर क्या किया जाय ? कौन जानता था कि ऐसी दुर्घटना हो जायेगी ?"

"जानता क्यो नही था ? मै जानता था कि आग मे हाथ डालने से हाथ जलेगा।"

"परन्तु युद्ध मे जाने वाले सभी तो नही मर रहे। आग मे तो सबके हाथ जलने चाहिए।"

"इस बार सबके हाथ जलेगे। मथुरासिह तो मरने ही वाला था।

मुझे तो दिल्ली मे ही ऐसा लगने लग गया था कि उसके मुख पर मरने के लक्षण विद्यमान थे।

"देखो मक्खनी ! लाखो भरती हो रहे है, वे सब मरेंगे। वे बच नही सकते।"

"इस पर भी लोग भरती हो रहे है। सब तो मरने की आशा से नही हो रहे।"

इस व्यर्थ की बात को समाप्त करते हुए राधा ने कहा, "मैं धीरे-धीरे वहाँ जाना बन्द कर दूंगी, परन्तु इस शर्त पर कि आप मेरा विवाह युद्ध समाप्त होने से पूर्व नही करेंगे।"

"तुमको उसके परलोक से तुम्हारे लिए वापस आने की बहुत आशा है ?"

"मुझको विश्वास है।"

"तुम पागल हो रही हो।"

"नही पिताजी ! मै सत्य कहती हूँ। देख लीजिएगा।"

देवीदयाल चुप रहा। उसका विचार था कि धीरे-धीरे वह यदि भगवती से मेल जोल बन्द कर देगी तो फिर मथुरासिह को भी भूल जायेगी। और फिर उपयुक्त वर मिलने पर उसका विवाह कर दिया जायेगा।

राधा उस दिन भी भगवती से मिलने के लिए गई। परन्तु भगवती ने उसे समझा-बुझाकर शीघ्र ही घर वापस भेज दिया। उसने कहा, "छोटे बच्चे किसी का शोक मनाने नही जाया करते।"

"परन्तु मौसी ! वे परलोक सिधार गये हैं क्या ?"

भगवती राधा का मुख देखती रह गई। इस पर राधा ने कहा, "मैं तो शोक प्रकट करने नही आती। मैं तो सदा की भाँति ठाकुरजी की उपासना करने के लिए आती हूँ।"

"तो फिर दिन-भर यहाँ बैठी नही रहा करो। राधा ! जिस बात का मैं प्रमाण नही दे सकती, उसको जन-साधारण मे कह भी नहीं

सकती। वैसे मुझे भी यही प्रतीत हो रहा है कि उसके मरने के समाचार मे कही कोई भूल है।"

"तो फिर मै क्या करूँ?"

"अभी कुछ दिन प्रतीक्षा करो। मै तुम्हारी माँ से भी बात करूँगी।"

४

लार्ड गौर्ट का बैटल-शिप मरम्मत होकर भूमध्यसागर की ओर भेज दिया गया। उसी लड़ाकू जहाज पर मिस्टर स्टैनले को किसी साधारण काम पर नियुक्त कर दिया गया।

फरवरी १९४१ की बात है कि गौर्ट का बैटल-शिप एच० एम० एस० इलस्ट्रियस दनदनाता हुआ भूमध्यसागर मे घूम रहा था। इस जहाज ने जेनेवा पर गोलाबारी की तो उसका समाचार प्रकाशित हो गया। हिटलर और उसके साथी मुसोलिनी तथा जर्मन-अधिकारी उस जहाज के डूबने की खुशियाँ मना चुके थे। जर्मन 'लुटवाफ' ने यह सूचना भेजी थी कि इंगलैड का सबसे बडा बैटल-शिप एच० एम० एस० इलस्ट्रियस डुबो दिया गया है। रोम पर गोलाबारी करते समय इस जहाज का नाम पढा गया तो सब चकित रह गए। कुछ ने तो यह भी कहा कि सम्भवतया पुराना नाम ही किसी नये जहाज पर लिख दिया होगा।

इस पर भी जेनेवा पर की गई गोलाबारी मुसोलिनी की प्रतिष्ठा को धक्का लगाने वाली सिद्ध हुई। क्रिनिशिया को मित्र-राष्ट्रो की मध्य-पूर्वी सेना ने अपने अधीन कर लिया। वहाँ पर शत्रु-सेना जो मार्शल ग्रजानी के अधीन लड रही थी उसका सफाया कर दिया गया।

जेनेवा से लार्ड गौर्ट को आज्ञा हुई कि वह सिकन्दरिया को चला जाए। बैटल-शिप एच० एम० एस० इलस्ट्रियस सिसली के दक्षिण मे माल्टा को जा रहा था कि जहाज के सागर-निरीक्षक ने टॉवर पर से रिपोर्ट की कि लगभग पाँच मील के अन्तर पर एक लाइफ बोट मे कुछ लोग दिखाई दे रहे है।

कप्तान ने आज्ञा दे दी—जहाज उधर ले चलो। बीस मिनट के बाद

यह सूचना मिली कि लाइफ-बोट पर पाँच व्यक्ति है, वे सब-के-सब लेटे हुए हं। सम्भवत मर गए हो।

उसने आज्ञा दे दी कि उस नौका को पकड लिया जाय। पांच मिनट बाद ही बैटल-शिप उस किश्ती के पास जा पहुँचा। रस्सो की सीढियाँ नीचे डाली गई। नाविक उसके द्वारा उतरकर किश्ती को खीचकर समीप ले आये। उसमे पाँच व्यक्ति ही थे। उनमे चार तो इटैलियन सैनिक-अधिकारी थे और एक हिन्दुस्तानी अग्रेज-सेना का अधिकारी था। पाँचो अचेत पडे थे। उनको रस्सो से बाँधकर ऊपर खीच लिया गया और उस किश्ती को भी बैटल-शिप पर चढा दिया गया।

डॉक्टर उन अचेत व्यक्तियो की चिकित्सा करने लगा। डॉक्टर का कहना था कि पीने का जल न मिलने के कारण वे लोग अचेत हो गए है। उनके पेट मे जल पहुँचाया गया। सबसे पहले हिन्दुस्तानी आफिसर को चेतना हुई। चार इटेलियन मे से केवल दो को ही सचेत किया जा सका। अन्य दोनो मर गये।

जिस समय वह हिन्दुस्तानी आफिसर सचेत हो रहा था तो उस समय मिस्टर स्टैनले विस्मित दृष्टि से उसको देख रहा था। उसने पहचान लिया, वह मथुरासिंह था। पहले तो स्टैनले सोचता था कि यह भ्रम है। मथुरासिह बहुत दुर्बल हो गया था। भूख और प्यास के कारण उसका मस्तिष्क भी काम नही कर रहा था। सचेत होने पर भी वह अपना परिचय भली-भाँति नही दे सका।

जल के बाद उसके पेट मे हॉरलिक्स पहुँचाया गया और उसको जहाज के अस्पताल मे आराम से लेटे रहने के लिए कहा गया। स्टैनले को जब विश्वास हो गया कि वह मथुरासिंह ही है, तो वह गौर्ट को एक ओर ले जाकर बताने लगा, "मित्र! यही वह हिन्दुस्तानी युद्ध नीति-विशेषज्ञ आफिसर है, जिसके विषय मे मैने तुम्हे बताया था। अब वह बच रहा प्रतीत होता है।"

"तब तो हमने अपनी सरकार का बहुत बडा हित किया है।"

"परन्तु एक बात मै बता दूं। यह अफसर कुछ दिन के लिए मेरा अतिथि बनकर हमारे घर पर रहा था और तब से ही फ्लोरा इसके प्रेम-पाश मे फंस गयी थी। यही कारण था कि उसने विलियम से विवाह को अस्वीकार कर दिया था। यदि इसे अब जीवित घोषित किया गया तो निश्चित ही अभी भी फ्लोरा विलियम का विचार छोड देगी।"

"तो ऐसा करते है कि विलियम को लन्दन मे सन्देश भेज देते है कि वह तुरन्त फ्लोरा से विवाह कर, उसे प्रसन्न रखने का यत्न करे। विवाह के बाद ही हम उसके जीवित होने की सूचना देगे।"

"न जाने विवाह मे कितनी देर लगे। क्या तब तक हम इसको छिपाकर रख सकेगे ?"

"यह तुम मुझ पर छोड दो।"

"ठीक है। मेरी तो यही इच्छा है कि स्टैनले-रक्त मे काला हिन्दुस्तानी रक्त न मिल सके।"

इसके बाद लार्ड गौर्ट और स्टैनले दोनो अस्पताल की ओर गए। मथुरासिह के पेट मे एक सप्ताह से भी अधिक काल से जल तथा अन्न नही गया था। आज हॉरलिक्स पीने से उसे तृप्ति अनुभव हुई और वह सुख की नीद सो गया। डॉक्टर ने जहाज के कप्तान को बताया कि पाँच मे से दो तो पेट मे जल के पहुँचते ही वमन कर मर गये। दो जीवित तो है पर अभी सचेत नही हो पाये। यह व्यक्ति सबसे पहले सचेत हुआ है। सचेत होते ही उसने कहा कि वह युद्ध-बन्दी है। इसके बाद भी वह कुछ कहता रहा जो हमारी समझ मे नही आया। यह अपनी भाषा मे कह रहा था। जब मैंने उसको आराम करने के लिए कहा तो वह सो गया है।

"अच्छा देखो," कप्तान ने कहा, "जो कुछ यह कहे उसे लिखते जाना। किन्तु किसी को इसके बारे मे कुछ बताना नही। इसका नाम-धाम भी किसी को नही बताना।"

डॉक्टर को निर्देश कर गौर्ट ने किश्ती पाने की सूचना तो दे दी, पर पाये गए सैनिकों के विषय मे केवल यह सूचना भेजी कि दो मर गये है

और तीन जीवित है, परन्तु वे भी अचेत है।

इसके साथ ही उसने एक पत्र अपने पुत्र और एक अपनी पत्नी के नाम भेज दिया। उन पत्रो मे उसने लिखा था कि शीघ्रातिशीघ्र विलियम का विवाह फ्लोरा के साथ हो जाना चाहिए।"

रोम पर बमबाज़ी और किश्ती की घटना तथा उसके निजी पत्र मालटा से इगलैंड भेज दिए गए। एक दिन कोयला इत्यादि भरकर उनका जहाज़ सिकन्दरिया के लिए चल पडा।

सिकन्दरिया पहुँचने से पहले ही मथुरासिह होश मे आ गया था। अब स्टैनले उसके सम्मुख नही जाता था। उसको उन योरुपियन कैदियो के साथ रखा गया था जो बच गए थे। वे सभी बहुत दुर्बल हो गये थे। उन लोगो को डैक पर आने की आज्ञा नही थी। लार्ड गौर्ट को मथुरासिह ने अपनी कहानी इस प्रकार बताई—"मेरा नाम ब्रिगेडियर जनरल मथुरासिह है। मैं बेनगाज़ी के युद्ध मे लडता-लडता सबसे आगे निकल गया था। जब इटैलियनो को भगा दिया गया अथवा बन्दी बना लिया गया तो मैं पीछे हटने के लिए लौट रहा था। उस समय नगर की एक गली मे से कुछ स्त्रियो की चीख-पुकार मुझे सुनाई दी। मैं अपने साथ कुछ हिन्दुस्तानी सैनिको को लेकर उस मकान की ओर गया जिसमे से वह पुकार सुनाई दे रही थी। हमारे वहाँ पहुँचने पर द्वार के समीप ही लगी सुरग फट पडी और मकान का अगला भाग गिर गया। मेरे साथ उस स्थान पर गये हुए सैनिक मलबे मे दब गए। मैं और एक अन्य सैनिक बच गये थे। हम उस मकान मे औरतो को बचाने के लिए घुस गए।

"मकान गिरने से जो धूल उडी उससे कुछ दिखाई नही देता था। इस समय मकान के भीतर गोली चलने का शब्द हुआ और एक स्त्री गिरकर मेरे सामने आ गई। हम दोनो ने भी बिना किसी को लक्ष्य किये अपने पिस्तौल चला दिये। इतने मे किसी ने मुझे पीछे से पकडकर रस्सो से बाँध दिया। मुझे वहाँ से उठाकर उसी मकान के पीछे खडी एक जीप मे डालकर किसी ओर ले जाया गया। इस प्रकार दो घण्टे की भाग-दौड

के बाद हम 'जैमिनीस' मे पहुँचे।

"मुझे पूछा गया कि मैं कैदी होना पसन्द करूँगा अथवा, मरना। इसके बाद ही मेरे सीने पर पिस्तौल तान दी गई। मैने कहा कि मैं युद्ध मे पकडा गया हूँ इसलिए नियमानुसार मै युद्ध बन्दी हूँ।

"इस पर मेरे सब हथियार और जेब की अन्य सब सामग्री भी मुझसे छीन ली गई। फिर मुझे एक किश्ती मे डाल दूर खडे युद्ध-पोत मे ले जाया गया। हमारा जहाज़ जेनेवा की ओर ले जाया जा रहा था कि एक अंग्रेज पनडुब्बी के 'टारपीडो' का निशाना बन गया। जहाज तो डूब गया परन्तु हम किश्तियो मे सवार हो गए। दस किश्तियाँ थी परन्तु हवा तथा समुद्र की लहरो ने सबको छिन्न-भिन्न कर दिया। हमको इस किश्ती मे तैरते हुए बीस दिन हो गये थे। दो सप्ताह बाद हमारा राशन-पानी बन्द हो गया और तीन दिन भूखे रहने के बाद हम लोग अचेत हो गए। हम नही जानते कि फिर हमको कब बचाया गया।"

यह कथा सुन लार्ड गौर्ट ने कहा, "मैं तुम्हारी कहानी लिखकर लन्दन भेज दूंगा। जब तक वहाँ से कोई आज्ञा नही आ जाती तब तक तुमको हमारा कैदी समझा जाना चाहिए और तुम्हे अपने विषय मे किसी को कुछ नही बताना होगा। तुम ऊपर के तख्त पर नही जा सकोगे। तुमको इसी कमरे मे रखा जायेगा।"

मथुरासिह को पूर्ण आशा थी कि लन्दन मे सूचना पहुँचने पर उसे तुरन्त बुला लिया जायेगा।

सिकन्दरिया से लन्दन रिपोर्ट भेजी गई। इस पर भी किसी प्रकार से मथुरासिह का नाम-धाम नही लिखा गया। केवल यह लिखा गया कि हिन्दुस्तानी अधिकारी इटेलियनो का-सा कैदी प्रतीत होता है। वह किसी प्रकार की सगत अथवा युक्ति-युक्ति बात नही करता।

सिकन्दरिया मे एक सप्ताह रहने के बाद एच० एम० एस० इलस्ट्रियस मालटा को वापस लौट पडा। वहाँ से वह जिबराल्टर पहुँचा। वहाँ पर जहाज़ के कप्तान को लन्दन से एक डिस्पैच मिला उसमे लिखा था—

इटेलियन और हिन्दुस्तानी कैदियो को लन्दन भेजने का प्रबन्ध कर दिया जाय।

यही पर गौर्ट को उसकी पत्नी और पुत्र के पत्र भी मिले। उसमे लिखा था कि बिना किसी आडम्बर के विलियम और फ्लोरा ने परस्पर विवाह कर लिया है। यद्यपि विलियम नेवी मे है परन्तु उसकी नियुक्ति अभी लन्दन हैड-क्वार्टर्स मे ही हुई है। फ्लोरा उसके साथ ही है।

स्टैनले को जब यह समाचार मिला तो उसे शान्ति मिली। अब वह स्वय को मथुरासिह से छिपाकर रखने मे कोई लाभ नही समझता था। जिस समय मथुरासिह तथा उसके साथियो को जिबराल्टर के बन्दरगाह पर उतारा जा रहा था उस समय स्टैनले और मथुरासिह मे परस्पर भेंट हो गई। मथुरासिह ने उसे डैक पर खडा देखा तो विस्मय करता रह गया। स्टैनले ने भी उसे देख औपचारिक विस्मय व्यक्त किया। स्टैनले ने आगे बढकर मथुरासिह से हाथ मिलाया और प्रसन्नता प्रकट करता हुआ कहने लगा, "तुम जीवित हो, यह बहुत ही विचित्र घटना है!"

"परन्तु मिस्टर स्टैनले! आप यहाँ क्या कर रहे है?"

"मैं आज कल इसी एच० एम० एस० इलस्ट्रियस मे कार्य कर रहा रहा हूँ।"

"परन्तु मै तो इस जहाज़ मे पिछले एक मास से बन्दी हूँ?"

"ओह, तो तुम ही वह हिन्दुस्तानी बन्दी हो जो किसी इटेलियन नौका मे समुद्र मे तैरते हुए पाये गए थे?"

तो आपको विदित नही था क्या?"

"जहाज के कप्तान ने तो यह समझा था कि तुम इटेलियन सरकार की नौकरी मे हो और इस जहाज के रहस्य को किसी प्रकार शत्रु के पास भेज न सको इस कारण तुम्हारे विषय मे सब-कुछ गुप्त रखा गया हैं।

"आओ, मैं तुम्हारा इस जहाज के कप्तान से परिचय करा देता हूँ।"

"एक परिचय तो मेरा उससे है।"

"क्या?"

"यही कि मै एक काली जाति का व्यक्ति झूठ-मूठ का ब्रिगेडियर बनकर अंग्रेज़ी सेना पर जासूसी कर रहा हूँ।"

"युद्ध-काल मे ऐसा सन्देह कर लेना स्वाभाविक है। आओ, मैं तुम्हारा वास्तविक परिचय उससे करा देता हूँ।"

नौ-सैनिको की देख-रेख मे मथुरासिह को जहाज से उतारा जा रहा था। स्टैनले के कहने पर उसे बन्दी के रूप मे ही कप्तान के सम्मुख ला खडा कर दिया गया। जब लार्ड गौर्ट ने स्टैनले की ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा तो उसने कहा, "सर कैप्टन! यह बन्दी तो मेरा परिचित हमारी अंग्रेजी सेना का एक उच्चाधिकारी है। इनका नाम है मिस्टर एम० सिह। आपका इन पर शत्रु की ओर से जासूस होने का सन्देह निराधार है। ये वही सिह है जिनकी योजनानुसार अफरीका आक्रमण चालू है।"

"ओह! तो आप यह बात विश्वास के साथ कह सकते है?"

"हाँ, जबलपुर मे ये मेरे शिष्य रहे है। बेनगाज़ी के आक्रमण के बाद लन्दन मे इनके विषय मे यह सूचना थी कि ये युद्ध मे मारे गए है। इन्हें जीवित देखकर आपको प्रसन्नता होनी चाहिए। मुझे विश्वास है कि लन्दन मे भी इनके जीवित होने की सूचना से प्रसन्नता की लहर दौड़ जायेगी।"

लार्ड गौर्ट ने उस डिस्पैच को पुन खोल लिया जिसे वह इटेलियन बन्दियो के साथ भेज रहा था। उसने उसमे एक पत्र के पार्श्व मे लिख दिया—जिस समय मिस्टर सिह को जिबराल्टर के अधिकारियो के हाथो मे सौपा जा रहा था, ठीक उस समय मिस्टर जे० डब्ल्यू०स्टैनले ने उनको पहचान लिया। अब मिस्टर सिह के विषय मे जानकारी प्राप्त हो जाने के बाद मै उनको बन्दी बनाये रखने की धृष्टता नही कर सकता। अतः मैं यह डिस्पैच मिस्टर सिह के हाथ ही भेज रहा हूँ।

डिस्पैच बन्द कर तथा एक अन्य खुला पत्र पार-पत्र के रूप मे मिस्टर सिह को दे दिया गया और लार्ड गौर्ट ने अपनी कुरसी से उठकर उससे हाथ मिलाया और फिर उसको विदा कर दिया। नौ-सैनिको को समझा

दिया गया कि मिस्टर सिंह ही उन कैदियो को लेकर लन्दन जा रहे हैं।

५

मथुरासिंह अपने साथ जहाज पर किये गए व्यवहार से अत्यन्त ग्लानि अनुभव कर रहा था। किसी-न-किसी प्रकार यह बात उन सैनिकों को भी पता चल गई थी कि वह हिन्दुस्तानी है और कदाचित् इटेलियन सरकार से जहाज़ पर जासूसी करने के लिए वह इस रूप से भेजा गया है। अत जहाज पर एक महीने-भर के निवास मे उससे घोर अपराधी का-सा व्यवहार किया गया। उससे अच्छा खाना-पहरना तो उन इटेलियन अफसरो को मिलता था जिनका वह कैदी था। इगलैंड के जहाज़ पर तो उसके साथ उससे भी बुरा व्यवहार किया गया था जो कि इटेलियन जहाज़ पर हुआ था।

अब स्टैनले के पहचानने पर जब उसको एक प्रतिष्ठित उच्चाधिकारी घोषित किया गया तो सब उसका मान करने लगे। यह अंग्रेज़ी नियन्त्रण का चमत्कार था। जो जहाज़ी अधिकारी उसको देख पहले उसको कच्चा चबा जाने का भाव रखते थे, वे ही अब उसको सैनिक सलामी देने लगे।

जहाज से उतरकर उसे सीधा जिबराल्टर के गवर्नर के पास ले जाया गया और जब उसने लार्ड गोर्ट द्वारा दिया गया खुला पत्र उसको दिखाया तो उसने उठकर मिस्टर सिंह से हाथ मिलाया। उसको अपने पास बैठाकर उसका स्वास्थ्य-समाचार पूछा जाने लगा। फिर गवर्नर ने बताया, "मुझे आज्ञा हुई है कि आपको तथा आपके साथ उन बन्दियो को शीघ्रातिशीघ्र प्रथम हवाई जहाज से लन्दन के लिए रवाना कर दिया जाय। कदाचित् लन्दन मे अभी आपका वास्तविक परिचय नही भेजा गया है। खैर, आधे घण्टे मे एक प्लेन यहाँ से लन्दन के लिए जाने वाला है। मैं आप लोगो के लिए उसमे प्रबन्ध करवा देता हूँ। तब तक आप लोग चाय-पानी लीजिए।"

इसके बाद आँधी की गति के समान उनके भेजने का प्रबन्ध होने लगा।

इटेलियन बन्दी भी मथुरासिह की बदलती स्थिति को देखकर चकित थे। मथुरासिंह ने चाय पी और फिर वे यथासमय हवाई अड्डे पर जा पहुँचे। वहाँ से उसी दिन सायकाल वे लन्दन पहुँच गये। बन्दियो को मिस्टर सिह ने बन्दी-कैम्प मे पहुँचाया और स्वय लार्ड इज्मे के सामने जाकर उपस्थित हो गया। उसे देख लार्ड इज्मे विस्मय करने लगा। सिह ने लार्ड गौर्ट का डिस्पैच और अपना परिचय-पत्र दिखाया तो उसे पढकर लार्ड इज्मे ने मथुरासिंह के जीवित होने पर उसे बधाई दी और उठकर हाथ मिलाया।

मथुरासिह ने सबसे पहले अपने पिता के पास जमादारपुर एक केबल और फ्लोरा को उसके बोनैस के पते पर तार दे दिया। वह पुन मिलिटरी होस्टल मे ठहरा था।

मथुरासिह आशा करता था कि अगले दिन फ्लोरा उससे मिलने के लिए आयेगी। परन्तु जब तीन दिन तक भी वह नही आई तो उसको विस्मय होने लगा। हिन्दुस्तान से उसके पिता का केबल आ गया था। उन्होने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए ईश्वर को धन्यवाद दिया था।

तीन दिन आराम कर मथुरासिह चीफ ऑफ दि स्टॉफ के पास जा अपना भावी कार्यक्रम पूछने लगा। उसको बताया गया कि उसको पन्द्रह दिन का अवकाश दिया जा रहा है, जिससे वह किसी एकान्त स्थान पर जाकर विश्राम कर सके।

मथुरासिह ने सैल्यूट किया और उसके कमरे से निकल आया। द्वार पर ही उसको लार्ड इज्मे मिल गए। उसने बताया कि आज रात के भोजन पर प्रधान-मत्री ने उसको आमन्त्रित किया है। लिखित निमत्रण-पत्र होस्टल पर भेज दिया गया है।

मथुरासिह ने कहा, "मैं होस्टल मे जा रहा हूँ। निमत्रण मिलने पर अवश्य उपस्थित होऊँगा।"

"विश्राम के लिए कहाँ जाने का विचार कर रहे हो ?"

"मैं चाहता था कि बोनैस चला जाऊँ। परन्तु वहाँ से मेरे तार का कोई उत्तर नही आया।"

"वहाँ किसको तार दिया था ?"

"मिस स्टैनले को।"

"वह तो लन्दन मे है।"

"अच्छा ? कहाँ है वह ?"

"मिस्टर विलियम गौर्ट से उसका विवाह हो गया है। वह आज-कल एडमिरैलिटी मे कार्य कर रहा है।"

मथुरासिंह भौचक्का हो मुख देखता रह गया। इज्मे ने उसको चुप देख पूछ लिया, "क्यो, क्या बात है। यदि तुम पसन्द करो तो मै तुमको अपने कन्ट्री हाउस मे रहने का निमन्त्रण दे सकता हूँ। केवल एक बात है, वहाँ नौकर ही है, मेरी पत्नी मेरे साथ ही रहती हैं।"

"मै आपका अत्यन्त आभारी हूँ। वहाँ कम-से-कम एकान्त और आराम तो मिलेगा ही।"

"बहुत अच्छी तरह से। इसके अतिरिक्त वहाँ कुछ शिकार की सुविधा भी मिल जायेगी।"

"इटेलियनो के शिकार के बाद इन खरगोशो के शिकार मे क्या आनन्द आयेगा ?" मुस्कराकर मथुरासिंह ने कहा।

"इसके अतिरिक्त वहाँ और करने के लिए कुछ होगा नहीं।"

"आपके यहाँ कोई पुस्तकालय नही हैं क्या ?"

"हाँ, बहुत अच्छा पुस्तकालय है।"

"यदि उसके प्रयोग की मुझे स्वीकृति मिल जाये तो काम बन जायेगा।"

"हाँ-हाँ, क्यो नही। रात को भोजन के समय मै आपको अपने बटलर के नाम पत्र दे दूँगा।"

"धन्यवाद।"

अब मथुरासिंह का बोनैस से तार का उत्तर न पाने की बात समझ मे आ गई। वह विचार करता था कि कदाचित् श्रीमती स्टैनले भी अपनी पुत्री के साथ ही होगी। वह मन मे विचार करता था कि कितना

आग्रह था फ्लोरा का विवाह के लिए। दो मास मे ही वह आग्रह विलीन हो गया। यह भी कदाचित् इगलैंड के स्वभाव मे है। वह एच० एम० एस० इलस्ट्रियस मे देख चुका था कि किस प्रकार उसके प्रति घृणा का व्यवहार प्रतिष्ठा मे परिणत हो गया था।

इस पर भी वह फ्लोरा को दोषी नही समझता था। उसको भी विश्वास हो गया होगा कि वह अब इस लोक मे नही है। आखिर वह करती भी क्या। उसने पुन विलियम पर दृष्टि डाली होगी और विलियम ने ही उसको पुन खो जाने की आशका पर विवाह के लिए जल्दी मचा दी होगी।

इस पर उसको राधा का विचार आ गया था। वह मन मे विचार करता था कि उस बेचारी पर तो भारी मुसबीत आ पडी होगी। उसके माता-पिता ने तो उसका कही अन्यत्र विवाह करने का प्रस्ताव किया होगा क्या वह भी मान गई होगी ? अथवा उसके जीवित होने का समाचार समय पर पहुँच गया होगा। क्या राधा भी किसी के घर की शोभा बन चुकी होगी ?

इस प्रकार के विचारो को अपने मन से निकाल वह होस्टल के लिए चल पडा। वहाँ जाकर उसको पता चला कि रिसेप्शन-हॉल मे मिसेज स्टैनले उसकी प्रतीक्षा कर रही है।

अपने कमरे मे जाता-जाता वह घूमकर रिसेप्शन-हॉल मे चला आया। मिसेज स्टैनले उसे देखकर उठ खडी हुई और उसके जीवित होने पर उसे बधाई देने लगी। उसने उससे हाथ मिलाया। मथुरासिह ने जब उसका धन्यवाद किया तो फिर वे पूछने लगी, "कहाँ है तुम्हारा कमरा ?"

"सैकेण्ड फ्लोर पर कमरा न० १२० है।"

"तो चलो, वहाँ बैठकर बाते करेगे।"

कमरे मे पहुँच श्रीमती स्टैनले को बैठाकर उसने बताया, "यहाँ पहुँचते ही मैंने बोर्नेस मे अपने लन्दन पहुँचने की सूचना तार द्वारा भेजी थी।"

'वहाँ आजकल कोई नही है। डाकखाने मे हमारा पता था। इस-

लिए डाक द्वारा उन्होने वह तार लन्दन भेज दिया है। कल मुझे तार मिला तो मै आज तुम्हे बधाई देने के लिए चली आई।"

"फ्लोरा कैसी है ?"

"बहुत मज़े मे है।"

"और उसके पति मिस्टर विलियम गौर्ट ?"

"तो तुमको पता चल गया है ?"

"हाँ, मुझे आज ही पता चला है कि उन दोनो का विवाह हो गया है।"

"एक बात का तुम्हे कदाचित् ज्ञान न हो। हमारे सुपुत्र जॉन का देहान्त हो गया है। हमारा परिवार अब फ्लोरा के द्वारा ही चल सकता था, इस कारण उसका विवाह करना आवश्यक हो गया था।"

"हाँ, इस परिस्थिति मे फ्लोरा को विवाह कर ही लेना चाहिए था। यद्यपि मुझे कुछ भला नही लगा। पर भाग्य को कौन टाल सकता है। अच्छा मोम ! मेरी ओर से उसको बधाई देना। यदि वह नापसन्द न करे तो उसके पति के साथ उसको कल लच अथवा डिनर का मैं निमत्रण देना चाहूँगा।"

श्रीमती स्टैनले ने सुख का साँस लेते हुए कहा, "तुम लिखकर दे दो। यदि उसे स्वीकार हुआ तो वह तुम्हे फोन पर स्वीकृति दे देगी।"

मथुरासिह ने कागज लिया और उस पर फ्लोरा को पति-सहित निमन्त्रण दे दिया। फिर इधर-उधर की बाते होने लगी। मथुरासिह ने श्रीमती स्टैनले को एच० एम० एस० इलस्ट्रियस जहाज पर उसके पति के मिलने की सूचना दी। जिसका उसने कोई उत्तर नही दिया।

रात को प्राइम-मिनिस्टर के आवास पर भोजन के समय कई लोग थे। मथुरासिह वहाँ पहुँचा तो तुरन्त भावी कार्य-क्रम पर सामान्य विचार होने लगा।

प्राइम-मिनिस्टर ने कहा कि लक्षण कुछ ऐसे प्रतीत होने है कि रूस और जर्मन मे शीघ्र ही ठन जायेगी।"

"यह बहुत ही भयकर परिस्थिति होगी।" मथुरासिंह का कहना था।

"क्यो, इससे जर्मन का पक्ष दुर्बल नही हो जायेगा क्या ?"

"वह तो हो जायेगा परन्तु रूस के साथ हमारा क्या व्यवहार होगा ?"

"हमारे शत्रु-का-शत्रु हमारा मित्र होगा।"

"यही तो इसमे भयकरता है। शत्रु-का-शत्रु मित्र नही प्रत्युत शत्रु है।

"जर्मनी से इगलैंड का मतभेद कोई सिद्धान्त का नही, यह तो महत्वा-कांक्षा का है। इगलैंड के विश्वव्यापी साम्राज्य को देख-देख जर्मनो के सीनो मे आग जला करती है। रूस से हमारा मतभेद है जीवन-मीमासा पर। यदि कही ऐसा हो गया कि जर्मन को परास्त करने के लिये आपने रूस का साथ दिया तो आप साँप की सहायता के लिए न्यौले को गोली मारने की भूल करेंगे।"

मथुरासिंह की बात सुनकर सब मौन हो गये। मन्त्रि मण्डल के एक सदस्य ने पूछा, "रूस से हमारा क्या मतभेद है ?"

"इगलैंड का विश्वास पार्लियामेन्ट्री डेमोक्रेसी मे है और रूस का विश्वास मजदूर वर्ग की तानाशाही मे है। दोनो मे दूर का भी मतैक्य नही। यहाँ विचार स्वातन्त्र्य का मूल्य आँका जाता है, वहाँ विचार-नियन्त्रण की महिमा है।"

"यह तो उपायो मे अन्तर है।" उसी मन्त्री ने कहा, "सिद्धान्त मे हम और वे एक ही उद्देश्य के लिए अर्थात् कल्याणकारी राज्य के लिये यत्नशील हैं।"

"परन्तु वे तो लोक कल्याण के लिए यत्नशील नही है। वे तो सोशियलिस्टिक राज्य की स्थापना के लिए यत्न कर रहे है।"

"तो क्या सोशियलिस्टिक राज्य कल्याणकारी राज्य नही माना जाता ?"

"दोनो मे आकाश-पाताल का अन्तर है। जन-जन का कल्याण उनकी शक्ति पर अधिकार जमा लेने मे नही अपितु उनकी शक्ति मे वृद्धि करने और उनको शक्ति का सदुपयोग सिखाने मे है। जन-कल्याण जन-जन मे नैतिकता उत्पन्न करने मे है न कि उन पर 'डिक्टेटरशिप' स्थापित करने मे।

"एक बात और ! समाज केवल मज़दूर-वर्ग से ही नही बना हुआ है। समाज मे चार वर्ग होते है। एक तो है विद्वान लोग, जो अपनी विद्वत्ता से राष्ट्र की सेवा करते है। ये लोग सर्वथा स्वतन्त्र होने चाहिये। दूसरा वर्ग है क्षत्रिय वर्ग, यह वर्ग युद्ध-सचालन करना तथा राष्ट्र की बाहरी और भीतरी शत्रुओ से रक्षा करने के लिये है।

"तीसरा वर्ग, राष्ट्र का धन-उपार्जन करने वाला और चौथा वर्ग है मज़दूर-वर्ग। इन चारो वर्गों के समन्वय का नाम राष्ट्र है।"

प्राइम-मिनिस्टर ने बात बदलकर कहा, "यदि हम रूस के साथ मैत्री कर जर्मन को परास्त करा दे तो क्या बाद मे युद्ध से दुर्बल हुए रूस को हम परास्त नही कर सकते है?"

"ऐसा सम्भव तो है पर इसके लिए सतत सतर्क रहने की आवश्यकता है। यह प्राय असम्भव है। विचारधारा एक ऐसा तीखा तथा गुप्त शस्त्र है कि जो अपने घर मे पहुँचकर भी वार करता है। इस कारण यदि रूस से सहयोग करना हो तो यह सहयोग युद्ध-क्षेत्र तक ही सीमित रखना चाहिए। इसे अपने घरेलू क्षेत्र मे घुसने नही देना चाहिए।

"इगलैंड मे युद्ध की स्ट्रैटेजी है इटली को परास्त कर बलकान पर अधिकार करना। यदि इस युद्ध-नीति मे परिवर्तन न हो तो रूस से सहयोग हानिकर नही होगा।"

इस समय तक प्राइम-मिनिस्टर ने मास्को-स्थित अपने राजदूत को यह आज्ञा भेज दी थी कि रूस और जर्मनी की बढती हुई द्वेषाग्नि में घी डाला जाय।

६

"मैं अपनी मौम के साथ आपके यहाँ लच के लिए आ जाऊँगी।" फोन पर फ्लोरा कह रही थी।

"क्यो मिस्टर गौर्ट नही आयेगे क्या ?"

"वे इस समय लन्दन मे नही हे ?"

"अच्छी बात है। मध्याह्न एक बजे प्रिस होटल के द्वार पर मै आप लोगो की प्रतीक्षा करूँगा।"

ठीक समय पर माँ-बेटी आई और मथुरासिह उनको रिसेप्शन-हॉल मे ले गया। वहाँ एक कोने मे उसने फ्लोरा से कहा, "मुझे एक बात का सन्तोष है कि तुमने मेरा निमन्त्रण स्वीकार तो किया।"

फ्लोरा कहने लगी, "यह मेरा दुर्भाग्य है कि परिस्थितियो ने हमारे साथ ऐसा षड्यन्त्र किया कि मैं आसमान से गिरकर भूमि पर रेंगने के लिए हो गई हूँ।"

"देखिये, हमारे एक विद्वान् ने लिखा है कि मनुष्य को इस ससार मे अपना कर्तव्य पालन करते जाना चाहिए। उसके फल की इच्छा नही करनी चाहिए। कारण यह है कि फल हमारे अधिकार मे नही। वह तो परमात्मा की देन है।"

"मुझे परमात्मा मे विश्वास नहीं था। कदाचित् अब भी नही है। उसने मेरे जीवन के साथ खिलवाड किया है।"

"नही, आपको ऐसा नही कहना चाहिए। हमको जो कुछ भी प्राप्त होता है वह हमारे कर्मों के फलस्वरूप ही होता है। मेरा विचार है कि तुम एक निर्धन और देहाती के घर मे रहकर जीवन यन्त्रणा सहने से बच गई हो। अब तुम इगलैंड के एक अति प्रतिष्ठित लार्ड और करोड़-पति की सम्पत्ति और मान-प्रतिष्ठा की उत्तराधिकारिणी हो। लेडी गौर्ट तुम्हारी उपाधि होने वाली है। हीरे-मोती से लदी हुई तुम लन्दन के समाज का चमकता हुआ सितारा हो जाओगी। मैं समझता हूँ कि यह स्थिति बुरी नही है। हिन्दुस्तान मे, वह भी, तीस चालीस घर के गाँव

मे दो सौ वर्ग-गज्र पर बने मकान मे और अनपढ सास-ससुर की सगत मे रहने से तो यह अवस्था बहुत अच्छी है। मै सत्य-हृदय से तुमको बधाई देता हूँ।"

फ्लोरा की आँखो मे सारे समय आँसू भरे रहे। वह समझ नही सकी कि मथुरासिह उससे व्यग कर रहा है अथवा स्वय के उससे मुक्त हो जाने पर प्रसन्नता प्रकट कर रहा है। अपने गाँव और अपनी निर्धनता का चित्र तो उसने उसके सामने पहले भी रखा था। परन्तु तब और अब की परिस्थिति मे अन्तर था। वह समझती थी कि उसकी नानी और माँ उसको इतना कुछ देने वाली हैं कि वह मिस्टर सिह की निर्धनता को अतीव सम्पन्नता मे परिणत कर देती।

वह समझती थी कि माँ का यह कहना ही उसको विलियम से विवाह करने के लिए विवश करता था कि उनके परिवार मे कोई उत्तराधिकारी नही रहा। और मिस्टर सिंह भी अब इस ससार मे नही रहा। इस पर भी उसको अपनी वर्तमान अवस्था पर प्रसन्नता नही थी।

लच और उसके बाद की विदाई बहुत ही दुखपूर्ण रही। मथुरासिंह को सन्देह था कि विलियम लन्दन मे ही है परन्तु वह मूर्ख उससे मिलकर मित्रता करने की अपेक्षा उसके प्रति अपनी घृणा प्रकट करने वाला बन बैठा है।

उसी सायकाल मिस्टर सिह लार्ड इज्मे के कन्ट्री हाउस के लिए चल दिया। वहाँ बटलर को मालिक का पत्र दिखाने पर उसे प्रत्येक प्रकार की सुख-सुविधा प्राप्त हो गई। तेरह चौदह दिन मथुरासिंह के वहाँ पर बहुत ही आराम से कटे। वहाँ से उसने अपने पिता को अपने साथ घटित घटना को पूर्ण विवरण-सहित लिखकर भेज दिया। उसने यह भी लिखा कि इस समय वह पन्द्रह दिन की छुट्टी एक देहात मे व्यतीत कर रहा है। अपने नित्य की दिनचर्या भी उसने उनको लिखी। अन्त मे उसने लाला देवीदयाल, चाची मक्खनी व राधा आदि को यथायोग्य नमस्कार लिखा।

अभी उसके अवकाश के पन्द्रह दिन व्यतीत नही हुए थे कि उसको लन्दन पहुँचकर लार्ड इज्मे के समक्ष उपस्थित होने की आज्ञा मिल गई। इस प्रकार वह उन्नीस मार्च को लन्दन पहुँच गया। बीस तारीख को वह लार्ड इज्मे के सम्मुख उपस्थित हुआ तो वह उसे 'चीफ्स आफ दि स्टाफ' की विशेष बैठक मे लेकर जा पहुँचा। उस दिन प्राइम-मिनिस्टर उस मीटिग मे स्वय उपस्थित था।

मिस्टर सिह के वहाँ पहुँचते ही प्राइम-मिनिस्टर ने उसे बैठने का सकेत कर पूछा, "मिस्टर सिंह! हम आशा करते है कि अब आप कार्य करने के लिए स्वय को सब प्रकार से सबल पाते होगे।"

"आपका कथन यथार्थ है, श्रीमान्!"

"आप किसी फ्रन्ट पर जाना पसन्द करेंगे अथवा 'चीफ्स आफ दि स्टाफ' की सहायता के लिए लन्दन मे रहना?"

"मैने सेना मे कार्य करने के लिए अपनी सेवाये अर्पित की है। इस सेना के कार्य के अन्तर्गत क्या-क्या कार्य आते है और युद्ध की सफलता के लिए मैं किस कार्य मे भली प्रकार सहायक हो सकता हूँ, यह बात मेरे अधिकारियो के लिए विचार करने की है। मुझे जो आज्ञा होगी मै उसका पालन अपनी पूर्ण सामर्थ्य से करूँगा।"

प्राइम-मिनिस्टर ने कहा, " 'चीफ्स आफ दि स्टाफ' का यह विचार है कि आप इस आयोग मे भली-भाँति कार्य करेगे। अत आप की नियुक्ति 'युद्ध-नीति पारगत' के रूप मे इस आयोग मे की जाती है।"

उसी समय मथुरासिह को रहस्य गुप्त रखने की शपथ दिलाई गई और फिर आयोग के सचिव ने उस दिन की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा, "हमे यह सूचना प्राप्त हुई है कि हिटलर अपनी सेनाये ट्युनेशिया और लीबिया मे भेज रहा है। उसकी वर्तमान नीति यह प्रतीत होती है कि रूस पर आक्रमण से पूर्व ही बालकान राज्यो को अपने अधीन कर लिया जाय।

"लीबिया मे इटली की पिछली पराजय का कलक धोने के लिए हिट-

लर ने ट्युनेशिया मे एक प्रबल सेना भेजी है।"

इस सूचना पर विचार होने लगा। 'चीफ्स आफ दि स्टाफ' का कार्य राजनीतिक निर्णय करना नही था। उसका अधिकार तो मन्त्रिमण्डल तथा पार्लियामेट को ही था। इस पर यह आयोग सिफारिश कर सकता था कि अमुक निर्णय सैनिक दृष्टि से हितकर होगा अथवा अहितकर।

प्राइम-मिनिस्टर ने मन्त्रि-मण्डल का प्रश्न प्रस्तुत करते हुए कहा, "क्या यह उचित होगा कि ट्युनेशिया पर लीबिया से आक्रमण किया जाय अथवा लीबिया मे अपनी सैनिक स्थिति सुदृढ कर ग्रीस की सहायता की जाय?"

कई प्रकार के विचार उपस्थित किये गए। लेबर पार्टी के प्रतिनिधि का यह मत था कि उनको फ्रास मे उतरने की योजना बनानी चाहिए। घर से दूर की दो-चार विजयो से जनता के मन मे उत्साह और विश्वास पैदा नही किया जा सकता।

इस वाद-विवाद मे जब मथुरासिह की ओर अपेक्षा की दृष्टि से देखा गया तो उसने कह दिया, "जहाँ तक घर पर विश्वास का सम्बन्ध है, वह सरकार के प्रचार-विभाग का कार्य है। जहाँ तक युद्ध की अन्तिम विजय का सम्बन्ध है, यह तो शत्रु के दुर्बलतम अग पर आघात करने से ही हो सकता है।

"यूनान परास्त होगा। वहाँ का राज्य हमारा मित्र है और उसमे कुछ सेना भेज तथा वहाँ की भूमि रक्त-रजित करने पर हम उसकी रक्षा नही कर सके तो हम बदनाम हो जायेगे। अपने मित्रो मे बदनाम होना तो ठीक नही।

"जहाँ तक सैनिक-अभियान का सम्बन्ध है, हमने उत्तरी अफरीका मे एक प्रबल सेना एकत्रित कर ली है। वहाँ सेना भेजने के स्रोत और मार्ग अभी चिरकाल तक खुले रहेगे। शत्रु की उस क्षेत्र मे पहुँच मे हम बाधा खडी कर सकते है। भूमध्यसागर मे अभी भी हमारा प्रभुत्व है। यदि हम डिगाल को समझा सके कि इटली को पराजित करने मे हम

रूस के साथ मित्रता का सम्बन्ध बनाने के लिए इगलैड के प्राइम-मिनिस्टर का रेडियो पर एक वक्तव्य प्रसारित किया गया। वह वक्तव्य निम्न प्रकार था—

'हमारा केवल एक उद्देश्य है और वह अटल है। हमारा यह निश्चय है कि हम हिटलर और नाज़ी राज्य का नामो-निशान तक मिटा देगे। हमारे निश्चय से हमे कोई डिगा नही सकता। हम हिटलर अथवा उसके साथी डाकुओ के साथ बातचीत अथवा सधि-चर्चा नही कर सकते।

'जो कोई व्यक्ति अथवा राज्य नाज़ियो के विरुद्ध खडा होगा वह हम से सहायता की आशा कर सकता है। जो कोई हिटलर के साथ होकर चलेगा उसे हम अपना शत्रु मानेगे।'

यह वीर भाषा थी। इसको सुनने वालो के रौगटे खडे हो जाते थे। मथुरासिह ने भी रेडियो पर जब वह भाषण सुना तो वह प्राइम-मिनिस्टर को बधाई का तार दिये बिना नही रह सका। वह ससैक्स मे युद्ध-प्रयास के सम्बन्ध मे गया हुआ था। उसने अपने तार मे लिखा—जो इस प्रकार की वीर भाषा मे बोल सकता है ऐसे अपने प्राइम-मिनिस्टर पर मुझे गर्व है।

इसके दो दिन बाद लन्दन आने पर मथुरासिह का प्राइम मिनिस्टर से प्रथम मतभेद प्रकट हुआ।

प्राइम-मिनिस्टर ने चीफ आफ दि स्टाफ से पूछा था कि स्टालिन पर आई हुई इस विपत्ति के समय इगलैड उसकी किस प्रकार सहायता कर सकता है? आयोग के सदस्य टैंक, तोप और हवाई जहाजो की गणना कर भिन्न-भिन्न आँकडे बता रहे थे। तब मिस्टर सिंह ने कहा, "मौखिक सहानुभूति बहुत बडी सहायता हो सकती है। इसके साथ इटली के विरुद्ध अपनी विशाल सेना का अभियान कर हम युद्ध-क्षेत्र मे भी सहायता दे सकते है। इस मोर्चे को हम जितना ही तीव्र करेंगे रूस पर हिटलर का दबाव उतना ही कम होता जाएगा।"

"परन्तु रूस तो टैंक, तोप और हवाई जहाज आदि युद्ध सामग्री माँगता है। उसका कहना है कि जर्मनी के तीन सौ से अधिक डिवीज़न रूस की सीमाओ का उल्लघन कर चुके है।"

"श्रीमान् !" मथुरासिंह ने कहा, "ये सीमाएँ पोलैण्ड, स्वेज और टर्की के रक्त से रंजित है। रूस की अपनी स्वाभाविक सीमाओ के अति-क्रमण के समय हम सहायता करेंगे किन्तु अपने ढग से।"

"मन्त्रिमण्डल का निर्णय है कि कुछ सहायता दी जाय।"

इसका अभिप्राय तो यह था कि चीफ आफ दि स्टाफ को इसकी आज्ञा दी जा चुकी है।

हिटलर का भी रूस के प्रति पक्षपात था किन्तु व्यक्ति की महत्वा-काक्षा के सम्मुख वह पक्षपात दब गया और हिटलर तथा रूस मे सधि हो गई। मिस्टर चर्चिल भी रूस मे बोलशेविक राज्य का घोर विरोधी था किन्तु उसका विरोध भी हिटलर और नाज़ी पार्टी को परास्त करने मे विलीन हो गया। यह किवदन्ति सत्य हो रही थी कि युद्ध और प्रेम मे लोग विचित्र व्यक्तियो से सहवास करने के लिए विवश हो जाते हैं। किन्तु इन अवसरो पर जो लोग अपनी बुद्धि और उद्देश्यो को नही भूलते, अन्त मे वे ही सफल होते है।

अपनी महत्वाकाक्षा के प्रभाव मे जर्मनी को सुदृढ करने का अपना उद्देश्य हिटलर भूल गया और १९४० मे जर्मनी के अधिकार को, जो 'पिरेनीज' से वारसा तक और ओसलो से ट्युनेशिया तक विस्तृत हो गया था, उसे सुदृढ करने के स्थान वह स्टालिन का विनाश करने के लिए चल पडा। उसका विचार था कि यह तीन मास मे स्टालिन को बरबाद कर चर्चिल को पदच्युत करा देगा।

वास्तव मे जर्मनी ने चौदह दिन मे रूस को परास्त कर भी दिया था। 'हल्डर' नाम के एक जर्मन जनरल ने तीन जुलाई को लिखा था— यह अतिशयोक्ति नही है कि रूस के विपरीत किया गया अभियान चौदह दिन मे ही पूर्ण हो गया था। केवल मास्को पर अधिकार करना शेष रह

गया था। परन्तु डनकिर्क की भाँति रूस मे भी हिटलर ने बहुत भूल की। उसने आक्रमण का बल मास्को पर डालने के स्थान रूस के पूर्ण राज्य पर ही दाँत रखने का निश्चय किया।

हिटलर की इस भूल का कारण था अपने साथियो की ओर से हिटलर का अज्ञात भय। इस प्रकार का भय सभी दुष्ट प्रकृति के लोगो मे होता है और इसमे ही उनकी पराजय का बीज छिपा रहता है। हिटलर को न तो मुसोलिनी पर विश्वास था, न ही फ्रास की 'विची' सरकार पर। उसका स्टालिन पर भी विश्वास नही था। वह सदा विचार करता रहता था कि वास्तव मे उसका हितैषी कोई नही है। सब स्वार्थवश उस के चारो ओर एकत्रित हो रहे है। उनमे परस्पर विचार-ऐक्य अथवा उद्देश्य की एकता नही है।

परिणामस्वरूप उसने मुसोलिनी को दी हुई अपनी सैन्य-सहायता मे मे कुछ वापस करवा ली। फ्रास से भी उसने अपनी सेना का एक अश वापस बुलवा लिया। इसका अभिप्राय यह था कि वह रूस को किसी प्रकार सबक सिखाना ही नहीं प्रत्युत उसका सर्वनाश करने का निश्चय कर चुका था।

जब हिटलर के सैनिक सलाहकारो ने उसे सम्मति दी कि प्रथम उसे मास्को पर अधिकार करना चाहिए तो उसने वह सम्मति स्वीकार नहीं की। जर्मन सैनिक विशेषज्ञो की सम्मति थी कि मास्को मे बैठकर स्टालिन से सन्धि कर ली जाय और फिर पश्चिम की ओर ध्यान दिया जाय। किन्तु हिटलर रूस को परास्त कर प्रशान्त महासागर तक पहुँचने के स्वप्न ले रहा था। उसका विचार था कि यदि वह इसमे सफल हो गया तो एटलाटिक से प्रशान्त महासागर तक जर्मन का स्वस्तिक छा जाने से पूर्ण पृथ्वी पर उसका अधिकार हो जायेगा। यह तो सर्वथा वैसा ही था जैसा हिरण्याक्ष ने पृथ्वी को रसातल मे ले जाने का विचार किया था। किन्तु उसका वह स्वप्न अपूर्ण ही रहा।

समय बीता और १९४१ से १९४२ आ गया। एक ओर लेनिनग्राड

पर प्रगति रुक गई तो दूसरी ओर स्टालिनग्राड पर भी रुक गई। जैसा डिक्टेटर के मन मे होता है ठीक वैसे ही हिटलर को अपने सैनिक अधिकारियो पर भी सन्देह होने लगा था। वह यह विचार करने लगा कि वह सब मूर्खो का टोला है। वे कुछ समझते नही। उनकी कल्पना सकुचित है, वे इस युद्ध को उसके विश्व-विजय के हेतु न मान केवल योरुप तक सीमित रखना चाहते है।

जनरल फौन बोक की योजना अस्वीकार हुई और मास्को, जो रूस का हृदय था, उसको छोडकर ऊपर और दक्षिण से आगे बढने की आज्ञा दे दी। हिटलर की पराजय से जर्मन सैनिक-अधिकारियो मे असन्तोष फैल गया।

इन सब परिवर्तनो पर लन्दन मे अध्ययन हो रहा था। 'चीफ्स ऑफ दि स्टाफ' के अधिवेशन प्राय शनिवार की सायकाल हुआ करते थे। इसके अतिरिक्त भी आवश्यकतानुसार किसी भी समय अधिवेशन एक घटे की सूचना पर बुलाया जाता था।

। ७ ।

रूस पर आक्रमण के एक मास के भीतर ही स्टालिन ने चर्चिल को सन्देश भेजा और इसमे ही उसने इगलैड का फ्रास मे दूसरा मोर्चा खोलने का आग्रह किया।

यह पत्र मन्त्रिमण्डल के विचाराधीन आया तो मन्त्रिमण्डल ने इस विषय मे 'चीफ ऑफ दि स्टाफ' से पूछा। उन्होने पूछा था कि क्या हम दूसरा मोर्चा खोल सकते हैं ? यदि खोल सकते है तो कहाँ पर तथा कब तक खोला जा सकता है और उसकी सफलता की कितनी आशा है ?

जब यह प्रश्न चीफ ऑफ दि स्टाफ की सभा के समक्ष उपस्थित किया गया उस समय प्राइम-मिनिस्टर भी वहाँ पर उनका उत्तर सुनने के लिए विद्यमान था। अधिकाश अधिकारी समझ नही पा रहे थे कि वे इसका उत्तर किस प्रकार दे। प्रधान-मन्त्री ने जब मथुरासिह की ओर मुख किया तो उसने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा, "दूसरा मोर्चा

यदि खोलना हो तो वह योरुप की भूमि पर ही खोलना चाहिए और उसमे शीघ्रता करनी चाहिए ।

"परन्तु फ्रास मे मोर्चा खोलना तो इगलैड की युद्ध-सफलता का सूचक नही हो सकता । जब तक हिटलर और स्टालिन परस्पर युद्ध मे जुते हुए है हमे मुसोलिनी को बन्दी बनाकर इटली मे राष्ट्रीय सरकार का निर्माण कर मैडिटिरेनियन मे तो युगोस्लाविया, ग्रीस और टर्की को अपना सक्रिय मित्र बना लेना चाहिए। तब हमको अपनी सेनाएँ रूसी सेनाओ के साथ मिलाकर जर्मन के विरुद्ध अभियान आरम्भ कर देना चाहिए । वह समय होगा जब फ्रास के किनारे पर सेनाएं उतारने से लाभ होगा।"

अपने चीफ ऑफ दि स्टाफ की सम्मति पर चर्चिल ने मास्को में अपने दूत क्रिप्स को लिखा, "मै आपकी बात से सहमत हूँ। रूस की सकटावस्था का भी मैं अनुमान लगा सकता हू । इस पर भी मैं कहता हूँ कि यह रूस का अधिकार नही कि वह हम पर दोषारोपण करे। वास्तव मे उसने यह मुसीबत स्वय उत्पन्न की है । उसने ही रिबनट्रोप से सन्धि कर हिटलर को अपना पशुबल पोलैंड पर छोडने का अवसर प्रदान किया था । जब रूस ने फ्रास की सेना का चुपचाप विनाश देखा था तब ही उन्होने योरुप की भूमि पर दूसरा मोर्चा खोलने के लिए कठिनाई उत्पन्न कर दी थी ।

' हम अपनी शक्ति के अनुसार युद्ध-सामग्री भेजकर रूस की सहायता कर रहे है।"

इस पर भी प्रधान-मन्त्री ने मिस्टर क्रिप्स को लिख दिया कि उनके घावो पर अधिक नमक लगाने की आवश्यकता नही। हम दूसरा मोर्चा खोल रहे है। परन्तु इसका स्थान हमारे विशेषज्ञ बतायेंगे। रूस के राजनीतिज्ञ नही।"

युद्ध का पासा तब पलटा जब दिसम्बर १६४१ मे जापान ने अमेरिका के पर्ल हारबर पर बिना सूचना के आक्रमण कर दिया । अमेरिका इगलैंड का सक्रिय मित्र बन गया ।

अमेरिका की शक्ति जन, धन और युद्ध-सामग्री के रूप मे इगलैंड मे कई गुना अधिक थी। इस कारण अमेरिका की सम्मति का युद्ध नीति पर प्रभाव पडने लगा।

अमेरिका एक ओर तो जापान की नौशक्ति का विरोध करने पर विवश था, दूसरी ओर योरुप की सहायता करने मे। दोनो देशो के सैनिक अधिकारियो की सयुक्त बैठके हुई और उसमे दूसरा मोर्चा खोलने की योजना होने लगी।

इस समय अफरीका मे घोर पराजय हो गई। जनरल आकिनलेक सैनिक-नीति से अनभिज्ञ था और इस बार मथुरासिह उसके पास नही था। अत प्रारम्भिक विजय के एक वर्ष बाद रोमैल की अध्यक्षता मे इटेलियन सैनिको ने मित्र-सेनाओ को पुन इजिप्ट मे धकेल दिया।

फिलीपीन पर शत्रु-सेनाओ का अधिकार हो गया था। सन् १६४३ मे जनरल वैवल के कमाण्ड मे और अमेरिकन सहायता से पुन क्रिने-शिया, ह्रिपोली, ट्यूनिस और सिसली पर अधिकार कर लिया गया। १६४३ के जुलाई और अगस्त मे सिसली पर अधिकार किया गया तो अमेरिका के अधिकारी इसको दूसरा मोर्चा मानने के लिए तैयार नही होते थे। इस पर मथुरासिह और अमेरिकन चीफ आफ दि स्टाफ मे झडप हो गई। मथुरासिह ने प्रश्न किया, "रूस दूसरा मोर्चा क्यो चाहता है?"

"अपने ऊपर सैनिक दबाव कम करने के लिए।"

"यह तो इटली मे मोर्चा खोलने पर भी हो ही रहा है।"

"हिटलर मुसोलिनी की कुछ परवाह नही करता।"

"मैं समझता हूँ कि हिटलर तो किसी की भी परवाह नही करता। वह तो अपने स्वार्थ के लिए ही मुसोलिनी तथा फ्रास की चिन्ता कर रहा है। अत मुसोलिनी की हार उसके स्वार्थों का हनन करने वाली होगी।

"जहाँ तक रूस पर सैनिक दबाव के कम होने का प्रश्न है वह तो कही भी दूसरा मोर्चा खोलने से हो सकता है। हम समझते है कि जर्मनी

को पराजित करने के लिए इटली मे ही हमारा मोर्चा प्रभावशाली रहेगा।"

"किसी के पास इस युक्ति का उत्तर नही था। परन्तु अमेरिकन युद्ध-नीतिज्ञ अकारण तोतो की भाँति स्टालिन की माँग का समर्थन करते रहे।

मथुरासिंह ने ब्रिटिश चीफ ऑफ दि स्टाफ द्वारा विचारित योजना सुनाते हुए कहा, "१९४३ मे मित्र-राष्ट्रो का बल एक तो अमेरिका से सामान लाने का मार्ग खुला रखने से है और योरुप मे इटली पर आक्रमण तथा फारस की खाडी के द्वारा रूस को सहायता पहुँचाना है।"

इगलैंड ने अपनी इस योजना को कार्यान्वित किया। स्टालिनग्राड का बचाव जहाँ रूसी सैनिको के असीम त्याग और बलिदान के कारण हुआ वहाँ अमेरिकन और अग्रेजी युद्ध-सामग्री के कारण भी हुआ जो फारस की खाडी से रूस को मिल रही थी।

१९४३ मे ट्यूनिस को जीतकर बिजंटा पर अधिकार कर लिया गया। बिजंटा से सिसली और वहाँ से रोम तक अधिकार हो गया। इस-का ही परिणाम था कि जर्मनी को स्टालिनग्राड पर से हटना पडा।

इस पर भी स्टालिन रूजवेल्ट को लिखता रहा कि योरुप की भूमि पर फ्रास के किनारे नया मोर्चा खुलना चाहिए। स्टालिन की निरन्तर माँग ने अमेरिकन युद्ध-नीतिज्ञो के मस्तिष्क भ्रमित कर दिए और वे दो भूलें कर बैठे।

अपनी शक्ति और धन-सम्पदा के बल पर अमेरिका के प्रधान-मन्त्री ने चर्चिल को विवश कर दिया कि वह इटली के द्वारा युगोस्लाविया, ग्रीस, हगरी और रूमानिया की ओर बढने की अपेक्षा फ्रास मे मोर्चा खोलने के लिए तैयार हो जायें।

दूसरे, अमेरिका ने चीन मे च्याग काई शेक को जापान के विरुद्ध सहायता की यह शर्त लगा दी कि वह चीन मे सयुक्त सरकार बना ले और उसमे कम्युनिस्टो को सम्मिलित कर ले। दोनो महान भूले थी।

दोनो स्टालिन के कहने पर की गई थी और दोनो भूलो मे सहायक हुए थे जनरल मार्शल, एडमिरल किंग और आरनोल्ड सैल्ड्राम।

एक भूल से पूर्वी योरुप पर स्टालिन का अधिकार हो गया और दूसरी भूल से चीन कम्युनिस्ट हो गया। दोनो भूले बीज-रूप मे थी। इन बीजो से १९४४ मे वृक्ष बने और उनकी सिचाई १९४४ और १९४५ मे हुई। वह भी अमेरिका के हाथो से।

जब फ्रास मे ६ जून १९४४ को अमेरिका और ब्रिटिश सेनाओ ने आक्रमण आरम्भ कर दिया तो अमेरिकन सैनिक और सामग्री अंग्रेजी तथा केनेडियन सेना सामग्री से बहुत अधिक थी। यही कारण था कि अंग्रेज इस आक्रमण की युद्धनीति मे दब गये।

१९४४ के दिसम्बर तक युद्ध-क्षेत्र मे सब ठीक चलता रहा। परन्तु इसके बाद योरुप के दूसरे मोर्चे पर मतभेद आरम्भ हुआ। उत्तर मे अंग्रेजी सेना मौटगुमरी के अधीन बढ रही थी। दक्षिण मे अमेरिकन-सेना आइजनहावर के अधीन। मतभेद आरम्भ हुआ आक्रमण के ढग और तेजी पर और इसका अन्त हुआ १९०५ जून मे। जब अंग्रेजी नीति से बर्लिन और अधिकाश दक्षिण-पूर्वी जर्मनी पर अधिकार अमेरिका और अंग्रेजो को करना चाहिये था और अमेरिकन अधिकारी चाहने लगे कि बर्लिन इत्यादि पर अधिकार रूसी सेना का होना चाहिये।

यह रूसी नीति के अनुसार था। रूजवैल्ट ने स्टालिन को यह वचन दे रखा था। इस वचन के अनुसार युद्ध-नीति का परिणाम यह हुआ कि बर्लिन के पूर्वी जर्मनी का बहुत-सा भाग रूस के अधिकार मे चला गया। यदि अमेरिका बाधा खडी न करता तो माटगुमरी बर्लिन तक और कदाचित् उससे भी पूर्व तक अपना अधिकार कर लेता।

इसके अतिरिक्त रूजवैल्ट ने पूर्वी योरुप को रूस के प्रभावाधीन करना स्वीकार कर लिया। एशिया मे चीन को भी रूस के प्रभावाधीन रखना मान लिया।

ऐसा क्यो हुआ? इसमे एक ही कारण प्रतीत होता है कि अमरीकी

राजनीतिज्ञ रूस के विषय मे कम जानते थे। उन्होने लेनिन की कूटनीति के विषय मे कभी जानने का यत्न भी नही किया था। इसके अतिरिक्त अमेरिकन प्रेजिडेट और उसके सम्मतिदाता एशिया के इतिहास से सर्वथा अनभिज्ञ प्रतीत होते थे। अमरीकी अभिमान और अज्ञान के आधार पर स्टालिन ने युद्ध-पश्चात् कम्युनिस्ट प्रसार का प्रबन्ध कर लिया।

८

सन् १९४३ मे जब अमेरिका फ्रास पर दूसरा मोर्चा खोलने के लिए आग्रह करने लगा और उसका विरोध करना इगलैंड के लिए असम्भव होने लगा तो मथुरासिह का कार्य लन्दन मे समाप्त समझ लिया गया और उसको वापस हिन्दुस्तान भेजने का प्रबन्ध हो गया।

एक दिन चीफ ऑफ दि स्टाफ के सचिव ने मथुरासिह को बुलाकर पूछा, "मिस्टर सिह ! अब पूर्व-एशिया मे युद्ध की तेजी होने लगी है और हमे भी अब हिन्दुस्तान की रक्षा की चिन्ता अधिक होने लगी है। इगलैंड से हम किसी भी युद्ध-नीतिज्ञ को खाली नही कर सकते। इस कारण मैं जानना चाहता हूँ कि आप हिन्दुस्तान लौटना कैसा समझेगे?"

"अपने देश की रक्षा के लिए अपनी सेवाओ का योगदान करने मे मैं अपना सौभाग्य मानूँगा।"

"तो आप तैयार रहिए। प्रबन्ध होने पर आपको सूचित कर दिया जायेगा। अभी आप अवकाश पर है, परन्तु आप जहाँ भी रहे हैडक्वार्टर से सम्पर्क बनाये रखे, जिससे कि आपको तुरन्त बुलाया जा सके।"

यह सन् १९४३ के अक्तूबर की बात थी। इस समय तक मित्र-राष्ट्रो की सेना रोम के द्वार पर पहुँच चुकी थी। मुसोलिनी जर्मनी की ओर भागता पकडा जा चुका था और रोम मे स्वतन्त्र सरकार बन चुकी थी।

मथुरासिह कही घूमने नही गया। अब इगलैंड मे उसकी रुचि भी नही थी। हिन्दुस्तान पहुँच वह अपने माता-पिता से मिलने की उत्कट इच्छा करने लगा था।

नवम्बर के मध्य मे एक समुद्री जहाज़ मे मथुरासिह कराची पहुँच गया । वह अनुभव कर रहा था कि उसके जाने और आने मे अन्तर हो गया है । जाते समय वह लेफ्टीनेंट था, उस समय उसको हवाई जहाज़ मे ले जाया गया था । आते समय वह ब्रिगेडियर जनरल था, किन्तु उसे - सिक्रन्दरिया से कराची तक समुद्री जहाज़ मे लाया गया था ।

सिन्कदरिया तक तो वह हवाई जहाज मे ही आया था । एक सप्ताह की प्रतीक्षा के अनन्तर उसको सिकन्दरिया से हिन्दुस्तान आने वाले एक समुद्री जहाज मे स्थान मिला और आठ दिन की यात्रा के बाद उसे कराची उतार दिया गया । वहाँ से लाहौर के लिए टिकट मिलने मे उसे पाँच दिन लग गये और लाहौर पहुँच उसकी प्रगति रुक गई । सेना के हेडक्वार्टर दिल्ली को उसने तार भेजा । उस तार के उत्तर के लिए उसको दो सप्ताह तक लाहौर मे ठहरना पडा । उसने अपने माता-पिता को लिखा कि वह लाहौर पहुंच गया है । इसका परिणाम यह हुआ कि सूरतसिह और भगवती लाहौर पहुंच गए । बहुत यत्न करने पर उनको उसका निवास-स्थान मिल पाया । एक साधारण सैनिक की भाँति उसको एक बैरक मे रखा हुआ था ।

सूरतसिह और उसकी पत्नी त्रिलोकचन्द एडवोकेट की कोठी पर ठहरे थे और मथुरासिह की खोज मे भी त्रिलोकचन्द सहायक हुए ।

मथुरासिह की कोठरी देख सूरतसिह ने पूछा, "तुम तो लिख रहे थे कि तुम ब्रिगेडियर जनरल हो गए हो किन्तु तुम्हारी यह कोठरी तो जमादार के योग्य भी नही है ?"

"पिताजी ! मै ब्रिगेडियर जनरल लन्दन मे था । यहाँ मुझको अभी-किसी काम पर नही नियुक्त किया गया । मेरे यहाँ लौटने की कोई सूचना भी नही थी । मैंने अपने पत्र जो मुझको लन्दन मे मिले थे कराची से लाहौर पहुँचने मे उनकी सहायता ली थी, किन्तु यहाँ आकर तो वे भी प्रभाव-हीन हो गए है । यहाँ तो मै एक सिपाही की मेहरबानी से रह रहा हूँ ।"

"तो तुम गाँव चलो, वहाँ से लिखा-पढी कर लेना ।"

"ऐसा नही, यदि आप कुछ खर्चा दे तो मैं दिल्ली जाकर स्वय अपने पहुँचने की रिपोर्ट कर दूँ।"

"ठीक है, इन्तजाम हो जायेगा। कब जाना चाहते हो तुम ?"

"आप आये है तो दो दिन तो रहना ही चाहिए। उसके बाद मैं दिल्ली जाना चाहूँगा।"

"हम भी तुम्हारे साथ दिल्ली चलेगे।"

"तब तो ठीक है, दो सप्ताह से यहाँ पडा-पडा मै ऊब गया हूँ।"

अगले दिन मथुरासिह अपने माता-पिता के साथ दिल्ली के लिए जाने ही वाला था कि उसको दिल्ली से निम्न सन्देश मिला—"लेफ्टीनेंट मथुरासिह को यह आज्ञा दी जाती है कि वह दिल्ली हैडक्वार्टर मे तीन जनवरी को रिपोर्ट करे।"

इस रिपोर्ट के आधार पर वह दिल्ली जा पहुँचा और उसके माता-पिता भी उसके साथ ही गए।

मथुरासिह फ्लोरा की घटना से सतर्क था। इस कारण वह राधा के विषय मे पूछने मे सकोच का अनुभव करता था। वह समझता था कि उसके मृत्यु के समाचार पर राधा का विवाह हो जाना भी सम्भव है। उसको अपने माँ-बाप की उस ओर से चुप्पी पर इस सम्भावना पर अधिक विश्वास होता जाता था। एच० एम० एस० इलस्ट्रियस द्वारा बचाये जाने के पश्चात् से ही वह राधा का समाचार जानने की इच्छा कर रहा था। उसने एक केबल लन्दन से अपने पिता को भेजा भी था, परन्तु उस केबल के उत्तर मे अथवा उसके पश्चात् आने वाले पत्रो मे राधा का कोई उल्लेख नही था। न ही लाहौर मे उसके माता-पिता ने उसके विषय मे कोई बात बताई थी। इस कारण वह समझ रहा था कि राधा का भी विवाह हो गया होगा।

रेल मे बैठे-बैठे बात चल पडी। सूरतसिह ने कहा, "महात्माजी ने जब सत्याग्रह करने की घोषणा की तो सरकार ने कांग्रेसियो को पकड लिया। जो लोग पकड मे नही आये उन्होने युद्ध-प्रयासो मे विघ्न डालने

के लिए तोड-फोड करनी आरम्भ कर दी। देवीदयाल भी उन तोड-फोड करने वालो मे से था। पुलिस ने तोड-फोड करने वालो पर गोली चलाई। परिणामस्वरूप देवीदयाल मारा गया। उसकी मृत्यु के पूर्व ही उसकी पत्नी और पुत्र तथा पुत्री होशियारपुर चले गए और डेढ वर्ष से उन्होने अपना कोई समाचार नही दिया।

"यह कब की घटना है ?"

"तोड-फोड का यत्न तो देवीदयाल ने सितम्बर १९४२ मे किया था और उन्ही दिनो वह मारा गया था। परन्तु गाँव तो वह तुम्हारे बुरे समाचार आने के तुरन्त पश्चात् ही छोड गया था और तब से ही उसके समाचार आने बन्द हो गए थे। तुम्हारा सुख-समाचार भी उनको नहीं भेजा जा सका।"

मथुरासिह को अपने अनुमान की पुष्टि होती दिखाई दी कि राधा का विवाह हो चुका होगा। इससे उसका मन तो मलिन हुआ परन्तु बाहर से उसने किसी प्रकार का हर्ष अथवा शोक प्रकट नही किया। उसने बात बदलकर कहा, "भापा ! तोड-फोड की अब क्या स्थिति है ?"

"अब तो शान्ति है। एक बात और है। आसाम की सीमा पर जापानियों की सहायता से सुभाष बाबू की सेना ने आक्रमण कर दिया था। उन्होने कुछ विजय भी प्राप्त की थी, परन्तु उसके बाद कुछ प्रगति नहीं हुई।"

मथुरासिह इस सूचना का अर्थ समझने मे लीन रहा। दिल्ली पहुँचकर ये एक होटल मे ठहर गए। मथुरासिह सेना के हैडक्वार्टर मे अपने कागजात दिखाने के लिए गया। एक अंग्रेज़ जनरल मथुरासिंह के कागज देख विस्मय करने लगा। मथुरासिह को गम्भीर भाव मे सतर्क खडा देख जनरल वाट्सन ने उससे पूछा, "यह ब्रिगेडियर जनरल सिंह कौन है ?"

"यह जो आपके सामने खडा है।"

"किसने तुमको ब्रिगेडियर जनरल बनाया था ? तुम तो अभी बीस वर्ष की आयु के भी प्रतीत नही होते ?"

"इसके नीचे लार्ड इज्मे चेयरमैन ऑफ दि 'चीफ्स ऑफ दि स्टाफ' के हस्ताक्षर है। आप उनसे पूछ सकते है। यह पद मुझे किसने और क्यो दिया है?"

"हमारे पास इन फिजूल की बातो के लिए समय नही है। तुम्हारा भारत का रेंक लेफ्टीनेंट है। इससे हम तुम्हें लेफ्टीनेंट मथुरासिंह ही समझते है।"

"ठीक है।"

"कहाँ ठहरे हो?"

"मैं अभी लाहौर से आया हूँ और होटल मे ठहरा हुआ हूँ।"

"लाहौर से क्यो?"

"इसलिए कि कराची से लाहौर तक का ही रेल का पास मिला था। उसके आगे के लिए न तो वहाँ खर्चा था और न पास।"

"तो फिर कैसे आये हो?"

"अपने गाँव से रुपया मँगवाकर फिर टिकट खरीदकर आया हूँ।"

"ब्रिटिश सरकार ने तुम्हारा वेतन दिया है अथवा नही?"

"आने के लिए बीस पौड मिले थे, शेष के लिए इन कागजो मे आर्डर लिखा हुआ है।"

जनरल वाट्सन ने पुन कागज देखने आरम्भ कर दिये। एक कागज पर यह लिखा था—'हिन्दुस्तान की सरकार मथुरासिंह के वेतन का भुगतान कर उसका बिल ब्रिटिश सरकार के नाम लिख दे।'

"द डैविल! प्रश्न तो यही है कि किस हिसाब से बिल बनाया जाय?"

"वह तो मैं बनाकर दे सकता हूँ।"

"हाँ, दे दो।"

'मेरे लिए क्या आज्ञा है?"

"पहले रहने के लिए छावनी मे चले जाओ। क्लर्क से मकान का एलॉटमेंट करवाओ और फिर वहाँ पर आज्ञा की प्रतीक्षा करो।"

मथुरासिंह ने सलाम किया और कमरे से बाहर आ गया ।

उस दिन एलॉटमेंट करने वाला क्लर्क छुट्टी पर था । उसका स्थानापन्न व्यक्ति मथुरासिंह को मकान देने मे असमर्थ था । उसके पास न तो मकानो की सूची ही थी और न ही उसे यह ज्ञात था कि वह सूची कहाँ मिलेगी । मथुरासिंह ने अपने कागज जमा कराये और फिर होटल मे पहुँचकर अपने वेतन का बिल बना दिया । अलामीन से आकर ब्रिगेडियर जनरल के वेतन का बिल था । जिसमे से कुछ पेशगी एलाउन्स मिला था । वह काटकर उसका बिल साढे तीन हज़ार पौंड बन गया । अगले दिन वह पुन कार्यालय मे पहुँचा । उसने अपना बिल क्लर्क को दिया और उससे अपने बँगले के विषय मे पूछा । उसको वही मकान मिला जिसमे वह इससे पूर्व रह चुका था । मकान मिलने पर वह अपने माता-पिता को साथ लेकर वहाँ चला गया ।

मथुरासिंह ने लन्दन मे युद्ध के विषय मे बात करते हुए बताया, "भापा ! वहाँ तो बिजली की तेज़ी से काम होता है । यहाँ के काम की गति तो इतनी ढीली है, जैसे मोटरकार के सामने बैलगाडी हो ।"

सूरतसिंह हँस पडा । उसने कहा, "वास्तव मे यहाँ कोई युद्ध तो हो नही रहा । यहाँ तो केवल सेना भरती करके उसे विदेशो को भेजा जा रहा है । हिन्दुस्तान तो सेना भरती का क्षेत्र है, युद्ध-क्षेत्र नही ।"

"मै यही विचार करता हूँ कि यदि योरुप-जैसा युद्ध यहाँ छिड जाय तो हिन्दुस्तान एक सप्ताह मे विजय कर लिया जाय ।"

"इतनी जल्दी तो नही । यह बहुत बडा देश है । इसका विस्तार ही इसको विजय करने मे भारी बाधा बन जायेगा ।"

बँगले पर अधिकार कर मथुरासिंह ने हैडक्वार्टर्स मे रिपोर्ट कर दी । साथ ही उसने अपने बिल के भुगतान के लिए भी आग्रह किया ।

सूरतसिंह का कहना यथार्थ था । वास्तव मे हिन्दुस्तान मे युद्ध के लिए सामान बन रहा था और सेना भरती की जा रही थी । युद्ध तो देश के बाहर हो रहा था । इसके अतिरिक्त यहाँ न तो किसी प्रकार भय

था, न ही युद्ध का विरोध करने के लिए किसी प्रकार का प्रयास। यहाँ के सब कार्य चिउँटी की गति के समान चलते थे।

एक मास की अवधि के बाद मथुरासिंह को राजपूत रेजिमेंट एक सौ दस मे नियुक्त कर, उसे कोचीन भेज दिया गया। तब तक भगवती और सूरतसिंह उसके पास ही रहे। उस सब अवधि मे राधा का फिर कभी कोई उल्लेख नही हुआ। उसके पिता ने जो स्थिति बताई थी, उसको ध्यान मे रखते हुए मथुरासिंह ने राधा की बात मन से निकाल दी थी।

कोचीन जाने से पूर्व उसने माता-पिता को वापस अपने गाँव भेज दिया। वह उनको छोडने के लिए स्टेशन पर गया तो गाडी छूटने से कुछ समय पूर्व उसकी माँ ने कहा, "हम होशियारपुर होकर जायेगे, सम्भवतया वहाँ राधा की माँ मक्खनी से भेट हो जाय।"

"चाची मिले तो उसको मेरा नमस्कार कहना।"

भगवती चुप रही। वह प्रतीक्षा कर रही थी कि मथुरासिंह राधा के विषय मे कुछ कहेगा। जब उसने कुछ नही कहा तो भगवती भी चुप रही और कुछ समय बाद गाडी चल पडी।

तीन दिन की यात्रा के बाद मथुरासिंह भी कोचीन जा पहुँचा। वहाँ उसको कार्यालय मे राशन-इचार्ज बना दिया गया। कोचीन मे तीन हज़ार सैनिक थे और पाँच रेजिमेंट्स थी। राजपूत रेजिमेंट एक सौ दस को उन सभी की भोजन-व्यवस्था पर नियुक्त किया गया। इस काम मे लगने पर मथुरासिंह भूल गया कि वह कभी युद्धनीति-विशारद भी माना जाता था। यहाँ पर कप्तान, जनरल, मेजर जनरल, ब्रिगेडियर जनरल सभी अग्रेज थे। वे प्राय: खाना-पीना, खेल-कूद, नाच-रग मे मस्त रहते थे। काम तो प्राय हिन्दुस्तानी ऑफिसर्स ही करते थे। वास्तव मे तो काम कुछ था ही नही।

सन् १९४४ आया और फ्रास पर दूसरा मोर्चा खुल जाने के समाचार आये। मथुरासिंह का घर से पत्र-व्यवहार चल रहा था। एक वर्ष के बाद उसे एक मास की छुट्टी मिली तो वह घर चला गया।

: ६ :

मथुरासिंह कोचीन से मद्रास और वहाँ से दिल्ली जा पहुँचा। वहाँ एक दिन ठहरकर वह होशियारपुर जाने के लिए स्टेशन पर पैहुंचा तो उसने देखा कि एक योरुपियन महिला बम्बई से आने वाली गाडी के फर्स्टक्लास के कम्पार्टमेंट से अपना बहुत-सा सामान निकाल रही है। उसको वह स्त्री कुछ जानी-पहचानी-सी प्रतीत हुई। मथुरासिंह को उसी गाडी से आगे जाना था और उसका कुली उसका सामान उसी डिब्बे मे चढा रहा था, जिसमे से वह महिला अपना सामान उतार रही थी।

एकाएक मथुरासिंह को आया कि वह तो लेडी गौर्ट की नौकरानी है। तो सम्भवत. लेडी गौर्ट भी उसी गाडी मे हो और नौकरानी के जिम्मे अपना सामान छोडकर वह बाहर चली गई हो।

उस औरत ने भी मथुरासिंह की ओर ध्यान से देखा तो उसको उससे पूछने का साहस आ गया। उसने उससे कहा, "क्षमा करे, यदि मै भूल नही कर रहा तो मैंने आपको लेडी गौर्ट के साथ देखा है ?"

"हाँ, आपने अवश्य देखा होगा।" उसने आगे बताया—

"वे तो इगलैंड मे है, मै इस समय उनके लडके कैप्टन विलियम के साथ हूँ।"

"और कैप्टन गौर्ट कहाँ है ?"

"हम एक बैटल-शिप मे बम्बई आए थे। मिस्टर एण्ड मिसेज़ गौर्ट हवाई जहाज से पहले ही दिल्ली आ गए है। मै यह सामान लेकर रेल से आ रही हूँ।"

"ओह ! मुझे पहचानती हो ?"

"हाँ, क्यो नही ? आप मिस्टर सिंह है। आपको हमने 'स्टैनले मेशन' मे देखा था।"

'मिसेज़ गौर्ट जूनियर को मेरा स्मरण कराना। मैं इस समय तो अपने गाँव छुट्टी बिताने के लिए जा रहा हूँ।"

"मैं अवश्य कहूँगी। वे प्राय आपका उल्लेख किया करती है।"

—१९

मथुरासिंह विचार करता था कि विलियम किसलिए हिन्दुस्तान आया है। जब वह कुछ अनुमान नहीं लगा सका तो मन से इस विचार को निकालकर समाचार-पत्र पढ़ने लगा।

होशियारपुर पहुँचकर उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब उसने स्टेशन के प्लेटफार्म पर अपने माता-पिता के साथ मक्खनी और राधा को वहाँ खड़ा पाया। उसने कोचीन से चलते हुए अपने पिता को तार दे दिया था कि वह अमुक दिन होशियारपुर स्टेशन पर पहुँच रहा है। वह यह आशा करता था कि गाँव में उसकी उस दिन प्रतीक्षा की जायेगी। उसको यह ज्ञात नहीं था कि उसकी मृत्यु के समाचार और फिर जीवित बच जाने के समाचार के पश्चात् उसकी मा में उसके प्रति ममता में असीम वृद्धि हो जाएगी। पहले भी जब उसको समाचार मिला था कि मथुरासिंह लाहौर पहुँच गया है तो वह अपने पति को साथ लेकर वहाँ जा पहुँची थी। फिर वह उसके साथ तब तक दिल्ली में रही थी, जब तक कि उसका कोचीन के लिए स्थानान्तर नहीं हो गया। इस बार भी तार मिलते ही वह उससे मिलने के लिए चल पड़ी थी।

देवीदयाल के क्रियाकर्म और श्राद्ध के पश्चात् गाँव में रखा सब धन सम्पदा लेकर मक्खनी होशियारपुर अपने भाई के घर पर चली गई थी। यह बात सितम्बर १६४२ की थी। तब से मक्खनी और भगवती की भेंट नहीं हुई थी और न ही उसका कोई समाचार मिला था। इस कारण मथुरासिंह के जीवित होने का समाचार मिल जाने पर भी वह मक्खनी अथवा राधा को बताया नहीं जा सका।

सूरतसिंह और उसकी पत्नी, मथुरासिंह के कोचीन को स्थानान्तर हो जाने पर जब दिल्ली से अपने गाँव को लौट रहे थे तो भगवती ने पति से कहा, "इस बार होशियारपुर में मक्खनी का पता करना चाहिए।"

"कैसे पता किया जाय, मैं तो उसके भाई का नाम भी नहीं जानता?"

"किसी अग्रवाल बनिये से पूछने पर शायद पता लग जाये।"

"भगवती! जमादारपुर की तरह होशियारपुर कोई छोटा-सा गाँव

तो है नही। वहाँ पता लगना सम्भव नही। और फिर अब उनकी खोज करने मे मैं कोई कारण भी नही समझता। ऐसा प्रतीत होता हे कि मथुरा को राधा मे अब रुचि नही है।"

'मैं समझती हूं कि उसने उसके विवाह हो जाने का अनुमान लगा लिया हे, इस कारण उसने उसका कोई उल्लेख नही किया होगा।"

सूरतसिह चुप रहा। उसके मन मे मथुरासिह का बनिये की लडकी से विवाह करने मे कोई उत्साह नही था, यही बात वह मथुरासिह के मन मे भी समझ रहा था। परन्तु होनी प्रबल है। जब ये लोग होशियार-पुर से बरौडा के लिए बस-स्टेशन पर पहुँचे तो मक्खनी को भी बस मे बरौडा जाते हुए उन्होने देखा। भगवती ने सूरतसिह को बताया, "राधा की माँ मक्खनी भी इसी बस मे बैठी है।"

सूरतसिह ने उसको देखा तो कहने लगा, "उसको यही बुलवा लो।"

भगवती उठी और मक्खनी को अपने पास ले आई। उसने जमादार को हाथ जोड अभिवादन किया और भगवती के पास बैठ गई। भगवती ने कहा, "हम दिल्ली से आ रहे है। पिछले एक मास तक मथुरासिह वही था, हम उसके पास ही गए थे। उसकी मृत्यु का समाचार गलत था।"

"सत्य ?" आश्चर्य मे मक्खनी के मुख से निकला। फिर वह बोली, "बहिन ! यह तो बहुत ही शुभ समाचार है। बहुत-बहुत बधाई हो। भापा !" उसने जमादार की ओर देख कहा, "यह किस प्रकार हुआ ?"

"भाग्य की बात है। एक सुरग फटी और एक मकान गिर पडा। मथुरासिह के अन्य साथी तो उस मकान मे दबकर मर गए और वह शत्रुओ के हाथ पड गया। उसको बन्दी बनाकर वे उसे अपने देश मे समुद्री जहाज मे ले जा रहे थे कि अग्रेजो की एक पनडुब्बी ने तारपीडो मार जहाज को उडा दिया। मथुरासिह और शत्रुओ के चार अफसर एक किश्ती मे बैठ गए। दस दिन तक बिना अन्न-जल के समुद्र मे तैरते रहे। इस प्रकार अचेत और मरणासन्न अवस्था मे वे अग्रेजो के एक जहाज के हाथ लग गए। इस प्रकार मथुरासिह बच गया। एक वर्ष वह फिर विलायत मे रहकर

हिन्दुस्तान आ गया है और कल कोचीन चला गया है।"

मक्खनी कहने लगी, "राधा के मामा ने उसके लिए लाहौर के एक धनी-मानियो के घर उसके लिए रिश्ता ढूंढा था। पहले तो राधा इन्कार करती रही, परन्तु जब सगाई का दिन निश्चित हो गया तो उसने विष पी लिया। बहुत कठिनाई से बची है। उसका मामा इससे डर गया है और उसने यह वचन दिया है कि युद्ध के अन्त होने तक उसके विवाह की चर्चा नही की जायेगी। वह सदा यही कहती है कि आपका पुत्र जीवित है और उसका विवाह उसी के साथ होगा।"

सूरतसिह बोला, "भगवान की इच्छा के बिना तो कुछ भी नही हो सकता।"

मक्खनी अपने एक सम्बन्धी से मिलने के लिए बरौडा जा रही थी। वह वहाँ उतर गई। उसके जाने पर भगवती ने कहा, "मुझे तो इस सब मे ईश्वर का हाथ प्रतीत होता है। देखिए, मैने उससे मिलने की इच्छा की और वह मिल गई।"

इस भेट का परिणाम यह हुआ कि कुछ दिनो बाद राधा अपनी माँ को साथ लेकर भगवती से मिलने के लिए आ गई। कई दिनो तक वे इनके घर पर रहे और फिर मेल-मुलाकात घनिष्ठ होने लगी।

जब मथुरासिह के कोचीन से घर आने का समाचार आया तो भगवती तथा सूरतसिह होशियारपुर जा पहुँचे और रात मक्खनी के भाई के घर पर ही रहे। गाडी प्रात तीन बजे आती थी।

होशियारपुर स्टेशन आने से पहले ही मथुरासिह जाग गया था। कपडे पहन उतरने के लिए उसने द्वार खोला तो प्लेटफार्म पर उन सब लोगो को उसने देख लिया।

गाडी रुकी। जब तक ये लोग डिब्बे के पास पहुंचे, मथुरासिह ने तब तक डिब्बे मे से अपना सामान उतार लिया था और वह बाहर आ गया। उसने आगे बढकर अपने माता-पिता के चरण-स्पर्श किये। माँ ने पीठ पर हाथ फेर प्यार दिया और पिता ने पुत्र को गले लगाया। मथुरा-

सिंह इनसे निपट मक्खनी की ओर बढ नमस्कार करने लगा तो राधा ने उसके चरण-स्पर्श कर दिए।

"राधा! कैसी हो?" उसने पूछा।

वह आँखे नीची किए खडी रही, उत्तर मे कुछ नही कहा। उसकी माँ ने कहा, "हमको तुम्हारी बुरी खबर सुनकर कभी विश्वास भी नही आता था। ईश्वर की कृपा से मन की साध पूरी हुई। बेटा! अब घर कब तक आओगे?"

"चाची! अभी मेरा काम पूर्ण नही हुआ। इसमे अभी कुछ समय लगेगा।"

सब होशियारपुर से जमादारपुर चले गए। मक्खनी ने अपना घर खुलवाया। उसकी मरम्मत कराई और उसी मे रहने लगी। राधा के विषय मे यह विख्यात हो गया था कि उसका विवाह मथुरासिंह से होगा। इस कारण वह अब सूरतसिंह के घर पर नही जाती थी।

पलक की झपक की भाँति एक मास व्यतीत हो गया और मथुरासिंह अपनी ड्यूटी पर जाने की तैयारी करने लगा। राधा ने जाने से पूर्व उससे कहा, "मैं हिंदी मे पत्र लिख और पढ सकती हूँ। और मैं और माँ अब इसी गाँव मे रहने वाली है।"

इसका अभिप्राय यह था कि वह उसको पत्र लिखे और वह उसका उत्तर देगी। मथुरासिंह ने कहा, "अच्छा, मै तुम्हे पत्र लिखूँगा।"

बस इससे अधिक कोई बात नही हुई। मथुरासिंह को राधा के विष-पान का समाचार मिल गया था। वह यह समझ रहा था कि उनके माता-पिता और सम्बन्धी उन दोनो के विवाह मे सहमत है। अत कोचीन पहुँचकर मास मे एक पत्र वह राधा को भी लिखने लगा।

मथुरासिंह के कोचीन मे रहते-रहते ही योरुप का युद्ध समाप्त हो गया। दूसरी ओर जापान की भी करारी पराजय हो रही थी। इस प्रकार १९४५ आ गया। भारत मे भी भारी परिवर्तन होने की आशा बाँधी जा रही थी। पुन वर्ष मे एक मास की छुट्टी का अवसर आ गया। मथुरासिंह ने जमादार-

पुर मे अपने पिता को लिखा कि उसे छुट्टी मिलने वाली है और वह एक मास के लिए घर आयेगा। पिता का तार आया, "हम दक्षिण घूमने जा रहे है, तुम हमे बम्बई कब मिलोगे ?"

मथुरासिह ने छुट्टी ली और पिता को तार दे दिया। उसने अपने बबई रवाना होने की सूचना दे दी। इस प्रकार नियत तिथि से एक दिन पहले ही वह बम्बई पहुँच गया। वहाँ मेरीन ड्राइव पर एक होटल मे ठहर गया। उस दिन सायकाल वह समुद्र के तट पर बने प्लेटफार्म पर घूम रहा था कि अपनी नौकरानी के साथ फ्लोरा वहाँ सैर करती दिखाई दी। उस नौकरानी ने ही मथुरासिह को पहले देखा और उसने फ्लोरा को बता दिया, "मैडम वह देखिए मिस्टर सिह जा रहे है।"

देखा तो उन लोगो को मथुरासिह ने भी था, किंतु वह आँख बचाकर निकल गया था। परन्तु अब फ्लोरा उसके सामने आकर खडी हो गई। मथुरासिह ने देखा और विस्मय प्रकट करते हुए पूछ लिया, "हलो मिसेज गौर्ट! अभी आप हिंदुस्तान मे ही हे क्या ?"

"हाँ। मुझे 'सरा' ने बताया था कि आप हिंदुस्तान आ गये है और उसको दिल्ली स्टेशन पर मिले थे।"

दोनो साथ-साथ चलने लगे थे। नौकरानी कुछ पीछे थी। फ्लोरा ने बात जारी रखते हुए कहा, "मैंने युद्ध-कार्यालय से आपका पता करना चाहा था, परन्तु यहाँ तो आप अविख्यात सिपाही मात्र हैं। आपको कोई भी नही जानता। मैंने ब्रिगेडियर जनरल मिस्टर सिह के नाम से पता करना चाहा, आपका नाम उस सूची मे नही था। मैंने आपकी लन्दन मे ख्याति और कार्य-कुशलता का उल्लेख कमाण्डर-इन-चीफ से किया। वह आपकी पूर्ण कथा से अनभिज्ञ था। मैंने लेफ्टीनेट के रेक के अधिकारियो की सूची देखी उसमे भी आपका नाम नही था।"

"इस पर भी फ्लोरा! मै हिंदुस्तान मे हूँ और एक लेफ्टीनेंट के पद पर कार्य कर रहा हूँ।"

"मैं तो यह समझी हूँ कि हिंदुस्तान का तो 'बाबा ही न्यारा है।'

यहाँ कुछ भी काम ढग से और समय पर नही होता । कदाचित् यह यहाँ की गरम और सीलवाली हवा का प्रभाव है । यह देखो यहाँ के लोग कैसे आराम और तकल्लुफ से चलते है । लन्दन मे इस तरह चलने वाला तो पाँव के नीचे कुचला जाता है ।"

सिह हंस पडा । उसने बात बदलते हुए कहा, "आप यहाँ किस प्रकार आई हैं । आपकी नौकरानी से पता चला कि आप अपने पति के साथ यहाँ आयी हैं । वह कहाँ है इस समय, और आप यहाँ क्या कर रही है ?"

"लार्ड गौर्ट का देहान्त हो गया है, इस कारण विलियम गौर्ट अब लार्ड गौर्ट और मैं लेडी गौर्ट हूँ ।"

"तब तो बधाई देनी चाहिए ।

"हाँ, मेरे पति रायल इण्डियन नेवी मे एडमिरल है । वे अरेबियन सी मे नेवल एक्सरसाइजेज देखने के लिए गये हुए है । और मैं उनके लौटने की प्रतीक्षा मे यही ठहरी हुई हूँ । वे एक सप्ताह तक लौटेंगे ।"

"कहाँ ठहरी हो ?"

"फ़ोर्ट मे । वहाँ एडमिरल के लिए एक बगला बना हुआ है । बगला बहुत बडा है परन्तु फर्नीचर किसी काम का नही ।"

"मेरा खयाल है अब तक तो तुम दो बच्चो की माँ बन ही गई होगी ?"

फ्लोरा गम्भीर हो गई और पूछने लगी, "आपके अनुमान से मै कितने बच्चो की माँ-जैसी दिखाई देती हूँ ?"

मथुरादास ने उसे सिर से पाँव तक देखकर कहा," सूरत-शक्ल मे तो तुम वैसी ही फ्रेश और ब्यूटीफुल हो, परन्तु तुम्हारे विवाह को अब तीन साल हो रहे हैं इससे अनुमान है कि एक बेबी तो हो ही जाना चाहिए ।"

"मुझे यह सुनाते हुए खेद है कि लार्ड गौर्ट अभी तक मुझे एक भी बच्चा नहीं दे सके ।"

"अच्छा ?"

"हमारा विवाह एक भूल थी । आप कहाँ ठहरे है ?"

"मैं यहाँ एक हिन्दुस्तानी होटल मिनर्वा मे ठहरा हूँ । दस रुपये प्रति-

दिन पर कमरा है, भोजन जहाँ और जितना खा लिया।"

"यह तो काफी सस्ता है?"

"आप तो जानती ही है कि मैं एक गरीब लेफ्टीनेन्ट हूँ। आप एक लार्ड और भारत के एडमिरल की पत्नी हैं।"

"किधर जा रहे है आप?"

"मैं तो निरुद्देश्य घूमने निकला था। एक मास के अवकाश पर हूँ। यहाँ अपने माता-पिता के आने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

'चलिए, आपके होटल के दर्शन कर लूँ।"

'आइये, परन्तु आपको देखकर निराशा ही होगी।"

"चलिए, वहाँ से मैं आपको अपने बगले पर ले जाऊँगी वहाँ हम मध्याह्न का खाना खायेगे।"

मथुरासिंह लौट पडा। उसने टैक्सी पकडी और मिनर्वा होटल जा पहुँचा। फ्लोरा ने कमरा देखा। देखकर उसने कहा, "रुपयो के विचार से तो कमरा अच्छा है। इस पर भी आपकी स्थिति के योग्य नही है।"

"मेरी स्थिति वालो के लिए यह मँहगा है। परन्तु मैंने यह बडा कमरा इस कारण लिया है कि मेरे माता-पिता कल यहाँ आकर ठहरेंगे।"

"मैंने उन्हे दिल्ली मे देखा था। उनके साथ एक लडकी भी थी। वह सन्देह की दृष्टि से मुझे देखती रही। वह आपकी बहिन थी क्या?"

"नही,उससे मेरी सगाई हो चुकी है। युद्ध-समाप्ति पर विवाह होगा।"

"ओह, परन्तु यहाँ हिन्दुस्तान मे कही युद्ध के चिन्ह भी है?"

"हाँ, है तो। नगरो, कस्बो, गाडियो और सडको पर सैनिक घूमते-फिरते दिखाई देते है। अमेरिकन तथा ब्रिटिश सैनिको की भी यहाँ कमी नही है।"

"हाँ, भारत सैनिक कैम्प तो है परन्तु यहाँ युद्ध की चहल-पहल नही है। एक समय था कि लन्दन का वायुमण्डल बारूद की गध से भर गया था। यहाँ तो नाच-रग, गाना-बजाना, खाना-पीना वैसे ही चलता है जैसे कोई विवाहोत्सव मनाया जा रहा है।"

मथुरासिंह ने उत्तर नहीं दिया। फ्लोरा ने घड़ी मे समय देखा और बोली, "चलिये, अब भोजन का समय हो गया है।"

मथुरासिंह पिछले कमरे मे गया और अपनी यूनिफॉर्म पहनकर फ्लोरा के साथ चल पड़ा।

१०

मथुरासिंह अपने माता-पिता को लेने के लिए विक्टोरिया टर-मिनल स्टेशन पर जा पहुँचा। गाड़ी आई और उसमे से उसके माता-पिता के साथ राधा और मक्खनी भी नीचे उतरे। मथुरासिंह अवाक् खड़ा रह गया। कुछ ही क्षणो मे वह प्रकृतिस्थ हो गया और उसने अपने माता-पिता के चरण-स्पर्श किये और चाची को नमस्कार किया। राधा ने उसको प्रणाम किया। राधा ने उसकी घबराहट को ताड़ लिया था और जब वे स्टेशन से बाहर को जा रहे थे राधा ने साथ-साथ चलते हुए पूछ लिया, "मेरा आना ठीक नहीं हुआ न?"

"नहीं राधा! ऐसी कोई बात नहीं। इस पर भी इतनी दूर केवल मुझसे ही मिलने के लिए यात्रा करने की बात समझ मन मे कुछ गुद-गुदी अवश्य हुई थी।"

"क्या गुदगुदी हुई थी?"

"यही कि मै कितना सौभाग्यशाली हूँ जो तुम दोनो—माँ-बेटी मेरे प्रति प्रेम और सहानुभूति रखती हो।"

राधा ने बात बदलकर कहा, "महीने मे आपका एक पत्र प्राप्त कर मेरा मन भरता नहीं।"

"अच्छा तो भविष्य मे पन्द्रह दिन मे एक लिख दिया करूँगा।"

"नित्य नहीं लिख सकते?"

मथुरासिंह हँस पड़ा। इस समय वे स्टेशन से बाहर आ गये। दो टैक्सी की गयी और सबको लेकर मथुरासिंह अपने होटल मे जा पहुँचे। वहाँ एक अन्य घटना घटी। होटल के रिसेप्शन-रूम मे फ्लोरा अकेली मथुरासिंह की प्रतीक्षा कर रही थी। गाड़ी आधा घण्टा लेट आई,

इसलिए फ्लोरा को भी प्रतीक्षा करते इससे अधिक समय हो गया था।

राधा ने उसको देखा तो पहचान गई और उसको स्मरण हो आया कि यही लड़की दिल्ली से मथुरासिह के साथ काहिरा को हवाई जहाज से गई थी। इससे उसको दोनो मे घना सम्बन्ध प्रतीत होने लगा। इस पर भी अति सयमपूर्वक उसने अपने हाव-भाव को नियन्त्रित कर अपना व्यवहार किया।

मथुरासिह ने जब फ्लोरा को आया देखा तो अपने माता-पिता को उसका परिचय हिन्दुस्तान के एडमिरल की पत्नी के रूप मे दिया। फ्लोरा बोली, "मुझे कल मिस्टर सिंह से विदित हुआ था कि आज आप लोग आने वाले है। मेरे मन मे विचार आया कि मैं आप लोगो से पहले भी मिली हूँ, उस समय मै अपने माता-पिता के साथ थी। इस कारण आज आपके दर्शन करने चली आई हूँ। साथ ही मै आप सबको मध्याह्न-भोजन का निमन्त्रण भी दे रही हूँ।"

मथुरासिह ने उसके कहने का अर्थ अपने पिता को समझाया तो उसने उससे पूछा, "तुम क्या चाहते हो ?"

"भापा! इसका पति ऐसी पदवी पर है जैसी सेना के कमाण्डर-इन-चीफकी होती है। इससे इसके निमन्त्रण को अस्वीकारना नही चाहिए।"

"किन्तु हम, माँस आदि तो खा नही सकेंगे ?"

"यह साग-भाजी बनवा देगी।"

"पूछ लो।"

मथुरासिह ने कहा, "पिताजी कहते हे कि आपको बहुत असुविधा होगी। क्योकि ये लोग तो न माँसाहारी है और न मद्यसेवी।"

"तो ऐसा करिये, इनको शाम की चाय के लिए मेरी ओर से साय चार बजे का 'ताज' का निमन्त्रण दे दीजिए। बात यह है कि मै आपकी मगेतर से मित्रता उत्पन्न करना चाहती हूँ।"

"परन्तु वह तो तुम्हारी बात समझ नहीं सकेगी ?"

"अब मैं टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी बोलने लगी हूँ।"

"सत्य ?"

"हाँ, एक वर्ष से एक शिक्षक रखा हुआ है।"

"तब तो तुम दोनो की बात सुनने मे आनन्द आयेगा।"

मथुरासिह ने राधा के समीप जाकर कहा, "फ्लोरा तुमसे परिचय बढाना चाहती है।"

"किसलिए ?"

"कहती है कि तुम बहुत प्यारी हो, उसकी तुमसे मित्रता करने की इच्छा है।"

"मुझे तो कुछ और ही समझ मे आ रहा है ?"

"क्या ?"

"कुछ नही, चलिए मेरे समीप बैठियेगा। मुझे उससे डर लगता है।"

"नही, डर कैसा ? वह तुमसे हिन्दुस्तानी मे ही बात करेगी।"

राधा उठकर फ्लोरा के समीप जा बैठी। राधा ने हाथ जोडे तो फ्लोरा ने उसके दोनो हाथ पकडकर कहा, "बहिन ! यह न। हम दोनो · दोस्त।" अब वह आगे कहने के लिए शब्द ढूँढने लगी। उपयुक्त शब्द न पा उसने राधा को अपने समीप खीचकर उसे अपने अग से लगा लिया।

उसने फिर यत्न करते हुए कहा, "मिस्टर सिंह कहता, तुम मगे तर हो ठीक ' बहुत 'खुश है।"

राधा की हँसी निकल गई। बोली, "बहिन ! क्या नाम है तुम्हारा ?"

"नाम···फ्लोरा· ·फ्लोरा गौर्ट। और तुमको ?"

"राधा।"

"कहाँ रहती··।"

"जमादारपुर।"

"गाँव···मे।"

राधा ने सिर हिलाकर हाँ कहा।

"तुम मेरे·· साथ···मेरा· ·घर आओ। हम बहिन ·दोस्त बनेगा।"

राधा मुस्कराकर चुप रही। फ्लोरा ने मथुरासिह को अपना आशय

समझाया तो मथुरासिह ने कहा कि वह उसकी बात समझ गई है।"

"पर उत्तर नही दिया ?"

"यहाँ कुमारी कन्याएँ किसी के घर अकेली नही जाया करती।"

"तो अपनी माँ को साथ ले आवे।"

मथुरासिह ने राधा को समझाया। उसने कहा, "यह चाहती है कि तुम्हारी सखी बन जावे। इसलिए तुमको अपने घर चलने का निमत्रण दे रही है। घर पर इसका पति नही है, केवल नौकरानी ही है।"

"आप क्या कहते हैं ?"

"मैं इसमे कोई हानि नही समझता। इस पर भी अपनी माँ को साथ ले जाना।"

"तो जाऊँगी। आप भी चलेगे ?"

"मुझे तो निमत्रण दिया नही।"

"तो फिर क्या करूँगी जाकर ?"

"इसको अपने गाँव और समाज की बात बताना।"

"भोजन करके चलेंगे।"

"मैं नही जा सकूँगा। मुझे पिताजी से बहुत बातें करनी है।"

राधा और मक्खनी के लिए वही एक अन्य कमरा ले लिया गया। फ्लोरा और राधा बाते करती रही। फ्लोरा ने मध्याह्न-भोजन वही किया और फिर राधा और उसकी माँ को ले वह अपने बगले मे चली गई।

शाम को जब ये लोग चाय-पान कर रहे थे तो उससे पूर्व रेडियो द्वारा जापान मे हिरोशिमा पर एटम बम फेंके जाने का समाचार प्रसारित किया जा चुका था। समाचार इस प्रकार था—पिछली रात हिरोशिमा पर अमेरिका ने हवाई जहाज़ से एटम बम चलाया है। इसके फलस्वरूप पूर्ण नगर ध्वस्त हो गया है। आधे से अधिक नगर का भाग धू-धू कर जल रहा है। यह अनुमान है कि पाँच लाख की आबादी वाले नगर मे से एक लाख से ऊपर आदमी केवल इस एक बम से मारे गए है।

फ्लोरा ने चाय पर मथुरासिह को यह समाचार सुनाया। यह सुन-

कर वह स्तब्ध रह गया। सूरतसिंह ने उनको इस प्रकार बाते करते देख पूछ लिया, "क्यो क्या हुआ है ?"

"अमेरिका के एक एटम बम ने जापान के एक नगर हिरोशिमा का विध्वस कर दिया है।"

'तो परेशान किसलिए हो रहे हो ? मै तो इसका यह अर्थ समझ पाया हूँ कि युद्ध शीघ्र समाप्त हो जाएगा और तुमको छुट्टी हो जाएगी और फिर राधा का विवाह हो जायेगा।"

फ्लोरा सूरतसिह की बात कुछ-कुछ समझ रही थी। उसने पूछा, "तुम्हारे पापा इससे प्रसन्न है क्या ?"

"बहुत।"

"क्यो ?"

"इसलिए कि युद्ध अब शीघ्र समाप्त हो जाएगा ? सहस्रो शूरवीर जो, मानव-समाज की श्रेष्ठ विभूति है, मरने से बच जायेगे। युद्ध के समाप्त करने मे जो अरबो डालर लगने वाला था वह बच जाएगा और अनेक वीरो की पत्नियो का सुहाग स्थिर रहेगा।"

"और वे निरपराध जो मारे गए है ?"

"पापा का कहना है कि वे निरपराध कैसे हो गए ? उन्होने अपने देश मे असुरो को राजा बना रखा था। वे ही युद्ध की सामग्री तैयार कर युद्ध को लम्बा कर रहे थे। उनके हित को लक्ष्य करके ही वहाँ के शासक युद्ध चला रहे थे।"

"परन्तु एटम बम तो उनके हाथ मे भी आ सकते थे। यह तो घटना-वश ही है कि वह अमेरिका के हाथ मे आ गया।"

"नही फ्लोरा ! यह घटना-मात्र नहीं है। यह उन तानाशाह अफसरो की नीति का परिणाम है कि सब विद्वान् लोग जर्मन से भाग गए थे। यह अमेरिका और इगलैड की उदार नीति का परिणाम है कि वे इगलैड मे सरक्षण प्राप्त कर सके। अग्रेजी सरकार पर्याप्त साधन न होने के कारण उनको अमेरिका भेजकर उनसे लाभ मे भागीदार बन गयी।"

"इस पर भी मिस्टर सिह ' यह घटना ऐसी है कि इससे पूर्ण मानवता काँप उठेगी।"

"कैसी मानवता ? जो जर्मनी के इगलैंड की राजधानी लन्दन पर बम फेकने पर प्रसन्नता व्यक्त करती थी ? देखो फ्लोरा ! मैं तुमको एक उदाहरण देता हूँ। मुसलमानो मे मुर्गी को छुरी से धीरे-धीरे काटने और साथ कलमा पढते जाने को हलाल कहते है। मुर्गे की गर्दन पकड-कर उसको एक क्षण मे मार डालने को हराम समझते है। मुर्गा तो दोनो अवस्थाओ मे मारा जाता है। परन्तु एक मे तडप-तडप कर, दूसरे मे एक क्षण मे। तुम किसको पसन्द करती हो !"

"इसमे पहला तरीका तो बहुत ही निर्दयतापूर्ण है।"

"परन्तु मुसलमान पहले को पुण्यमय समझते है और दूसरे को पाप-मय। यही बात अब तुम कह रही हो। तुम धीरे धीरे युद्ध मे सैनिको को मारने को पुण्य कह रही हो और एटमबम जो अब चिरकाल के लिए युद्ध बन्द कर देगा, को पाप कह रही हो।"

फ्लोरा मथुरासिह की अकाट्य युक्तियो को इस समय पुन' सुनकर प्रसन्न हो रही थी। जबलपुर मे उसकी इसी प्रकार की युक्तियो को वह सुन चुकी थी। वही मथुरासिह अब पुन' उसके सामने बैठा एटमबम चलने को पुण्य-कार्य बता रहा था।

अगले दिन से दुनिया-भर के समाचार-पत्रो मे मानवता की डुग्गी पीटी जाने लगी थी। इन मिथ्या मानवतावादियो के कोलाहल को सुन-कर जो जापान हथियार डालने की तैयारी कर रहा था वह सोचने लगा कि कदाचित् इस कोलाहल के कारण इगलैंड तथा अमेरिका की सरकारे अपने इस कृत्य पर पश्चात्ताप करेंगी और पुन. इस भयानक अस्त्र का प्रयोग नही करने की घोषणा कर देगी।

इस आशा मे कि पुन उसी कछुए की चाल वाला युद्ध चलेगा। वीर लोग मरते रहेगे, मजदूर-जन कारखानो मे पिसते रहेंगे और वकील लोग मन्त्रि-मडलो मे बैठ व्याख्यान झाडते रहेगे।

परन्तु ऐसा हो नही सका। एक सप्ताह के भीतर ही नागासाकी पर दूसरा एटम बम पडा। साथ ही अमेरिका के प्रधान ने घोषणा कर दी कि उसके पास ऐसे एक दर्जन बम तैयार रखे है।

इस पर जापान ने हथियार डाल दिये।

९१

दूसरा एटम बम चलते समय मथुरासिह के परिवार के लोग कन्याकुमारी के दर्शन कर रहे थे। वहाँ से त्रिवेद्रम आने पर उन्होने यह समाचार पढा और साथ ही यह भी पढा कि जापान के प्रधान-मत्री ने युद्ध-विराम के लिए प्रार्थना की है।

अगले दिन अमेरिका के प्रधान ने कहा कि जापान की युद्ध-विराम की प्रार्थना अस्वीकार की गई है। अमेरिका पूर्ण समर्पण चाहता है। इस घोषणा के कुछ ही घटो बाद जापान ने हथियार डाल दिये।

जब तक मथुरासिह अपने अवकाश के दिनो मे उनको दक्षिण के तीर्थों का भ्रमण करा तथा जमादारपुर छोड कोचीन पहुंचा, तब तक विश्व मे पूर्ण शान्ति हो चुकी थी।

जर्मनी तो पहले ही शान्त हो चुका था। जापान को दो एटम बमो ने शान्त कर दिया।

युद्ध का अन्त हुआ एटम बमो से, और इसने इगलैड की कन्जर्वेटिव पार्टी को पराजित करा, लेबर पार्टी को सत्ता पर ला बैठाया। हिन्दुस्तान मे गाधी इत्यादि छोड दिये गए और विधान मे सुधार की बाते होने लगी। गाधीजी अपनी अहिसात्मक नीति की विजय की घोषणा करने लगे। भारत सरकार सुभाष बाबू द्वारा निर्मित आजाद हिन्द फौज के सैनिको को पकडकर उन पर कोर्टमार्शल बैठाने का विचार करने लगी। पण्डित जवाहरलाल नेहरू उनको छोड देने की माँग करने लगे।

जबलपुर, बम्बई, कराची तथा कलकत्ता मे सैनिको मे बगावत फैलने लगी। इन सब हलचलो का परिणाम हुआ भारत को पूर्ण स्वराज्य देने की घोषणा और उसके लिए शिमला मे कान्फ्रेंस बुलाई गई। इस कान्फ्रेंस

के असफल होने पर नव-निर्वाचन हुए। तदनन्तर केबिनेट मिशन आया। वह भी अपने उद्देश्यो मे सफल नही हुआ। हिन्दू और मुसलमान वकील बाते बनाते रहे। इस पर मुस्लिम लीग ने कलकत्ता मे गृह-युद्ध की चुनौती दे दी। हिन्दुओ की एकमात्र सस्था काग्रेस ने इस चुनौती को अस्वीकार किया और कबूतर की भाँति आँखे मूंद वकीलो की-सी बाते करती रही। हिन्दुओ मे गृह युद्ध की चुनौती को स्वीकार करने के लिए जनमन तो तैयार था, कलकत्ता मे उन्होने इसका परिचय भी दिया। बिहार और यू० पी० मे भी वैसा ही हुआ। परन्तु वकील नेता इन हिन्दुओ को देश-द्रोही ही कहते रहे।

विचित्र बात तो यह थी कि हिन्दू वकील नेता मुसलमानो को, जिन्होने गृह-युद्ध आरम्भ किया था, भटके हुए किन्तु देशभक्त ही मानते थे। और जो हिन्दू उस गृह-युद्ध की चुनौती को स्वीकार कर रहे थे, उनको देश, जाति और धर्म का विरोधी मानते थे।

हिन्दू जनता, जो युद्ध करने के लिए तैयार थी, नेता-विहीन होने से मरती-कटती रही। जहाँ उसका दाँव चला, वह अपनी चलाती रही, परन्तु नेतागण शान्ति-शान्ति की पुकार करते रहे।

परिणाम वही हुआ, जो हो सकता था। घाटे मे वे ही रहे, जो आँखे मूँदे कबूतर की भाँति शान्ति की कूक लगा रहे थे। पाकिस्तान बना और और भारत का राज्य उनके हाथो मे चला गया जो बाल्ड-बिन, चैम्बरलेन अथवा एटली की हिन्दुस्तानी प्रतिलिपि थे।

युद्ध लडे जाते है शान्ति स्थापित करने के लिये। युद्ध-काल मे और शान्ति काल मे भी जो युद्ध करने से सकोच करते हैं एव उसको घृणित कार्य मानते है, वे ही एक प्रकार से भावी युद्धो का बीजारोपण करते हैं।

'वीर भोग्या वसुन्धरा।' वसुन्धरा का अर्थ—भूमि, धन, सम्पदा, सुख और शान्ति है। ये सब-कुछ वीरो के लिए भोग्य है। वीर मन-वचन-कर्म से होते है। केवल बातो के पहलवानो के लिए यह उपाधि नही है।